इ

लीलावतं

श्री· [illegible]की अनुक्रमणिका·

बृहज्ज्योतिषसार.

ज्योतिषी पण्डितजी श्रीभवानीशंकरजीने अंदाजन
२५० नूतन श्लोक योग्य योग्य स्थलोंमें
बढाके परिपूर्ण किया ।

जिसको

पं० श्रीधरशिवलालात्मज
पण्डित किसनलालजी

इन्होंने

"श्रीसरस्वती" मुद्रणालयमें

छापकर प्रसिद्ध किया·

संवत् १९७९, शके १८४[illegible]

पृष्ठांक.

ज्योतिषसारग्रन्थस्थविषयोंकी अनुक्रमणिका.

पंचम नक्षत्रप्रकरण.

षष्ठ योगप्रकरण.

सप्तमकरणप्रकरण.

अष्टम ग्रहणप्रकरण

नवम प्रयोगऋतुप्रकरण.

दशम गोचरप्रकरण

एकादश विवाहप्रकरण.

त्रयोदश यात्राप्रकरण

चतुर्दश घातप्रकरण

पंचदश प्रश्नप्रकरण.

इत्यनुक्रमणिका.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

पं० श्रीधर शिवलालजी,

ज्ञानसागर छापाखाना—

मु.—श्रीकृष्णगंज, पो.—माहिम [बम्बई]

॥ श्रीः ॥

अथ बृहज्ज्योतिषसारप्रारंभः ।

शकप्रकरणम् ।

संवत्सरनामपरिज्ञानम् ।

गुरुपादांबुजंनत्वापित्रोश्चरणपंकजम् ॥
ज्योतिःशास्त्रावगाहाय भाषाटीकावितन्यते ॥ १ ॥
शकेंद्रकालोर्कयुतःकार्यःशून्यरसैर्हृतः ॥
शेषाःसंवत्सराज्ञेयाःप्रभवाद्याबुधैःक्रमात् ॥ २ ॥

टीका--जो शालीवाहन शक हो उसमें १२ मिलाना और ६० से भागदेना. शेष बचे वही प्रभवादि संवत्सरका नाम जानना.

संवत्सरपरिज्ञानम् ।

सएवपंचाग्निकुभिर्युक्तःस्याद्विक्रमस्यहि ॥
रेवायाउत्तरेतीरेसंवन्नाम्नातिविश्रुतः ॥ ३ ॥

टीका--जो शालिवाहनका शक है उसमें १३५ मिलाना वही विक्रमका संवत् होताहै. जो नर्मदाके उत्तर भागमें संवत् इस नामसे प्रसिद्ध है.

संवत्सरोंके नाम ।

प्रभवोविभवःशुक्लःप्रमोदोऽथप्रजापतिः ॥
अंगिराःश्रीमुखो भावोयुवाधातातथैवच ॥ १ ॥
ईश्वरोबहुधान्यश्चप्रमाथीविक्रमो वृषः ॥
चित्रभानुःसुभानुश्चतारणःपार्थिवोऽव्ययः ॥ २ ॥
सर्वजित्सर्वधारीचाविरोधीविकृतिःखरः ॥

नंदनोविजयश्चैवजयोमन्मथदुर्मुखौ ॥ ३ ॥
हेमलंबी विलंबीच विकारीशार्वरी प्लवः ॥
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ४ ॥
प्लवंगःकीलकःसौम्यःसाधारणविरोधकृत् ॥
परिधावीप्रमादीचआनंदोराक्षसोऽनलः ॥ ५ ॥
पिंगलःकालयुक्तश्च सिद्धार्थीरौद्रदुर्मतिः ॥
दुंदुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ६ ॥

टीका--प्रभवादि सर्व मिलकर ६० संवत्सर हैं. उन ६० के नाम जुदे जुदे कोष्टकम दियेहैं.

१ प्रभव	१३ प्रमाथी	२५ खर	३७ शोभन	४९ राक्षस
२ विभव	१४ विक्रम	२६ नंदन	३८ क्रोधी	५० अनल
३ शुक्ल	१५ वृष	२७ विजय	३९ विश्वावसु	५१ पिंगल
४ प्रमोद	१६ चित्रभानु	२८ जय	४० पराभव	५२ कालयुक्त
५ प्रजापति	१७ सुभानु	२९ मन्मथ	४१ प्लवंग	५३ सिद्धार्थी
६ अंगिरा	१८ तारण	३० दुर्मुख	४२ कीलक	५४ रौद्र
७ श्रीमुख	१९ पार्थिव	३१ हेमलंबी	४३ सौम्य	५५ दुर्मति
८ भाव	२० व्यय	३२ विलंबी	४४ साधारण	५६ दुंदुभि
९ युवा	२१ सर्वजित्	३३ विकारी	४५ विरोधकृत	५७ रुधिरोद्गारी
१० धाता	२२ सर्वधारी	३४ शार्वरी	४६ परिधावी	५८ रक्ताक्षी
११ ईश्वर	२३ विरोधी	३५ प्लव	४७ प्रमादी	५९ क्रोधन
१२ बहुधान्य	२४ विकृति	३६ शुभकृत्	४८ आनंद	६० क्षय

संवत्सरोंके फल.

प्रभवाद्द्विगुणंकृत्वात्रिभिर्न्यूनंचकारयेत् ॥
सप्तभिस्तुहरेद्भागंशेषंज्ञेयंशुभाशुभम् ॥ १ ॥
एकंचत्वारिदुर्भिक्षंपंचद्वाभ्यांसुभिक्षकम् ॥
त्रिषष्ठेतुसमंज्ञेयंशून्यंपीडानसंशयः ॥ २ ॥

टीका--प्रभवादि संवत्सरोंको चलतेहुए संवत्सरतक गिनना और उनको दूना करना, उनमेंसे तीन ३ निकालदेना. बाकी बचे उनको सातसे भाग देना. बाकी बचे उससे शुभाशुभ जानना. १ वा ४ बचे तो दुर्भिक्ष, ५ अथवा २ बचे तो सुभिक्ष, ३ या ६ बचे तो सामान्य और शून्य आवे तो पीडा जाननी.

संवत्सरोंके स्वामी.

युगं भवेद्वत्सरपंचकेनयुगानिचद्वादशवर्षषष्ठ्या ॥
भवंति तेषामधिदेवताश्चक्रमेणवक्ष्यामिमुनिप्रणीताः ॥ १ ॥
विष्णुर्जीवःशुक्रो दहनस्त्वष्टामहेश्वरःपितरः ॥
विश्वेदेवाश्चंद्रज्वलनौदस्रौभगः क्रमात्ज्ञेयाः ॥ २ ॥

टी०—पांचवर्षका एक युग, इसी रीतसे साठ संवत्सरोंका १२ युग और उनके स्वामीभी १२ विष्णु १ ब्रहस्पति २ इंद्र ३ अग्नि ४ ब्रह्मा ५ शिव ६ पितर ७ विश्वेदेवा ८ चंद्र ९ अग्नि १० अश्विनीकुमार ११ और भग १२ हैं.

भेद.

संवत्सरःप्रथमकःपरिवत्सरोन्यस्तस्मादिडान्विदितिपूर्वपदाद्भवेयुः
एवंयुगेषुसकलेषुतदीयनाथावन्ह्यर्कशीतगुविरिंचिशिवाःक्रमेण ३

टी०—इष्टशकको पांचसे भाग देना. शेष बचे वोही संवत्सरका नाम क्रमसे जानना. प्रथमसंवत्सरका स्वामी अग्नि दूसरा परिवत्सर उसका स्वामी सूर्य. तीसरा इडावत्सरका स्वामी चंद्र. चौथे अनुवत्सरका स्वामी ब्रह्मा और पांचवें इद्वत्सरका स्वामी शिव.

अन्यमत.

आनंदादिपतिर्ब्रह्मा भावादिर्विष्णुरेवच ॥
जयादिशंकरः प्रोक्तः सृष्टिपालनशनाकाः ॥ ४ ॥

टी०—आनंदादि २० संवत्सरोंका स्वामी सृष्टिकर्ता ब्रह्मा हैं. भावादि २० संवत्सरोंका स्वामी पालनकर्ता विष्णु हैं. जयादि २० संवत्सरोंका स्वामी संहारकर्ता रुद्र हैं.

अथ ऋतुप्रकरणम् ।

अयन.

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरेह्ययनमाहुरहश्चतदामरम् ॥
भवति दक्षिणमन्यऋतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां हिसा १

टी०—शिशिर, वसंत और ग्रीष्म इन तीन ऋतुमें सूर्यकी गति उत्तरकी-तरफ होतीहै उसको "उत्तरायण" कहतेहैं और देवतोंका वह दिनभी है. वर्षा शरद् और हेमंत इन तीन ऋतुमें सूर्यकी गति दक्षिणमें होतीहै इसे "दक्षिणायन" और देवतोंकी रात्रि कहतेहैं.

अयनमें शुभाशुभ कर्म.

गृहप्रवेशस्त्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबंधदीक्षाः ॥
सौम्यायने कर्मशुभंविधेयंयद्गर्हितंतत्खलुदक्षिणायने ॥ १ ॥

टी०—गृहप्रवेश, देवप्रतिष्ठा, विवाह, मुंडन, यज्ञोपवीत और मंत्रदीक्षाग्रहणादि ये सब काम उत्तरायणमें करना.इनके व्यतिरिक्त निंद्यकर्म दक्षिणायनमें करना.

संक्रांत्यनुसार ऋतु.

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षडर्तवःस्युःशिशिरोवसंतः ॥
ग्रीष्मश्चवर्षाश्चशरच्चतद्वद्धेमंतनामाकथितश्चषष्ठः ॥ १ ॥

टी०—जब मकरादिक दो दो राशि सूर्य भोगताहै तब एक ऋतु होताहै, इसी क्रमसे १२ राशि और ६ ऋतु एकवर्षमें भोगेजातेहैं. उसका उदाहरण—

राशि	ऋतु		राशि	ऋतु	
१ मकर...... २ कुंभ	शिशिरऋतु	१	७ कर्क...... ८ सिंह......	वर्षाऋतु	४
३ मीन...... ४ मेष	वसंतऋतु	२	९कन्या...... १० तुला......	शरदऋतु	५
५ वृषभ... .. ६मिथुन......	ग्रीष्मऋतु	३	११वृश्चिक .... १२ धन......	हेमंतऋतु	६

मतांतर राशिपरत्वे.	मासपरत्वे.
मेषादितोद्विद्विभभानुभोगा	चैत्रादिद्विद्विमासाभ्यांवसंताद्यृतवश्चषट् ॥
द्वसंतपूर्वाऋतवःषडुक्ताः।२।	दाक्षिणात्याःप्रगृण्हंतिदैवेपित्र्येचकर्मणि ॥ ३ ॥

१ मेष २ वृषभ	वसंतऋतु	७ तूल ८ वृश्चिक	शरद्ऋतु	१ चैत्र २ वैशाख	वसंतऋ	७ आश्विन ८ कार्तिक	शरद्ऋतु
३ मिथुन ४ कर्क	ग्रीष्मऋतु	९ धन १० मकर	हेमंतऋतु	३ ज्येष्ठ ४ आषाढ	ग्रीष्म	९ मार्गशीर्ष १० पौष	हेमंतऋतु
५ सिंह ६ कन्या	वर्षा.	११ कुंभ १२ मीन	शिशिर.	५ श्रावण ६ भाद्रपद	वर्षाऋतु	११ माघ १२ फाल्गु.	शिशिर

इस रीतसे ऋतु जानना. दक्षिणदेशमें देवपितृकर्ममें लेते हैं.

मासप्रकरणम्.

मासपरिज्ञान.

पूर्वराशिंपरित्यज्यउत्तरांयातिभास्करः ॥
सराशिः संक्रमाख्यः स्यान्मासर्त्वयनहायने ॥ १ ॥

टीका—पहली राशिको छोडकर दूसरी राशिपर सूर्य जाता है उसको संक्रांति कहते हैं और उस संक्रांतिसेही मास, ऋतु, अयन, वर्ष इसकी गणना होती है.

मासभेद.

दर्शावधिंमासमुशंतिचांद्रंसौरंतथाभास्कर राशिभोगात् ॥
त्रिंशद्दिनंसावनसंज्ञमार्यानाक्षत्रमिंदोर्भगणाश्रयाश्च ॥ १ ॥

टीका—जो कि शुक्लप्रतिपदासे लेकर अमावास्यापर्यन्त होता है उसे चांद्रमास ऐसा कहतेहैं. एकराशिको भोगकर जब दूसरीराशिमें सूर्य जाता है उसको सौरमास कहतेहैं. तीसदिनका सावन मास होताहै. नक्षत्रोंका परिभ्रमण चंद्रमा करताहै उसको नक्षत्रमास कहते हैं.

मासोंके नाम सूर्य और देवता.

मधुस्तथामाधवसंज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथनभोनभस्यः ॥
तथेष ऊर्जश्चसहो सहस्यस्तपस्तपस्यश्चयथाक्रमेण ॥ १ ॥
अरुणोमाघमासेतुसूर्योवैफाल्गुनेतथा ॥
चैत्रमासेतुवेदांगोभानुर्वैशाखएव च ॥ २ ॥
ज्येष्ठमासेतपेदिंद्रआषाढेतपतेरविः ॥
गभस्तिः श्रावणेमासेयमोभाद्रपदेतथा ॥ ३ ॥
सुवर्णरेताश्वयुजिकार्तिकेचदिवाकरः ॥
मार्गशीर्षेतपेन्मित्रः पौषेविष्णुः सनातनः ॥ ४ ॥

इत्येतेद्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात् ॥ ५ ॥
केशवंमार्गशीर्षेतुपौषेनारायणंविदुः ॥
माधवंमाघमासेतु गोविंदमथफाल्गुने ॥ ६ ॥
चैत्रेविष्णुंतथाविंद्याद्वैशाखेमधुसूदनम् ॥
त्रिविक्रमंतथाज्येष्ठेआष ेवामनंविदुः ॥ ७ ॥
श्रावणेश्रीधरंविंद्याद्धृषीकेशतुभाद्रके ॥
आश्विनेपद्मनाभंचऊर्जेदामोदरंविदुः ॥ ८ ॥
मार्गशीर्षेविशालाक्षीपौषेलक्ष्मीश्चदेवता ॥
माघेतुरुक्मिणीप्रोक्ताफाल्गुनेधात्रिनामिका ॥ ९ ॥
चैत्रेमासिरमादेवीवैशाखेमोहिनीतथा ॥
पद्माक्षीज्येष्ठमासेतुह्याषाढेकमलेतिच ॥ १० ॥
कांतिमतीश्रावणेचभाद्रेतुह्यपराजिता ॥
पद्मावतीआश्विनेतुराधादेवीतुकार्तिके ॥ ११ ॥

	मास	नाम	सूर्य	देवी	दवता
१	चैत्र	मधु	वेदांग	रमा	विष्णु
२	वैशाख	माधव	भानु	मोहिनी	मधुसूदन
३	ज्येष्ठ	शुक्र	इंद्र	पद्माक्षी	त्रिविक्रम
४	आषाढ	शुचि	रवि	कमला	वामन
५	श्रावण	नभ	गभस्ति	कांतिमती	श्रीधर
६	भाद्रपद	नभस्य	यम	अपराजिता	हृषीकेश
७	आश्विन	इष	सुवर्णरेता	पद्मावती	पद्मनाभ
८	कार्तिक	ऊर्ज	दिव करं	राधा	दामोदर
९	मार्गशीर्ष	सहं	मित्र	विशालाक्षी	केशव
१०	पौष	सहस्य	विष्णु	लक्ष्मी	नारायण
११	माघ	तप	अरुण	रुक्मिणी	माधव
१२	फाल्गुन	तपस्य	सूर्य	धात्री	गोविंद

वारके अनसार मासफल

पंचार्कवासरारोगाः ५ भौमामहद्भयम् ॥
पंचार्किवाराद्दुर्भिक्षंशेषा।वाराः शुभप्रदाः ॥ १ ॥

टीका--एक महिनेंमें पांच रविवार होवें तो रोग उत्पन्न होताहै. पांच मंगलवार वें तो महान् भय उत्पन्न होता है. पांच शनिवार होवें तो दुर्भिक्ष होता है और ष रहेहुए वार शुभप्रद हैं.

पक्ष.

पूर्वापरेमासदलेहिपक्षौपूर्वापरौतौसितनीलसंज्ञौ ॥
पूर्वस्तुदेवस्त्वपरश्चपैत्र्यःकेचित्तुकृष्णोऽसितपंचमीतः ॥ १ ॥
आदौशुक्लःप्रवक्तव्यःकेचित्कृष्णोऽपिमासके ॥ २ ॥

टीका-शुक्लप्रतिपदासे पूर्णिमातक शुक्लपक्ष कृष्ण प्रतिपदासे अमावसतक कृष्ण. पक्ष. देवतोंका शुक्लपक्ष और पितरोंका कृष्णपक्ष. (भेद) शुक्ल ५ से कृष्णपंचमी तक शुद्धपक्ष. इसरीतसे कृष्णपक्षभी जानना. प्रथम शुक्लपक्ष और पीछे कृष्णपक्ष. ये अमांतमासका क्रम है. और प्रथम कृष्णपक्ष और पीछे शुक्लपक्ष यह पूर्णिमान्त-मासका क्रम है. ये दोनोंपक्ष देशभेदसे चलते हैं.

अधिकमास.

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ॥
घटिकाना चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥ १ ॥

टीका--३२ मास १६ दिन और ४ घटिका व्यतीत होनेसे अधिकमासका संभव होताहै.

अधिकमासज्ञान.

शाकेबाणकरांककैर्विरहितेनन्देन्दुभिर्भाजितेशेषाग्नौचमधुश्च माधवशिवेज्येष्ठश्चखेचाष्टके ॥ आषाढोनृपतौनभश्चशरकेभा द्रश्चविश्वांशकेनेत्रेचाश्विनकोऽधिमासउदितोशेषेन्यकेस्यान्नहि

टीका--वर्तमानशकके अंकमें ९२५ घटावे. शेष अंकोमें १९ का भाग दे, जो ३ शेष रहै तो चैत्र. ११ रहै तो वैशाख. ०।८ रहेतो ज्येष्ठ, १६ रहे तो आषाढ ५ रहे तो श्रावण, १३ रहे तो भाद्रपद. २ रहे तो आश्विनमासकी वृद्धि होवेगी और अन्य शेष रहे तो अधिकमास नहीं होगा.

क्षयमास.

असंक्रांतिमासोऽधिमासःस्फुटःस्याद्द्विसंक्रांतिमासः

क्षयाख्यः कदाचित् ॥ क्षयःकार्तिकादित्रयेनान्यतः
स्यात्तदावर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥ १ ॥

टीका--संक्रांतिरहित जो मास सो अधिकमास, और जिसमहीनेमें दो संक्रांत आती हैं वह क्षयमास जानना. ये क्षयमास कार्तिकादि तीन महीनोंमें आताहै तब एकवर्षमें दो अधिकमास आतेहैं.

सिद्धांतशिरोमणौ.

गतोब्ध्यद्रिनंदैर्मितेशाककालेतिथीशैर्भविष्यत्यथांगाक्षसूर्यैः॥
गजाद्र्यग्निभूभिस्तथाप्रायशोयंकुवेदेंदुवर्षैःक्वचिद्गोकुभिश्च॥ १॥

टीका–पहले जिसवर्षमें क्षयमास पडा होवे तो उस वर्षसे १४१ वर्ष पीछे क्षयमास आताहै. और आगे कोई समय १९ वर्षसें क्षयमास आताहै. उसका उदाहरण ९७४ के सालमें क्षयमास भुक्त हुवा. और आगे क्षयमास आनेवाला है सो १११५, १२५६, १३७८ शकमें होगा. और इसके आगे १४१ या १९ वर्षके अंतरसे क्षयमास आवेगा ऐसा जानना.

तिथिप्रकरणम्.

तिथियोंका परिज्ञान.

मासभाच्चांद्रभंयावद्गणयेत्तावदेवतु ।
यावंतिगणनाद्धानितावंत्यस्तिथयःक्रमात् ॥ १ ॥

टीका–चैत्रादि बारा मासके नाम और उनके नक्षत्र जैसे चैत्रमासका चित्रा नक्षत्र, वैशाखका विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, कृत्तिका, मृग, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी. इस क्रमसे मास और नक्षत्र जानना, उस मासनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिणना; जो संख्या आवे सोई तिथी जानना; परंतु पूर्णिमांत माससे गिणनेसें गणित बराबर उतरता है.

तिथिसंज्ञापरिज्ञान.

प्रतिपत्सिद्धिदाप्रोक्ताद्वितीयाकार्यसाधिनी ॥ तृतीयारोग्यदात्रीचहानिदाचचतुर्थिका ॥ १ ॥ शुभातुपंचमीज्ञेयाषष्ठिकात्वशुभा मता ॥ सप्तमीतुशुभाज्ञेयाअष्टमीव्याधिनाशिनी ॥२॥ मृत्युदात्रीतुनवमीद्रव्यदादशमीतथा ॥ एकादशीतुशुभाद्वादशीसर्व

सिद्धिदा ॥ ३ ॥ त्रयोदशीसर्वसिद्धाज्ञेयाचोग्राचतुर्दशी ॥ पुष्टि-
दापौर्णिमाज्ञेयात्वमावास्याऽशुभातिथिः ॥ ४ ॥ अथ स्वामी ॥
वह्निर्विरिंचोगिरिजागणेशःफणीविशाखोदिनकृन्महेशः ॥ दुर्गा-
तकोविश्वहरिःस्मरश्चशर्वःशशीचेतिपुराणदृष्टाः ॥ अमायाःपित
रःप्रोक्तास्तिथीनामधिपाःक्रमात् ॥ ५ ॥ अथ संज्ञा ॥ ॥
नंदाचभद्राचजयाचरिक्तापूर्णेतिसर्वास्तिथयःक्रमात्स्युः ॥ कनिष्ठ
मध्येष्टफलाश्चशुक्लेकृष्णेभवंत्युत्तममध्यहीनाः ॥ ६ ॥ पालन ॥
कूष्मांडंबृहतीफलानिलवणंवर्ज्यंतिलाम्लंतथातैलंचामलकंदिवं
प्रवसताशीर्षकपालांत्रकम् ॥ निष्पावांश्चमसूरिकाफलमथोवृंता
कसंज्ञंमधुद्यूतंस्त्रीगमनंक्रमात्प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ॥ ७ ॥

टी०--इस रीतिसे संज्ञा, स्वामी, पालनका अर्थ आगे लिखे कोष्टकमें दियाहै उसको देखकर समझलेना.

तिथिनका फल		स्वामी	संज्ञा			तिथिपालन करणा सो
तिथि	फल		नाम	शुक्ल	कृष्ण	
प्रतिपदा	सिद्धि	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	कोह०
द्वितीया	कार्यसाधन	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	कटाल०
तृतीया	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	लूण.
चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
पंचमी	शुभा	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	खटाई.
षष्ठी	अशुभा	स्कंद	नंदा	मध्यम	मध्यम	तै
सप्तमी	शुभा	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आवला
अष्टमी	व्याधिनाश	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल.
नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	लौकी
दशमी	धनदा	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	पंडाल.
एकादशी	शुभा	विश्वदेव	नंदा	शुभ	अशुभ	दालि०.
द्वादशी	सर्वसिद्धि	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसुर
त्रयोदशी	सर्वसिद्धि	मदन	जया	शुभ	अशुभ	बैंगण
चतुर्दशी	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	मधु
पौर्णिमा	पुष्टिदा	चन्द्र	पूर्णा	शुभ	०	द्यूत
अमावस्या	अशुभा	पितर	०	०	अशुभ	स्त्रीसंग

मासशून्य तिथि.

भाद्रेचंद्रदृशौनभस्यनलनेत्रेमाधवेद्वादशीपौषेवेदशराइषेदशशिवामार्गेऽद्रिनागामधौ॥गोष्ठौचोभयपक्षगाश्चतिथयःशून्याबुधैःकीर्तिता ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसांकृष्णेशरांगाब्धयः ॥ ॥ शक्राः पंचसितेशक्राद्व्यग्निविश्वरसाःक्रमात् ॥ तथानिंद्यंशुभेसार्पंद्वादश्यांवैश्वमादिमे ॥ २ ॥

टीका--भाद्रपदकी १।२ श्रावणकी ३।२ वैशाखकी १२।१२ पौषकी ४।५ आश्विनकी १०।११ मार्गशीर्षकी ७।८ चैत्रकी ९।८ इन महीनोंके कृष्ण शुक्ल दोनों पक्षोंकी यह तिथि शून्य जानना. और कार्तिक कृष्ण ५ आषाढकृष्ण ६ फाल्गुनकृष्ण ४ ज्येष्ठकृष्ण १४ माघकृष्ण ५ उक्त महीनाकी उक्तातिथि शून्य जाननी. कार्तिक शुक्ल १४ आषाढ शुक्ल ७ फाल्गुन शुक्ल ३ ज्येष्ठ शुक्ल १३ माघ शुक्ल ६ उक्तमासमें उक्ततिथि शून्य हैं. और द्वादशी, आश्लेषा और प्रतिपदा, उत्तराषाढा होय तो शुभकार्यमें निंदितहै. यह मासशून्य तिथि मध्यदेशमें वर्जित हैं ॥ १ ॥ २॥

नंदादितिथियोंमें कर्तव्य कार्य.

नंदासुचित्रोत्सववास्तुतंत्रक्षेत्रादिकुर्वीततथैवनृत्यम् ॥ विवाहभूषाशकटाध्वयानंभद्रासुकार्याण्यपिपौष्टिकानि ॥ १ ॥ जयासुसंग्रामबलोपयोगीकार्याणिसिद्ध्यंत्यपिनिर्मितानि ॥ रिक्तासुविद्वद्वधघातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादिचयातिसिद्धिम् ॥ २ ॥ पूर्णासुमांगल्यविवाहयात्रासपौष्टिकंशांतिककर्मकार्यम् ॥ सदैवदर्शेपितृकर्मवोक्तंनान्यद्विदध्याच्छुभमंगलानि ॥ ३ ॥

टी०-नंदा कहिये प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी इन तिथियोंमें आनंदकारक काम, देवताओंके उत्साह, गृहसंबंधके काम, जगह तैयार करना, लना, नृत्य, गीत, वाद्य इत्यादि काम करना. १ भद्रा कहिये द्वितिया, सप्तमी, द्वादशी इन तिथियोंमें ब्याव, आभूषण, गाडी, रथ, रस्ता दुरुस्त करना, गमन करना, पौष्टिक क्रिया, इत्यादि काम करना. २ जया कहिये तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी,

इन तिथियोंमें युद्ध करनेको तय्यार हुआ जो सैन्य उसके उपयोगमें आनेवाले जो पदार्थ याने शस्त्र ध्वजादि काम करनेसे जलदी सिद्ध होतेहैं. ३ रिक्ता याने चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, इन तिथियोंमें विद्वान्का नाश, घातकर्मकी सिद्धि, विषप्रयोग, शस्त्रप्रयोग इत्यादि क्रूरकाम करना ॥ २ ॥ पूर्णा कहिये पंचमी, दशमी, पौर्णिमा, इन तिथियोंमें विवाहादि शुभकृत्य, महायात्रा, शांतिक, पौष्टिकइत्यादि काम करना. अमावास्यामें केवल पितकार्य करना. अन्य मंगल कार्य करना नहीं ॥ ३ ॥

युगादि तिथि.

नवमीकार्तिकेशुक्लावैशाखेचतृतीयका ॥ त्रयोदश्याश्विनेकृष्णा-तथादर्शश्चफाल्गुने ॥ १ ॥ कार्तिकेभूत्कृतारंभस्त्रेतारंभस्तुमाधवे ॥ फाल्गुनेद्वापरारंभआरंभश्चाश्विनेकलेः ॥ २ ॥

टीका–कार्तिक शुद्ध ९ वैशाख शुक्ल ३ आश्विनकृष्ण १३ फाल्गुनकी अमावास्या यह तिथि युगादि जानना. कार्तिकमें कृतयुगका, वैशाखमें त्रेतायुगका, फाल्गुनमें द्वापरयुगका और आश्विनमें कलियुगका प्रारंभ होता है.

युगादिस्वामी.

क्रमाच्छंभुर्हरिर्वेधाःपितरस्तत्रदेवताः ॥ तिलान्लवणसौवर्णे गांश्चदद्याद्युगादिषु ॥ १ ॥ एतायुगादयःपुण्याःशुभेवर्ज्यामनीषिभिः ॥ तत्राक्षय्यतृतीयांतुसर्वकार्येषुशोभना ॥ २ ॥

टीका--चारों युगोंके देवता क्रमसे शंभु, हरि, ब्रह्मा, पितर यह जानना.चारों युगादिमें तिल, लवण, गौ, यह दान करना. यह युगादि पुण्यमें शुभ पंडितोंनें शुभकार्यमें वर्ज्य करना. परंतु उसमेंसे अक्षय्यतृतीया सर्वकार्यमें शुभ जानना.

मन्वादयः ।

आश्विनेनवमीशुक्लामाघमासेतुसप्तमी ॥ भाद्रेचैत्रेतृतीयाचकार्तिकेद्वादशीतथा ॥१॥ आषाढेदशमीप्रोक्ताज्येष्ठमासेतुपौर्णिमा ॥ आषाढीफाल्गुनीचैत्रीकार्तिकीपौर्णिमातथा ॥२॥ भाद्रेकृष्णाष्टमीप्रोक्तापौषेत्वेकाददशीसिता ॥ अमाभाद्रपदेमासिमन्वाद्या

स्तिथयस्त्विमाः ॥ ३ ॥ अत्रमासास्तुविज्ञेयाएकान्ताः परिकीर्तिताः ॥

टीका०--आश्विनकी शुक्ल ९ माघशुक्ल ७ भाद्रपद और चैत्र शुक्ल ३ कार्तिक शुक्ल १२ आषाढ शुक्ल १० ज्येष्ठकी, आषाढकी, फाल्गुनकी, चैत्रकी, कार्तिककी, पौर्णिमा, भाद्रपद कृष्ण ८ पौषशुक्ल ११ भाद्रपदाकी अमावास्या यह मन्वादि तिथि जानना. इसमें पौर्णिमांत मास लेना.

वारपरिज्ञान.

सार्द्धैकघ्नेमधोर्मासेगतपक्षदिनैर्युते ॥
मुनिभक्तेतुयच्छेषंराज्ञो वैवासरंभवेत् ॥ १ ॥

टी०--चैत्रादि गतमासको ड्योढा करके गतदिन युक्त करना. तिसमें ७ का भाग देना. शेष रहे सो वर्षके राजाके वारसे गिने तो वार निश्चय होताहै.

अष्टदिशाओंके स्वामी.

रविः शुक्रोमहीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजोविधुः ॥
बुधोबृहस्पतिश्चैवदिशामीशास्तथाग्रहाः ॥ १ ॥

टी०--पूर्वदिशाका स्वामी सूर्य १ आग्नेयका स्वामी शुक्र २ दक्षिणका मंगल ३ नैर्ऋत्यका राहु ४ पश्चिमका शनि ५ वायव्यका चंद्र ६ उत्तराका बुध ७ ईशानका स्वामी ब्रहस्पति ८ ऐसे ये दिशाओंके स्वामी जानना.

ग्रहोंकी जाति.

ब्राह्मणौजीवशुक्रौज्ञक्षत्रियौभौमभास्करौ ॥
सोमसौम्यौविशौप्रोक्तौराहुमंदौतथान्त्यजौ ॥ १ ॥

टी०--गु. शु. ये ब्राह्मण हैं, मं. सू. क्षत्रियहैं, चं. बु. ये वैश्य, रा. के. शनि ये शूद्रहैं.

ग्रहोंके वर्ण.

रक्तावंगारकादित्यौश्वेतौशुक्रनिशाकरौ ॥
गुरुसौम्यौपीतवर्णौशनीराहूसितावुभौ ॥ १ ॥

टीका--सूर्य मंगल लालवर्ण हैं. शुक्र चंद्र श्वेतवर्ण है. गुरू और बुध ये पीतवर्ण है. शनि राहु केतु इनका वर्ण काला है.

वारोंमें कर्तव्य कर्म.

रविवार.

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्निमंत्रौषधशस्त्रकर्म ॥
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ॥१॥

टी०-राज्याभिषेक, गीत, वाद्य, पालखीमें बैठना, राजसेवा, गाय, वृषभादिले ना देना, यज्ञयाग, मंत्रउपदेश देनालेना, औषधी लेनी देनी, शस्त्र, सुवर्ण, तांबा, धातु, वस्त्र, लकडी, युद्धप्रसंग, वाणिज्य ये काम रविवारके दिन करना.

सोमवार.

शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षकक्ष्यांबुविभूषणाद्याः ॥
गीतं क्रतुक्षीरविकारशृंगीपुष्पांबरारंभणमिंदुवारे ॥ २ ॥

टी०-शंख, कमल, माती, रूपा, ऊख, भोजन, स्त्रीसंभोग, वृक्ष, वाडी, जल, आभूषण, गायन, यज्ञादिक, गोरस, गाय, भैस, फूल, वस्त्र इत्यादि काम सोमवारके दिन करना.

मंगलवार.

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवध्याभिघाताहवशाठ्यदंभान् ॥
सेना निवेशाकरधातुहेमप्रवालरक्तानिकुजेविदध्यात् ॥ ३ ॥

टी०-भेद करना, झूंठ, विष, अग्नि, शस्त्र, मार डालना, संग्राम, कपट, दंभ, सैन्य रखना, खान, सुवर्ण, प्रवाल, रक्तस्राव ये कर्म मंगलको करना.

बुधवार.

नैपुण्यपुण्याध्ययनंकलाश्चशिल्पादिसेवालिपिलेखनानि ॥
धातुक्रियाकांचनयुक्तिसंधिव्यायामवादाश्चबुधे विधेयाः ॥४॥

टी०-चातुर्य, पुण्य, अध्ययन, कला, शिल्पशास्त्र (कारीगरी) सेवा, लिखना, चित्र निकालना, धातुक्रिया, सुवर्णयुक्ति, मित्रता, जाना, आना, वाद करना ये काम बुधवारके दिन करना.

गुरुवार.

धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्यामांगल्यहेमांबरवेश्मयात्राः ॥
रथाश्वभैषज्यविभूषणादिकार्यंविदध्यात्सुरमंत्रिवारे ॥ ५ ॥

टी०–धर्म करना, नवग्रहादिकोंकी पूजा, यज्ञ, विद्याभ्यास, सुवर्ण, सौभाग्य, वस्त्र, गृहकृत्य, यात्रा, रथ, घोडा, औषध, आभूषण ये काम गुरुवारको करनेसे शुभदायक होते हैं.

शुक्रवार.

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगंधवस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म ॥
भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्चसिद्ध्यंतिशुक्रस्यदिनेसमस्तः॥६॥

टी०–शुक्रवारको स्त्रियोंका गायन, शय्या, मणिरत्न, गंध, वस्त्र, उत्साह, अलंकार, व्यापार, गाय, द्रव्य, खजाना, खेती इत्यादि काम करना.

शनिवारका कर्तव्य.

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदासपापानृतस्तेयविषासवाद्यम् ॥
गृहप्रवेशं द्विपबंधदीक्षाःस्थिरं च कर्मार्कसुतेऽह्नि कुर्यात्॥७॥

टी०–लोह, पत्थर, जस्त, पीतल, तलवार, नौकर, पाप, झूठभाषण, चोरी, विषप्रयोग, आसव आदि उतारना, गृहप्रवेश, हाथी बांधना, उपदेशादिक, यह स्थिर काम शनिवारके दिन करना चाहिये.

वारोंके कोष्टक समझनेकी रीति.

देवता ॥ सूर्यादितःशिवशिवागुहविष्णुकेंद्रकालःक्रमेणपतयः कथिताग्रहाणाम् ॥ वन्ह्यंबुभूमिहरिशक्रशचीविरिंस्तेिषांपुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च॥१॥विचारकरनेलायककालपरिमाण॥ पतंगसूनोर्दिवसाधिपत्यंनिशाप्यहश्चैवतुतिग्मभानोः ॥ रात्रिद्वयंचैकदिनंचसोमेशेषग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ॥ २ ॥ दोषादोष ॥ नवारदोषाःप्रभवंतिरात्रौदेवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्॥दिवाशशांकार्कजभूसुतानांसर्वत्रनिंद्योबुधवारदोषः ॥ ३ ॥ कार्य ॥ सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराःसर्वकर्मसुभवंतिसिद्धिदाः॥भानुभौमशनिवासरेषुचप्रोक्तमेवखलुकर्मसिद्ध्यति॥ ४ ॥ तैलाभ्यंग

को शुभाशुभ ॥ रविस्तापंकांतिंवितरतिशशीभूमितनयोमृतिंल क्ष्मींसौम्यःसुरपतिगुरुर्वित्तहरणम् ॥ विपत्तिंदैत्यानांगुरुरखिलभो गानुगमनंनृणांतैलाभ्यंगात्सपदिकुरुतेसूर्यतनयः ॥ ५ ॥ वस्त्रपरि धान ॥ जीर्णंरवौसततमंबुभिरार्द्रमिंदौभौमेशुचेबुधदिनेचभवेद्ध नाय ॥ ज्ञानायमंत्रिणिभृगौप्रियसंगमायमंदेमलायचनवांबरधार णंस्यात् ॥ ६ ॥ श्मश्रुकर्म ॥ भानुर्मासंक्षपयतितथासप्तमार्तंड सूनुर्भौमश्चाष्टौवितरतिशुभंबोधनःपंचमासान्॥सप्तैवेंदुर्दशसुरगुरुः शुक्रएकादशेतिप्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयःक्षौरकार्येषुचायुः ॥ ७ ॥ वि- द्यारंभ ॥ विद्यारंभःसुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थदायीकेतुश्चायुश्चिरम- पिकरोत्यंशुमान्मध्यमोऽत्र ॥ नीहारांशौभवतिजडतापंचताभूमि पुत्रे छायासूनावपिचमुनयःकीर्तयंत्येवमाद्याः ॥ ८ ॥

टीका–वारोंके कोष्टकका घर कियाहै और उनके नाम थोडेमें लिखेहैं; सो ऐसे–पहिले वारोंके नाम, दूसरे वारस्वामी, ३ देवता, ४ विचार करनेके वास्ते कालका परिमाण, ५ दोषादोष, ६ उक्तानुक्तकृत्य, ७ तैलाभ्यंगस्नान करनेसे शुभाशुभ, ८ नवीनवस्त्रका पहिरना, ९ हजामत बनानेमें शुभाशुभ, १० विद्या- रंभमें शुभाशुभ. इस रीतिसे विस्तारसे नाम जानना.

वारनाम.	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वारोंके प्र.	शिव	पार्वती	स्कंद	विष्णु	ब्रह्मा	इंद्र	रुद्र
देवता	अग्नि	उदक	भूमि	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा
विचार करनेका काल	८ प्रहर	२ रात्रि ४ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	४ प्रहर
दोषादोष	रात्रिदोष	दिनदोष	दिनदोष	रा. दिन	रात्रिदोष	रात्रिदोष	दिनदोष
कृत्य	उक्तकर्म	सर्वकर्मसि	उक्तकर्म	कर्मसि.	कर्मसि.	कर्मसि.	उ. क सि.
तैलाभ्यं	ज्वरप्रद	कांतिप्रद	मृत्युप्रद	लक्ष्मीप्रद	वित्तनाश	विपत्तिप्रद	अ. भोग
वस्त्रपरि.	जीर्णहोवे	ओलारहे	शोकप्राप्ति	धनप्राप्ति	ज्ञानप्राप्ति	इष्टसन्मान	मैलाहोवे
श्मश्रुकर्म	१ महिने आयुष्यना	७ म. आयु वृद्धि	८ म. आ. ना	५ म. अ. वृ.	१० म.आ. वृ.	११ म.आ. वृ.	७ म. आ. नाश
विद्यारंभ	मध्यम	जडत्व	मृत्यु	इन ३ वारमें आयुष्यवृद्धि इष्टसिद्धि जानना.			मृत्यु

नक्षत्रप्रकरण.

नक्षत्रपरिज्ञान.

द्विनिघ्नमासास्तिथियुग्विधूनोभैःशेषितःस्याहुडुशेषसंख्या ॥
मासस्तुशुक्लादितएवबोध्यःकृष्णोद्विहीनोमुनयो वदंति ॥ १ ॥

टी०-कार्तिकादि गतमहीने दूने करने, उसमें गततिथि वर्तमानतिथिको मिलाना और एकत्र करके उसमेंसे एक हीन करना. बाकी बचे उसको २७ से भागदेना. शेषबचे सो नक्षत्र जानना. परंतु कृष्णपक्षमें २ हीन करके २७ का भागदेना शेष बचे सो नक्षत्र जानना. ऐसा मुनियोंने कहाहै.

शुभाशुभनक्षत्र.

अश्विनीतुशुभाप्रोक्ताभरणीनाशकारिणी ॥ कार्यघ्नीकृत्तिकाचोक्तारोहिणीसिद्धिदाबुधैः ॥ १ ॥ मृगःशुभस्ततश्चार्द्रामध्यमस्तुपुनर्वसुः ॥ पुष्यःशुभःसार्पमघापूर्वाःशुङ्नाशमृत्युदाः ॥२॥ उत्तराहस्तचित्रास्तुविद्यालक्ष्मीशुभप्रदाः॥ स्वातीविशाखेत्वशुभेमैत्रंसर्वार्थसिद्धिदम् ॥३॥ ज्येष्ठामूलंक्रमात्तोयंक्षयनाशोथहानिदम् ॥ विश्वब्रह्माविष्णवश्चबुद्धिवृद्धिसुखप्रदाः ॥४॥ वासवंवारुणंशैवंशुभंद्रंमतिप्रदम् ॥ उत्तराभाद्रकंश्रीदंरेवतीकामदायिका ॥ ५ ॥ नक्षत्रोंकेस्वामी ॥ भेशादस्रयमाग्निकेंदुगिरिशाःप्रोक्ताअदित्यंगिराःसर्पाःकाव्यभुजोभगोर्यमरवीत्वष्टाह्वयोमारुतः ॥ इंद्राग्नीत्वथमित्रइंद्रनिर्ऋतिर्नीरंचविश्वेविधिर्वैकुंठोवसुपाश्यजैकचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ ६ ॥ अधोमुखनक्षत्र ॥ मूलाग्नेयमघाद्विदैवभरणीसार्पाणिपूर्वात्रयंज्योतिर्विद्भिरधोमुखंहिनवकंभानामिदंकीर्तितम् ॥ तिर्यङ्मुखनक्षत्र ॥ ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरः पौषानुराधानिलत्वष्टाख्यानिवदंतिभानिमुनयस्तिर्यङ्मुखान्येषुतु ॥ ऊर्ध्वमुखनक्षत्र ॥ पुष्यार्द्राश्रवणोत्तराशतभिषग्ब्राह्मश्रविष्ठाह्वयान्यूर्ध्वास्यानिनवोदितानिमुनिभिर्धिष्ण्यान्यथैतेषुतु ॥ २ ॥ ध्रुवस्थिरनक्षत्र ॥ रोहिणीसहितमुत्तरात्रयं

कीर्तयन्ति मुनयो ध्रुवाह्वयम् ॥ मृदुनक्षत्र ॥ त्वाष्ट्रमित्रशशिपूषदैवतान्यामनन्ति मुनयो मृदून्यथ ॥ लघु नक्षत्र ॥ अश्विनी गुरुभमर्कदैवतं साभिजिल्लघु चतुष्टयं मतम् ॥ तीक्ष्णनक्षत्र ॥ मूलशुक्रशिवसार्पदैवतान्युल्लपन्त्यथ च तीक्ष्णसंज्ञया ॥ चरनक्षत्र॥ वैष्णवत्रययुतः पुनर्वसुर्मारुतं च चरपञ्चकं विदम् ॥ उग्रनक्षत्र ॥ पूर्विकात्रितयमान्तकं मघात्युग्रपञ्चकमिदं जगुर्बुधाः ॥ मिश्रनक्षत्र ॥ हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं मिश्रसंज्ञमथ मिश्रकर्मसु ॥ चरादिनक्षत्र ॥ चरं चलं क्रूरमुशन्ति चोग्रं ध्रुवं स्थिरं दारुणभं च तीक्ष्णम् ॥ क्षिप्रं लघुत्वं मृदुमैत्रसंज्ञं साधारणं मिश्रमिति वन्ति॥

अन्धादिक नक्षत्रसंज्ञा.

अन्धकं तदनु मन्दलोचनं मध्यलोचनमतः सुलोचनम् ॥
रोहिणीप्रभृतिभं चतुष्टयं साभिजिच्च गणयेत्पुनः पुनः ॥ १ ॥

नक्षत्रोंके स्वरूप.

तुरगमुखसदृक्षं योनिरूपं क्षुराभं शकटसममथैणस्योत्तमाङ्गेन तुल्यम् ॥ मणिगृहशरचक्रं भाति शालोपमम्भं शयनसदृशमन्यच्चात्र पर्यङ्करूपम् ॥ १ ॥ हस्ताकारमतश्च मौक्तिकसमं चान्यत् प्रवालोपमं धिष्ण्यं तोरणवस्थितं बलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ क्रुध्यत्केसरिविक्रमेण सदृशं शय्यासमानं परं चान्यद्दन्तिविलासवत्स्थितमतः शृङ्गानिभं व्यक्तिमत॥२॥ त्रिविक्रमाभं च मृदङ्गरूपं वृत्तं ततोऽन्यद्यमलद्वयाभम् ॥ पर्यंकरूपं मुरजानुकारी चेत्येवमश्वादिव चक्ररूपम् ॥ ३ ॥

नक्षत्रोंके तारोंकी संख्या.

वह्नित्रिऋत्विषुगुणेन्दुकृताग्निभूतबाणाश्विनेत्रशरभू-
कुयुगाब्धिरामाः ॥ रुद्राब्धिरामगुणवेदशतद्वियुग्मं
दन्ताबुधैर्निगदिताः क्रमशो भताराः ॥ १ ॥

संख्या	नक्षत्रोंके नाम	शुभाशुभ संज्ञा	स्वामीका नाम	मुख संज्ञा	रूपसंज्ञा नाम	रूपसंज्ञा नाम	लोचन संज्ञा	स्वरूपकी आकृती	तारोंकी संख्या
१	अश्विनी	शुभ	अश्विनी कु	तिर्यङ्मु	लघु	क्रूर	मंदलोचन	अश्वरूप	३
२	भरणी	नाशक	यम	अधोमुख	उग्र	साधा	मध्यलो०	योनिरूप	३
३	कृत्तिका	कार्यनाश	अग्नि	अधोमुख	मिश्र	स्थिर	सुलोचन.	क्षुररूप	६
४	रोहिणी	सिद्धि	ब्रह्मा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	मैत्र	अंधलो०	शकट	५
५	मृग शिर	शुभ	चंद्र	तिर्यङ्मु	मृदु	दारुण	मंदलोचन.	मृगसम	३
६	आर्द्रा	शुभ	शिव	ऊर्ध्वमुख	तीक्ष्ण	चल	मध्यलो०	मणिसम	१
७	पुनर्वसु	मध्यम	अदिति	तिर्यङ्मु	चर	क्षिप्र	सुलोचन.	गृहसम	४
८	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊर्ध्वमुख	लघु	दारुण	अंधलो०	शरसम	३
९	आश्लेषा	शोक	सर्प	अधोमुख	तीक्ष्ण	क्रूर	मंदलोच.	चक्रसम	५
१०	मघा	नाशक	पितर	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो०	शालासम	५
११	पूर्वाफा०	मृत्युद	भग	अधोमुख	उग्र	स्थिर	सुलोचन	शय्यासम	२
१२	उत्तराफा०	विद्या	अर्यमा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	क्षिप्र	अंधलो०	पयकसम	२
१३	हस्त	लक्ष्मी	रवि	तिर्यङ्मु.	लघु	मैत्र	मंदलोच.	हस्ताकृति	५
१४	चित्रा	शुभद	त्वष्टा	तिर्यङ्मुख	मृदु	चल	मध्यलो०	मौक्तिक	१
१५	स्वाती	अशुभ	वायु	तिर्यङ्मुख	चर	साधा	सुलोचन	प्रवाल	१
१६	विशाखा	अशुभ	इन्द्राग्नि	अधोमुख	मिश्र	मैत्र	अंधलो०	तोरण	४
१७	अनुराधा	सर्वसिद्धि	मित्र	तिर्यङ्मुख	मृदु	क्षिप्र	मंदलोच.	बलिसम	४
१८	ज्येष्ठा	क्षयनाश	इन्द्र	तिर्यङ्मुख	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो०	कुंडल	३
१९	मूल	अर्थनाश	राक्षस	अधोमुख	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोचन	सिंहसम	११
२०	पूर्वाषाढा	हानि	उदक	अधोमुख	उग्र	क्रूर	अंधलो०	शय्यासम	४
२१	उत्तराषा.	बुद्धिदा	विश्वदेव	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	हस्तीसम	३
२२	अभिजित	वृद्धिदा	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	अंधलो०	त्रिकोण	३
२३	श्रवण	सुखदा	विष्णु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	सुलोचन	व्यक्ताकार	३
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	अंधलो०	वामनसम	४
२५	शतभिषा	कल्याण	वरुण	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	मंदलोच	मृदंगसम	१००
२६	पूर्वाभाद्र.	मृत्युदा	अजैक	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो०	वर्तुलाकार	२
२७	उत्तराभा	लक्ष्मी	अहिर्बुध्न्य	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	यमलाकार	२
२८	रेवती	कामदा	पूषा	तिर्यङ्मुख	मृदु	मैत्र	अंधलो०	मृदंगसम	३२

कार्याकार्यविचार.

अधोमुख.

वापीकूपतडागगर्तपरिखाखाता निधेरुद्धृति-
क्षेपौ द्यूतबिलप्रवेशगणितारम्भाः प्रसिध्यन्ति च ॥ १ ॥

टीका—अधोमुख नक्षत्र ये हैं मूल कृत्तिका मघा विशाखा भरणी आश्लेषा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा इनमें बापी कूप तालाव गर्त और खाई खोदना द्रव्य काढना और रखना जुआ खेलना बिलान्तःप्रवेश गणितारम्भ ये कर्म करने योग्य हैं.

तिर्यङ्मुख.

अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभवृषोरभ्रादिदान्त्यश्विनौ ।
गन्त्रीयन्त्रहलप्रवाहगमनारम्भाः प्रसिध्यन्ति च ॥ १ ॥

टीका—तिर्यङ्मुख कहिये ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृग रेवती अनुराधा स्वाती चित्रा इन नक्षत्रोंमें घोडा हाथी ऊंट भैंस गधा बैल मेंढा सूकर श्वान लेना, नाव पानीमें डालना गंत्री यंत्र हल चलाना धारण गमनादिक करे.

ऊर्ध्वमुख.

प्रासादध्वजधर्मवारणगृहप्राकारसत्तोरणो-
च्छ्रायारामविधिर्हितो नरपतेः पट्टाभिषेकादि च ॥ १ ॥

टीका--पुष्य आर्द्रा श्रवण उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा शतभिषा रोहिणी धनिष्ठा इन नक्षत्रोंको उर्ध्वमुख कहते हैं. इनमें देवस्थान ध्वजा मंडप वर कोट भीत तारेण बाग राज्यभिषेक आदि कर्म करने योग्य हैं.

ध्रुवनक्षत्र.

बीजहर्म्यनगराभिषेचनारामशान्तिषु हितं स्थिरेषु च ॥

टीका—रोहिणी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा ये ध्रुव नक्षत्र हैं. इनमें बीज बोना, हर्म्य तथा नगरमें प्रवेश, राज्याभिषेक, बाग लगाना ये कर्म करने योग्य हैं.

मृदुनक्षत्र.

मित्रकार्यरतिभूषणाम्बरोद्गीतिमङ्गलविधानमेषु तु ।

और इनमें प्रहर मिलाके आठ गुणा करे और सातका भाग देनेसे जो शेष रहे उससे फल विचारै. एक शेष रहे तो भूमिमें वस्तु जानिये २ शेष रहें तो बरतनमें, ३ शेष रहे तो जलमें, ४ बचें तो अंतरिक्षमें जानिये, ५ बचें तो तुसमें, ६ बचें तो गोवरमें, ७ बचें तो भस्ममें वस्तु जानिये.

दिवारात्रिमुहूर्तान्याह.

शिवोहिर्मित्रमितरौ वस्वम्भाविश्ववेधसः । विधिरिन्द्रोऽथ शक्राग्नीरक्षोऽब्धीशोर्यमा भगः ॥ १॥ मुहूर्त्तेशा इमे प्रोक्ता दिवा पंचदशक्रमात् । मुहूर्ता रजनौ शंभुरजैकचरणाश्रयः ॥ २ ॥ दस्रान्तश्चादितेर्जीवो विश्वकौतक्षमारुतैः । दिनमानस्य तिथ्यंशो रात्रेरपि मुहूर्तकाः ॥३॥ नक्षत्रनाथतुल्येऽस्मिन्स्थितकार्यात् खभोदितम् । दिनमध्येऽभिजिन्मध्ये दोषसंघेषु सत्स्वपि ॥ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ॥ ४ ॥

अथ रव्यादिवारे त्याज्यमुहूर्त्ताः.

अर्यमा भानुमद्वारे चन्द्रे हि विधिराक्षसौ । पित्राग्नी कुजवारे तु चन्द्रपुत्रे तथाऽभिजित् ॥ पित्रब्राह्मौ भृगोर्वारे राक्षसाम्बू गुरोर्दिने । रौद्रसार्पौ शनेरह्नि इमे त्याज्या मुहूर्त्तकाः ॥ १ ॥

दिवारात्रिचक्र.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	सं
शिव	सर्प	मित्र	पितर	वसु	अम्बु	विश्वे	विधि	विधि	इंद्र	इंद्रा.	रक्षा.	वरुण	अर्य.	भग	मुहू.
आ०	श्लेषा	अनु:	मघा	धनि.	पूषा	उत्त.	ऽभि.	रोहि	ज्ये.	वि.	मूल	शत	उ.	पू०	०
रुद्र	अजै.	अहि	पूषा	दस्र	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चंद्र	अदि.	गुरु.	वि.	सूय	त्वा.	वायु	रात्रि
आ०	पू भा	उ.	रेवती	अश्वि	भर	कृत्ति	रोहि	मृग	पुन	पुष्य	श्रव	हस्त	चि.	स्वा	नक्ष.

अथ रव्यादिवारे त्याज्यचक्र.

सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वाराः
अर्यमा	ब्रह्माराक्ष.	पितृअग्नि	ऽभिजित्	राक्षसअंबु	पितृब्रह्म	शिवसर्प	मुहूर्ताः
उ० फा०	रोहिणी	मघाकृत्ति	ऽभिजित्	मूलपूर्वषा	मघा. गे	आर्द्राश्लेषा	नक्षत्र
दिन १४	दिन९।१२ रा. ८।	दि. ४। रा. ७।	दिन. ८ रा. ०	दिन १२। रा ६	दिन ४।८ रा: ९	दिन १।२ रा. १	दिनरात्रि

मद्य काढनेका मुहूर्त.

रौद्रे पैत्र्ये वारुणे पौरुहूते याम्ये सार्प्पे नैर्ऋते चैव धिष्ण्ये ।
पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो मद्यारम्भः कालविद्भिःपुराणैः॥१॥

टीका—आर्द्रा मघा शतभिषा ज्येष्ठा भरणी आश्लेषा मूल तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें प्रथम मद्य काढनेका प्रारंभ करे.

नवीनवस्त्रधारण.

रोहिणीषुकरपंचकेऽश्विभे त्र्युत्तरेपि च पुनर्वसुद्वये ।
रेवतीषु वसुदैवतेच भे नव्यवस्त्रपरिधानमिष्यते ॥ १ ॥

टीका—रोहिणी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा आश्विनी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्ठा इनमें नवीन वस्त्र धारण करे और करावे.

मोतीसुवर्णमणिरक्तवस्त्रधारण.

नासत्यपौष्णवसुभे करपञ्चके च मार्त्तण्डभौमगुरुमन्त्रिशशाङ्कवारे । मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमदन्तशङ्खरक्ताम्बराणि विधृतानि भवन्ति सिद्धौ ॥ १ ॥

टीका—अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा इन नक्षत्रोंमें और भौम रवि गुरु शुक्र सोम इन वारोंमें मोती सुवर्ण मणि मूंगा हस्तिदंतका चूडा नूतन शंख पूजामें लाना रक्तवस्त्र धारण करना शुभ जानिये.

पुंसवनके नक्षत्र.

श्रवणः सकरः पुनर्वसुर्निर्ऋतेर्भं च सपुष्यको मृगः ।
रविभूसुतजीववासराः कथिताः पुंसवनादिकर्मसु ॥ १ ॥

टीका—श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगाशिर और रवि भौम गुरु ये ३ वार पुंसवनादिक कर्ममें उक्त हैं.

कर्णवेधन.

पौष्णवैष्णवकराश्विनिचित्रापुष्यवासवपुनर्वसुमैत्रे ।
सैन्दवे श्रवणवेधविधानं निर्दिशन्ति मुनयो हि शिशूनाम्॥१॥

टीका—रेवती श्रवण हस्त आश्विनी चित्रा पुष्य धनिष्ठा पुनर्वसु अनुराधा मृगाशिर इनमें बालकका कर्णवेध करावे.

अन्नप्राशन.

रेवतीश्रुतिपुनर्वसुहस्तब्राह्मतः पृथगपि द्वितयेच ।
त्र्युत्तरेषु गदितं हि नवान्नप्राशनं तु ऋषिभिः पृथुकानाम् ॥१॥

टीका—रेवती श्रवण पुनर्वसु हस्त रोहिणी मृगशिर आर्द्रा तीनों उत्तरा इनमें ऋषियोंने आद्यमें और नया अन्न भक्षण करना कहा है.

क्षौरकर्म.

पुष्ये पौष्णे चाश्विनीष्वैन्दवे च शाके हस्ताद्येत्रिके भेष्वदित्याः ।
क्षौरं कार्यं वैष्णवाद्यत्रये च मुक्त्वा भौमादित्यपातङ्गिवारान् ॥१॥

टीका—पुष्य रेवती अश्विनी मृगशिर ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रोंमे श्मश्रुकर्म कराइये और ये वार वर्जित हैं भौम रवि शनि इनमें न करे.

दन्तबन्धन.

येषु येषु प्रशंसन्ति क्षौरकर्म महर्षयः ।
तेषु तेष्वैव शंसन्ति नखदन्तादिलेखनम् ॥ १ ॥

टीका-दंतबंधन और वेधना दांत और नख काटना, जो नक्षत्र ऊपरके श्लोक क्षौरकर्ममें कहे हैं उन्हींमें करना.

आवश्यक श्मश्रुकृत्य.

आज्ञया नरपतेर्द्विजन्मना दाहकर्म महर्षयः ।
बन्धमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम् ॥१॥

टीका-राजा अथवा ब्राह्मणोंकी आज्ञा और दाहक्रिया करनेमें सूतकके अंतदिनमें यज्ञकी दीक्षामें बंधनसे छूटनेमें अवश्य क्षौर कर्म करानेसे पुष्टिका देनेवाला होता है.

स्थूलविचार.

ताराशुद्धं क्षौरं रविगुरुशुद्धा व्रतदीक्षा ।
शुक्रविद्धा यात्रा सर्वं शुद्धं शशाङ्केन ॥ १ ॥

टी०—श्मश्रु करावनेमें नक्षत्रताराशुद्धि, व्रतग्रहणदीक्षामें गुरुशुद्धि, यात्राको जानेमें शुक्रशुद्धि और सर्वकर्ममें चंद्रशुद्धि अवश्य देखना.

श्मश्रुकर्ममें वर्जितयोग.

भद्रापक्षांतरिक्ताव्रतदिनवसुभूश्राद्धषष्ठीषु रात्रौ संध्यापातार-
भास्वच्छनिषु घटधनुःकर्ककन्यागतेऽर्के ॥ जन्मर्क्षे जन्ममासे
सुरदिनयजने भूषितो ग्रामयायी भुक्तोभ्यक्तोभिषिक्तो समदि-
नरजिगः श्मश्रुकार्यं न कुर्यात् ॥ १ ॥

टी०—भद्रा, पौर्णिमा, अमावास्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, व्रतदिवस, अष्टमी, प्रतिपदा, श्राद्धदिवस, षष्ठी, रात्रीमें, सायंकालको, व्यतीपातादि दुष्टयोग, भौमवार, रविवार, शनिवार, कुंभ, धनु, कर्क, कन्या, इन चार राशिका सूर्य हो, जन्मनक्षत्र और जन्ममास, हवनादिकर्म हो तब अलंकारादि धारण कियेछते और प्रस्थान करना होय उसदिन, भोजन कियेपीछे, अभ्यगस्नान किये पीछे मंगलाभिषेक हुयेबाद, स्त्री रजस्वला हो, समरदिन, ये योगमें श्मश्रु करवावना नहीं.

मौंजीबंधन.

सौम्येपौष्णेवैष्णवेवासवाख्येहस्तस्वातीत्वाष्ट्रपुष्याश्विभेषु ॥
ऋक्षेदित्यामेखलाबंधमोक्षौसंस्मर्येतेनूनमाचार्यवर्यैः ॥ १ ॥

टी०—मृग, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, स्वाती, चित्रा, पुष्य, अश्विनी, पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें मौंजीबंधन (जनोई) और समावर्तन ये दोनों कार्य करना.

विवाहयोग्यनक्षत्र.

मूलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णमारुतमघोत्तरान्वितैः ॥
निर्विधाभिरुडुभिर्मृगीदृशां पाणिपीडणविधिर्विधीयते ॥ १ ॥

टी०—मूल, अनुराधा, मृग, रोहिणी, हस्त, रेवती, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, यह निर्वेध होवें तब इन नक्षत्रोंमें विवाह करना.

अग्न्याधानमुहूर्त.

प्राजापत्ये पूषभे सद्विदैवे पुष्ये ज्येष्ठास्वैंदवे कृत्तिकासु ॥
अग्न्याधानंसूत्तराणांत्रयेपिश्रेष्ठैःप्रोक्तंप्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥ १ ॥

टी०—रेवती, रोहिणी, विशाखा, पुष्य, ज्येष्ठा, मृग, कृत्तिका, तीनों उत्तरा, इनमें प्रथम अग्निहोत्रको प्रारंभ करना.

विद्यारंभमेंयोग्यनक्षत्र.

मृगादिपंचस्वपि भेषु मूले हस्तादिके च त्रितयेऽश्विनीषु ॥
पूर्वात्रये च श्रवणे च तद्वद्विद्यासमारंभमुशंति सिद्ध्यै ॥ १ ॥

टी०-मृग, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मूल, हस्त, चित्रा, स्वती, अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, श्रवण इन नक्षत्रोंमें विद्यारंभ करना सिद्धिप्रद है.

गणितारंभ.

शतद्वयेनुराधार्द्रे रोहिणीरेवतीकरे ॥
पुष्यर्जीवे बुधे कुर्यात्प्रारंभं गणितादिषु ॥ १ ॥

टी०-शततारका, पूर्वाभाद्रपदा, अनुराधा, आर्द्रा, रोहिणी, रेवती, हस्त, पुष्य इन नक्षत्रोंमें और गुरु, बुध इन वारोंमें गणितविद्याका प्रारंभ शुभ होय.

अथ व्याकरणारंभ.

रोहिण्यां पंचके हस्तात्पुनर्भे मृगभेऽश्विभे ॥
पुष्ये शुक्रेज्यविद्वारे शब्दशास्त्रं पठेत्सुधीः ॥ १ ॥

टी०-रोहिणी, हस्त, चित्रा स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, मृग, अश्विनी, पुष्य, इन नक्षत्रोंमें और शुक्र, गुरु, बुध, इन वारोंमें व्याकरणविद्या पढनेका प्रारंभ करना.

अथ रत्नपरीक्षा.

पुनर्भे शतहस्तर्क्षे श्रवे ज्येष्ठे परीक्षणम् ॥
रत्नानामष्टमीं भूतं हित्वा भौमं शनैश्चरम् ॥ १ ॥

टी०-पुनर्वसु, शततारका, हस्त, श्रवण, ज्येष्ठा, इन नक्षत्रोंमें और अष्टमी चतुर्दशी इन तिथियोंको छोडके रत्नपरीक्षा करना शुभ होय.

अथ नटाक्रिया.

मृगार्द्रारोहिणीपुष्ये पुनर्भे श्रवणत्रये ॥
चित्रात्रयोत्तरामूले कृत्यं सन्नृत्यजीवनम् ॥ १ ॥

टी०-मृग, आर्द्रा, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, चित्रा, ३ उत्तरा, मूल, इन नक्षत्रोंमें नृत्यजीवनकृत्यको प्रारंभ करना.

अथान्नादिपाकक्रिया.

मूलचित्रानुराधासु विशाखाग्निमृगेषु च ॥
त्र्युत्तरारोहिणीज्येष्ठारेवतीषु पचिक्रिया ॥ १ ॥

टी०--मूल, चित्रा, अनुराधा, विशाखा, कृत्तिका, मृग, ३ उत्तरा, रोहिणी, ज्येष्ठा, रेवती, इन नक्षत्रोंमें पाकादिक क्रियाका प्रारंभ करना.

अथ रससेवन.

हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधांत्ये श्रुतित्रये ॥
पुनर्भे मृगशीर्षेऽर्के भौमेज्ये रसभक्षणम् ॥ १ ॥

टी०--हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पुनर्वसु, मृग, हस्त इन नक्षत्रोंमें और भौम, गुरु इन वारोंमें रसभक्षण का प्रारंभ करना.

वनचारीकृत्य.

ज्येष्ठास्वात्यश्विनीपुष्ये पुनर्भे रोहिणीकरे ॥
त्र्युत्तरासु शुभं कृत्यं शृंगिणां वनचारिणाम् ॥ १ ॥

टी०--ज्येष्ठा, स्वाती, अश्विनी पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, हस्त, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रोंमें शृंगी और वनचारीकृत्य करना उत्तम होय.

अथ पक्षीकृत्य.

शुभाहे सुखौ तिर्यङ्मुखे चोर्ध्वमुखे च भे ॥
सारिकाशुकमुख्या नां पक्षिणां कृत्यमुत्तमम् ॥ १ ॥

टी०--शुभदिनमें, उत्तम रविबलमें, तिर्यङ्मुख नक्षत्रोंमें, ऊर्ध्वमुखनक्षत्रोंमें, सारिका (मैना) शुकादिपक्षीका कृत्य करना शुभ होय.

अथ मल्लक्रिया.

ज्येष्ठार्द्राभरणीपूर्वामूलाश्लेषामघाभिधे ॥ जयापूर्णासु सद्वारे सार्के शीर्षोदयेंगके ॥ सखेटैः केंद्रगैः सार्कैर्मल्लक्रीडा शुभावहा ॥ १ ॥

टी०--ज्येष्ठा, आर्द्रा, भरणी, ३ पूर्वा, मूल, आश्लेषा, मघा इन नक्षत्रोंमें जया, पूर्णातिथियोंमें, शुभवारमें, सूर्यसहित शीर्षोदयलग्नमें, सूर्यसहित शुभग्रह केंद्रमें होय ऐसे समयमें मल्लक्रीडा शुभ जानना.

अथ सेतुबन्धः

त्र्युत्तरारोहिणीस्वातीमृगेऽर्के मंगले गुरौ ॥
सेतूनां बन्धनं शस्तं शुभे लग्ने शुभेक्षितम् ॥ १ ॥

टी०—३उत्तरा, रोहिणी, मृग इन नक्षत्रोंमें और रवि, मंगल, गुरुवारोंमें, शुभलग्न जो शुभग्रहों करके अवलोकित हो ऐसेमें सेतुबंधन (पूल) इत्यादि बनाना शुभ होय.

अथ कुलालकृत्यं.

पुनर्वसु द्वये हस्तत्रयेंत्ये रोहिणीमृगे॥मित्रे श्रुतौ पौरुहूते ससूर्ये सौम्यवासरे ॥ तथा चरोदये प्रोक्ता कुंभकारक्रिया बुधैः ॥ १ ॥

टीका—पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, रोहिणी, मृग, अनुराधा, श्रवण, ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंमें सूर्यसहित शुभवारोंमें, चरलग्नोंमें, कुंभकारकृत्य करना शुभ होता है.

अथकाष्ठशिल्पकृत्य.

हस्तषट्केऽश्विनीपुष्ये रेवत्यां श्रवणत्रये ॥
पुनर्भे रोहिणीयुग्मेसूत्रधारीक्रियोत्तमा ॥ १ ॥

टी०—हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्विनी, पुष्य, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पुनर्वसु, रोहिणी, मृग इन नक्षत्रोंमें सूत्रधारी (बढही, सिलावटी) का कर्म करना शुभ होता है.

अथ स्वर्णकारकृत्य.

श्रवत्रयेश्विनीपुष्येमृगेहस्तचतुष्टये ॥ पुनर्वसौकृत्तिकायां शुभेलग्नेतिथावपि ॥ १ ॥ हेमकारक्रिया शस्ताहित्वाबुधशनैश्चरौ ॥

टी०—श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, अश्विनी, पुष्य, मृग, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें, शुभतिथिमें, (सोनार) का कर्म करना शुभ होय; परंतु बुध शनि इनको त्यागना.

अथ चौरकृत्य.

विशाखाकृत्तिकापूर्वामूलार्द्राभरणीमघे ॥ आश्लेषाज्येष्ठयोर्मं-

द्भौमयोःशाकुनेबले ॥१॥ लग्ने वा दशमे भौमेचौर्यंसद्द्रव्यलब्धये॥

टी०—विशाखा, कृत्तिका, ३ पूर्वा, मूल, आर्द्रा, भरणी, मघा, आश्लेषा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंमे और शनि, मंगल इन वारोंमें, शकुनबलीमें, गमन करे लग्नमें अथवा दसवें मंगल होय ऐसे समयमें उत्तम द्रव्यलब्धिके अर्थ चौर्यकर्म करे तो सिद्धि होय.

अथ रत्नयुक्तभूषाघट्टनम्.

कृत्तिकादित्रये हस्तपंचकेरेवतीद्वये ॥ श्रुतित्रयेपुनर्वस्वोःपुष्यभे चोत्तरात्रये ॥ १ ॥ कुजेऽर्केरत्नयुक्तभूषाघट्टनंशुभवासरे ॥

टी०—कृत्तिका, रोहिणी, मृग, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, रेवती, आश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, ३ उत्तरा इन नक्षत्रोंमें भौम रवि तथा शुभवारोंमें, रत्नयुक्त भूषण बनावनेका प्रारंभ करना तो शुभ होय.

औषध लेनेमें योग्य नक्षत्र.

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रयेच ॥
मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदन्ति सन्तः ॥ १ ॥

टी०—रेवती, आश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, अनुराधा, मूल, मृग इन नक्षत्रोंमें औषध ग्रहण करना.

अथ तप्तलोहदाहः

पाशिचित्राश्विनीमूले विशाखाकृत्तिकार्द्रभे ॥
अहीन्द्रभेकुजेऽर्केगेक्रूरेलोहाग्निभेषजम् ॥ १ ॥

टी०—शतभिषा, चित्रा, आश्विनी, मूल, विशाखा, कृत्तिका, आर्द्रा, ज्येष्ठा, आश्लेषा इन नक्षत्रोंमें और भौम, सूर्य इनवारोंमें क्रूरलग्नोंमें (रोगपर) अग्निसे तप्तलोहसे, दाह देना शुभ होय.

उत्पन्नहुए रोगका शुभाशुभज्ञान.

स्वात्याश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्यवारे॥
नंदारिक्तास्वेवरोगप्रवृत्तौमृत्युर्ज्ञेयः शंकरोरक्षितापि ॥ १ ॥

टी०—स्वाती, आश्लेषा, आर्द्रा, तीनोंपूर्वा, ज्येष्ठा, भौम, शनि, रविवार नंदातिथि, (प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी) रिक्ता, (चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी)

इनम यदि रोग उत्पन्न हुवा तो मृत्यु जानना. यदि शंकरजी रक्षणकर्ता होवें तो भी जीनेका नहीं.

रोगमुक्त होनेका प्रमाण.

व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णेसमैत्रे प्राणत्राणंजायतेतस्यकृच्छ्रात्॥
वैश्वेसौम्ये रोगमुक्तिस्तु मासाद्विंशत्यःस्याद्वासराणांमाघसु ॥१॥

टीका–रेवती अथवा अनुराधा इनमें रोग उत्पन्न होय तो बडे कष्टसे प्राणका रक्षण होताहै. उत्तराषाढा, मृग, होय तो एक महिनेसे आराम होगा और मघा होवे तो २० दिन पीडा भोगवे.

पक्षाद्धस्तेवासवेसाद्धिदैवेमूलेदास्रेकृत्तिकायांनवाहात् ॥
याम्येत्वाष्ट्रेवैष्णवेवारुणेचनैरुज्यंस्यान्नूनमेकादशाहात् ॥ २॥

टीका–हस्तनक्षत्रमें रोग उत्पन्न हुवा होय तो १५ दिनसे आराम होगा. धनिष्ठा, विशाखा, मूल, अश्विनी, कृत्तिका होयतो ९ दिन पीडा होगी. भरणी चित्रा, श्रवण, शततारका, होय तो ११ दिन पीडा भोगेगा.

आहिर्बुध्न्येतिष्यसंज्ञेसभागेप्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् ॥
रोगान्मुक्तिर्जायतेमानवानांनिःसंदिग्धंजल्पितंगर्गमुख्यैः ॥ ३ ॥

टीका–उत्तराभाद्रपदा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, अभिजित्, पुनर्वसु, इन नक्षत्रोंमें रोग उत्पन्न हुवा होयतो ७ दिनसे पीडा दूरहोगी. ऐसा गर्गादिमुनियोंने कहा है.

रोगमुक्तिस्नान.

इन्दोर्वारेभार्गवेचध्रुवेषुसार्पादित्यस्वातियुक्तेषुभेषु ॥
पित्र्येचान्त्येचैवकुर्यात्कदाचिन्नैवस्नानंरोगमुक्तश्चजन्तुः ॥ १ ॥

टी०–सोमवार, शुक्रवार और ध्रुवनक्षत्र याने रोहिणी, तीनों उत्तरा, आश्लेषा, पुनर्वसु और स्वाती और मघा, रेवती, इनमें रोगमुक्त मनुष्यनें स्नान करना नहीं.

रोगमुक्तिस्नानमुहूर्त.

लग्नेचरेसूर्यकुजेज्यवारे रिक्तातिथौचंद्रबलेचहीने ॥
केन्द्रत्रिकोणार्थगनेचपापेस्नानंहितंरोगविमुक्तिकानाम् ॥ १ ॥

टीका-चर लग्न याने मेष, कर्क तूल, मकर, ये लग्न. रवि, भौम गुरु ये वार और रिक्ता (चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी) तिथि और चंद्रबल न रहे, केंद्रत्रिकोणमें पापग्रह होवे तो रोगमुक्तिस्नान हितकारी होगा.

वृक्षादिलगानेकामुहूर्त.

सावित्रतिष्याश्विनिवारुणानिमूलंविशाखाचमृदुध्रुवाणि ॥
लतौषधीपादपरोपणेषु शुभानि भानि प्रतिपादितानि ॥ १ ॥

टी०-हस्त, पुष्य, आश्विनी, शततारका, मूल, विशाखा और मृदु, ध्रुव ये नक्षत्र पीछेके कोष्टकमें लिखेहैं सो लेना. इनमें वृक्षादि लगाना शुभदायक है.

कूपारंभकेनक्षत्र.

हस्तत्रयंवासववारुणंच शैवंपित्र्यंतिस्रएवोत्तराश्च ॥
प्राजापत्यंचापिनक्षत्रमाहुः कूपारंभेश्रेष्ठमाद्यामुनीन्द्राः ॥ १ ॥

टीका-हस्त, चित्रा, स्वाती, धनिष्ठा, शततारका, आर्द्रा, मघा तीनोंउत्तरा, और रोहिणी, इननक्षत्रोंमें कूपारंभ करना ऐसा आद्य मुनियोंका कहनाहै.

द्रव्य देना और लेना.

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्तद्रविणंप्रमुक्तम् ॥
हस्तेनविन्यस्तवसुप्रनष्टंनलभ्यतेतान्नियतंकदाचित् ॥ १ ॥

टी०-साधारण, उग्र, ध्रुव, दारुणसंज्ञक नक्षत्र है. इननक्षत्रोंमें दूसरेको द्रव्यदिया और आरण रखे तो लाभ नहीं होगा. और जो वस्तु खोगई होय सो मिलेगी नहीं.

ऋणग्रहणनक्षत्र.

मैत्रेऽश्विमेत्र पुष्येचद्वीशेत्रश्रवणत्रये ॥
पुनर्वसौ प्रशंसन्तिधनादिनिधिवर्धनम् ॥ १ ॥

टी०-चित्रा, अनुराधा,मृग, रेवीता, अश्विनी, पुष्य, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु इननक्षत्रोंमें ऋण देना प्रशस्त है.

अन्यच्च--हस्तेऽर्कवारे संक्रान्तौयद्दणंस्यात्कुलेषुच ॥
वृद्धियोगेतथाज्ञेयमृणच्छेदंतुकारयेत् ॥ १ ॥

टी०-हस्तनक्षत्रमें, रविवारमें, संक्रांतिके दिनमें, वृद्धियोगमें, ऋण नहीं लेना.

लेनेसे वह ऋण कुलपरंपरामें चलाजाताहै और इनही दिनोंमें ऋणच्छेद करनेसे शीघ्रही ऋणनाश होजाताहै.

अन्यच्च.

ऋणंभौमेनगृण्हीयान्नदेयंबुधवासरे ॥
ऋणच्छेदं कुजेकुर्यात्संचयंसोमनन्दने ॥ १ ॥

टी०–मंगलवारको ऋण (कर्जा) किसीसे लेना नहीं और बुधको देना नहीं. ऋणच्छेद कहिये ऋणका अदा करना मंगलको और संग्रह करना बुधको प्रशंस्तहै.

हत्तीलेनेकेनक्षत्र.

हस्तेच चित्रासुतथाश्विनीषुस्वातौचपुष्येचपुनर्वसौच ॥
प्रोक्तानिसर्वाण्यपिकुंजराणांकर्माणिगर्गप्रमुखैः शुभानि ॥ १ ॥

टी०–हस्त, चित्रा, आश्विनी, स्वाता, पुष्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रोंपर हाथी लेना या देना, अलंकार पहिरावना, इत्यादि काम करना.

घोडा लेना या लावना.

पुष्यश्रविष्ठाश्विनिसौम्यभेषुपौष्णानिलादित्यकराव्हयेषु ॥
सवारुणर्क्षेषुबुधैःस्मृतानि सर्वाणिकार्याणितुरंगमानाम् ॥ १ ॥

टी०–पुष्य धनिष्ठा आश्विनी मृग रेवती स्वाती पुनर्वसु हस्त शततारका इननक्षत्रोंपर घोडा देना या लावना शुभहै. या उनकूं अलंकार करावना ये सब शुभदायक हैं.

गौआदिपशु देना लेना इनमें वर्ज्य.

चित्रोत्तरावैष्णवरोहिणीषुचतुर्दशीदर्शदिवाष्टमीषु ॥
ग्रामप्रवेशंगमनंविदध्याद्धीमान्पशूनांनकदाचिदेव ॥ १ ॥

टी०–चित्रा, तीनों उत्तरा, श्रवण, रोहिणी, चतुर्दशी, अमावास्या, दिवा, अष्टमी इनमें पशुओंको बाहेरगांम भेजना; ग्रामसे ल्यावना नहीं.

गो लेनेवेचनेको वर्ज्य.

शुक्रवासवकरेषुविशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ॥
अश्विपूषभयुतेषुविधेयोविक्रयक्रयविधिःसुरभीणाम् ॥ १ ॥

टी०—ज्येष्ठा, धनिष्ठा, हस्त, विशाखा, पुष्य, शततारका, पुनर्वसु, अश्विनी, रेवती, इननक्षत्रोंमें गौका क्रयविक्रय करना नहीं.

तृणकाष्ठादि संग्रह करना.

वासवोत्तरदलादिपंचकेयाम्यादिग्गमनवेश्मगोपनम्॥
प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहंशय्यकावितरणंचवर्जयेत् ॥ १ ॥

टी०—धनिष्ठाके उत्तरार्धसे रेवतीतक (पांच नक्षत्रोंमें.) दक्षिण दिशामें गमन, गृह तयार करना, प्रेतदाह, तृणकाष्ठादिसंग्रह, खटवा, पीलंग विगेरे विणना, यह सब कार्य वर्ज्य करना.

हल जोतनेमें नक्षत्र.

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुमूलेमघाविशाखासहितेषुभेषु ॥
हलप्रवाम्प्रथमंविदध्यान्निरोगमुष्यान्वितसौरभेयैः ॥ १ ॥

टीका०—मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर इस संज्ञाके नक्षत्र और मूल, मघा, विशाखा इन नक्षत्रोंमें निरोगी बैलोंका मूंह बांधकर हल जोतना शुभ होय.

बीज बोनेके नक्षत्र.

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषुचित्रानुराधामृगरेवतीषु ॥
स्वातीधनिष्ठासुमघासुमूलेबीजोप्तिरुत्कृष्टफलप्रतिष्ठा ॥ १ ॥

टी०—हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, मृग, रेवती, स्वाति, धनिष्ठा, मघा, मूल, इन नक्षत्रोंमें बीज बोना.

सर्पदंशको वर्ज्य नक्षत्र.

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पान्तकार्द्रासुभुजंगदंष्ट्रः॥
सवैनतेयेनसुरक्षितोपिप्राप्नोतिमृत्योर्वदनंमनुष्यः ॥ १ ॥

टी०—कृत्तिका, मूल, मघा, विशाखा, आश्लेषा, रेवती, आर्द्रा, इनक्षत्रोंमें सर्पने काटा होय तो यदि गरुडभी संरक्षण कर्ता होय तोभी बचे नहीं.

गायन सीखनेको नक्षत्र.

हस्तस्तिष्योवासवंचानुराधाज्येष्ठापौष्णंवारुणंचोत्तराश्च ॥
पूर्वाचार्यैःकीर्तितश्चंद्रवर्तीनृत्यारंभेशोभनोऋक्षवर्गः ॥१॥

टी०-हस्त, पुष्य, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवती, शततारका, तीनों उत्तरा और चंद्रकी अनुकूलता देखकर नृत्यगीतका प्रारंभ करना।

राज्याभिषेक योग्यनक्षत्र.

मैत्रशाक्रकरपुष्यरोहिणीवैष्णवेषुतिसृषूत्तरासु च ॥
रेवतीमृगशिराश्विनीषु च क्ष्माभूतांसमभिषेक इष्यते ॥१॥

टी०-अनुराधा, ज्येष्ठा, हस्त, पुष्य, रोहिणी, श्रवण, तीनों उत्तरा, रेवती, मृग, अश्विनी, इन नक्षत्रोंमें राजाको प्रथम राज्याभिषेक करना।

राजदर्शननक्षत्र.

सौम्याश्विनीतिष्य श्रुतिर्धनिष्ठाहस्तध्रुवत्वाष्ट्रभपूषभानि ॥
मैत्रेण युक्तानि नरेश्वराणां विलोकने भानि शुभप्रदानि॥१॥

टी०-मृग, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, ध्रुव, चित्रा, रेवती, अनुराधा इन नक्षत्रोंपर राजाका दर्शन लेना शुभदायक है.

अथ दुकूलम्.

जीवेर्केऽब्जे बुधे शुक्रे वस्त्रोक्तर्क्षे श्रवान्विते ॥
स्थिरेंगे सद्ग्रहैर्युक्ते सदुकूलस्य धारणम् ॥ १ ॥

टीका-गुरु, रवि, चंद्र, बुध, शुक्र, इनवारोंमें श्रवणयुक्त वस्त्रधारणके नक्षत्रोंमें शुभग्रहयुक्त स्थिरलग्नमें दुकूल (दुपट्टा इत्यादि.) धारण करना शुभहै.

अथ कौशेयम्.

अश्विन्यापूषभेहस्तेरोहिण्यांश्रवणत्रये ॥ पूर्वोत्तरेपुनर्वस्वोःस्वातौ पुष्येमघाभिधे॥ १ ॥ रवौचंद्रेगुरौधार्यंकौशेयवसनंजनैः ॥

टी०-अश्विनी, रेवती, हस्त, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शताभिषा ३ पूर्वा, ३ उत्तरा पुनर्वसु, स्वाती, पुष्य, मघा इन, नक्षत्रोंमें और रवि, चंद्र, गुरु इन वारोंमें कौशेय (रेशमी) वस्त्र धारण करना।

अथ रोमजवस्त्रम्.

नीलवस्त्रोदिते धिष्ण्ये रेवतीपुष्ययोरपि ॥
शुक्रे शनैश्चरेऽर्केपि धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥ १ ॥

टी०-नीलवस्त्र धारणमें कहे नक्षत्रोंमें और रेवती, पुष्य, शुक्र शनिश्चर, रवि इनवारोंमें रोमज (दुशाला कामला इत्यादि.) वस्त्र धारण करना.

अथ सतूलकंचुकधारणम्.

पुष्योत्तरानुराधान्त्ये धनिष्ठाश्विकरत्रये ॥
रोहिण्यां गुरुशुक्राब्जे देहे दुर्गघृतिः शुभा ॥ १ ॥

टी०--पुष्य, ३ उत्तरा, अनुराधा, रेवती, धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती रोहिणी, इन नक्षत्रोंमें और गुरु, शुक्र, चंद्र इनवारोंमें शरीरमें रुईदार वस्त्रधारण करना.

अथ वस्त्रनिर्माणम्.

रोहिणीरेवतीचित्रानुराधामृगभोत्तरे ॥
शनिं हित्वा विदध्याच्च तंतुभिः पटसाधनम् ॥ १ ॥

टी०--रोहिणी, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मृग, ३ उत्तरा, इन नक्षत्रोंमें और शनिवारको छोडके सब वारोंमें वस्त्रबनवनेका प्रारंभ करना शुभ होय.

द्वितीयाकेचंद्रोदयकीफल . ति.

रौद्राहियाम्यानिलवारुणेन्द्रान्याहुर्जघन्यानितथाबृहंति ॥
ध्रुवद्विदैवादितिभानिनूनंसमानिशेषाणिपुनर्मुनीन्द्रैः ॥ १ ॥
बृहत्सुधान्यंकुरुतेसमर्घंजघन्यधिष्ण्येभ्युदितं महर्घम् ॥
समेषुधिष्ण्येषुसमंहिमांशुर्वदन्तिसंदिग्धमिदंमहान्तः ॥ २ ॥

टी०--आर्द्रा, आश्लेषा, भरणी, स्वाती, शततारका, ज्येष्ठा, ये नक्षत्र जघन्य कहे जाते हैं. इनपर मासके आदिमें चंद्रोदय होवे तो धान्य महंगा होवेगा. ध्रुव कहिये तीनों उत्तरा, रोहिणी, और विशाखा, पुनर्वसु ये नक्षत्र बृहत् हैं. इनपर चंद्रोदय हुवा होयतो धान्य सस्ता होगा. और नक्षत्र सम जानना. इननक्षत्रोंपर चंद्रोदय हुवा होयतो धान्यका भाव सम रहेगा.

राश्यनुसार चन्द्रोदय फलम्.

मीनमेषोदितश्चंद्रः सततंदक्षिणोन्नता ॥ शेषोन्नताउत्तरस्यां
समतावृषकुंभयोः ॥ १ ॥ विड्वरंतुसमेचंद्रेदुर्भिक्षंदक्षिणोन्नते ॥
सुभिक्षंक्षेममारोग्यमुत्तराश्रितचन्द्रमाः ॥ २ ॥

टी०--मीन अथवा मेष इनराशिपर चंद्रोदय हुवा होय तो चंद्रकी दक्षिण दिशामें उन्नति होतीहै, दुर्भिक्षता होगी. मिथुनादि मकरराशितक चंद्रोदय हुवा

हो तो चंद्रकी उत्तरदिशामें उन्नति होगी, उससे सुभिक्ष, क्षेम आरोग्य रहे और वृष या कुंभराशिपर चंद्रोदय हुवा होय तो समता रहेगी. और राजाओंमें कलह, विड्वरता होगी.

पुष्य नक्षत्रके गुणदोष

परकष्टंनिखिलं निहन्तिपुष्योनखलुनिहन्तिपरंतुपुष्यदोषम् ॥
ध्रुवममृतकरोष्टमेपिपुष्येविहितमुपैतिसदैवकर्मसिद्धिम् ॥ १ ॥

टी०–पुष्य नक्षत्र दूसरे दोष और अष्टमस्थानस्थित चंद्रका दोष दूरकर कार्यकी सिद्धि करताहै.

अन्यच्च.

सिंहोयथासर्वचतुष्पदानांतथैवपुष्योबलवानुडूनां ॥
चंद्रेविरुद्धेप्यथगोचरेपिसिद्ध्यंतिकार्याणिकृतानिपुष्ये ॥ १ ॥

टी०–जैसा सिंह चतुष्पदोंमें बलवान् है, तैसा नक्षत्रोंमें पुष्यनक्षत्र बलवान् है. गोचरमें चंद्र चोथा, आठवां या बाराहवा होय तोभी पुष्य कार्य सिद्धि करताहै

अन्यच.

ग्रहेणविद्धोप्यशुभान्वितोपिविरुद्धतारोपिविलोमगोपि ॥
करोत्यवश्यंसकलार्थसिद्धिंविहायपाणिग्रहणंतुपुष्यः ॥ १ ॥

टी०–पुष्य ग्रहोंकरके विद्ध हो अथवा अशुभग्रहयुक्त हो अथवा विरुद्ध विलोमतारा हो तथापि पुष्य, विवाहके अतिरिक्त सकल कार्यसिद्धि करताहै.

योगप्रकरणम्.

प्रतिदिनका योगदेखनेका विचार.

वाक्पतेरर्कनक्षत्रंश्रवणाच्चांद्रमेवच ॥
गणयेत्तद्युतिंकुर्याद्योगः स्याद्दक्षशेषतः ॥ १ ॥

टी०–पुष्यसे चलतेहुए सूर्यनक्षत्रतक गिनना और श्रवणसे दिननक्षत्रतक गिनना. और दोनों संख्याको एकत्रकर२७ से भागदेना शेष रहे सो योग जानना.

योगोंके नाम.

विष्कंभः प्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥ अतिगडःसुकर्माचधृतिः शूलस्तथैवच ॥१॥ गंडोवृद्धिर्ध्रुवश्चैवव्याघातोहर्षणस्तथा ॥ वज्रंसिद्धिर्व्यतीपातोवरियान्परिघःशिवः ॥२॥ सि-

द्धिःसाध्यःशुभःशुक्लोब्रह्मैंद्रौ वैधृतिःक्रमात् सप्तविंशति-
योगास्तुकुर्युर्नामसमं फलम् ॥ ३ ॥

१	विष्कंभ	५	शोभन	९	शूल	१३	व्याघात	१७	व्यतिपात	२१	सिद्धि	२५	ब्रह्मा
२	प्रीति	६	अतिगं.	१०	गंड	१४	हर्षण	१८	वरियान	२२	साध्य	२६	ऐंद्र
३	आयु०	७	सुकर्मा	११	वृद्धि	१५	वज्र	१९	परिघ	२३	शुभ	२७	वैधृति
४	सौभाग्य	८	धृति	१२	ध्रुव	१६	सिद्धि	२०	शिव	२४	शुक्ल		

योगोंकी वर्ज्य घटिका.

विरुद्धसंज्ञाइहयेचयोगास्तेषामनिष्टःखलुपादआद्यः ॥
सवैधृतिस्तुव्यतिपातनामासर्वोप्यनिष्टःपरिघस्यचार्धम् ॥१॥
तिस्रस्तुयोगेप्रथमेचवज्रेव्याघातसंज्ञेनवपंचशूले ॥
गण्डेतिगंडेचषडेवनाड्यः शुभेषुकार्येषुविवर्जनीयाः ॥ २ ॥

टी०—इन सत्ताईस योगोंका फल नामानुरूप जानना. और उनमें निषिद्ध नामके योगहैं उनका पहिला पाद वर्जित करना. व्यतीपात, वैधृति ये सब त्यागना. परिघका पूर्वार्ध त्यागना. विष्कंभकी प्रथमकी तीनघडी, वज्रकी नवघडी, व्याघातकी नवघडी, शूलकी ५ घडी, गंडकी ६ घडी, अतिगंडकी ६ घडी, इस रीतिसे त्यागकर शुभकार्य करना.

अथ करणप्रकरणम्.

करण देखनेकी रीति.

गततिथ्यो द्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः ॥
एकोनाः सप्तकृच्छेषात्करणं स्याद्बवादिकम् ॥ १ ॥

टी०—शुक्लप्रतिपदासे जिस तिथिका करण देखना होय उस तिथिके पूर्वकी तिथितक जो संख्या होवे उसे दूनी करना, उसमेंसे एक कम कर ७ से भागना. शेष बचे सो उस तिथिका करण जानना. हरएक तिथिको दोदो करण भोगतेहैं.

करण नाम.

बवाह्वयंबालवकौलवाख्येततोभवेत्तैतिलनामधेयम् ॥ गराभिधानं वणिजंचविष्टिरित्याहुरार्याःकरणानिसप्त ॥ १ ॥ अन्तेकृष्णचतुर्दश्यांशकुनीदर्शभागयोः ॥ ज्ञेयंचतुष्पदंनागंकिंस्तुघ्नंप्रतिपद्दले॥२॥ स्वामी—इंद्रोब्रह्मामित्रनामार्यमाभूः श्रीःकीनाशश्चेतितिथ्यर्धनाथाः॥कल्युक्षाख्यौ सर्पवायूतथैव ये चत्वारस्तेस्थिराणांचतुर्णाम् ३

अथ कृत्यम्.

पौष्टिकस्थिरशुभानिबवाख्येबालवेद्विजहितान्यपिकुर्यात् ॥
कौलवेप्रमदमित्रविधानंतैतिलेशुभगताश्रमकर्म ॥ १ ॥
गरेचवीजाश्रयकर्षणानिवाणिज्यकेस्थैर्यवणिक्क्रियाश्च ॥
नसिद्धिमायातिकृतंचविष्टयांविषारिघातादिषुतत्रसिद्धिः ॥२
मंत्रौषधानिशकुनौतुसपौष्टिकानिगोविप्रराज्यपितृकर्मचतु-
ष्पदेपि ॥ सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्मनागेकिंस्तुघ्ननाम्नि
निखिलंशुभकर्मकार्यम् ॥ ३ ॥

टी०–इनका अर्थ स्पष्ट चक्रमें देखिये—

शुक्लतिथि ६०				कृष्ण तिथि ६०				नाम	स्वामी	कृत्य
पूर्वदल		उत्तर०		पूर्वदल		उत्तरद				
१	स्थिर.		०	०	०	०	०	किंस्तुघ्न	वायु	शुभकार्य करना.
१२	५	१८	१५	०	११	७	०	बव	इन्द्र	व्रत. उत्सव देवालय तलाव बांधना
२	९	५	१२	१	८	४	११	बालव	ब्रह्मा	ब्राह्मणका हित करना.
६	१३	२	९	५	१२	१	८	कौलव	मित्र	उन्माद और मित्रता करना.
३	१०	६	१३	२	९	५	१२	तैतिल	अर्थ	विवाहादि मंगलकार्य करना.
७	१४	३	१०	६	३	२	९	गरज	भूम	बीज बोना हलजोतना.
४	११	७	१४	३	१०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी	देवप्रतिष्ठा.मकान बनाना. दुकान बनाना
८	१५	४	११	७	१४	३	१०	विष्टि	यम	सबकाम वर्ज्य. विष अरिघात. यह क्रूर कार्य करना.
स्थिर		०	०	०	०	०	१४	शकुनि	कलि	मंत्रोपदेश. औषध. ग्रहपूजा करना.
स्थिर		०	०	३०	०	०	०	चतुष्पा	सांढ	गौ. भैंसलेना. राज्याभिषेक और पितृकार्य करना.
स्थिर		०	०	०	०	०	३०	नाग	सर्प	सौभाग्यकर्म लढाई करना. धैर्य रखना विद्याभ्यास ये करना.

कल्याणी.

तिथिनाम–कृष्णेग्निदिशयोरूर्ध्वंसप्तमीभूतयोरधः॥ शुक्लेवेदेशयो-
रूर्ध्वंभद्राप्राग्वसुपूर्णयोः ॥ १ ॥ मनुवसुमुनितिथिषुयुग्मदशाशि-

वगुणसंख्यासुतिथिषुपूर्वांत्या ॥ आयातिविष्टिरेषापृष्ठेशुभदापुर-स्त्वशुभा ॥२॥ शास्त्रार्थ--दिवासर्पमुखीभद्रारात्रौभद्राचवृश्चिकी॥ सर्पस्यचमुखंत्याज्यंरात्रौपुच्छंपरित्यजेत् ॥३॥ रात्रिभद्रायदान्हि स्याद्दिवाभद्रायदानिशि ॥ नतत्रभद्रादोषःस्यात्सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ ४ ॥ शरीरभाग॥नाड्यस्तुपंचवदनेऽथगलेतथैकाव-त्सेदशैकसहितानियतंचतस्रः ॥ नाभ्यांकटौषडथपुच्छगताश्च तिस्रोविष्टेर्बुधैरभिहितोंगहितोंगविभागएषः ॥ ५॥ स्थानफलम्-मुखेकार्यध्वस्तिर्भवतिमरणंचाथगलके क्षयःस्यात्संपत्तेर्हृदिक-टितटेबुद्धिविलयः ॥ कलिर्नाभौदेशेविजयमथपुच्छेचजगदुः शरीरेभद्रायाः पृथगितिफलंपूर्वमुनयः ॥ ६ ॥ चन्द्रः-मीनमेषा-लिककैंशशिनिनिवसतिस्वर्गसंस्थापिविष्टिः कन्यायांतौलि-संस्थेधनमिथुनगतेनागलोकेनिवासः ॥ कुंभेसिंहेवृषेवामकर-मुपगतेराजतेमृत्युलोके भद्राचंद्रप्रभाहिमकरतनयानोशुभालौ-किकस्यात् ॥७॥स्थानं--स्वर्गेभद्राभवेत्सौख्यंपातालेचधनागमः॥ मृत्युलोकेयदाभद्राकार्यसिद्धिस्तदानहि॥८॥वारानुसारनाम-सोमशुक्रेचकल्याणीशनौचैवतुवृश्चिकी॥गुरौपुण्यवतीज्ञेयाचा न्यवारेषुभद्रिका ॥ ९ ॥

टी०—इसका अर्थ स्पष्ट चक्रमें देखना.

तिथि		शास्त्रार्थ	सं.	स्थान	फल	चंद्र. स्थान		फल	वार	नाम
	३	इस तिथिकी ३० घटी उत-	३	पुच्छ	विजय	मीन			सोम	
कृष्ण		राधंकी भद्रा उसका नाम.				मेष	स्वर्ग में	सौख्य	शुक्र	कल्याणी.
	१०	वृश्चिकी यह दिनमें आवे	६	कटि	बुद्धि नाश	वृश्चि			शनि	
	४	तो ३ घटिका. पुच्छ त्या-				कर्क				वृश्चिकी
शुक्ल		गना सुख शुभ है. उत्त	४	नाभि हृदय	कलह	कन्या	पाताल में	धनप्रा.		
	११	राधं. याने रात्रि. ३० घटी	११		धन नाश	तुल				
	७	पूर्वार्धकी भद्रानाम सर्पिणी		कंठ	मरना	धन			गुरु	पुण्यवती
कृष्ण	१४	यह रात्रिको आवे तो	१			मिथु			रवि	
	८	पांच घटी मुख त्यागना		मुख	कार्य विध्वंस	कुंभ	मृत्यु लोक में	कार्य ना.		
शुक्ल		विध्वंसक आये पुच्छशुभ	५			सिंह			बुध	भद्रा
						वृषभ			सोम	
	१५	पूर्वार्धयाने दिन जानना.	३०			मकर				

भद्राकी उत्पत्ति.

दैत्येंद्रैःसमरेऽमरेषुविजितेष्वीशः क्रुधदृष्टवांस्तत्कायात्
किलनिर्गताखरमुखी लांगूलिनीचत्रिपात्।।विष्टिःसप्तभुजा
मृगेन्द्रगलकाक्षामोदरीप्रेतगादैत्यघ्नीमुदितैः सुरैस्तुश्रवणप्रांते
नियुक्तातुसा ॥ १ ॥

टीका–दैत्य और देवता इनके युद्धमें देवताओंका पराजय हुवा ऐसा देख महादेवजी क्रोध करतेभये. और अपने शरीरसे एक शक्ति उत्पन्न की, जो गर्दभमुखी, पुच्छवती, सप्तभुजा, गर्दन सिंहके सदृश, उदर कृश, प्रेतऊपर बैठीहुई वो दैत्योंको मारनेको लगी. इसको देवताओंने कानकेपास रक्खी सो कल्याणी प्रसिद्ध जानना.

वार और नक्षत्र ऊपरसेसंक्रांति नामादि देखनेका को.

घोरारवौध्वांक्ष्यमृतद्युतौचसंक्रांतिरारेचमहोदरीस्यात् ॥
मन्दाकिनीज्ञेचगुरौचमन्दामिश्रात्रगारौक्षसीचार्कपुत्रे ॥ १ ॥
नक्षत्र ऊपरसे नाम--उग्रक्षिप्रचरैर्मैत्रध्रुवमिश्राख्यदारुणैः ॥ ऋक्षैः
संक्रातिरर्कस्यघोरा द्याक्रमशोभवेत ॥ २ ॥ फल--ध्वांक्षीवै-
श्यान्सुखयतिमहोदर्यलंचौरसार्थान्घोराशूद्रानथनरपतीनेवमंदा-
किनीच।।नंदाख्याचद्विजवरगणान्मित्रकाख्यापशूंश्चचांडालां-
तांप्रकृतिमखिलाराक्षसीसंज्ञिताच ॥ ३ ॥ कालफल--
पूर्वाण्हकालेनृपतिद्विजेन्द्रान्मध्येदिनेचाथविशोपराण्हे ॥ शूद्रान्
खावस्तमिंतेप्रदोषेपिशाचकान्रात्रिचरान्निशीथे ॥ ४ ॥ नटा-
दिकांश्चापररात्रकालेप्रत्यूषकालेपशुपालकांश्च ॥ संक्रांतिरर्क-
स्यसमस्तलिंगान्प्रभातसंध्यासमयेनिहन्ति।।५।। वारपरत्वे मुख-
अर्के शुक्रे मुखं पूर्वे सौम्ये भौमे च दक्षिणे ॥ शनौ चंद्रे मुखं
पश्चाद्गुरौ चैवोत्तरामुखी ॥ ६ ॥

टी०–इसका अर्थ स्पष्ट चक्रमें देखना.

अथ दृष्टी.

चंद्रेगुरौदृष्टिर्विदिक्कृशानौसूर्येसितेनैर्ऋतिकोणदृष्टिः ॥
धात्रीसुतेदृक्पवनेनिरुक्ताबुधेशनौरुद्रादिशीक्षणंभवेत् ॥ १ ॥

टी०--इसका स्पष्ट अर्थ चक्रमें देखना.

वार.	नक्षत्र	नाम	फलश्रु. अच्छे.	काल	फलश्रुती बुरी	दिशासंमुख	दृष्टि
रवि	उग्र	घारा	शूद्रोंको सुख	वाह्नकाल	विप्रराजाके बुरा	पवका	नैर्ऋत्यदृ
सोम	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्योंको सुख	मध्याह्न	वैश्याको खराब	पश्चिमको	आग्नेयी
मंगळ	चर	महोदरी	चोरोंको सहाय	अपराह्न	शूद्रोंको खराब	दक्षिणको	व्वायव्यदृ
बुध	मैत्र	मंदाकिनी	राजाका सहाय	प्रदोष	पिशाचको बुरा	दक्षिणमें	इशान्यादि
गुरु	ध्रुव	नंदा	द्विजकों सुख	मध्यरात्र	राक्षसकों खराब	उत्तरमें	आग्नेयी
शुक्र	मिश्र	मिश्रा	पशूको सुख	अपरात्रि	नटोंको खराब	पूर्वमें	नैर्ऋत्यदि
शनि	दारुण	राक्षसी	चांडालको सुख	सूर्योदयव्य	गोपालदुःखी	पश्चिममें	इश्यान्यदि

करणऊपरसे संक्रांत देखना.

स्थिति—चतुष्पदेतैतिलनागयोश्चसुप्तोरविःसंक्रमणंकरोति ॥ विघाद्धवाख्येचगराव्हयेचसबालवाख्येस्थितएवविष्टौ ॥ ॥ १ ॥ फल—किंस्तुघ्ननाम्निशकुनौवणिक्कौलवाख्येचोर्ध्वं स्थितस्यखलुसंक्रमणंरवेः स्यात् ॥ धान्यार्घवृष्टिषुभवेतक्रमश-स्त्वनिष्टोमध्येष्टतेतिमुनयः प्रवदंतिपूर्वे ॥ २ ॥ वाहन—सिंहोव्याघ्रोवराहश्चगर्दभःकुंजरस्तथा ॥ माहर्षीघोटकःश्वाचछागोवृषभकुक्कुटौ ॥ ३ ॥ उपवाहन—गजोवाजिर्वृषोमेषःखरोष्ट्रौकेसरी क्रमात् ॥ शार्दूलमहिषीव्याघ्रवानराश्चबवादितः ॥ ४ ॥ फल—गजेलक्ष्मीवृषस्थैर्यंघोटकेवाहनेतथा ॥ सिंहेव्याघ्रेभयंप्रोक्तंसुभिक्षंगर्दभेशुनौ ॥ ५ ॥ वराहेमहतीपीडाजायतेमेषवाहने ॥ हिष्यांचभवेत्क्लेशःकुक्कुटेमृत्युरेवच ॥ ६ ॥ वस्त्र—श्वेतपीतहरि-चपाडुरंरक्तशाममसितंबहुवर्णम् ॥ कंबलंविवसनंघनवर्णान्यंमानिचबवादितःक्रमात् ॥ ७ ॥ आयुध—भुशुंडीचगदाखड्ग

दण्डकोदंडतोमराः ॥कुंतपाशांकुशास्त्रंचबाणश्चैवायुधंबवात्॥८॥ भोजनपात्र--सौवर्णराजतंताम्रंकांस्यंलोहंचखर्परं ॥ पत्रंवस्त्रंकरो भूमिःकाष्ठपात्रंबवादितः ॥ ९ ॥ भक्ष्यपदार्थ--अन्नंचपायसंभ-क्ष्यंपकान्नंचपयोदधि॥चित्रान्नंगुडमध्वाज्यंशर्करातुबवादितः ॥ ॥ १० ॥ गन्ध--कस्तूरीकुंकुमंचैवचंदनंमृत्तिकातथा ॥ गोरो चनमलक्तश्चहरिद्राचतथांजनम् ॥ सिन्दूरमगरुश्चैवकर्पूरश्चब-वादितः ॥ ११ ॥ जाति--देवभूताहिविहगपशवोमृगएवच॥ब्रह्म-क्षत्रियविट्शूद्रमिश्रजातीबवादितः ॥ १२ ॥ पुष्प--पुन्नाग-जातीबकुलश्चकेतकीबिल्वस्तथार्कःकमलंचदूर्वा ॥ मल्लीतथापा-टलिकाजपाचबवादिपुष्पाणिचयोजयेत्तु ॥ १३ ॥ भूषण--नूपु-रंकंकणंमुक्ताविद्रूमंमुकुटोमणिः ॥ गुंजावराटकोनीलोगारुत्मं रुक्मकंबवात् ॥ १४ ॥ कंचुकी—विचित्रपर्णांशुकभूर्जपत्रिका सीतातथापाटलनीलवर्णा ॥ कृष्णाजिनंचर्मचवल्कपाडुराबवा-दितश्चैवतुकंचुकीस्यात् ॥ १५ ॥ वय—बालाकुमारीचगताल-कायुवाप्रौढाप्रगल्भाथततश्चवृद्धा ॥ वंध्यातिवंध्याचसुतार्थिनी चप्रव्राजिकाचैवफलंशुभंबवात् ॥ १६ ॥

संक्रातिमुख.

बवेपूर्वमुखंप्रोक्तंबालवेयमदिङ्मुखम् ॥ कौलवेपश्चिममुखंतै तिलेचोत्तरमुखम् ॥ १७ ॥ गरेवायव्यदिग्वक्त्रंवाणिज्याग्नेयदि ङ्मुखम् ॥ भद्रयामीशादिग्वक्त्रंशकुनौनैर्ऋतौमुखम् ॥ १८ ॥ चतुष्पदेचपातालेनागेचोर्ध्वमुखीभवेत् ॥ किंस्तुघ्नेसर्वदि ग्वक्त्रं संक्रांतिमुखलक्षणम् ॥ १९ ॥

टी०—इसका स्पष्टार्थ नीचे कोष्टकमें लिखा है.

क ण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनी	चतुष्पा	नाग	किंस्तु
स्थिति	बैठी	बैठी	उभी	सूती	बैठी	उभी	बैठी	उभी	सूती	सूती	उभी
फल	मध्य	मध्य	महर्घ	सस्ता	मध्य	महंगा	मध्य	महंगा	सस्ता	सस्ता	महंगा
वाहन	सिंह	व्याघ्र	सूकर	गर्दभ	हाथी	भैंस	घोडा	श्वान	मींढा	बलद	कुकड
उपवा०	गज	अश्व	बलद	सांढा	गर्दभ	ऊंठ	सिंह	सिंह	भैंस	व्याघ्र	वानर
फल	भ्रांति	भ्रांति	पीडा	सुभि.	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	पीडा	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	सुपेद	पीत	हरा	सुपेद	लाल	श्याम	काला	चित्र	कंबल	दिशा	मेघव.
आयुध	भुशुंडी	गदा	खड्ग	दण्ड	धनुष	तोमर	कुंतल	पाश	अंकुश	तलवार	तीर
पात्र	सोना	रूपा	ताम्र	कांस्य	लोह	खपर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भक्षण	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वा	पय	दहिं	चित्रा	गुड	मधु	घृत	खांड
लेपन	कस्तू	कुंकुम	चंदन	मृत्ति	गोरोच	अलता	हळद	कज्जल	सिंदूर	अगर	कर्पूर
जाति	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	मिश्र	अंत्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतक	बिल्व	अर्क	कंवल	दूर्वा	मोगरा	पाटल	जपापु
भूषण	नूपूर	कंकण	मोती	प्रवाल	मुगुट	मणि	गुंजा	कोडी	नील	पाच	सुवर्ण
कंचुका	विचित्र	पर्ण	हरी	भूजप	सपेद	गुलाबी	नील	काली	चर्म	वल्कल	सुपेद
वय	बाला	कुमारी	गताल	युवा	प्रौढ	प्रगल्भ	वृद्धा	वंध्या	अतिवं०	पुत्रेच्छु	संन्या.
मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	वायव्य	आग्ने	ईशान्य	नैर्ऋत्य	पातालमु.	ऊर्ध्वमु.	सर्वदि.

फलश्रुति--वाहनादिबुधैर्ज्ञेयमथो क्रांतिविशेषतः ॥ वाहनादिक वस्तूनां संक्रमात्तु विनाशनम् ॥ १ ॥

टी०—जिस वाहनपर संक्रांत बैठी हो और जो वस्तु धारण करी हो उसका नाश जानना.

मुहूर्त.

संक्रांति जिस मुहूर्तपर होवे उसका नक्षत्र जूदा कहते हैं.

संक्रान्तौमूर्तिभेदाहरपवनयमेवारुणेसार्पभैंद्रेएषांपंचेंदुसंज्ञा गुरुकरपितृभेचाग्निदस्रेचसौम्ये ॥ त्वाष्ट्रेमैत्रेचमूलेश्रुतिवसुवपुषां त्रीणिपूर्वाखरामैर्ब्राह्म्येदित्येद्विदैवेभवतिशरकृतादुत्तरात्रीणिऋक्षम् ॥ १ ॥ बाणवेदैःसमर्घस्यान्मध्यस्थं व्योमरामयोः ॥ मूर्तौपंचदशेयातेदुर्भिक्षंचप्रजायते ॥२॥

टी०—१५ मुहूर्त याने आर्द्रा, स्वाती, भरणी, शततारका, आश्लेषा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंपर संक्रांत होय तो प्रजाको दुर्भिक्षता जानना. ३० मुहूर्त याने पुष्य,

हस्ते, मघा, कृत्तिका, अश्विनी, मृग, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंपर संक्रांत होवे तो धान्यका भाव मध्यम जानना. ४५ मुहूर्त यानि रोहिणी, पुनर्वसु, विशाखा, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रोंमें संक्रांति भई होय तो भाव सस्ता जानना.

दूसरा प्रकार.

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिऋक्षकम् ॥
द्वित्रिसंख्यासमर्घस्याच्चतुःपंचमहर्घता ॥ ३ ॥

टी०-गतमास, दिन, संक्रांतिनक्षत्र, प्राप्तमास, संक्रांति, दिन नक्षत्र, इनका परस्परोंमें दो या तीनका फरक पडे तो सस्ताई और पांच या चार नक्षत्रका फरक पडता होय तो महर्घता जानना.

धान्य लेनेका प्रकार.

संक्रांतिनाडीतिथिवारऋक्षधान्याक्षराण्यग्निविभाजितानि ॥
संक्रांतिनाड्यौनवमिश्रिताश्चसप्ताहताःपावकभाजिताश्च ॥
एकेसमर्घंद्वितयेचसाम्यंशून्येमहर्घंमुनयोवदन्ति ॥ १ ॥

टीका-संक्रांतिकी घटिका और गततिथि, वार, नक्षत्र और धान्यके अक्षर गिनकर एकत्र करना और तीनसे भाग देना. ऐसा एकमत. दूसरा मत-संक्रांतिकी नाडी गिनकर उससे ९ मिलाना, ७ से गुणना और ३ से भाग देना. शेष बचे उसका फल-१ शेष रहे तो धान्यकी स्वस्थता रहेगी. २ शेष बचे तो धान्यका भाव मध्यम रहेगा. शून्य शेष रहे तो महर्घता होय ऐसा जानना.

नक्षत्रानुसार संक्रांतिकी पीडा.

संक्रांत्यधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि ॥ त्रिकंषट्कंत्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनःपुनः ॥ पंथा भोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ॥ १ ॥

टी०-जिस नक्षत्रपर संक्रांति हुई हो उसके प्रथमके नक्षत्रसे अपने जन्मनक्षत्रतक गिने; जो संख्या आवे उनमें प्रथम तीनका फल पंथाका. उनसे आगे

६ का भोग, उनसे आगे ३ का व्यथा, उनसे आगे ६ का वस्त्रप्राप्ति, उनसे आगे ३ का हानि और उनके आगे ६ का धनलाभ यह फल होतेहैं.

जन्मनक्षत्रमासतिथिका फल.

यस्यजन्मर्क्षमासाद्यतिथौसंक्रमणंभवेत् ॥
तन्मासाभ्यंतरे तस्य वैरं क्लेशो धनक्षयः ॥ १ ॥

टी०–जिसके जन्मनक्षत्रपर संक्रांति भई होय तो उसका वैर पडेगा. महीनेमें भई होय तो क्लेश और तिथिमें भई होय तो धनका क्षय जानना.

संक्रांतिका स्वरूप.

षष्टियोजनविस्तीर्णा लंबोष्ठीदीर्घनासिका ॥ १ ॥ एकवक्त्रानवभुजसंक्रांति·पुरुषाकृतिः ॥ पृष्ठालोकाभ्रमंत्येव-गृहीत्वाखर्परंकरे॥एवंसंक्रमणेयस्याःफलंप्रोक्तंमनीषिभिः२

टीका–शरीर ६० योजन लंबा और चौडा, नाक और होंठ लंबा, एकमुख, नवभुजा, पुरुषकी आकृति और लक्षण, आगे देखती है, पीछे चलती है और हाथमें ठी लेकर भ्रमण करतीहै ऐसा जानना.

हाथमें फल कैसा ?

मेषालिकर्के च भवेत्सुरक्तं चापे च मीने च तुले च पीतम् ॥ श्वेतं वृषस्त्रीमिथुने च चंद्रे कृष्णं च नक्रेऽथ घटे च सिंहे ॥१॥ रक्ते फले भवेद्दुःखं श्वेते चैव शुभं फलम्॥
पीते श्रीस्तु तथा प्रोक्ता श्यामे मृत्युर्न संशयः ॥ २ ॥

टी०–मेष, वृश्चिक, कर्क इनराशियोंपर चंद्र छते जिस संक्रांतिका प्रवेश हुवा होय तो उसके हाथमें लालवर्णका फल है उसकरके दुःखप्राप्ति और धन, मीन, तुलापर होय तो पीला फल लक्ष्मीप्राप्ति. वृष, कन्या, मिथुनमें शुक्लफल शुभ. सुखप्राप्ति. मकर, कुंभ, सिंह, कालफल मृत्युप्राप्ति. ये संक्रांतिफल राश्यनुसार जानना.

राश्यनुसार चंद्रमा.

याद्दशेनहिमरश्मिमालिनासंक्रमोभवतितिग्मरोचिषा ॥

तादृशंचफलमाप्नुयान्नरःसाध्वसाध्वपिवशेनशीतगोः ॥ १ ॥

टीका–जैसा चंद्र नष्टस्थानमें अथवा उत्तमस्थानमें रहते फल देताहै तैसाही चंद्रानुसार संक्रांतिका फल लेना.

पुण्यकाल.

पूर्वतोपिरविसंक्रमाद्दिनेपुण्यकालघटिकास्तुषोडश ॥
अर्धरात्रिसमयादनंतरंसंक्रमोपरदिनेहिपुण्यदः ॥ १ ॥

टी०–संक्रांति दिनमें होनेपर संक्रांतिका १६ घटिका पुण्यकाल पहिले होताहै. यदि अर्धरात्रिके आगे संक्रांति होय तो दूसरे दिन समस्त पुण्यकाल जानना.

ग्रहणप्रकरणम्.

चंद्रग्रहणकी प्रवृत्ति.

भानोः पंचदशे ऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति ॥
पौर्णिमास्या निशाशेषे चंद्रग्रहणमादिशेत् ॥ १ ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे पंदरहवा चंद्र नक्षत्र होय और पोर्णिमा समाप्त होकर रात्रि शेष रहे उसरात्रिको चंद्रग्रहण होताहै.

सूर्यग्रहणकी प्रवृत्ति.

शिवोनग्रस्तनक्षत्रात्षोडशं यदि सूर्यभम् ॥
अमावास्या दिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥ १ ॥

टीका–सब मासके अमावास्याको सूर्य और चंद्रमा एकराशिपर आते हैं. परंतु ग्रहणकालमें एकनक्षत्रपर आयके अमावास्या निवृत्त होके दिवस शेष रहे तो सूर्यग्रहणकी संधि होतीहै. उसदिन चंद्रनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक गिनकर उसमेंसे ११ निकालना और १६ सूर्य नक्षत्र आवे तो सूर्यग्रहण होता है.

राशिके अनुसार शुभाशुभ फल.

त्रिषड्दशायोपगतंनराणांशुभप्रदंस्याद्ग्रहणंरवींद्वोः ॥
द्विसप्तनंदेषुचमध्यमंस्याच्छेषेष्वनिष्टंमुनयोवदन्ति ॥ १ ॥

टी०—सूर्य अथवा चंद्रग्रहण अपने राशिसे जिस राशिपर होवे वो राशि ३।६।१०।११ ये स्थान शुभ हैं और २।७।९।५ ये स्थान मध्यम हैं और १।४।८।१२ ये स्थान अनिष्ट जानना.

दूसरा पक्ष.

ग्रासात्तृतीयोष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभदः स्वराशिः ॥
ग्रासाद्रविः पंचनवर्तुमध्यस्ततोधमोक्ताश्चबुधैश्चशेषाः ॥ १ ॥

टी०—जिस राशिको सूर्यग्रहण होवे उस राशिसे अपनी राशितक ३।८।४।११ ये उत्तम ५।९।६ यह मध्यम और १।२।७।१०।१२ ये कनिष्ठ इस रीतिसे शुभाशुभ जानना.

ग्रासभेदसे ग्रहणनक्षत्रका त्याग.

नेष्टंग्रहर्क्षंसकलार्धपादग्रासेक्रमात्तर्कगुणेंदुमासान् ॥
पूर्वंपरस्तादुभयोस्त्रिघस्राग्रस्तेस्तगेवाभ्युदितेर्धखंडे ॥१॥

टी०—संपूर्ण ग्रहण होवे तब ग्रहणके नक्षत्रको ६ मासतक शुभकाममें नहीं लेना और अर्ध ग्रहण होवे तो ३ मासतक त्याज्य करना. चतुर्थांश ग्रहण होवे तो १ मासतक त्यागना और ग्रहण ग्रस्तास्त होवे तो पूर्वके तीन वा ग्रस्तोदय होवे तो पीछेके तीन दिन नेष्ट हैं. अर्धग्रास होवे तो सूर्यचंद्रके ग्रहणके दिनसे पूर्व और पीछेके तीन दिन नेष्ट हैं. यह शुभकार्यमें त्याज्य करना.

प्रयोगऋतुप्रकरणम्.

शुभाशुभफल.

तिथिरेकगुणाप्रोक्तानक्षत्रंचचतुर्गुणम् ॥ वारःषष्ठगुणोज्ञेयोमासश्चाष्टगुणःस्मृतः ॥ १ ॥ वस्त्रंशतगुणंविद्याद्दर्शनंचततोधिकम् ॥

टी०—तिथिका गुण १ नक्षत्रके ४ वारोंके गुण ६ मासके ८ वस्त्रके १०० और जो रज देखती है उसके गुण सबसे अधिक हैं.

मासफल.

आर्तवंप्रथमंचैत्रेवैधव्यंजायतेध्रुवम् ॥ वैशाखेधनवृद्धिः-

स्याज्ज्येष्ठेरोगान्विताभवेत् ॥ २ ॥ आषाढेमृतवत्साच-श्रावणेधनसंयुता ॥ नभस्येदुर्भगानारीआश्विनेधनधान्य भाक् ॥ ३ ॥ कार्तिकेनिर्धनाप्रोक्तामार्गशीर्षेबहुप्रजा ॥ पौषेचपुंश्चलीनारीमाघेपुत्रवतीभवेत् ॥ फाल्गुन ॥ ॥ -न्नाज्ञेयंमासफलंबुधैः ॥ ४ ॥

टी०—स्त्रीको प्रथम ऋतु चैत्रमें प्राप्त होय तो विधवा होय. वैशाखमें ऋतु प्राप्त हुवा होय तो धनवृद्धि, ज्येष्ठमें रोगप्राप्ति, आषाढमें मृतप्रजा, श्रावणमें लक्ष्मीप्राप्ति, भाद्रपदमें दुर्भगा आश्विनमें धनधान्यप्राप्ति, कार्तिकमें मरण, मार्गशीर्षमें बहुप्रजा, पौषमें जारिणी, माघमें पुत्रवती, फाल्गुनमें पुत्रसंपन्ना ऐसे मासफल जानना.

तिथिफल.

शुचिर्नारीप्रतिपदिद्वितीयायांतुदुःखिनी ॥ तृतीयायां पुत्रवतीचतुर्थ्यांविधवाभवेत् ॥ ५ ॥ पंचम्यांचैवसौभाग्यं षष्ठ्याकार्यविनाशिनी ॥ सप्तम्यांसुप्रजानारीचाष्टम्यांराक्ष-सीतथा ॥६॥ नवम्यांविधवानारीदशम्यासौख्यभोगिनी ॥ एकादश्यांशुचिर्नारीद्वादश्यांमरणंध्रुवम् ॥ ७ ॥ त्रयो-दश्यांशुभाप्रोक्ताचतुर्दश्यांपरान्विता ॥ पौर्णिमास्याममा-याचशुभंचाशुभमेवच ॥ ८ ॥

टी०—प्रतिपदाको ऋतुप्राप्ति होय तो शुचित्व, द्वितीया दुःखदायक, तृतीया पुत्रवती, चतुर्थी विधवा, पंचमी सौभाग्यवती, षष्ठी कार्यनाशिनी, सप्तमी सुप्र-जाप्रसूति, अष्टमी राक्षसी, नवमी विधवा, दशमी सौख्यभोगिनी, एकादशी शुद्ध, द्वादशी मरण; त्रयोदशी शुभ, चतुर्दशी जारिणी, पौर्णिमा शुभ, अमा-वास्या अशुभ.

वारफल.

आदित्येविधवानारीसोमेचैवमृतप्रजा ॥ मंगलेआत्म-घातीस्याद्बुधेकन्याप्रसूःस्मृता ॥ गुरुवारेसुतप्राप्तिः-कन्यापुत्रयुताभृगौ ॥ मन्देचपुंश्चलीनारीज्ञेयंवारफलंशुभम् ॥९॥

टी०—रविवारको ऋतुप्राप्त होय तो विधवा होगी, सोमवारको मृतप्रजा

मंगलवारको आत्मघाती, बुधवारको कन्याप्रसूती होगी, गुरुवारको पुत्रप्रसूती शुक्रवारको पुत्रकन्याप्रसूती, शनिवारको जारिणी होगी ऐसा जानना.

नक्षत्रफल.

अश्विन्यांसुभगानारीभरण्यांविधवाभवेत ॥ कृत्तिकायांच वंध्यास्याद्रोहिण्यांचारुभाषिणी ॥१०॥ मृगेदारिद्र्ययुक्ता-स्याच्चार्द्रायांक्रोधकारिणी ॥ पुनर्वसौपुत्रवतीपुष्येपुत्रधने-श्वरा ॥ ११ ॥ आश्लेषायांभवेद्वंध्यामघायांचार्थसंयुता ॥ पूर्वायांचार्थयुक्ताहिचोत्तरायासतीतथा ॥१२॥ हस्तेपुत्र-धनैर्युक्ताचित्रायामनुचारिणी ॥ स्वात्यन्यगर्भावयवावि-शाखायातुनिष्ठुरा ॥१३॥ मैत्रेचदुर्भगानारीज्येष्ठायांवि-धवाभवेत्॥मूलेपतिव्रतासाध्वीपूर्वासौभाग्यभोगिनी ॥१४॥ उत्तरार्थवतीप्रोक्ताश्रवेसौभाग्यसंपदा ॥ धनिष्ठायांशुभा-नारीशतेभद्रान्विताबुधैः ॥१५॥ पुंभेचोक्ताकामिनीतुउभे-लक्ष्मीयुताशुभा॥रेवत्यापतिरिक्तातुज्ञेयंभानाफलंबुधैः १६

टी०--अश्विनीनक्षत्रपर ऋतुप्राप्त होय तो सौभाग्य जानना. भरणी विधवा, कृत्तिका वंध्या, रोहिणीको प्रियभाषिणी, मृगपर दरिद्री, आर्द्रामें क्रोधी, पुनर्वसुपर पुत्रप्राप्ति, पूष्यको पुत्रधनदाता, आश्लेषाको वंध्या, मघामें अर्थप्राप्ति, पूर्वा अर्थयुक्त, उत्तरा पतिव्रता, हस्त पुत्रधनप्राप्ती, चित्रा मनके अनुसार चलनेवाली, स्वातीको दूसरेसें गर्भ रहे, विशाखा निष्ठुर, अनुराधा दुर्भगा, ज्येष्ठा विधवा, मूल पतिव्रता, पूर्वाषाढा सौभाग्यवती, उत्तराषाढा लक्ष्मीदायक, श्रवण सौभाग्य, धनिष्ठा शुभ, शततारका शुभ, पूर्वाभाद्रपदा उत्तम भोग, उत्तराभाद्रपदा लक्ष्मीप्राप्ति, रेवती होय तो पतिबिना रहेगी ऐसा जानना.

योगफल.

आद्यतौविधवानारीविष्कंभेचरजस्वला॥स्नेहःप्रीतौतुदंपत्यो-

७

रायुष्मास्तुधनप्रदः ॥ १ ॥ सौभाग्येपुत्रयुक्तातुशोभनेमंगला-
न्विता ॥ अतिगंडेतुविधवासुकर्मणितुशोभना ॥२॥ धृतौसं-
पत्तियुक्ताचशूलेरोगयुताभवेत् ॥ गंडेदुःखान्वितानारीवृद्धौ-
पुत्रान्विताभवेत्॥३॥ध्रुवेतुशोभनानारीव्याघातेभर्तृघातकी॥
हर्षणेहर्षयुक्तातुवज्रेचैवानपत्यता ॥४॥ सिद्धौपुत्रान्वितानारी
व्यतीपातेविभर्तृका ॥ मृतवत्सात्ववर्याणेपरिघेचाल्पजीविता॥
॥५॥ शिवेपुत्रवतीनारीसिद्धौशीघ्रफलान्विता ॥ साध्येधर्म-
परानारीशुभेशुभगुणान्विता ॥६॥ शुक्लेशुभकरानारीब्रह्मणि
स्वपतौरता ॥ ऐन्द्रेदेवररक्ताचवैधव्यंवैधृतौस्मृतम् ॥ ७ ॥

टी०—विष्कंभयोगपर प्रथम ऋतु प्राप्त होवे तौ विधवा होगी. प्रीतियोगपर स्नेह, आयुष्मानपर धनप्राप्ति, सौभाग्यपर पुत्रवती, शोभनपर मगल, अतिगंडपर विधवा, सुकर्मा शुभ, धृति होयतो संपत्ति, शूलमें रोग, गंड होयतो दुःखान्विता, वृद्धिपर पुत्रप्राप्ति, ध्रव होयतो शुभ, व्याघातमें पतिघातिनी, हर्षणमें हर्षयुक्त, वज्रपर अपुत्रवती, सिद्धीमें पुत्रान्विता, व्यतीपातमें पतिवियोग होगा, वरीयानर मृतप्रजा, परिघपर अल्पजीवी, शिवयोगपर पुत्रवती, सिद्धीयोगपर शीघ्रफल-प्राप्ती, साध्यमें धर्मी, शुभयोगपर गुणयुक्त, शुक्लपर शुभकर्मी, ब्रह्मयोग होय तो अपने पतिसे रत रहेगी. ऐंद्रयोग होयतो देवरसे रतरहेगी. धृतिपर विधवा. इस रीतिसे योगोंका फल जानना.

करणफल.

ववेप्रोक्तातुवंध्यास्त्रीबालवेपुत्रसंपदा ॥ कौलवेपुंश्चलीनारी
तैतिलेचारुभाषिणी ॥ १ ॥ गरेचगुणसंपन्नवणिजेपुत्रिणी-
स्मृता ॥ विष्टयाचमृतवत्साचशकुनौकामपीडिता ॥ २ ॥
चतुष्पदेशुभानारीनागेपुत्रवतीभवेत् ॥ किंस्तुघ्नेतुपरासक्ता-
करणानांशुभाशुभम् ॥ ४ ॥

टी०—ववकरणऊपर ऋतुप्राप्त हुवा होयतो बांझ होगी, बालवपर पुत्रप्राप्ति, कौलवपर वेश्या, तैतिलपर प्रियभाषिणी, गरपर गुणसंपन्ना, वणिजपर पुत्रिणी, विष्टिपर मृतप्रजा, शकुनिपर कामातुरा, चतुष्पादपर शुभा, नागपर

पुत्रवती, किंस्तुघ्नपर जारिणी, ऐसे करणोंका शुभाशुभ फल जानना.

राशिफल.

व्यभिचारीतुमेषेस्याद्वृषेभसुखभोगिनी॥मिथुनेधनयुक्तोक्ता-
कर्कटेदुःखिताभवेत् ॥ १ ॥ सिंहेपुत्रवतीनारीकन्यायांमानि-
नीशुभा ॥ तुलेविचक्षणानारीवृश्चिकेव्यभिचारिणी॥२॥ धने-
पतिव्रताज्ञेयामांसहीनाचनक्रके ॥ कुंभेधनवतीज्ञेयामीनेचच-
पलाबुधैः ॥ ३ ॥

टी०—मेषराशिपर ऋतु प्राप्त होय तो जारिणी होगी, वृषभर सुखभोगिनी, मिथुनपर धनयुक्ता, कर्कपर दुःखिता, सिंहपर पुत्रवती, कन्या होयतो मानिनी तुलापर विचक्षणा, वृश्चिकपर जारिणी, धनपर पतिव्रता, मकरपर कृश, कुंभपर धनवती, मीनपर चपल, ऐसे राशिफल जानना.

होराफलकोष्टक.

सूर्येचव्याधिसंयुक्ताचन्द्रेचैवपतिव्रता ॥ कुजेतुदुर्भगाप्रोक्ता-
बुधेपुत्रवतीभवेत् ॥ १ ॥ जीवेसर्वसमृद्धिःस्याद्भृगौसौभाग्य-
मेवच ॥ शनौसर्वविनाशायज्ञेयंहोराफलंबुधैः ॥ २ ॥

होरा.	फल.	होरा	फल
रविकी.	व्याधि.	गुरुकी.	सर्वसमृद्धि.
चन्द्रकी.	पतिव्रता.	शुक्रकी.	सौभाग्यदायिनी
भौमकी.	दुर्भगा.	शनिकी.	सर्वनाशिनी.
बुधकी.	पुत्रवती.		

इति होराफलम्.

लग्नफल.

मेषलग्नेदरिद्राचवृषभेधनसंयुता ॥ कामिनीमिथुनेलग्नेकर्कटेप-
तिनाशिका ॥१॥ सिंहेपुत्रप्रसूतीचपतियुक्तास्त्रिलग्नके॥तुले-
चैवांधतादायीवृश्चिकेदद्रुदुःखिनी ॥ २ ॥ धनलग्नेधनैश्वर्यंमक-

रेकर्कशाभवेत् ॥ कुंभेवंशद्वयघ्नीचमीनेसर्वगुणान्विता ॥ ३ ॥

टी०--प्रथम संक्रांति चलती हो सोही प्रथम लग्न जानना. १ मेषलग्नपर ऋतु प्राप्त होय तो दरिद्री होगी. २ वृषलग्नपर धनयुक्ता, ३ कामिनी, ४ पतिनाशिनी ५ पुत्रप्रसूता ६ पतियुक्ता, ७ अंधतादायी, ८ दद्रूदुःखिनी, ९ धनैश्वर्य, १० कर्कशा, ११ दोनों वंशका नाश करनेवाली, १२ गुणयुक्ता.

ग्रहोंकाफल.

लग्ने राहुश्च सौरिश्च रविचन्द्रौ तथैव तु ॥
तदा सा विधवा नारी सर्वसौभाग्यवर्जिता ॥ ३ ॥

टी०--जिसलग्नमें स्त्रियोंको ऋतु प्राप्त होवे उस लग्नमें राहु, अथवा शनि, रवि, चंद्र, इन चार ग्रहोंमेंसे कोई एकभी ग्रह होवेतो स्त्रीको वैधव्य प्राप्त होवेगा.

रुधिरफल.

शोणितंबिन्दुमात्रंचेत्स्वैरिणीचाल्पशोणिता ॥ रक्तेरक्तेभवे-त्पुत्रः कृष्णेचैवमृतप्रजा ॥ १ ॥ पिच्छिलेचभवेद्वंध्याकाकवं-ध्याचपांडुरे ॥ पीतेदुश्चारिणीज्ञेयासुभगागुंजसन्निभे ॥ सिंदू-रवर्णेरक्तेतुकन्यासंततिरेवच ॥ २ ॥

टी०--प्रथम ऋतु प्राप्तहोताहै उससमय उसकावर्ण कमती हो या बिंदुमात्र हो तो उसका फल स्वेच्छाचारिणी होगी. लालहोयतो पुत्रवती, कालावर्ण होय तो मृतप्रजा, पिच्छलवर्ण होयतो वंध्या, सुपेद होवे तो काकवंध्या, पीला होयतो दुराचारिणी, चिरमीका रंग होवेतो सुभगा, सिंदुरका वर्ण होवे तो कन्याप्रजा. ऐसी फलश्रुति जानना.

कालफल.

पूर्वाण्हेसुभगाप्रोक्तामध्यान्हेचैवनिर्धना ॥ अपराण्हेशुभाचै-वसायान्हेसर्वभोगिनी ॥ १ ॥ संध्ययोरुभयोर्वेश्यानिशीथेवि-धवाभवेत् ॥ पूर्वरात्रेतथावंध्यादुर्भगासर्वसंधिषु ॥ २ ॥

टी०--प्रथम ऋतु सुबह प्राप्त होय तो सुभगा होगी, मध्यान्हमें निर्धना, तीस-

रेमहरमें शुभ, सायंकालका फल सर्व भोगी, उभयसंधिमें वेश्या, आधीरातमें विधवा, पूर्वरात्रमें वंध्या, और सर्वसंधिमें दुर्भगा. ऐसा कालका फल जानना.

पहिरेहुए वस्त्रका फल.

सुभगाश्वेतवस्त्राचरोगिणीरक्तवस्त्रका ॥ नीलांबरधरानारी-विधवापुष्पवंतिका ॥ १ ॥ भोगिनीपीतवस्त्राचमिश्रवस्त्रा-वरप्रिया ॥ सूक्ष्मास्यात् सूक्ष्मवस्त्राचदृढवस्त्रापतिव्रता ॥ २ ॥ दुर्भगाजीर्णवस्त्राचसुभगामध्यवाससा ॥ धूतवस्त्राशुभानारीमलिनीमलिना भवेत् ॥ ३ ॥

टी०—प्रथम ऋतु श्वेतवस्त्रपर प्राप्त हुवा होय तो सुभगा जानना. लालवस्त्रपर रोगी, मिश्रवर्णका वस्त्र हो तो पतिप्रिया, नीलवस्त्रपर विधवा पीलावस्त्र होय तो भोगी, सूक्ष्म वस्त्र होय तो कृशांगी, मजबूत वस्त्र होतो पतिव्रता, जीर्ण फाटा होय तो दुर्भगा, मध्यम होय तो सुभगा. धौतवस्त्र होवे तो शुभ और मैलेवस्त्र पर मलिन फल जानना.

रजस्वलाधर्म.

आर्तवाभिप्लुतानारीनैकवेश्मनिसंश्रयेत् ॥ नचान्यजातिसंस्पर्शंकुर्यात्स्पर्शनचक्वचित् ॥ १ ॥ त्रिरात्रंस्वमुखंनैवदर्शयेद्यस्यकस्यचित् ॥ स्ववाक्यंश्रावयेन्नैवनकुर्याद्दंतधावनम् ॥ २ ॥ नकुर्यादार्त्तवेनारीह्याणामीक्षणंतथा ॥ अंजनाभ्यंजनेस्नानंप्रवासंवर्जयेत्तथा ॥ ३ ॥ नखादिकृंतनंरज्जूतालपात्रादिबंधनं ॥ नवेशरावेभुंजीततोयंचांजलिनापिबेत् ॥ ४ ॥

टी०—ऋतुमतीस्त्रीको एक घरमें रहना चाहिये अन्य जातिसे वा अपनी जातिसे स्पर्श नही करना. तीन दिन आपना मुख न किसीको दिखाना न वाणी किसीको सुनाना. दंतमंजन, नक्षत्रोंका अवलोकन नहीं करना, काजल व तैल नहीं लगाना. स्नान नहीं करना, रस्ता नहीं चलना, नख नहीं काटना, डोरीस्पर्श नहीं करना, तालपत्रका बंधन नहीं करना, नवीन मृत्तिकापात्रमें भोजन करना, जल अंजुलीसे पीना.

रजस्वलास्नान.

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैःशक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरेच ॥ स्नायादथार्तववतीमृगपौष्णवायुहस्ताश्विधातृभिररंलभतेचगर्भम् ॥ १ ॥

टी०-हस्त, स्वाती अश्विनी, मृग, अनुराधा, धनिष्ठा, ३ उत्तरा, रोहिणी, ज्येष्ठा, इन नक्षत्रोंमें और शुभतिथि शुभवारोंमें ऋतुमतीको स्नान शुभहै. यदि मृग रेवती, स्वाती; हस्त, अश्विनी इन नक्षत्रोंमें स्नान करावे तो बहुत शीघ्र गर्भधारण करे.

रजस्वला शुद्धिदिन.

चतुर्थेऽहनि चास्पृश्या रजोदर्शनतः स्त्रियः ॥
पंचमेहनि शुद्धा सा देवकर्मणि पैतृके ॥ १ ॥

टी०-स्त्री ऋतुप्राप्तिके पश्चात् ४ दिनतक अस्पृश्य है, पंचम दिनमें देव पितृकार्यके योग्य है.

अन्यमत.

प्रथमेहनि चांडाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी ॥
तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेहनि शुद्ध्यति ॥ १ ॥

टी०-स्त्री ऋतुप्राप्त होवे उसदिन चांडाली संज्ञा है. द्वितीयदिन ब्रह्मघातिनी तीसरे दिन धोबिन, चतुर्थदिन शुद्ध है.

गर्भाधानकोमुहूर्त.

ऋतौ तु प्रथमे कार्यं पुन्नक्षत्रे शुभे दिने ॥
मघामूलांत्यपक्षांतं मुक्त्वाचंद्रबलेसति ॥ २ ॥

टी०-प्रथम ऋतु प्राप्त होनेपर पुरुषनक्षत्र; शुभदिन, मघा, मूल, रेवती अमावास्या, पौर्णिमा, ये वर्जित करके उक्त चंद्रबल देख मुहूर्तकी योजना करना.

गर्भाधानमें त्याज्य.

गंडांतं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलांतकं दास्रं पौष्णमथोपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिम् ॥ पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च

परिघाद्यर्द्धं स्वपत्नीगमे भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥ १ ॥ भद्रा षष्ठी पर्व रिक्ताश्च संध्या भौमार्कार्की नाद्यरात्रीश्चतस्त्रः ॥

टी०–गंडांत, वधतारा, जन्मतारा, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती; ग्रहणादिन, व्यतीपात, वैधृति, श्राद्धदिन, दिवस, परिघार्द्ध, उत्पातनक्षत्र, पापयुक्त लग्न, भद्रा, जन्मलग्नसे अष्टमलग्न, षष्ठी, चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पौर्णिमा, संक्रांति रिक्ता, संध्या, भौम, सूर्य, शनि, प्रथमदिवससे चतुर्थदिनपर्यंत यह गर्भाधानमें त्याज्य है.

अन्यच्च.

ऋतुस्नातां तु यो भार्यां संनिधौ नोपगच्छति ॥
घोरायां भ्रूणहत्यायां युज्यते नात्र संशयः ॥१॥

टी०–ऋतुस्नानके नंतर पति स्त्रीकेपास शयन न करे तो भ्रूणहत्याका भागी होता है.

ऋतुकेसोलहरात्रिकाशुभाशुभफल.

ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः ॥ तासामाद्यश्चतस्रस्तु निंदितैकादशीच या ॥ १ ॥ त्रयोदशी च शेषाः स्युः प्रशस्ता दश वासराः ॥ तस्मात्त्रिरात्रं चांडालीं पुष्पितां परिवर्जयेत् ॥ २ ॥

टी०–ऋतु प्राप्त भएहुए दिनसे सोलह रात्रि स्त्रियोंके विषे रहताहै. उसमेंसे पहिले तीन-दिन पुष्पिणी चांडालिनी होती है. और चवथा वा ग्यारहवा ओर तेरहवा दिन यह छोडकर शेष दशदिन प्रशस्त हैं ऐसा जानना.

रात्रौचतुर्थ्यांपुत्रःस्यादल्पायुर्धनवर्जिताः ॥ पंचम्यांपुत्रिणीनारी षष्ठ्यांपुत्रस्तुमध्यमाः ॥ १ ॥ सप्तम्यामप्रजायोषिदष्टम्यामीश्वरः पुमान् ॥ नवम्यांसुभगानारीदशम्यांप्रवरःसुतः ॥ २ ॥ एकादश्यामधर्म्यास्त्रीद्वादश्यापुरुषोत्तमः ॥ त्रयोदश्यांसुतापापावर्णसंकरकारिणी ॥३॥ धर्मज्ञश्चकृतज्ञश्चआत्मवेदीदृढव्रतः ॥ प्रजा-

यते चतुर्दश्यांपंचदश्यांपतिव्रता ॥ ४ ॥ आश्रयःसर्वभूतानाषो-
डश्यांजायतेपुमान् ॥ ५ ॥

टी०–चौथे दिन स्त्रीसंग करनेसे अल्पायुषी और धनवर्जित होताहै. ५ रात्रिको कन्या, ६ रात्रिको मध्यमायुपुत्र रात्रिको संतति नहीं होगी, ८ रात्रिको पुत्र ईश्वरभक्त होगा. ९ रात्रिको सौभाग्यवृद्धि १० रात्रिको गुणवान् ११ रात्रिको अधर्मीपुत्र १२ रात्रिकों उत्तम पुरुष १३ रात्रिकी पापकर्मिकन्या. १४ रात्रिको धर्मी. कृतज्ञ. नियमात्मक व्रतकरनेवाला पुत्र होगा. १५ वी रात्रिको पतिव्रता १६ वी रात्रिको सर्वभूतोंको आश्रय देनेवाला पुत्र होगा ऐसा जानना.

तिथि ओर वारमुहूर्त.

षष्ठयष्टमीपंचदशीचतुर्थीचतुर्दशीमप्युभयत्रहित्वा ॥
शेषाःशुभाःस्युस्तिथयोनिषेकेवाराःशशांकार्यसितेन्दुजाश्च॥१॥

टी०–षष्टी. अष्टमी. पौर्णिमा, अमावास्या चतुर्थी. चतुर्दशी ये तिथि दोनोंपक्षकी करके शेषा तीथि शुभ जानना. सोमवार, गुरुवार. शुक्रवार. बुधवार. यह वार शुभ जानना.

नक्षत्र.

विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभानिनिषेककार्ये ॥
पूज्यानिपुष्यवसुशीतकराश्विचित्रादित्याश्चमध्यमफला-
विफलास्युरन्ये

टी०–श्रवण, रोहिणी, हस्त, अनुराध, स्वाती, रेवती, मूल, तीनों उत्तरा; शततारका ये नक्षत्र उत्तम जानना. और पुष्य, धनिष्ठा, मृग, आश्विनी, चित्रा, पुनर्वसु ये मध्यम, और शेष रहे वह कनिष्ठ जानना. (मुहूर्त्तमार्तंडमते.) वैधृति संक्रांति महापातादि दुष्टयोग और श्राद्ध तथा श्राद्धके पूर्वदिन, जन्मनक्षत्रादि और दिवस, रात्रि, तिति, नक्षत्र, इत्यादिक संधिको वर्जित करके जिस लग्नमें विषमस्थानमें, नवमांशमें, उच्चका बृहस्पति, अथवा सूर्यचंद्रादि जिस लग्नमें होय सो लग्न लेना. तब पुत्रप्राप्ति होगी और येही ग्रह समराशिके होय तो कन्यामाप्ति होगी.

प्रथम गर्भिणीस्त्रीके पुंसवनादिसंस्कार.

मूलादित्रितयेकरेश्रवणकेभाद्रद्वयार्द्रात्रये रेवत्यामृगपंचकेदिन-

करारेज्येष्वरिक्तातिथौ ॥ नेत्रेभास्यथवाग्निमासिधनुषिस्त्रीमी-
नयोश्वस्थिरेलग्नेपुंसवनंतथैवशुभदंसीमातकर्माष्टमे ॥ १ ॥

टी–मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, हस्त, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृग और रविवार भौमवार गुरुवार ये उत्तम और रिक्तातिथि वर्ज्य करके गर्भधारणसे दूसरा और तीसरामहीना, और धन, कन्या, मीन, और स्थिरलग्न पुंसवनको उक्तहैं और येही लग्न आठवे मासमें सीमंतोन्नयनमें लेना उक्त हैं.

वारफल.

मृत्युश्चसौरेस्तनुहानिरिंदोःप्रजाप्तिःपुंसवनेबुधस्य ॥
काकीहवंध्याभवतीचशुक्रेस्त्रीपुत्रलाभौरविभौमजीवेः॥१॥

टी–शनिवारको पुंसवन कियातो मृत्यु होवे. सोमवारको शरीरसंबंधी नाश, बुधवारको बालक मरे, शुक्रवारको काकवंध्या, और रवि, भौम, गुरु, इनवारोंमें पुत्रलाभ होवे. परंतु चंद्र अनुकूल देख दुष्टयोगादि वर्ज्यकर ऊपर कहे हुए नक्षत्र शुभदिन देख पुंसवन याने गर्भकी पुरुषाकृति होवे इसलिये ये संस्कार है. (अनवलोभनस्याप्ययमेवकालः) इसी मुहूर्तपर गर्भकी स्थिरता रहने के वास्ते अनवलोभन करना.

अन्यमतम्.

सीमंतोन्नयन और विष्णुबलि.

चतुर्थषष्ठाष्टममासभाजिसौरेणगर्भेप्रथमांविधेयम् ॥
सीमंतकर्मद्विजभामिनीनांमासेष्टमेविष्णुबलिं च कुर्यात् १

टी–प्रथम गर्भधारण हुए दिनसे चौथा, छठा, आठवां. ऐसे महिने सौरमाससे लेना. सीमंतकर्म ब्राह्मणके स्त्रियोंकाही करना. और विष्णुबली आठवे महिनेमें करना.

सीमंतेतिष्यहस्तादितिहरिशशिभृत्पौष्णविध्युत्तराख्याः ॥
पक्षच्छिद्राचरिक्तापितृतिथिमपहायापरास्ताः प्रशस्ताः ॥१॥

टी–सीमंतकर्ममें नक्षत्र पुष्य, पुनर्वसु, मृग, रेवती, रोहिणी, तीनोंउ-

त्तरा ये शुभहैं. पक्षछिद्र और रिक्तातिथि पितृतिथि वर्ज्य करके शेष तिथि-शुभ जानना.

पक्षछिद्रातिथि.

चतुर्दशीचतुर्थीचअष्टमीनवमीतथा॥षष्ठीचद्वादशीचैवपक्षच्छिद्राव्हयामताः॥१॥ क्रमादेतासुतिथिषुवर्जनीयाश्चनाडिकाः॥ भूताष्टमनुतत्वांकदशशेषास्तुशोभनाः ॥ २ ॥

टी–चतुर्दशीकी चौदह घडी पहिली वर्जित करना. और चतुर्थकी आठ घडी. अष्टमीको चौदहघडी, नवमीकी पचीस घडी, षष्ठीकी नव घडी. द्वादशी की दसघडी, ऐसे छोडकर बाकीकी तिथि उक्तहैं.

मासेश्वरज्ञान.

मासेश्वराःसितकुजेज्यरवींदुसौरचंद्रात्मजास्तनुपचंद्रदिवाकरास्यु

टी०–गर्भिणीके गर्भके मासके पति, क्रमसे १ शुक्र, २ मंगल ३ गुरु ४ रवि; ५ चंद्र, ६ शनि, ७ बुध, ८ लग्नेश, ९ चंद्र, १० सूर्य, जानना.

विष्णुवलि.

मासेष्टमेहिगर्भस्यकुर्याद्विष्णोर्बलिक्रियां॥ श्रवणेचैवरोहिण्यां पुष्येचैवप्रशस्यते ॥ १ ॥ द्वितीयासप्तमीचैवद्वादशीचशुभातिथिः ॥ शुभग्रहोदयाःशस्तास्तेषाचदिवसाअपि ॥ २ ॥

टी०–स्त्रीको अष्टममासमें गर्भसंस्कार (विष्णुवलि) करना. श्रवण, रोहिणी. पुष्य, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी यह शुभहैं और शुभग्रहके लग्न और वारमें करना शुभ होय.

गर्भिणीधर्म.

भूम्यांचैवोच्चनीचायामारोहश्चावरोहणम्॥नदीप्रतरणंचैवशकटारोहणंतथा॥१॥ उग्रौषधंतथाक्षारंमैथुनंभारवाहनम्॥कृतेपुंसवनेचैवगर्भिणीपरिवर्जयेत् ॥ २ ॥

टी०-पुंसवन के बाद गार्भिणी स्त्रीनें ऊंचनीच भूमीपर चढना, उतरना, जादा चलना, वृक्षऊपर चढना, बहतीहुई नदीमें जाना, गाडीमें बैठना तीक्ष्ण औषधी लेना, खारी चीज खाना, मैथुन करना, बोझा उठाना इत्यादि-काम करना नहीं.

गर्भके लक्षण.

कललं च घनं शाखास्थित्वग्रोमोद्गमःस्मृतिः ॥
भुक्तिरुद्वेगसंभूतिर्मासेष्वाधानतः क्रमात् ॥ १ ॥

टी०-अब मासप्रति गर्भका रूप कहतेहैं. १ मासमें कलल कहिये शुक्र रुधिरके संयोगसे पिंड होताहै. २ मासमें घन कहिये वो पिंड मजबूत होताहै. ३ मासमें शाखा कहिये हस्त, पाद, होते हैं. ४ मासमें हाड उत्पन्न होतेहैं. ५ मासमें त्वचा आतीहै. ६ मासमें रोम आते हैं. ७ मासमें स्मृति याने ज्ञान होताहै. ८ मासमें भुक्ति अर्थात् भूखका ज्ञान होताहैं. ९ मासमें उद्वेग याने गर्भसे निकलनेकी इच्छा करताहै, १० मासमें प्रसव जानना.

दंतफलम्.

दंतैर्युतश्चेत्प्रथमेर्भकःस्यात्स्वयंविनश्येदनुजं द्वितीये ॥
हन्यात्तृतीये भगिनींचतुर्थेस्वमातरंबाणमितेग्रजातम्॥१॥

टी०--बालक दंतसहित उत्पन्न होवे तो बालकका नाश जानना. २ मासमें छोटे भाईका अशुभ, ३ मासमें बहिनको, ४ मासमें माताको, ५ मासमें बडे भाईको अशुभ, ६ मासके आगे शुभ जानना.

गर्भिणीप्रश्न.

नामाक्षराणित्रिगुणिकृतानितुरगंदेशोतिथिमिश्रितानि ॥
गजैर्विभक्तेलभतेचशेषंसमेचकन्याविषमेचपुत्रः ॥ १ ॥

टी०-गर्भिणीके नामाक्षर त्रिगुणित करना, उसमें घोडेके नामाक्षर और देशके अक्षर एकत्रकर चलती हुई तिथि उसमें मिलाय आठसे भागदेना. शेष-अंक सम रहे तो कन्या, और विषम रहे तो पुत्र होगा ऐसा जानना.

प्रसूतिस्थानमें प्रवेश करनेका नक्षत्र.

रोहिण्यैंदवपौष्णेषुस्वातीवारुणयोरपि ॥ पुनर्वसौपुष्यहस्तधनिष्ठात्र्युत्तरासुच ॥ १ ॥ मैत्रेत्वाष्ट्रेतथाश्विन्यांसूतिकागारवेशनम् ॥ प्रसूतिसंभवेकालेसद्यएकप्रवशयेत् ॥ २ ॥

टी०--रोहिणी, मृग, रेवती, स्वाती, शततारका, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, अनुराधा, चित्रा अश्विनी ये नक्षत्र प्रवेश करनेमें उक्तहै. जब प्रसूत होनेका समय प्राप्त होवे उसी समय प्रवेश करना. नक्षत्रादिकोंका विचार नहीं करना.

प्रसूतिस्थानके पदार्थ कहनेका प्रश्न,

मीने मेषे स्त्रियौ द्वे च चतस्रो वृषकुंभयोः ॥ तुलाकन्यकयोः सप्त बाणाख्या धनकर्कयोः ॥ १ ॥ तिस्रःस्युरन्यलग्नेचज्ञेयमेवं विचक्षणैः ॥ यथाराहुस्तथाशय्याभौमेखट्वांगभंगता ॥ रविस्थाने भवेद्दीपःशनिस्थाने तु नालकम् ॥ २ ॥

टी०--मीन अथवा मेष लग्नमें प्रसूत भई होयतो उसके पास २ स्त्रियां हैं. वृष और कुंभलग्नमें प्रसूत भई होयतो४ स्त्रियां हैं. तुला और कन्यालग्नमें प्रसूत होयतो ७ स्त्रियां, धन अथवा कर्क होयतो ५ स्त्रियां अन्य लग्नमें ३ स्त्रियां जानना. लग्नकुंडली मांड जिस दिशामें राहु होय उसदिशामें शय्या; मंगल लग्नमें होयतो खटिया टूटी हुई, जिस स्थान रवि होय उसस्थानपर दीपरहे, और जिस स्थानमें शनि होय उस स्थानमें बालकका नाल ऐसे क्रमसे जानना.

अन्यमतेन.

लग्नचंद्रान्तरगग्रहसंख्याउपसूतिकाउदगर्द्धेभ्यन्तरगा दक्षिणार्द्धेबाह्याः ॥ १ ॥ वक्रोच्चसंस्थैस्त्रिगुणाः स्वर्क्षत्र्यंशनवांशेस्थितैर्द्विगुणानचास्तगैरर्द्धमिताउपसूतिकाः ॥ २ ॥

टी०--जन्मलग्न और चंद्रमाके मध्यमें जितने ग्रह होवे उतनीही स्त्री वहां जानना. और जितनें ग्रह उदगर्द्धमें (उत्तरार्द्धमें) हो उतनी गृहके भीतर और दक्षि-

णार्द्धमें जितने ग्रह होवें उतनी बाहर स्त्री जानना. और वेही ग्रह वक्रगति अथवा उच्चराशिके होय तौ उक्त संख्यासे द्विगुण जानना और ग्रह स्वराशिमें अथवा स्वद्रेष्काण वा स्वनवांशमें होय तौ उक्तसंख्यासे द्विगुणित जानना और वेही ग्रह नीचराशिमें अथवा अस्तमें होय तौ उक्तसंख्यासे अर्धपरिमित स्त्रियां वहां पर होवे ऐसा जानना.

अन्यच्च.

चंद्रेणादृष्टेङ्गे पितुः परोक्षं जन्म ॥ मंदेङ्गे वास्ते भौमेपि ज्ञाच्छान्तरे चंद्रेपि ॥ १ ॥

टी०–लग्नको चंद्रमा नहीं देखता होवे अथवा लग्नमें शनि होवे अथवा सप्तम मंगल होवे अथवा बुध और शुक्रके मध्यमें चंद्रमा होवे तो जन्मसमयमें उसका पिता बिदेश गयाथा.

अन्यच्च.

सूर्यात्त्रिकोणास्तगौ मन्दारौ पापभगौ जन्मनि पिता बद्धः॥ १ ॥
चंद्रेङ्गे मन्देन्त्ये पापदृष्टे कारागारे जन्म ॥ २ ॥

टी०–जन्मलग्नमें सूर्यसे नवम, पंचम, वा सप्तमस्थानमें पापग्रहकी राशिपर शनि, मंगल होवे तो उस बालकका पिता कैदमें समझना चाहिये ॥ १ ॥ चंद्रमा लग्नमें होवे और शनि बारहमें होवे और इनपर पापग्रहकी दृष्टि होवे तो उस बालकका जन्म कारागार (जेलखाना) में हुवा जानना ॥ २ ॥

अन्यच्च.

जलभेङ्गेऽस्ते पूर्णेन्दौ वा जलभगावङ्गचंद्रौ वाम्बुस्थौ तज्जलासन्ने जन्म ॥ १ ॥

टी०–जलराशिका लग्न हो और सप्तमस्थानमें पूर्ण चंद्रमा हो अथवा जलराशिका लग्नचंद्र दोनोंही होवे अथवा चतुर्थस्थानमें होवे तब उस बालकका जन्म जलसमीपस्थानमें हुवाहै.

अन्यच्च.

चंद्रे तुर्ये वा मंदयुतदृष्टे वा जलभांशेन्धकारे जन्म ॥ १ ॥
सबलेर्केभौमदृष्टे बहुदीपगृहे जन्म ॥ २ ॥

टी०—चंद्रमा चतुर्थ हो वा शनियुक्त हो वा दृष्टि हो वा जलराशिके नवांशमें हो तो अंधकारमें जन्म हुवा समझना ॥ १ ॥ सूर्य बलकरकेयुक्त हो और मंगलकी दृष्टि होवे तो बोहोतसे दीपक लगरहें ऐसे गृहमें जन्म हुवा समझना.

अन्यच्च.

चंद्रात्तैलं लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानं च ॥ १ ॥
चरेर्के चरस्थिरेर्के स्थिरो द्विस्वभावे खंडवद्दीपः॥२॥

टी०—जितना चंद्रमा गतहो उतना तैल जलगया और जितना लग्न गत होवे उतनी बत्ती जलगई समझना ॥ १ ॥ यदि सूर्य चरराशिका होवेतो दीपक उसी समय लगायाथा. स्थिरका होवे तो प्रथमही लगा रहाथा. द्विस्वभावका होवेतो खंडित दीप समझना.

अन्यच्च.

शीर्षोदयांशेऽङ्गे मूर्धतःप्रसव उभयोदयांशे हस्ततोऽन्यथा पादतः१।

टी०—शीर्षोदयराशिके नवांशकमें लग्न होवे तो उसबालकका प्रसव मुखकी तरफसे हुवा. उभयतोदय राशिके नवांशकमें लग्न होवे तो हाथकी तरफसे अन्यराशिमें पांवकी तरफसे प्रसव हुवा समझना.

अन्यच्च.

केंद्रगस्य वा बलिनो ग्रहस्य दिशि गृहद्वारम् ॥ १ ॥ काष्ठाढ्यं नवं दग्धं चित्रं दृढं रम्यं जीर्णं क्रमादर्कादिषु यो बली तदनुसारी गृहम् ॥ २ ॥ एवं शय्याज्ञानम् ॥ ३ ॥

टी०—केंद्रस्थित ग्रह वा बलवान् ग्रहकी जो दिशा उसमें गृहका द्वार जानना ॥ १ ॥ यदि सूर्य बलवान् होवेतो बहुत काष्ठका गृह, चंद्रमा होवेतो नवीनगृह, मंगल होवेतो अग्निदग्ध गृह, बुध होवेतो चित्रविचित्र गृह, गुरु होवेतो दृढ (मजबूत) गृह, शुक्र होवे तो रमणीय गृह, शनि होवेतो जीर्णगृहमें प्रसव हुवा समझना. इसप्रिकार शैया (चारपाई) का ज्ञान करना.

अथ पादविचारः

आर्द्राद्वादश रौप्यं च ज्येष्ठाया नवताम्रकम् ॥
रेवत्या अग्नि रजत शेषे लोहं प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥

टी०—आर्द्रासे १२ नक्षत्रमें जन्म होवेतो रौप्यके पाये, ज्येष्ठसे ९ तक ताम्रके पायेका जन्म, रेवतीसे ३ सुवर्णकेपाये, शेष नक्षत्रोंमें लोहके पायेमें समझना.

तिथिगंडांत.

पूर्णानंदाख्ययोस्तिथ्योःसंधिर्नाडिद्वयं तथा ॥
गंडांतं मृत्युदं जन्म यात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥ १ ॥

टी०—पौर्णिमाकी अंत्यघडी और प्रतिपदाकी आद्यघडी, ऐसी दोनोंकीसंधी इसी क्रमसे पंचमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी, ऐसी सांधिकी २ घडी विवाह यात्रा दिकमें वर्ज करना. ये गंडांत कहातीहैं.

लग्नगंडांत.

कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः ॥
गंडातमंतरालं स्याद् घटिकार्धं मृतिप्रदम् ॥ १ ॥

टी०—कर्क, सिंह ये दोनों लग्नकी संधिकी आधी घडी, ऐसेही वृश्चिक, धन, मीन, मेष, इनकी सांधि वर्ज करना. ये आधी घडी मृत्युप्रद जानना.

नक्षत्रगंडांत.

पौष्णाश्विन्योः सर्वपित्र्यर्क्षयोश्च यच्च ज्येष्ठामूलयोरंतरालम् ॥
तद्गंडातं स्याच्चतुर्नाडिकं हियात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम्१॥

टी०—रेवती, आश्विनी, इनकी २ घडी सांधिकी इसी क्रमसे आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, इन सांधिकी ४ घडी वर्जित करना. ऐसे ये तीन गंडांत तिथि, लग्न, नक्षत्र ये विवाहमें यात्रामें और जन्मकालमें वर्जित करना.

जातकम्.

जन्मकालके शुभाशुभ फल.

अश्विनीपितृमूलाना पूर्वार्धे बाध्यते पिता ॥पूषाशक्रस्योत्तरार्धे जननी बाध्यते शिशोः ॥ १ ॥ सर्वेषां गंडजातीनां परित्यागो विधीयते ॥ वर्जयेद्दर्शनं तावत्तत्र षाण्मासिकं भवेत् ॥ २ ॥

टी०—आश्विनी, मघा, मूल, इन नक्षत्रोंके पूर्वार्धमें पुत्र उत्पन्न हुवा होय तो पिताको बाधक होताहै. रेवती, ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंके उत्तरार्धमें जन्म हुवा होयतो

माताको हानिकारक और गडांतमें जन्म हुवा होयतो पुत्रका त्याग करना अथवा उसका मुख छः महिने तक देखना नहीं.

कृष्णचतुर्दशीका फल.

कृष्णपक्षे चतुर्दश्याप्रसूतेः षडिधंफलं ॥ चतुर्दशींचषड्भागांकुर्यादादौशुभंस्मृतम् ॥ १ ॥ द्वितीयेपितरंहंति तृतीयेमातरंतथा चतुर्थेमातुलंहंतिपंचमेवंशनाशनम् ॥ २ ॥ षष्ठेचधनहानिःस्यादात्मनो वंशनाशनम् ॥ ३ ॥

टी०—कृष्ण चतुर्दशीमें जन्म हुवा होयतो तिथिके छः भाग करना. इनका फल-प्रथम भाग १० घडीका शुभ जानना. दूसरा पिताको अनिष्ट, तीसरा माताको, चौथा मामाको, पांचवा वंशको, छठा धननाशकारक, आत्मवंशनाशक ऐसा जानना.

अमावास्याका फल.

सिनीवाल्यांप्रसूताश्चदासीभार्यापशूंस्तथा॥गजाश्वमहिषींश्चैव शक्रस्यापिश्रियंहरेत् ॥ १ ॥ कुहूप्रसूतिरित्यर्थंसर्वदोषकरी स्मृता॥ यस्यप्रसूतिरेतेषांतस्यायुर्धननाशनम् ॥२॥सर्गगंडसमस्तत्रदोषस्तुप्रबलोभवेत् ॥

टी०—चतुर्दशीयुक्त अमावास्याको दासी, भार्या, गाय, हाथिनी, घोडी, भैंस, ये जो प्रसूत हुई तो स्वामीकी संपत्ति जायगी. अमावास्याको प्रसूत हुई होयतो बहुत दोष और स्वामीके आयुष्यका नाश और धनका नाश और गंडांतमें प्रसूति हुई होयतो बहुत दोष जानना.

दिनक्षयादि.

दिनक्षयेव्यतीपातेव्याघातेविष्टिवैधृतौ॥शूलेगंडेतिगंडेचपरिघेयमघंटको॥ १ ॥ कालेगंडेमृत्युयोगेदग्धयोगेचदारुणे तस्मिन्गंडेदिने प्रासेप्रसूतिर्यदिजायते ॥ २ ॥अतिदोषकरी प्रोक्तातत्रपापयुतासती

टीका—दिनक्षय, व्यतीपात, व्याघात, कल्याणी, वैधृति शूल, गंड, अतिगंड, परिघार्ध, यमघंट, कालदंड, मृत्युयोग, दग्धयोग; और दारुणयोग इन योगोमें जन्म हुवा होयतो अत्यंत दोष और वह स्त्री अत्यंत पापयुक्त ऐसे जानना.

ज्येष्ठानक्षत्रका फल.

ज्येष्ठादौजननीमाताद्वितीयेजननीपिता ॥ तृतीयेजननीभ्राता स्वयंमाताचतुर्थके ॥ १ ॥ आत्मानंपंचमेहंतिषष्ठेगोत्रक्षयोभवेत् सप्तमेचोभयकुलंज्येष्ठभ्रातरमष्टमे ॥ २ ॥ नवमेश्वशुरंहंतिसर्वंहंति दशांशकम् ॥

टी०—ज्येष्ठानक्षत्रपर जन्म होयतो उसकी छः २ घडीके १० भाग करना उसका फल पहिला भाग मातामहीको बुरा, दूसरा नानाको, तीसरा मामाको, चउथा माको, पांचमा पुत्रको, छठा गोत्रजोंको, सातवेमें दोनों कुलका नाश, आठवा बडेभाईको, नवमा श्वशुरको और दशमा सबको बुरा ऐसा जानना.

मूलनक्षत्रका फल.

मूलस्तंभत्वक्चशाखापत्रंपुष्पंफलंशिखा ॥ वेदाश्चमुनयश्चैवदिशश्चवसवस्तथा ॥१॥ नंदाबाणस्तथारुद्रामूलभेदाःप्रकीर्तिताः॥ मूलेमूलविनाशायस्तंभेहानिर्धनक्षयः ॥ २ ॥ त्वचिभ्रातृविनाशश्चशाखामातुर्विनाशकृत् ॥ पत्रेसपरिवारःस्यात्पुष्पेषुनृपवल्लभः ॥ ३ ॥ फलेषुलभतेराज्यंशिखायामल्पजीवितम् ॥

टी०—मूलनक्षत्रको वृक्ष ऐसा नाम है, उसकी घटी ६० उसके स्थान ऐसे, प्रथमकी घटिका ४ वृक्षका मूल-उसपर जन्म होयतो नाश, द्वितीय भाग ७ घटी स्तंभहानि और धनका नाश, तीसरा भाग १० घटी त्वचा भाईको निकृष्ट, चोथा भाग ८ घडीका डार माताका नाशकरे, पांचवा भाग घडीका—पत्ते-सपरिवारका नाशकरे, छठा भाग ५ घडी वृक्षके पुष्प राजाका प्रिय होय, सातवा भाग ७ घडी वृक्ष फल राज्यप्राप्ति, आठवा भाग ११ घडी वृक्षके अग्रभागमें जन्म हुवा तो अल्पायुषी, ऐसे ६० घडियोंके नाम और फल जानना.

जन्मकालमें मूलनक्षत्र कौनसे लोकमें है सो देखनेका लग्न.

वृषालिसिंहेषुघटेचमूलंदिविस्थिततंयुग्मतुलागनांत्ये ॥
पातालगं मेषधनुःकुलीरनक्रेषु मर्त्येष्विति संस्मरंति ॥ १ ॥

टी०—वृषभ, वृश्चिक, सिंह, कुंभ इन चार लग्नोंमेंसे कोईलग्नमें जन्म हुवा

होयतो मूलनक्षत्रका वास स्वर्गमें जानना. उसका फल राज्यप्राप्ति. मिथुन, तुला, कन्या, मीन, इन लग्नोंमें जन्म हुवा होयतो पातालमें, उसका फल धनप्राप्ति. मेष, धन, कर्क, मकर इन लग्नोंमें जन्म होय तो मृत्युलोकमें वास जानना. उसका फल कुटुंबको हानिकारक ऐसा जानना. ऐसे १२ राशिके फल हैं.

आश्लेषानक्षत्रका नराकारवृक्ष.

मूर्धास्यनेत्रगलकांसयुगंचबाहू-
हृज्जानुगुह्यपदमित्यहिदेहभागाः ॥
बाणाद्रिनेत्रहुतभुक्श्रुतिनागरुद्र-
षण्णांपदंचशिरसःक्रमशस्तुनाड्यः ॥ १ ॥
राज्यंपितृक्षयोमातृनाशः कामक्रियारतिः ॥
पितृभक्तोबलिस्वघ्नस्त्यागीभोगीधनीक्रमात् ॥ २ ॥

टी०—आश्लेषानक्षत्रकी ६० घडीयोंके नराकार स्थान—प्रथम ५ घडी मस्तक उसका फल राज्यप्राप्ति, दूसरी घडी मुख पितृनाशकारक, २ घडी नेत्रकी मातृनाशक, चौथी ३ घडी गर्दन स्त्रीरत, पांचमी ४ घडी स्कंध पितृभक्त, छठी ८ घडी दोनो हाथ मजबूत, सातमी ११ घडी हृदय आत्मघाती, आठमी ६ घडी दोनों घुटने त्यागी, नवमी ९ घडी गुह्य भोगी, दसमी ५ घडी दोनों पांव धनवान, जिस भागमें जन्म हुवा होय उसका फल तदनुसार लेना.

अथाशुभर्क्षे जन्मदोषावधिः ।

द्विमासंचोत्तरादोषःपुष्येत्रैमासिकःस्मृतः ॥ पूर्वाषाढास्वष्टमासास्त्वाष्ट्रेमासास्तुषट्स्मृताः ॥ १ ॥ नवमासास्तथासार्पेमूलेचाष्टौसमाःस्मृताः ॥ पंचेन्दुमासाज्येष्ठायांपुत्रदर्शननिन्दिताः ॥ २ ॥

टी०—उत्तराका दोष २ मासतक, पुष्यका ३ मास, पूर्वाषाढाका ८ मास, चित्राका ६ मास, आश्लेषाका ९ मास, मूलका ८ वर्ष, ज्येष्ठाका १५ मासतक दोष है, सो इतने दिनतक पुत्रका मुख पिताको न देखना चाहिये.

द्वादशराशिनाम.

मेषो वृषोथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके ॥
तुलाथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुंभमीनकौ ॥ १ ॥

टी०—मेषराशिसे मीनराशितक क्रमसे जानना.

राशिस्वामी.

कुजः सितो बुधो विधुर्भृगुज्ञशुक्रभूमिजाः ॥
सुरेज्यमंदसूर्यजागुरुः क्रियाच्च मेश्वराः ॥ १ ॥

टी०–मेषराशिका स्वामी मंगल, मिथुनका बुध, कर्कका चंद्रमा, सिंहका सूर्य, कन्याका बुध, तुलाका शुक्र, वृश्चिकका मंगल, धनका गुरु, मकर और कुंभका शनि, मीनका स्वामी गुरु समझना.

क्रूरशुभग्रह.

क्रूराः खेटा राहुमंदार्कभौमाः पापः सौम्यस्तैर्युतः क्षीण इंदुः ॥
पूर्णश्चंद्रःसौम्यशुक्रामरेज्याःसौम्याःसर्वे चंद्रयुक्ता बलाढ्याः॥१॥

टी०–क्रूरग्रह राहु शनि, सूर्य, मंगल, कृष्णपक्षका चंद्रमा, इनके संयुक्त बुध होवेतो वोभी क्रूर जानना. शुभग्रह पूर्णचंद्रमा, बुध, गुरु, शुक्र यह शुभ जानना.

ग्रहोंकी जातिसंज्ञा.

विप्राधीशौ जीवशुक्रौ कुजार्कौ राजन्यानामोषधीशो विशां च ॥ शूद्राणां ज्ञश्चांत्यजानां च मंदः सिंहीसूनुर्म्लेच्छवंशोद्भवानाम् ॥ १ ॥

टी०–गुरु, शुक्र यह ब्राह्मण, सूर्य भौम यह क्षत्रिय, चंद्रमा वैश्य, बुध शूद्र, शनि चांडाल, राहु म्लेच्छ, इस प्रकार ग्रहोंकी जाति जानना.

ग्रहोंकी स्त्रीपुरुषसंज्ञा.

प्रोक्ता नराःसूर्यकुजामरेज्याः क्लीबौ शनिज्ञौ युवती सितेंदू ॥
सत्वं रवीज्यक्षणदाधिपाः स्यू रजः सितारौ ज्ञयमौ तमश्च ॥ १ ॥

टी०–सूर्य, मंगल, गुरु, यह पुरुष ग्रह हैं, शनि, बुध, यह नपुंसक ग्रह, शुक्र चंद्रमा यह स्त्रीग्रह. सूर्य, चंद्र, गुरु, यह सत्वगुण, शुक्र, मंगल; रजोगुण, बुध तथा शनिका तमोगुण जानना.

ग्रहोंका रूप.

नृपो रवींदू किल सैन्यनेता भौमः कुमारः शशिजो निरुक्तः ॥
सन्मंत्रिणौ देवगुरूशनाख्यौ सूर्यात्मजः सेवकसंज्ञकः स्यात् ॥१॥

टी०—रवि, चंद्र यह राजा जानना, मंगल सेनापति जानना, बुध कुमार जानना, गुरु, शुक्र, यह मंत्रि जानना, शनि सेवक जानना.

ग्रहोंका वर्ण.

रक्तः सितो रक्ततरः सुनीलःपीतोतिशुक्लस्तत्रसितोत्र वर्णः ॥
सूर्यादधीशा दहनोंबुभूमीदामोदराः शुक्रशचीविरंचयः ॥ १ ॥

टी०--सूर्यका लालवर्ण, चंद्रमाका श्वेत, मंगलका अत्यंत लाल, बुधका नील, गुरुका पीत, शुक्रका श्वेत, शनिका कृष्णवर्ण जानना. सूर्यकी देवता चंद्रमाकी जल, मंगलकी भूमि, बुधकी दामोदर गुरुकी इंद्र शुक्रकी मस्तक शनिकी ब्रह्मा देवता जानना. ी मातृ

दिशास्वामी.

टी०--पूर्वसे लगाय, सूर्य, शुक्र, मंगल राहु, शनि, चंद्र, बुध, गुरु, क्रमसे अष्टदिशाओंके स्वामी जानना, और चारों वेदोंके स्वामी, ऋग्वेदके गुरु, यजुर्वेदके शुक्र, सामवेदके मंगल, अथर्वणवेदके बुध, इस क्रमसे जानना.

द्वादशभावसंज्ञा.

मूर्तिर्धनाख्यःसहजः सुखश्च सुतारिपत्नीमृतिधर्मकर्माः ॥
सायव्ययावै तनुतोविचिन्त्याभावाअमीद्वादशहोरिकाद्यैः ॥१॥

टी०--लग्नसे द्वादशस्थानकी संज्ञा मूर्ति १ धन २ सहज ३ सुख ४ सुत ५ अरि ६ पत्नी ७ मृति ८ धर्म ९ कर्म १० आय ११ व्यय १२ यह बारह स्थान जानना.

केंद्रादिद्वादशस्थानकी संज्ञा.

अथ च केंद्रचतुष्टयकंटकं तनुसुखांबरसप्तमभंस्मृतम् ॥पणफरंधन-
लाभसुताष्टमंसहजशत्रुनवांत्यमपोक्लिमम् ॥ १ ॥ दुश्चिक्यलाभां-
बरषष्ठगेहंप्रोक्तंतथैवोपचयत्रिकंतु ॥ षडंत्यरंध्रंचनिजंनवांशंवगो

त्तमाख्यं विबुधावदंति ॥ २ ॥ नवमं पंचमं स्थानं त्रिकोणं परिकीर्तितम् ॥ ३ ॥

टी०–द्वादशस्थान संज्ञाकहते हैं १।४।७।१० यह चारों स्थानके नाम केंद्र, चतुष्टय, कंटक, जानना, २।५।८।११ इन स्थानोंका नाम पणफर जानना. ३।६।९।१२ इन स्थानोंको आपोक्लिम जानना. ३।११।१०।६ इनको उपचय कहते हैं. ८।६।१२ इनको त्रिक कहतेहैं और जो ग्रह अपने नवांशकमें होय वह वर्गोत्तम कहाता है. ५।९ इन स्थानकी त्रिकोण संज्ञा है.

जन्मकालके ग्रहोंका फल.

तनुस्थान–लग्नस्थितोदिनकरः कुरुतेंगपीडांपृथ्वीसुतोवितनुतेरुधिरप्रकोपम् ॥ छायासुतःप्रकुरुतेबहुदुःखभाजं जीवेन्दुभार्गवबुधाःसुखकांतिदाःस्युः ॥ १ ॥ धनस्थान--दुःखावहाधनविनाशकराः प्रदिष्टावित्तस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ॥ चंद्रोबुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनोवानानाविधंधनचयंकुरुतेधनस्थः ॥ २ ॥ सहजस्थान-भानुःकरोतिविरुजंरजनीकरोपिकीर्त्यायुतंक्षितिसुतःप्रचुरप्रकोपम् ॥ ऋद्धिंबुधःसुधिषणंसुविनीतवेषंस्त्रीणांप्रियंगुरुकवीरविजस्तृतीये ॥३॥ सुहृत्स्थान--आदित्यभौमशनयःसुखवर्जितांगं कुर्वंतिजन्मनिचिरंसुचिरंचतुर्थे ॥ सोमोबुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनोवासौख्यान्वितंचनृपकर्मरतंप्रधानम् ॥ ४ ॥ सुतस्थान--पुत्रेरविःप्रचुरकोपयुतंबुधश्चस्वल्पात्मजंशनिधरातनुजावपुत्रम् ॥ शुक्रेन्दुदेवगुरवःसुतधामसंस्थाः कुर्वंतिपुत्रबहुलंसुखिनंसुरूपम् ॥५॥ रिपुस्थानमार्तंडभूमितनुजौहतशत्रुपक्षंपंगुर्नररिपुगृहेष्वतिपूजनीयम् ॥ काव्येन्दुजौमतिविहीनमनल्परोगंजीवः करोतिविकलंमरणंशशाकः ॥ ६ ॥ जायास्थान--तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था जायां कुकर्मनिरतांतनुसंततिंच ॥ जीवेन्दुभार्गवबु-

धाबहुपुत्रयुक्तांरूपान्वितां जनमनोहररूपशीलाम् ॥ ७ ॥ मृत्यु-स्थान----सर्वेग्रहादिनकरप्रमुखानितांतंमृत्युस्थितावितनुतःकिल दुष्टबुद्धिम् ॥ शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिं सौख्यैर्विहीनम-तिरागगणैरुपेतम् ॥८॥ धर्मस्थान--धर्मस्थितारविशनैश्वरभूमि-पुत्राः कुर्वंतिधर्मरहितंविमतिंकुशीलं ॥ चंद्रोबुधोभृगुसुतःसुररा-जमंत्रिधर्मक्रियासुनिरतंकुरुतेमनुष्यम् ॥ ९ ॥ कर्मस्थान--आ-दित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः कुर्युर्नरंबहुकुकर्मरतंकुपुत्र-म् ॥ चंद्रःसुकीर्तिमुशनाबहुवित्तयुक्तंरूपान्वितंबुधगुरुः शुभकर्म भाजम् ॥ १० ॥ लाभस्थान--लाभस्थितोदिनकरोनृपलाभयुक्तं तारापतिर्बहुधनंक्षितिशः क्षितीशम् ॥ सौम्योविवेकसुभगंचध-नायुषीज्याः शुक्रःकरोतिसुगुणंरविजः सुकीर्तिम् ॥ ११ ॥ व्यय-स्थान--सूर्यःकरोतिपुरुषंव्ययगोविशीलंकाणंशशिक्षितिसुतौबहु-पापभाजम् ॥ चंद्रांगजोगतधनंधिषिणः कृशांगंशुक्रोबहुव्ययक-रंरविजः सुतीव्रम् ॥१२॥ राहुकेतुफलं सर्वं मंदवत्कथितं बुधैः ॥

[इसका कोष्टक आगे ७१ पृष्ठमें देखना]

बालकके जन्मकालके मृत्युकारक ग्रह.

चंद्राष्टमे च धरणीसुतसप्तमं च राहुर्नवं च शनिजन्मगु-रुस्तृतीये ॥ अर्कस्तु पंचभृगुषष्ठबुधश्चतुर्थेजातोनजीव-तिनरः प्रवदंतिसंतः ॥ १ ॥

टी०--जन्मलग्नसे चंद्र आठवे स्थानमें, भौम सातस्थानमें, राहु नवस्थानमें, शनि जन्मलग्नमें, गुरु ३ स्थानमें, रवि पांच स्थानमें, शुक्र ६ स्थानमें, बुध ४ स्थानमें, ऐसे ग्रह होवे तो बालक बचेगा नहीं.

पुरुषजातकोष्टक.

टी०--जन्मलग्नमें तन्वादि द्वादशस्थानमें जो जो ग्रह आवे उनके पृथक् २ फल जाननेका कोष्टक और राहु केतुका फल शनिके समान जानना.

संख्या	स्थान.	रवि.	चन्द्र.	मंगळ.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि. राहु. केतु
१	तनु.	अंगपीडा.	कांति और सुख.	छोहिकोप.	कांति और सुख.	कांति और सुख.	कांति और सुख.	अतिदुःखा.
२	धन.	अतिदुःख या धनका नाश	द्रव्य मिलेगा.	दुःख और धननाश	नानाविध द्रव्यप्राप्ति	नानाविध द्रव्यप्राप्ति	नानाविध धनप्राप्ति	अतिदुःख और धनका नाश
३	सहज.	रोग न होगा.	कांति मिलावेगा.	के धर्मे रहेगा.	समृद्धि.	बुद्धिमान होगा.	नाना वेष धरेगा.	स्त्रियोंका प्यारा होगा
४	सुहृत्.	शरीरको बहुत पीडा.	सुखी रहेगा.	शरीरका जादा पीडा.	सुखी रहेगा.	सुखी रहेगा.	सुखी रहेगा.	शरीरको बहुत पीडा होगी.
५	सुत.	बहुत क्रोधी	बहुपुत्र होगा.	संतति न होवगी.	कम संतति होगा.	बहुपुत्र होगा.	बहुपुत्र होगा.	सतति न होगी.
६	रिपु.	शत्रुका नाश करेगा	मरेगा.	शत्रुका नाश करेगा	बुद्धिहीन या रोगी होगा.	शरीर अच्छा न रहेगा.	हीन बुद्धि या रोगी होगा.	शत्रुके घरमें पूजा पावेगा.
७	जाया.	स्त्री दुष्टकर्मी बालक न होवे	स्त्री या बालक अच्छा.	स्त्री दुष्टकर्मी बालक न होवे.	स्त्रीरूपसे अच्छी मनकी प्यारी या बहुपुत्र होगा या पिताकु मारेगा.			स्त्री पापकर्मी या संतति कम होगा
८	मृत्यु.	सब ग्रहका फल एक है. शस्त्रसे शरीरको पीडा होगा, सुख न होगा, और निरंतर रोगी रहेगा दुष्टबुद्धि, जो ग्रह इस स्थानमें होगा उसका फल लेना.						
९	धर्म.	अधर्मी या पापी होगा.	धर्मकर्ता होवेगा.	अधर्मी या पापी रहेगा.	स्वधर्म रखेगा.	अपने धर्मसे रहेगा.	अपने धर्मसे रहेगा	अधर्मी या पाप कर्मी होगा.
१०	कर्म.	बहु दुष्टकर्मी पुत्र पापी.	बहुमानयुक्त होगा.	दुष्ट या पापी होगा.	रूप अच्छा होगा.	शुभकर्म करेगा.	धनवान् होगा	दुष्टकर्मी या पापी पुत्र होगा.
११	आय.	राज्यलाभ होगा.	धन बहुत मिळवे.	सार्वभौमसे लाभ होगा.	विचारवान होगा	धन और आयुवृध्दि	गुणवान् होगा.	कीर्तिमान जगमें होवेगा.
१२	व्यय.	दुष्टकर्मी.	काणा होगा.	पापकर्म करेगा.	धनहीन होगा.	शरीर कृश होगा	व्याधी होगी.	क्रोधयुक्त होगा.

अन्यमतम्.

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चंद्रोऽष्टमेपि वा ॥ सद्यएव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥ १ ॥

टी०—जन्मसमयमें चतुर्थस्थानमें राहु ६ अथवा ८ चंद्रमा होय तो बालक तत्काल मृत्यु पावेगा. शंकर रक्षा करे तोभी बचेभी नहीं.

अन्यच्च.

क्षीणचंद्री व्ययस्थाने पापलग्ने स्मरेऽष्टमे॥ शुभैश्च रहिते केंद्रे शीघ्रं नश्यति बालकः ॥ १ ॥

टी०—जन्म कालमे क्षीण चंद्रमा १२ स्थान अथवा पापलग्नमें, सप्तम, अथवा अष्टम होय और शुभग्रह केंद्रमें नहीं होय तो उस बालकका तत्काल मृत्यु जानना.

अन्यश्च.

दशमस्थो दिवानाथः पापैर्बहुनिरीक्षितः ॥ मेषवृश्चिककर्कस्थो सद्यो मृत्युप्रदो भवेत् ॥ १ ॥

टी०—जन्मकालमें मेष, वृश्चिक. कर्क इनमेंसें किसी राशिका सूर्य दशम स्थानमें होय और पापग्रहकी दृष्टि होय तो बालक तत्काल मृत्यु पावे.

अन्यच्च.

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदि । नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुष्यः प्रजायते ॥ १ ॥

टी०--लग्नसे सात स्थानमें मंगल, ८ स्थानमें शुक्र, ९ स्थानमें सूर्य होय तो उसबालकका स्वल्प आयुष्य जानना.

अन्यच्च.

क्षीणचंद्रो यदा लग्ने पापाश्चाष्टमकेंद्रगाः ॥ स्मरे लग्नपतिः पापैर्युक्तो नश्येत्तदा शिशुः ॥ १ ॥

टी०—क्षीण चंद्रमा लग्नमें होय, पापग्रह केंद्रमें वा अष्टममें होय, लग्नपति ७ में, पापग्रहके साथ होय तो बालक तत्काल मृत्यु पावे.

अन्यच्च.

लग्ने च क्रूरभवने क्रूरःपातालगो यदा ॥
दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति बालकः ॥ १ ॥

टी०—क्रूरग्रहका लग्न होय और चार स्थानमें क्रूर ग्रह होय; १० स्थानमेंभी क्रूर होय तो उसबालकका जीवन बडा कष्टसे जानना.

अन्यच्च.

सप्तमे भवने भानोर्मध्यस्थो भूमिनंदनः ॥
राहुर्व्यये तथैवापि पिता कष्टेन जीवति ॥ १ ॥

टी०—सप्तमस्थानमें सूर्य होय और बारहवें स्थानमें राहु होय और इनके मध्यस्थानमें मंगल होयतो पिता बहुत कष्टसे बचे.

अन्यच्च.

अष्टमस्थो यदा राहुः केंद्रे चन्द्रश्च नीचगः ॥
तस्यसद्यो भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १ ॥

टी०—अष्टमस्थानमें राहु और केंद्रमें नीचका चंद्रमा होयतो बालक उसीवक्त मृत्युपावे इसमे कुछ संदेह नहीं.

अन्यच्च.

द्वादशस्थो यदा चंद्रः पापाश्चाष्टमगेहगाः ॥
मासेनैकेन मृत्युः स्यात्तस्य बालस्य निश्चितम् ॥१ ॥

टी०—द्वादशस्थानमें चंद्रमा, ८ स्थानमें पापग्रह होय तो बालकका १ मासमें मृत्यु जाननां.

अन्यच्च.

षष्ठाष्टमे यदा चंद्रो बुधयुक्तश्च तिष्ठति ॥
विषदोषेण बालस्य तदा मृत्युश्च जायते ॥ १ ॥

टी०—जन्मसमयमें चंद्रमा बुधसंयुक्त होकर ६।८ होय तो बालकका विष दोषसे मृत्यु कहना.

अन्यच्च.

अष्टमे च निशानाथे केंद्रे क्रूरो यदा भवेत् ॥

चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ १ ॥

टीका—जन्म लग्नसे ८ स्थानमें चंद्रमा होय, केंद्रमें क्रूरग्रह होय और ४ स्थानमें राहु होयतो बालक १ वर्षतक जीता रहै.

अन्यच्चः

जन्मस्थाने यदा भौमः शत्रुक्षेत्रगतो भवेत् ॥
म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥ १ ॥

टीका--जन्मस्थानमें क्षत्रुक्षेत्रको मंगल होय तो पिताको अशुभ है.

अन्यच्च.

लग्नेष्टमे यदा राहुश्चंद्रस्तं यदि पश्यति ॥
दशाहैर्जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥ १ ॥

टीका—लग्नमें वा अष्टममें राहु होय और चंद्रमा देखता होय तो उस बालकका १० दिनमें मृत्यु जानना.

अन्यच्च.

वक्री शनिर्भौमगृहे केंद्रे षष्ठाष्टमेपि वा ॥
कुजेन बलिना दृष्टो जीवेद्वर्षद्वयं शिशुः ॥ १ ॥

टी०--वक्रका शनि मंगलके गृहमें (मेष वृश्चिकमें) होकर केंद्रमें तथा ६।८ बैठा होय और बलवान् मंगलकी दृष्टि होयतो बालक २ वर्षमें मरे.

अन्यमत.

शनिराहुकुजैर्युक्तः सप्तमे नवमे शशी ॥
सप्तमे दिवसे हंति मासे वा सप्तमे शिशुम् ॥ १ ॥

टी०-.शनि, राहु; मंगल; इन तीनोंसे युक्त चंद्रमा ७ में वा ९ में होय तो ७ दिनमें वा ७ मासमें बालकको अरिष्ट जानना.

अन्यमत.

दशमे भवने राहुः पितृमातृप्रपीडनम् ॥
दशमे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १ ॥

टी०--दशमें स्थानमें राहु होवे तो मातापिताको दुःख और १२ के वर्षमें बालकको अरिष्ट जानना.

नराकारचक्र.

शीर्षाख्यंवदनंचबाहुयुगलं हृत्कुक्षिकट्यस्तथा बस्तिर्गुह्य-
मुरूचजानुजघनेपादद्वयंवैक्रमात् ॥ मेषाद्याः किल राश-
यःसमुदिताः पूर्वैः सुबोधाय ये त्वेके लग्नभतश्च काद्य:
वयवा ज्ञेयास्तु निःसंशयम् ॥ १ ॥

टी०—पुरुषकार चक्र लिखना, उसपर मेषादिराशिका यथाक्रमसे न्यास करना. १ मस्तक २ मुख ३ हस्त ४ हृदय ५ उदर ६ कटि ७ वस्ती ८ गुह्य ९ ऊरु १० जानु ११ जघन १२ पाद, इनपरसे ग्रहोंका फल जानना. कोई आचार्य जन्म लग्नसेभी गिनते हैं. शरीरके व्रण, तिल, मसक, चिन्ह वगैरह देखना.

बालककेस्त्रीकामृत्युकारकग्रह.

षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तमसंभवः ॥
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥ १ ॥

टी०—जन्मलग्नसे षष्ठस्थानमें भौम, राहु स्थानमें, शनि ८ वे स्थानमें ऐसा योग होवे तो उस बालककी स्त्री बचेगी नहीं.

पराक्रमेशग्रह.

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ॥
दशमोंगारकश्चैव स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥ १ ॥

टी०—जन्मलग्नमें शुक्र, बुध, केंद्रमें बृहस्पति, १० वे स्थानमें मंगल, होय तो वह बालक कुलदीपक होताहै.

अपराक्रमकेग्रह.

नैव शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ॥
दशमोंगारको नैव जातकं किं करिष्यति ॥ १ ॥

टी.—लग्नमें शुक्र वा बुध, केंद्रमें बृहस्पति. १० वे स्थानमें मंगल इनमेसे कोई ग्रह न होवे तो जन्म होकर व्यर्थ जानना.

जातिभ्रंशकरग्रह.

धनस्थाने यदा सौरिः सैंहिकेयो धरात्मजः ॥ शुक्रो गुरुः सप्तमे

च त्वष्टमौ रविचंद्रकौ ॥ ब्रह्मपुत्रपदे वापि वेश्यासु च सदा रतिः ॥ प्राप्ते विंशतिमे वर्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥ १ ॥

टी०–धनस्थानमें शनि, राहु, मंगल अथवा सप्तममें शुक्र, गुरु, अष्टममें रवि, चंद्र, ऐसे ग्रह होवें तौ, यदि ब्राह्मणजन्म होवे तोभी वेश्यासे रत होगा और बीसवर्षका होवे तब म्लेच्छ होगा.

मातापिताकेनाशकग्रह.

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत् ॥
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ १ ॥

टी०–षष्ठस्थानमें अथवा द्वादशस्थानमें पापग्रह होवेतो माताको भय जानना वा चतुर्थ दशममें होवेतो पिताको भय जानना.

नाशवान् ग्रह.

अर्को राहुः कुजः सौरिर्लग्नात्तिष्ठति पंचमे ॥
पितरं मातरं हंति भ्रातरं च शिशुं क्रमात् ॥ १ ॥

टी०--जन्मलग्नमें पंचम स्थानमें ग्रह आवे तो उनके फल. रवि होय तो पिताको, राहु होवेतो माताको, भौम होय तो भाईको; शनि होय तो अपनेको मृत्युकारक क्रमसे जानना.

लग्नस्थाने यदा सौरिः षष्ठो भवति चंद्रमाः ॥
कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ १ ॥

टी०–जन्मलग्नमें शनि, छठे चंद्र; सप्तममें मंगल ऐसे होवेतो पिताको मृत्यु कारक जानना.

पातालस्थो यदा राहुश्चंद्रः षष्ठाष्टमेपि च ॥
पापदृष्टोपि शेषैश्च सद्यः प्राणहरः शिशोः ॥ १ ॥

टी०--जन्मलग्नसे सातवे राहु, छठे वा आठवे स्थानमें चंद्रमा और शेषग्रहोंकी पापदृष्टि ऐसा होय तो जन्म होतेही बालकका मृत्यु जानना.

जन्मलग्ने यदा राहुः षष्ठो भवति चंद्रमाः ॥
जातो मृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्या त्वपमृत्युना ॥ १ ॥

टी०—लग्नमें राहु, छठे चंद्रमा ऐसा होतो जन्मतेहि बालकका मृत्यु जानना. और जन्मलग्नपर क्रूदृष्टि होयतो अपमृत्यु जानना.

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ॥
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शंकरः ॥ १ ॥

टी०—जन्मलग्नमें मंगल और आठवें बृहस्पति, ऐसा होवे तो बारहवे वर्षमें शंकरभी रक्षण कर्त्ता होय तोभी मृत्यु प्राप्त होगा.

शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः ॥
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ॥ १ ॥

टी०—शनिके गृहमें सूर्य वा सूर्यके स्थानमें शनि ऐसे ग्रह होय तो देव रक्षण कर्ता होय तोभी बारहवे वर्षमें मृत्यु होगी.

षष्ठाष्टमे तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः ॥
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शंकरः ॥ १ ॥

टी०—छठे आठवे वा लग्नमें बुध होय तौ शंकर रक्षक होयतोभी ४ थे वर्षमें मृत्यु होती है।

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षडष्टसु च चंद्रमाः ॥
वर्षेष्टमेपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ १ ॥

टी०—मंगलके स्थानमें बृहस्पति, और छठे या आठवे स्थानमें चंद्रमा होयतो ईश्वर रक्षण कर्ता होय तोभी आठवे वर्षमें मृत्यु होगी.

दशमेच यदा राहुर्जन्मलग्नेपिवा भवेत् ॥
वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥ १ ॥

टी०—दशमस्थानमें अथवा लग्नमें राहु होयतो सोलहवे वर्षमें मृत्यु होगा. ऐसा निश्चय जानना.

ग्रहोंकी दृष्टि.

पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपंचमे वा ॥ त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके च संपूर्णदृष्टिःसमसप्तके च ॥ १ ॥ शनेस्तु त्रिदशे पूर्णा दृष्टिर्जीवस्य कोणके ॥ बुधैर्ज्ञेया पूर्णदृष्टिर्भौमस्य चतुरष्टके ॥ २ ॥

टी०-ग्रह जिस स्थानमें रहताहै उस स्थानसे दशमस्थानमें और तृतीय स्थानमें एकपाद दृष्टि करताहै. नवम और पंचम स्थानमें द्विपाददृष्टि जानना. चौथे और अष्टम स्थानमें त्रिपाद दृष्टि जानना. और सप्तमस्थानमें पूर्ण दृष्टि जानना. शनिकी अपने स्थानसे तीसरे और दशमस्थानमें पूर्ण दृष्टि होतीहै गुरुकी नवम और पंचमस्थानमें पूर्ण दृष्टि होती है. और चतुर्थ तथा अष्टमस्थानमें मंगलकी पूर्ण दृष्टि होतीहै.

ग्रहोंका उच्चत्व और नीचत्व.

रविर्मेषेतुलेनीचो वृषे चंद्रस्तुवृश्चिके ॥ भौमश्च नक्रे कर्के च स्त्रियां सौम्यो झषे तथा ॥ गुरुः कर्के च नक्रेच मीनकन्ये सितस्य च ॥ मंदस्तुलायां मेषे च कन्याराहोर्गृहंतथा ॥ राहुर्युग्मेतुचापेचतमोवत्केतुजं फलम् ॥ प्रोक्तं ग्रहाणामुच्चत्वंनीचत्वंच क्रमाद्बुधैः ॥१॥

टी०-रवि मेषका होय तो उच्च, तूलका होयतो नीच, चंद्र वृषभका होय तो उच्च, वृश्चिकका होय तो नीच, भौम मकरका उच्च, कर्कका नीच बुध कन्याका उच्च, मीनका नीच, गुरु कर्कका होय तो उच्च, मकरका नीच, शुक्र मीनका उच्च. कन्याका नीच, शनि तुलाका उच्च, मेषका नीच, राहुका गृह कन्या और मिथुनका उच्च, धनका नीच, केतुका राहुके सदृश उच्चत्व और नीचत्व जानना.

जन्मलग्नोंके फल.

मेषेदैन्यमुपैति गर्वितवृषे नानामतिर्मन्मथे शूरः कर्कटके धृतिश्च वनपे कन्या च मायान्विता ॥सत्यं चैव तुले त्वलौ मलिनता पापान्वितं वै धनुर्मूर्खत्वंमकरे घटे चतुरता मीने त्वधीरा मतिः ॥ १

टी०-मेषलग्नमें जन्म हुवा होय तो दीनता प्राप्त होतीहै. वृषभमें गर्वित, मिथुनमें नानाप्रकारकी बुद्धि, कर्कमें शूर सिंहमें स्थिरबुद्धि, कन्यामें अत्यंत मायावी, तुलामें सत्यवादी, वृश्चिकमें मलिनता, धनमें पापबुद्धि, मकरमें मूर्खत्व, कुंभमें चतुरता, मीनमें आत्मघाती, ऐसे जन्मलग्नके फल जानना.

स्त्रीजातक.

तनुस्थान-मूर्तौकरोतिविधवांदिनकृत्कुजश्चराहुर्विनष्टतनयांर

विजोदरिद्राम् ॥ शुक्रःशशांकतनयश्चगुरुश्चसाध्वीमायुःक्ष-
यंचकुरुतेत्रचशर्वरीशः ॥१॥ धनस्थान--कुर्वंतिभास्करशनैश्चर
राहुभौमादारिद्र्यदुःखमतुलंनियतंद्वितीय ॥ वित्तेश्वरीमविधवां
गुरुशुक्रसौम्यानारींप्रभूततनयाकुरुतेशशांकः ॥ २ ॥ सहजस्था
न--सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्युः स्त्रियंबहुसुतांधनभा-
गिनींच ॥ सत्यांदिवाकरसुतः कुरुतेधनाढ्यां लक्ष्मींददातिनि-
यतंकिलसैंहिकेयः ॥ ३ ॥ सुहृदस्थान--स्वल्पंपयोभवतिसूर्यसुते
चतुर्थेदौर्भाग्यमुष्णकिरणःकुरुतेशशीच ॥ राहुर्विनष्टतनयांक्षिति-
जोल्पवीजांसौख्यान्वितांभृगुसुरेज्यबुधाश्चकुर्युः ॥ ४ ॥ सुत-
स्थान--नष्टात्मजांरविकुजौखलुपंचमस्थौ चंद्रात्मजोबहुसुतां
गुरुभार्गवौच ॥ राहुर्ददातिमरणंरविजस्तुरोगंकन्याप्रसूतिनि-
रतांकुरुतेशशांकः ॥ ५ ॥ रिपुस्थान--षष्ठस्थिताः शनिदि-
वाकरराहुभौमजीवास्तथाबहुसुतां धनभागिनींच ॥ चंद्रःकरो-
तिविधवासुशनादरिद्रांवेश्यांशशांकतनयः कलहप्रियांच ॥ ६ ॥
पतिस्थान--सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्राद्द्युः प्रसह्यमरणंखलु
सप्तमस्थाः ॥ वैधव्यबंधनभयंक्षयवित्तनाशंव्याधिंप्रवासमरणं
नियतक्रमेण ॥ ७ ॥ मृत्युस्थान--स्थानेष्टमेगुरुबुधौनियतंवियो-
गंमृत्युंशशीभृगुसुत श्चतथैवराहुः ॥ सूर्यःकरोतिविधवांधनिनींकु-
जश्चसूर्यात्मजोबहुसुतांपतिवल्लभांच ॥ ८ ॥ धर्मस्थान--धर्मस्थि-
ताभृगुदिवाकरभूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतांशशिजःसुभोगाम् ॥
राहुश्च सूर्यतनयश्च करोतिवंध्यांनारींप्रभूततनयांकुरुतेमृगांकः
॥ ९ ॥ कर्मस्थान--राहुर्नभस्थलगतोविधवांकरोतिपापेपरांदि-
नकरश्चशनैश्चरश्च ॥ मृत्युंकुजोर्थरहितांकुटिलांचचंद्रः शेषाग्र-
हाधनवतींबहुवल्लभांच ॥ १० ॥ आयस्थान--आयेरविर्बहुसु-
तां धनिनींशशांकः पुत्रान्वितांक्षितिसुतोरविजोधनाढ्याम् ॥

आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजः सुपुत्रांराहुःकरोतिसुभगांसुखिनींबुधश्च ॥ ११ ॥ व्ययस्थान–अंत्येधनव्ययवतींदिनकृद्दरिद्रां वंध्यांकुजः पररतांकुटिलांचराहुः ॥ साध्वींसितेज्यशशिजा बहुपुत्रपौत्रयुक्तांविधुः प्रकुरुतेव्ययगोदिनांधाम् ॥ १२ ॥

टी०–इसका अर्थ अगाडीके कोष्टकपरसे स्पष्ट मालूम होगा.

स्था	नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहुकेतु
१	तनु	विधवा	आयुष्य नाश	विधवा	पातित्र०	पतित्र०	पतित्र०	दरिद्री	पुत्रमरेगा
२	धन	दरिद्र दुःख	बहुपुत्र होगा	दरिद्र दुःख	सौभा. संपात्ति	सौभा. संप.	सौभा० संपत्ति	दरिद्र दुःख	दरिद्रदुःख
३	सहज	पुत्रवान् धनवान्	धनवान् पुत्रवान	पुत्रवा० धनवा०	पुत्रवा० धनाढ्य	पुत्रवा० धन ढ्य	पुत्रवा० धनाढ्य	लक्ष्मी वान्	लक्ष्मीवान्
४	सुहृत्	दरिद्री	दुर्भाग्य	संतति अल्प	अति सौख्य	अतिसौख्य	अतिसौख्य	दुग्ध अल्प	पुत्रका नाश
५	सुत	पुत्रका नाश	बहुकन्या	पुत्रका नाश	बहुफल मिलै	बहुफल मिलै	बहुतफल मिलै	रोगी	मरण होवै
६	रिपु	धनवान्	विधवा	धनवा० होवे	झगडा करेगी	धनवा०	दरिद्री, वेश्या	धनवा.	धनवा.
७	पति	रोगी	प्रवासी	विधवा	क्षय	बंधन भय	मृत्यु	मरण	द्रव्यहा.
८	मृत्यु	विधवा	मरणांत वियोग	धनवा०	स्वजन वियोग	स्वजन वियोग	मरणांत वियोग	बहुपुत्र होगा	मरणांत वियोग
९	धर्म	धर्मवहु तकरेगी	संतति होगी	धर्मकाज करे	उत्तम भोग करे	धर्मवृद्धि	धर्मकीवृद्धि	वंध्या	वंध्यारहेगी
१०	कर्म	पापका- रिणी	दरिद्री, जारिणी	मृत्यु	धनवती पतिप्रि०	धनवती पातिप्रि०	धनवती पतिप्रि.	पाप कर्मी	विधवा
११	आय	बहुपुत्र होगा	लक्ष्मी मिलै	पुत्रबहुत होवे	सुखी	आयु बढै	पुत्रवा०	धनवा.	सौभाग्य
१२	व्यय	खर्चीक रोगी	दिनमें अंध	वंध्याजा- रिणी	उत्तम पुत्र	गुणवान् होगी	पतिव्र०	खर्च करेगी	वेश्याहोवे

अथ स्त्रीवैधव्यादियोगाः

पापद्वयमध्यगते चंद्रे लग्ने च कन्यका जाता ॥
निजपितृकुलं समस्तं श्वशुरकुलं हंति निःशेषम् ॥ १ ॥

टी०-दोनोंतरफ पापग्रह होवें उनके मध्यमें चंद्रमा होवे ऐसे लग्नमें जिस कन्याका जन्म होवे वह निजपिताके कुलका विनाशकर श्वशुरके समस्त कुलकाभी विनाश करे.

अन्यच्च.

भद्रातिथि २।७।१२ यदाऽऽश्लेषा शतभं कृत्तिका तथा ॥
मंदाररविवाराश्चेद्विषकन्या बुधैः स्मृता ॥ १ ॥

टी०-द्वितीया, शनिवार, आश्लेषा नक्षत्रमें अथवा सप्तमी मंगलवार शततारकामें, अथवा द्वादशी रविवार कृत्तिकामें. कन्या जन्मे तो विधवा होय. इसको विषकन्या कहतेहैं.

अन्ययोगाः

द्वादशी वारुणः सूर्ये विशाखा सप्तमी कुजे ॥
मंदेऽश्लेषा द्वितीया च विषयोगास्त्रयो मताः ॥ १ ॥

टी०-१२ रविवार शततारकामें, ७ मंगल विशाखामें २ शनि आश्लेषामें कन्या जन्मे तो विधवा होय (कोई ऐसाभी कहतेहैं.)

अन्यच्च.

व्ययाष्टगे कुजे क्रूरयुते राहौ च लग्नगे ॥
रंडाथ लग्नगे सूर्ये भौमे वा दुर्भगा शनौ ॥ १ ॥

टी०-भौम १२।८ स्थानमें हो और क्रूरग्रह साथ रहे, राहु लग्नमें होवे तो रंडायोग होता है. अथवा लग्नमें सूर्य, मंगल, शनि, इनमेंसे कोईभी होवे तो दुर्भगा योग होताहै.

अन्यच्च.

मूर्तौ राव्हर्कभौमेषु रंडा भवति कामिनी ॥
एषु शुक्रद्वितीयेषु पतिमन्यं चिकीर्षति ॥ १ ॥

टी०–लग्नमें राहु भौम वा सूर्य होवे तो रंडा होय. इन्ही स्थानोंमें वा दूसरे शुक्र होवे तो अन्यपतिसे रति करे.

अन्यच्च.

ध्रगौ मंदसूर्यौ चेद्विलग्नान्निजराशिगौ ॥
वंध्याऽथ चंद्रजश्चंद्रः काकवंध्या तदा भवेत् ॥ १ ॥

टी०–अष्टमस्थानमें शनि सूर्य होवे वा लग्नसे स्वराशिपर होवे तो वंध्या (वांझ) करे, इन्ही स्थानोंमें चंद्र, बुध होवे तो काकवंध्या [एकप्रसूता] करे.

अन्यच्च.

मृतापत्या च शुक्रेज्यौ सारौ गर्भस्रवा भवेत् ॥
तस्माज्जन्मनि चिंताय रंध्रं भव्यं ग्रहोज्झितम् ॥ १ ॥

टी०–(उपरोक्त अष्टमस्थानमें) शुक्र, गुरु, होवेतो मरा पुत्र जने. मंगलकेसाथ होवे तो गर्भस्राव होवे, इसवास्ते जन्मलग्नमें चिन्तवन करे. रंध्र (अष्टम) भाव ग्रहरहितही शुभ है.

अन्यच्च.

पंचमस्थौ गुरुसितौ बहुपुत्रयुता भवेत् ॥
सुभगा पतिपूज्यासौ गुणयुक्ता तु सुव्रता ॥ १ ॥

टी०–पंचमस्थानमें गुरु, शुक्र, होवे तो बहु पुत्रवती, सुभगा, पतिको पूजनेवाली सद्गुणयुक्त सुव्रता होगी.

अथ अष्टोत्तरीमहादशा.

आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्य आश्लेषा तु रवेर्दशा ॥ मघापूर्वोत्तराश्चैव चंद्रस्य च दशा तथा ॥ १ ॥ हस्तोविशाखाचित्रा च स्वातीभौमदशामृस्ता ॥ ज्येष्ठानुराधामूलंचसौम्यस्यचदशाबुधैः ॥ २ ॥

अभिजिच्छ्रवणः पूषा ऊषा चैव शनेर्दशा॥ धनिष्ठाशततारा च पूर्वाभाद्रपदा गुरोः॥ ३॥ उभापूषाऽश्विनीकालराहोश्चैवः दशा स्मृता॥ कृत्तिकारोहिणीचोक्ता मृगः शुक्रदशा बुधैः॥ ४॥ एषां भानां क्रमेणैव ज्ञेयाः सूर्यादिका दशाः॥ क्रूरजा अशुभा प्रोक्ता शुभा स्यात्सौम्यखेटजा॥ ५॥

महादशासंख्याक्रमः

सूर्यस्य रसवर्षाणि इंदोः पंचदशैव च॥ भौमस्य वसुवर्षाणि ऋषिचंद्रबुधस्य च॥ १॥ मंदस्य दशवर्षाणि गुरोश्चैकोनविंशतिः॥ राहोर्द्वादशवर्षाणि शुक्रस्यैकोनविंशतिः॥ २॥

टी०—आर्द्रानक्षत्रसे मृगतक नक्षत्र २८ और रविसे शुक्रतक आठग्रह इनके जुदेजुदे कोष्टक किये हैं. उनपरसे महादशाओंको वर्षसंख्या मांडनेका क्रम है. उसमें पापग्रहको चारनक्षत्र, और सौम्यग्रहको ३ नक्षत्र जानना. और दशाओंकी संख्या पूर्ण करना, सो नक्षत्रके विभागसे लेना और जिस विभागमें जन्म होगा उसी क्रमसे दशा भोग्याभोग्य जानना और जन्मकालमें जो दशा हो सो प्रथम दशा जानना.

अंतर्दशानिकालनेकाप्रकार.

दशाहता दशाकार्या नवभिर्भागमाहरेत्॥

टी०—जिसग्रहकी अंतर्दशा निकालना हो उस ग्रहकी महादशाके वर्षोंसे जिसमहादशामें अंतर्दशा निकालना होय उसदशाके वर्षोंको गुणाकरे. जो गुणनफल आवे उसको ९ का भागदेवे जो फल आवे वह मास होते हैं. शेष बचे उसको ३० से गुणाकरे और ९ का भागदे फल आवे वह दिन. शेष होय उसको ६० घटी से गुणाकरे ९ का भाग दें, फल आवे सो घटी आई जानना.

सूर्यकी महादशा वर्ष ६.

आर्द्रा. पुनर्वसु. पुष्य. आश्लेषा.

अंतर्दशाक्रम.

ग्रहना.	वर्ष	मा.	दिन	घ.	फल
रवि	०	४	०	०	अशुभ
चन्द्र	०	१०	०	०	शुभ
भौम	०	५	१०	०	अशुभ
बुध	०	११	१०	०	शुभ
शनि	०	६	२०	०	अशुभ
गुरु	१	०	२०	०	शुभ
राहु	०	८	०	०	अशुभ
शुक्र	१	२	०	०	शुभ
संख्या	६	०	०	०	०

चन्द्रकी महादशा वर्ष १५.

मघा. पूर्वा. उत्तरा.

अन्तर्दशाक्रम.

ग्रहना.	वर्ष	मा.	दिन	घ.	फल
चन्द्र	२	१	०	०	शुभ
मंगल	१	१	१०	०	अशुभ
बुध	२	४	१०	०	शुभ
शनि	१	४	२०	०	अशुभ
गुरु	२	७	२०	०	शुभ
राहु	१	८	०	०	अशुभ
शुक्र	२	११	०	०	शुभ
रवि	०	१०	०	०	अशुभ
संख्या	१५	०	०	०	०

भौमकी महादशा वर्ष ८.

हस्त. चित्रा. स्वाती. विशाखा.

अन्तर्दशाक्रम.

ग्रह	वर्ष	मा.	दिन	घडी	फल
भौम	०	७	३	२०	अशुभ
बुध	१	३	३	२०	शुभ
शनि	०	८	२६	४०	अशुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ
राहु	०	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ
रवि	०	५	१०	०	अशुभ
चन्द्र	१	१	१०	०	शुभ
संख्या	८	०	०	०	०

बुधकी महादशा वर्ष १७.
अनुराधा. ज्येष्ठा. मूल.

अंतर्दशा क्रम.					
ग्रहना.	वर्ष	मा	दि.	घ	फल
बुध	२	८	३	२०	शुभ
शनि	१	६	२६	४०	अशुभ
गुरु	२	११	२६	४०	शुभ
राहु	१	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
रवि	०	११	१०	०	अशुभ
चंद्र	२	४	१०	०	शुभ
मंगल	१	३	३	२०	अशुभ
संख्या	१७	०	०	०	०

शनिकी महादशा वर्ष १०.
पूर्वाषा. उत्तराषा. अभिजित्. श्रवण.

अन्तर्दशाक्रम.					
ग्रहना.	वर्ष	मा.	दि.	घ.	फल
शनि	०	११	३	२०	अशुभ
गुरु	१	९	३	२०	शुभ
राहु	१	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ
रवि	०	६	२०	०	अशुभ
चन्द्र	१	४	२०	०	शुभ
मंगल	०	८	२६	४०	अशुभ
बुध	१	६	२६	४०	शुभ
संख्या	१०	०	०	०	०

गुरुकी महादशा वर्ष १९.
धनिष्ठा. शततारका. पूर्वाभाद्र.

अन्तर्दशाक्रम.					
ग्रहना.	वर्ष	मा.	दि.	घ.	फल
गुरु	३	४	३	२०	शुभ
राहु	२	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	३	८	१०	०	शुभ
रवि	१	०	२०	०	अशुभ
चन्द्र	२	७	२०	०	शुभ
मंगल	१	४	२६	४०	अशुभ
बुध	२	११	२६	४०	शुभ
शनि	१	९	३	२०	अशुभ
संख्या	१९	०	०	०	०

शुक्रकी महादशा वर्ष २१.

कृत्तिका. रोहिणी. मृग.

ग्रहनाम.	वर्ष	मा.	दि.	घ	फल
	अन्तर्दशा क्रम.				
शुक्र	४	१	०	.	शुभ
रवि	१	२	०	०	अशुभ
चंद्र	२	११	०	०	शुभ
मंगळ	१	६	२०	०	अशुभ
बुध	३	३	२०	०	शुभ
शनि	१	११	१०	०	अशुभ
गुरु	३	८	१०	०	शुभ
राहु	२	.	०		अशुभ
संख्या	२१	०	०	.	०

राहुकी महादशा वर्ष १२.

उत्तराभा. रेवती. अश्विनी. भर.

ग्रहनाम.	वर्ष	मा.	दि.	घ	फल
	अन्तर्दशा क्रम.				
राहु	१	४	.	०	अशुभ
शुक्र	२	४	०	०	शुभ
रवि	.	८	०	०	अशुभ
चंद्र	१	८	.	०	शुभ
मंगळ	०	१०	२०	०	अशुभ
बुध	१	१०	२०	०	शुभ
शनि	१	१	१०	०	अशुभ
राहु	२	१	१०	०	शुभ
संख्या	१२	०	०	०	०

विंशोत्तरीकी महादशा.

नयनोनजनुर्भतोंऽकहृत् क्रमशोर्केंदुकुजागुसूरयः ॥
शनिचंद्रजकेतुभार्गवाः परिशेषास्तुदशाधिपाः स्मृताः॥१॥

टी०–जन्म नक्षत्र जो होगा उसमें दो कम करना. नवसें भाग देना. शेष १ बचे तो रविकी दशा, २ बचे तो चंद्रकी, ३ बचेतो भौमकी, ४ बचे तो राहुकी, ५ बचे तो गुरुकी, ६ बचे तो शनिकी, ७ बचे तो बुधकी, ८ बचे तो केतुकी, और भाग पूर्ण उतरे तो शुक्रकी ऐसे दशाधिपति जानना.

दशाओंकी वर्षसंख्या और भोग्याभोग्य.

ऋतुदिग्गिरयोधृतिर्नृपातिधृतिमेघहयाश्वनखाः समाः ॥ क्रमतो हिमताअथादिमाजनिभस्थाघटिकाः समाहताः ॥ भभोगेनभक्ताःफलंभक्तपाकस्तदूनादशासाभवेद्भोग्यसंज्ञा ॥ १ ॥

टी०--ऋतु याने ६ दिक् १० गिरि ७ धृति १८ नृप १६ अतिधृति १९ मेघ १७ हय ७ नख २० ये वर्षसंख्या क्रमसे रव्यादि शुक्रांत ग्रहोंकी जानना. और जन्मनक्षत्रके आरंभसें जन्म होनेके पूर्वकी घडीतक जो घडी होवे उनको नक्षत्राधिपतिके वर्षोंसे गुणना. जो गुणाकार आवे उसको उस नक्षत्रसें अंतपर्यंत जो घडी आवे उनसें भागना. जो भाग आवे सो वर्ष जानना. शेष रहे उसको अष्टोत्तरीको लिखाहै उसरीतिसे उत्तरोत्तर गुणकर उसी भाजकसे भागना जो मास दिन और घडी ये आवेंगे. बाद वोही संख्या उसी दशाधिपतिके वर्षसे कम करना. शेष रहे सो संख्या भोग्यहै ऐसा जानना.

विंशोत्तरीक्रमकोष्टक.

कृत्तिकादिक्रमेणैव ज्ञेया विंशोत्तरीदशा ॥
अंतर्दशायुता वर्षमासवासरवर्तिताः ॥ १ ॥

टी०--कृत्तिकादि भरण्यंत नक्षत्र २७ और दशा अंतर्दशा इनके अधिपतिके नाम, उनकी वर्षादि संख्या इनका कोष्टक.

अंतर्दशानिकालनेकाक्रम.

महादशा स्वस्वदशाब्दनिघ्ना भक्ता खबाहुशशिभिः समाद्याः ॥
अंतर्दशाः स्युर्गगनेचराणां तदेकभावो हि महादशा स्यात् ॥१॥

टी०--जिस ग्रहकी अंतर्दशा निकालना होय सो जन्मदशाके वर्षसंख्यासें वो वर्ष गुणना. और १२० सों भागना. जो भाग आवे सो वर्ष जानना और शेष बचे सो १२ सें गुणाकर पूर्ववत् १२० भागना. भाग आवे सो मास जानना. शेष बचे उसको ३० सें गुणाकर पूर्ववत् भागकर जो भाग आवे सो दिन जानना. शेष बचे उसको ६० से गुणना और पूर्ववत् भागना जो भाग आवे सो घडी जानना. ऐसे महादशामेंसें अंतर्दशा जाननेका क्रम जानना.

सूर्यकी महादशावर्ष ६.
कृत्तिका. उत्तराफा. उत्तराषाढा.

अंतर्दशा			
ग्रहनाम	वर्ष	मास	दिन
रविकी	०	३	१८
चन्द्र	०	६	०
भौम	०	४	६
राहु	०	१०	२४
गुरु	०	९	१८
शनि	०	११	१२
बुध	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०
संख्या	६	०	०

चंद्रकी महादशा वर्ष १०.
रोहिणी. हस्त. श्रवण.

अन्तर्दशा			
ग्रहनाम	वर्ष	मास	दिन
चन्द्रकी	०	१०	०
भौम	०	७	०
राहु	१	६	०
गुरु	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध	१	५	०
केतु	०	७	०
शुक्र	१	८	०
रवि	०	६	०
संख्या	१०	०	०

भौमकी महादशा वर्ष ७.
मृग. चित्रा. धनिष्ठा.

अन्तर्दशा			
ग्रहनाम	वर्ष	मास	दिन
भौम	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि	०	४	६
चन्द्र	०	७	०
संख्या	७	०	०

राहुकी महादशा वर्ष १८.
आर्द्रा. स्वाती. शततारका.

अन्तर्दशा.

ग्रहनाम	वर्ष	मास	दिन
राहु	२	८	१२
गुरु	२	४	२४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
रवि	०	१०	२४
चन्द्र	१	६	०
भौम	१	०	१८
संख्या	१८	०	०

गुरुकी महादशा वर्ष १६.
पुनर्वसु. विशाखा. पूर्वाभाद्र.

अन्तर्दशा.

ग्रहनाम	वर्ष	मास	दिन
गुरु	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
रवि	०	९	१८
चंद्र	१	४	०
भौम	०	११	६
राहु	२	४	२४
संख्या	१६	०	०

शनिकी महादशा वर्ष १९.
पुष्य. अनुराधा. उत्तराभाद्रप.

अंतर्दशा.

ग्रहनाम	वर्ष	मास	दिन
शनि	३	०	३
बुध	२	८	९
केतु	१	१	९
शुक्र	३	२	०
रवि	०	११	१२
चन्द्र	१	७	०
भौम	१	१	९
राहु	२	१०	६
गुरु	२	६	१२
संख्या	१९	०	०

१२

बुधकी महादशा वर्ष १७.
आश्लेषा. ज्येष्ठा. रेवती.

अंतर्दशा.

ग्रहनाम	वर्ष	मास	दिन
बुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	०
रवि	०	१०	६
चंद्र	१	५	०
भौम	०	११	२७
राहु	२	६	१८
गुरु	२	३	६
शनि	२	८	९
संख्या	१७	०	०

केतुकी महादशा वर्ष ७.
मघा. मूल. अश्विनी.

अन्तर्दशा.

ग्रहनाम	वर्ष	मास	दिन
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
रवि	०	४	६
चंद्र	०	७	०
भौम	०	४	२७
राहु	१	०	१८
गुरु	०	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
संख्या	७	०	०

शुक्रकी महादशा वर्ष २०.
पूर्वाफा. पूर्वाषा. भरणी.

अन्तर्दशा.

ग्रहनाम	वर्ष	मास	दिन.
शुक्र	३	४	०
रवि	१	०	०
चंद्र	१	८	०
भौम	१	२	०
राहु	३	०	०
गुरु	२	८	०
शनि	३	२	०
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०
संख्या	२०	०	०

महादशाके अंतर्दशाका फल.

रविदशा.

देशांतरं च निजबंधुवियोगदुःखं उद्वेगरोगभयचोरभवा च पीडा ॥ पूर्वस्थितस्य निखिलस्य धनस्य नाशो भानोर्दशा जननकालदशा भवेचेत ॥ १ ॥

टी०—देशान्तरगमन, बंधुजनोंका वियोग मनको उद्विग्नता, रोगभय, चोरभय; पूर्वसंचित धनका नाश; ऐसा फल रविदशामें प्राप्तहोताहै.

चंद्रकी अंतर्दशा.

हेमादिभूमिवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापबलवृद्धिपरंपरा च ॥ मिष्टान्नपानशयनासनभोजनानि नूनं सदा शशिदशागमने भवंति ॥ १ ॥

टी०—ऐश्वर्य याने सुवर्ण, घोडा, रथ, पालखी, इनका लाभ और शत्रुका पराभव, बलकी वृद्धि अधिकाधिक, उत्तम शय्या, उत्तम आसन, मिष्टभोजन इत्यादि फल चंद्रकी अंतर्दशामें प्राप्तहोताहै.

भौमकी अंतर्दशा.

भूपालचोरभयवन्हिकृता च पीडा सर्वांगरोगभयदुःखसुदुखिता च ॥ चिंता ज्वरश्च बहुकष्टदारिद्रयुक्तः स्यात्सर्वदा कुजदशा जनने भवेच्चेत् ॥ १ ॥

टी०—राजा और चोर इनसे भय, अग्निकृत पीडा, सर्वांगमें पीडा; सर्वदा दुःखी, नानाप्रकारकी चिंता, ज्वर, अत्यंत कष्ट, दरिद्रसे युक्त, ये सर्व फल भौमकी दशामें प्राप्त होते हैं।

राहुकी अंतर्दशा.

दीनो नरो भवति बुद्धिविहीनचिंतासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिता च ॥ पापानि बंधबहुकष्टदरिद्रयुक्तो राहोर्दशाजननकालदशा भवेच्चेत् ॥ १ ॥

टी०—दीनता, बुद्धिकरके हीन, चिंताग्रस्त, सर्वदा शरीरको रोग, अत्यंत भय, दुःखित, बंधन, कष्ट, बहुत दरिद्रता, ये सर्व फल राहुकी दशामें प्राप्तहोता है.

गुरुकी अंतर्दशा.

राज्याधिकारपरिवर्धितचित्तवृत्तिं धर्माधिकारपरिपालनसिद्धिबुद्धिम् ॥ सद्विग्रहोपि धनधान्यसमृद्धिता च स्याद्देवतागुरुदशागमने फलंच ॥ १ ॥

टी०—राज्याधिकार और चित्तको स्वस्थता, धर्मके विषे बुद्धि, शरीरको आरोग्यगता, निश्चयकरके धनधान्यसमृद्धि इत्यादि गुरुदशाका फल जानना.

शनिकी अंतर्दशा.

मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रे च बंधुवचनेषु च यूद्धबुद्धिः ॥ सिद्धं च कार्यमपि यत्र सदा विनष्टं स्यात्सर्वदा शनिदशागमने फलंहि ॥ १ ॥

टी०—वृथा कलंक, दूसरेका घात, बंधन, द्रव्यका नाश, मित्र, बंधु इनके बुद्धिसे कलह, सिद्धकार्यका नाश, ये फल शनिकी दशामें प्राप्तहोतेहै.

बुधकी अंतर्दशा.

दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यं नानाविलासमभिरागमनोभिरामैः ॥ हेमादिरत्नविभवागमकोशध्यानं स्यात्सर्वदा बुधदशागमने फलंच ॥ १ ॥

टी०—सुंदर स्त्री, सौख्य, सर्वप्रकारके विलास भोग, सुवर्ण, रत्न, इनकी प्राप्ति धान्यसंग्रह, ईश्वरका ध्यान, ये बुधकी दशामें फल जानना.

केतुकी अंतर्दशा.

भार्यावियोगजनितं च शरीरदुःखं द्रव्यस्य हानिरतिकष्टपरंपरा च ॥ रोगाश्च बंधुकलहश्च विदेशता च केतोर्दशाजननकाल दशाफलंहि ॥ १ ॥

टी०—स्त्रीवियोगका शरीरकों दुःख, द्रव्यकी हानि, कष्ट, रोग, बंधुकलह, देशांतरगमन, ये केतुदशाके अशुभ फल जानना.

शुक्रकी अंतर्दशा.

आरामवृद्धिमपिसर्वशरीरवृद्धिं श्वेतातपत्रधनधान्यसमाकुलं च॥
आयुः शरीरसुतपौत्रसुखं नराणां द्रव्यं च भार्गवदशागमने फलंहि ॥ १ ॥

टी०—आरामस्थानप्राप्ति, शरीरपुष्टि, श्वेतछत्रप्राप्ति, और धनधान्यकी वृद्धि, आयुष्य, पुत्र, पौत्र, द्रव्य, इनकी वृद्धि ये शुक्रके दशाके फल जानना.

(येही फल महादशामें सब ग्रहोंका जानना.)

योगिनीदशाक्रम.

स्वर्क्षं पिनाकिनयनैः संयोज्य वसुभिर्भजेत् ॥
योगिन्योष्टौ समाख्याताः शून्यपातेन संकटा॥१॥

टी०—जन्मनक्षत्र जो होवै उसमें तीन अंक मिलाना और आठसें भागना शेष अंक बचे उससे मंगला, पिंगलादि जानना. इसका क्रम कोष्टकमें लिखाहै.

योगिनीके नाम.

मंगला पिंगला धन्या भ्रामरी भद्रिका तथा ॥
उल्का सिद्धा संकटा च योगिन्योष्टौ दशाःस्मृताः॥१॥

टी०—मंगला, पिंगला, धन्या भ्रमरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा ये योगिनीके नाम क्रमसे जानना.

योगिनीस्वामी.

अथासामधिशाः क्रमान्मंगलायाः शशी तीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसूनुः।
बुधः सूर्यसूनुर्भृगु सिंहिकायाः सुतः संकटायास्तथाधांतेचकेत् ।१।

टी०—मंगलादिदशाके स्वामी, चंद्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि, शुक्र, राहु वा केतु, इस क्रमसे जानना.

वर्षसंख्या.

एकद्वित्रीणि वेदाश्च पंचषट्सप्तमानि च ॥
अष्टवर्षाणि हि भवेन्मंगलादावनुक्रमात् ॥ १ ॥

टी०–मंगलादिदशाके नाम जुदे जुदे और वर्ष संख्याके दिन उपरसें उसमें अंतर्दशा ल्यावनेका क्रम. प्रथम दशाका वर्ष १ उसके दिन ३६० उसकुं ३६ का भागदेकर भाग आवे उसका अंतर्दशाका स्पष्टीकरण सर्व दशाके कोष्टकमें अनुक्रमसें देखनेकी रीति.

योगिनीदशाकेअंतर्दशाओंका कोष्टक.

मंगलाव. १ दिवस३६०		पिंगलाव २ दिवस७२०		धन्याव. ३ १०८०		भ्रामरी. ४ १४४०		भाद्रका. ५ १८००		उलका. ६ २१६०		सिद्धा. ७ २५२०		संकटा. ८ २८८०	
मंगला	१०	पिं	४०	ध.	९०	भ्रा.	१६०	भ.	२५०	उ.	३६०	सि.	४९०	सं.	६४०
पिंगला	२०	ध.	६०	भ्रा.	१२०	भ.	२००	उ.	३००	सि.	४२०	सं	५६०	मं.	८०
धन्या	३०	भ्रा.	८०	भ.	१५०	उ.	२४०	सि.	३५०	सं.	४८०	मं.	७०	पिं.	१६०
भ्रामरी	४०	भ.	१००	उ.	१८०	सि.	२८०	सं.	४००	मं	६०	पिं	१४०	ध.	२४०
भद्रिका	५०	उ.	१२०	सि.	२१०	सं.	३२०	मं.	५०	पिं.	१२०	ध्रा.	२१०	भ्रा.	३२०
उलका	६०	सि.	१४०	सं.	२४०	मं.	४०	पिं.	१००	ध.	१८०	भ्रा.	२८०	भ.	४००
सिद्धा	७०	सं.	१६०	मं.	३०	पिं	८०	ध.	१५०	भ्रा.	२४०	भ	३५०	उ.	४८०
संकटा	८०	मं.	२०	पिं.	६०	ध.	१२०	भ्रा.	२००	भ	३००	उ.	४२०	सि.	५६०
संख्या	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२	०	२८८०

ये योगिनीदशाका क्रम ३६ वर्षका सो भोगे बाद पुनः पुनः लेना.

अंतर्दशा.

आथांतर्दशायाः प्रकारं प्रवच्मि दशाब्दानिगुण्यानिहिस्वस्ववर्षैः ततः षट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिका सा सदा खेटविद्भिर्विधेया फलार्थं ॥ १ ॥

टी०–दशाके वर्षोंसे अंतर्दशा निकालनी हो उस दशाके वर्षोंको उस २ दशाकेवर्षोंसे गुणना उसमें ३५ का भाग देकर वर्षादिक क्रमसे, लब्धि लेना वही अंतर्दशाका प्रमाण होगा आगे चक्रमें स्पष्ट मालुम होगा.

दशानुसारफल.

मंगला मंगलानंदयशोद्रविणदायिनी ॥ पिंगला तनुते व्याधिं मनसो दुःखसंभ्रमौ ॥१॥ धन्या धनसुहृद्बंधुरूपसीमंतिनीकरी॥ भ्रामरी जन्मभूमिघ्नी भ्रामयेत्सर्वतो दिशम् ॥ २॥ भद्रिका सुखसंपत्तिविलासवशदायिनी ॥ उल्का राज्यधनारोग्यहारिणी दुःखकारिणी ॥ ३ ॥ सिद्धा साधयते कार्यं नृणां वै सुखदा शुभम् ॥ संकटा संकटव्याधिमरणक्लेशकारिणी ॥ ४ ॥

टी०–मंगलादशाका फल–शुभकार्य आनंद, यश और द्रव्य देनेवाली. पिंगला-शरीरकों व्याधी; मनकों दुःख और भ्रमण करानेवाली. धन्याका फल धान्य सुहृबंधुकी मुलाकत, आरोग्यता और सौंदर्य देनेवाली. भ्रामरीका फल-स्थान नाश, दिशाभ्रमण करनेवाली. भद्रिकाका फल–सुख संपत्ति, विलास, यश देनेवाली. उल्काका फल राजभय, धननाश, रोगग्रस्तता, पीडा करनेवाली. सिद्धाका फल–कार्यसिद्धि करनेवाली, सुख देनेवाली और संकटाका फल संकट, व्याधि, मरण क्लेश करनेवाली ऐसा जानना.

वर्षदशा.

रविदिननखसंख्या चंद्रमा व्योमबाणैः क्षितितनयगजाश्वीचंद्रजः षट्शराश्च॥शनिरसगुणसंख्यावाक्पतिर्नागबाणैर्नयनयुगकराहुः सप्ततिः शुक्रसंख्या ॥ १ ॥ आद्ये रवौ खाक्षिदिनं रवेःस्याद्विधोस्तृतीये दशवासराणि ॥ तुर्ये कुजस्याष्टदिनानि षष्ठेविदो दशावेददिनानि यावत् ॥ २ ॥ दिग्वासरंसप्तमगे शनेश्च गुरोर्दशार्के नवमेष्टघस्राः॥विंशद्दिनंस्याद्दशमेच राहो शेषा दशा शुक्रभवा निरुक्ता ॥ ३ ॥ फल--पंथाभोगोनुतापश्च सौख्य पीडा धनं क्रमात्॥नाशःशोकश्च सौख्यं च जन्मसूर्यदशाफलम् ॥४॥

टी०–वर्षदशाका आरंभ, उसका क्रम जिस महिनेमें जिसके जन्मराशिकों सूर्य आवे सो द्वादश स्थान भोगताहै. उसमें सर्वग्रहोंकी दशा. उनकों अनुक्रमसें कहते हैं.

२० दिन सूर्यकी दशा जन्मकालसें जानना उसका फल मार्ग चलना.

५० दिन चंद्रकी दशा तृतीय स्थानके १० दिन रवि भोगताहै. उसका फल नानाप्रकारके उत्तम भोग भोगेगा.

२८ दिन मंगलको दशा चतुर्थस्थानके आठदिन रवि भोगताहै. उसका फल रोग और अनुताप होगा.

५९ दिन बुधकी दशा छटे स्थानके ४ दिन रवि भोगताहै. उसका फल सौख्यकारक है.

३६ दिन शनिकी दशा सप्तमस्थानके १० दिन रवि भोगताहै, उसका फल पीडाकारक जानना.

२८ दिन गुरुकी दशा नवमस्थानके ८ दिन रवि भोगताहै. उसका फल धनप्राप्ति.

४२ दिन राहुकी दशा दशमस्थानके २० दिन रवि भोगताहै उसका फल नानाप्रकारके शोक.

७० दिन शुक्रकी दशा वारास्थान रवि संपूर्ण भोगताहै. उसका फल सर्व सौख्य जानना. ऐसा वर्षदशाका क्रम जानना.

ग्रहकी नित्यानित्यदशाकाप्रकार.

तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसन्वितम् ॥ नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ १ ॥ रविचंद्रौभौमराहुगुरुमंदज्ञकेसिताः ॥ क्रमेणैकादशज्ञेयाःफलंपूर्वोक्तमेवहि ॥ २ ॥

टी०—गततिथि, वार, नक्षत्र, और अपने नामके अक्षर ये सब एकत्र कर नवसें भाग देना. शेष १ बचेतो रविकी दशा, २ बचेतो चंद्रकी दशा, ३ बचे तो भौमकी, ४ बचे तो राहुकी, ५ बचे तो शनिकी, ६बचे तो गुरुकी ७ बचे तो बुधकी ८ बचे तो केतुकी, और भाग पुरा हुआतो शुक्रकी, ऐसे क्रमसें नित्य दशा अनुक्रमसे जानना फलश्रुति पूर्वोक्त समझना.

अन्यमत.

जन्मर्क्षं वेदगुणितं तिथ्या वारेण मिश्रितम्॥नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥१॥ रविणाशोसकसंतापौ शशांकेक्षेमलाभ-

का॥भूमिपुत्रेतुमृत्युःस्याद्बुधेप्रज्ञाविवर्धनम् ॥२॥ गुरौवित्तंभृगौसौख्यं शनौपीडानसंशयः॥राहुणाघातपातौचकेतौमृत्युर्दशाफलम् ॥ ३ ॥

टी०—जन्मनक्षत्र चतुर्गुणित करना और उसमें गत तिथि, वार मिलाना और एकत्र कर नवसे भागना. शेष १ रहे तो रविकी दिनदशा जानना. फल शोक संतापकारक, २ बचे तो चंद्रकी क्षेम लाभकारक, ३ बचे तो मंगलकी मृत्युकारक, ४ बचे तो बुधकी, वृद्धि करे, ५ बचे तो गुरुकी वित्तप्राप्ति, ६ बचे तो शुक्र की सौख्यकारक, ७ बचे तो शनिकी पीडाकारक, ८ बचे तो राहुकी घातकारक, ९ बचे तो केतुकी मृत्युकारक है.

गोचरप्रकरण.

ग्रह कितने मास एकराशि भोगताहै सो कहतेहैं.

मासंशुक्रबुधादित्याः सार्धमासंतुमंगलः ॥ त्रयोदशगुरुश्चैवसपादद्विदिनेशशी ॥ १ ॥ राहुरष्टादशान्मासान्त्रिंशन्मासान्शनैश्वरः ॥ राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगाः प्रकीर्तिताः ॥ २ ॥ फल-सूर्यःपंचदिनंशशिस्त्रिघटिका भौमोष्टवैवासराःसप्ताहंत्वुशनाबुधश्चत्रिदिनंमासद्वयंवैगुरुः षण्मासंरविजस्तथैवसततंराहुश्च मासद्वयंकेतुश्चैवतथाफलंपरिमितंज्ञेयंग्रहाणांफलम् ॥ ३ ॥ राशिप्रवेशेसुर्यारौ मध्येशुक्रबृहस्पती॥राहुश्चंद्रः शनिश्चांते सौम्यश्चैव सदाशुभम् ॥ ४ ॥

टी०—सूर्य—एकमास एकराशि भोगताहै उसमें पांचदिन फल देताहै.
चंद्र—सवादो दिन एकराशि भोगताहै. उसमें अंत्यकी ३ घडीफल देताहै.
मंगल—डेढमहिना एकराशि भोगताहै. उसमें प्रथम ८ दिन फल देताहै.
बुध—एकमास एकराशि भोगताहै. उसका फल सबादिन तक जानना.
गुरु—तेरामास एकराशि भोगताहै. उसका फल मध्यभागमें दो महिना जानना.
शुक्र—एकमास एकराशि भोगताहै. उसमेंसे मध्यभागके ७ दिन फल देताहै.
शनि—तीसमास एकराशि भोगताहै. उसमेंसे अंतके छः महिने फल देताहै.
राहुकेतु—अठारह महिना एकराशि भोगताहै उसमेंसे अंतके दो महिने फल देताहै.

द्वादशभवनके शुभाशुभफल कहतेहैं.

द्वादशस्थानके नाम—तत्रादौ तनुधनसहजसुहृत्सुतरिपवश्वजायामृत्युधर्मकर्मायव्ययाख्यानिद्वादशभवनानि ॥ १ ॥ स्थानपरत्वे फल—सूर्यः स्थानविनाशंभयंश्रियंमानहानिमथदैन्यम् ॥ विजयं मार्गमक्रणंसुकृतंहंतिसिद्धिमायमथहानिम् ॥ २ ॥ चंद्रोऽन्नं च धनं सौख्यंरोगंकार्यक्षतिंश्रियम् ॥ श्रियंमृत्युंनृपभयंसुखमायव्ययौ क्रमात् ॥ ३ ॥ भौमोरिभीतिंधननाशमर्थं भयंतथार्थक्षतिमर्थलाभम् ॥ धनात्ययंशत्रुभयंचपीडांशोकंधनंहानिमनुक्रमेण ॥ ४ ॥ बुधस्तुबंधंधनमन्यभीतिंधनंरुजंस्थानमथोचपीडाम् ॥ अर्थंरुजं सौख्यमथार्थलाभमर्थक्षतिंजन्मगृहात्करोति ॥ ५ ॥ गुरुर्भयंधनंक्लेशंधननाशंसुखंशुचम् ॥ मानंरोगंसुखंदैन्यंलाभंपीडांत्रजन्मभात् ॥ ६ ॥ कविः शत्रुनाशं धनंसौख्यमर्थंसुताप्तिंरिपोः साध्वसंशोकमर्थं ॥ बृहद्वस्त्रलाभंविपत्तिंधनाप्तिं धनाप्तिंतनोत्यात्मनोजन्मराशेः ॥ ७ ॥ शनिःसर्वनाशार्थनाशौविधत्तेधनंशत्रुवृद्धिं सुतादेः प्रवृद्धिम् ॥ श्रियंदोषसंधिंरिपुंद्रव्यनाशंतथादौर्मनस्यंधनंबव्हनर्थम् ॥ ८ ॥ राहुर्हानिंतथानैःस्व्यंधनंवैरंशुचंश्रियम् ॥ कलिंवसुंचदुरितं वैरसौख्यशुचंक्रमात् ॥ ९ ॥ केतुःक्रमाद्रुजवैरंसुखं भीतिंशुचंधनं ॥ गतिंगदंदुष्कृतिंचशोकंकीर्तिंचशत्रुताम् ॥१०॥

(इनका स्पष्टार्थ ९९ के पानेमें कोष्टकहै उसमें देखना)

जन्मस्थचंद्रमें वर्जकर्म.

जन्मस्थर्क्षे शशांके तु पंच कर्माणि वर्जयेत् ॥
यात्रां युद्धं विवाहं च क्षौरं च गृहवेशनम् ॥ २ ॥

द्वादशभावके शुभाशुभाका कोष्टक.

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	स्थानना	अन्नप्रा	शत्रुभय	बंधन	भय	शत्रुना	मर्दना	हानि	रोग
धन	भय	धनप्रा.	धनना.	धनप्रा.	धनप्रा	धनप्रा.	वित्तना	धनला.	वैर
सहज	लक्ष्मी	सुख	धनप्रा	भीति	क्लेश	सौख्य	धनला	धनप्रा	सुख
सुहृद	मनना	रोग	भय	धनप्रा.	धनना	धनप्रा	शत्रुवृ.	वैर	भय
सुत	दैन्य	कार्यक्ष.	अर्थना	रोग	सुख	पुत्रप्रा.	पुत्रला	शोक	शोक
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थानना	शोक	शत्रुभय	धनप्रा	लक्ष्मी	धनप्रा
जाया	मार्गक्ल	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान	शोक	दोष	कलह	मार्गक्ल.
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शत्रुभय	अर्थला	रोग	धनप्रा	नृपभय	धनला.	रोग
धर्म	पुण्यना	राजभ.	पीडा	रोग	सुख	महावस्त्र	धनना	पापक	दुष्टकर्म
कर्म	सिद्धि	सुख	शोक	सौख्य	दैन्य	विपत्ति	अस्व.	वैर	शोक
लाभ	लाभ	धनप्रा.	धनप्रा.	द्रलाभ	लाभ	धनप्रा.	लाभ	सौख्य	कीर्ति
व्यय	हानि	खर्च	हानि	नाश	पीडा	धनप्रा	अनर्थ	शोक	शत्रुना.

टी०—यात्राको जाना, युद्धमें जाना, क्षौरकरवाना, विवाह, गृहप्रवेश ऐसे ये ५ कर्म जन्मस्थ चंद्र होय तो करना नहीं.

नेष्टस्थानानुसार चंद्रबल देखना.

द्विपंचनवमेशुक्लेश्रेष्ठश्चंद्रोहिउच्यते ॥ अष्टमेद्वादशेकृष्णेचतुर्थे श्रेष्टउच्यते ॥ शुक्लपक्षेबलीचंद्रः कृष्णेताराबलीयसी ॥ १ ॥

टी०—दूसरे, पांचवे वा नवमस्थानका चंद्र शुक्लपक्षमें जैसा श्रेष्ठ है तैसाही आठवा चंद्र या बारवा चंद्र कृष्णपक्षमें श्रेष्ठ. परंतु शुक्लपक्षमें चंद्रबल और कृष्णपक्षमें ताराबल श्रेष्ठ होते हैं.

अथ शनि वाहन देखना.

तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितं ॥
नवभिस्तुहरेद्भागंशेषंवाहनमुच्यते ॥ १ ॥

टी–शनिका जिस दिन राशिचार वा नक्षत्रचार हो उस दिनकी तिथी, वार, नक्षत्र और नामके अक्षर सर्वांक एकत्रित करे, तिसमें ९का भाग दे शेष रहे सो क्रमसे वाहन जाने .

वाहनकेनाम.

गर्दभो १ ऽश्वश्च २ हस्तीच ३ मेषः ४ सिंहश्च ५ जंबुकः ६॥
काको ७ मयूरो ८ हंसश्च ९ नवैते शनिवाहकाः ॥

टी०–एक शेष रहे तो गर्दभ, २, रहे तो अश्व, ३ रहे तो हाथी ४ रहे तो मेष, ५ रहे तो सिंह ६ रहे तो जंबुक, ७ रहे तो काक, ८ रहे तो मयूर, ९ रहे तो हंस वाहन जानना.

वाहनफल.

गर्दभे मानभंगश्च धनलाभश्चघोटके ॥
सर्वसिद्धिर्गजेचैवमेषश्चेद्रोगदायकः ॥ १ ॥
जंबुकेचभवेद्युद्धंसिंहेशत्रुविनाशनम् ॥
काकोहिमरणायैव मयूरोधनलाभदः ॥
हंसकेसर्वसिद्धिश्चवाहनस्यफलं शनैः ॥ २ ॥

टी०–जो शनिवाहन गर्दभ होवे तो मानभंग करे, अश्व होवे तो धनलाभ करावे, गज होवे तो सर्वसिद्धि हो, मेष रोगपीडा देवे. जंबुक होवे तो युद्ध (लडाई) करावे, सिंह होवे तो शत्रुका विनाश करे, काक होवे तो मृत्यु हो, मयूर धनलाभ दे, हंस सर्वसिद्धि ये, ऐसे शनिके वाहनके फल जानने.

अथग्रहाणांवेधः ।

हेमाद्रिविंध्यांतरेस्वजन्मराशेः वा ग्रहाधिष्ठितराशितो वेधः ॥
रव्यार्क्योश्चंद्रज्ञयोश्चनवेध । नेष्टोपिव्यस्तवेधाच्छुभः ॥ १ ॥

टी०–स्वजन्मराशि वा ग्रहाधिष्ठितराशिसे वेध देखना सो क्रम नीचे चक्रमें स्पष्ट दिया है. व्युत्क्रमवेधित ग्रह अशुभभी शुभफल देता है. रवि शनिका और चंद्र बुधका वेध नहीं, बाकी समस्त ग्रहका वेध होता है सो हेमाद्रि और विंध्याद्रिके मध्यमें ऐसा देखना.

सू.		मं.		चं.		बु.		गु.		शु.		श		रा.	
श्रे.	वे.	श्रे.	वे.	श्रे.	वे.	श्रे.	वे.	श्रे.	वे.	श्र	व.	श्रे.	वे.	श्रे.	वे.
३	९	३	१२	१	५	२	५	२	१२	१	८	३	१२	३	१२
६	१२	६	९	३	९	४	३	५	४	२	७	६	९	६	९
१०	४	११	५	६	१२	६	९	७	३	३	१	११	५	११	५
११	५			७	२	८	१	९	१०	४	१०				
				१०	४	१०	८	११	८	५	९				
				११	८	११	१२			८	५				
										९	११				
										११	३				
										१२	६				

ग्रहोंके नेष्टस्थान.

येखेचरागोचरतोष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभाभवंति ॥
दानादिनातेसुतरांप्रसन्नास्तेनाधुनादानविधिंप्रवक्ष्ये ॥ १ ॥

टी०–ग्रह गोचरका अथवा अष्टवर्गका या दशाक्रमका नेष्टस्थानमें होवे सो दानादिकसे अत्यंत प्रसन्न होताहै. इसलिये अब यहां दानका विधि कहतेहैं.

वारानुसार दान.

भानुस्तांबूलदानादपहरतिनृणां वैकृतंवासरोत्थं सोमः श्रीखंडदानादवनिवरसुतोभोजनात् पुण्यदानात् ॥ सौम्यः शास्त्रस्य मंत्राद्गुरुहरभजनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्प्रभातेदिनकरतनयो ब्रह्मनत्यापरे च ॥ १ ॥

टी०–सूर्य तांबूलदानसे; चंद्र चंदनके दानसे, मंगल भोजनदानसे बुध वेदोक्तमंत्रके जपसे; गुरु महादेवके आराधनसे; शुक्र; शुभ्रवस्त्रके दानसे. शनि तैलाभ्यंगसे; इतरग्रह ब्राह्मणके नमनसे; समस्तपीडाको दूरकरके शुभफल देतेहैं. ये वारोंके दान कहे.

ग्रहोंके दान और जप.

रविः—माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः कौसंभवासोगुडहेमताम्रम्॥
आरक्तकंचंदनमंबुजंचवदंतिदानंहिविरोचनाय ॥ १ ॥
चंद्रः सद्वंशपात्रस्थिततंदुलाश्चकर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ॥
युगोपवीतं वृषभंचरौप्यंचंद्रायदद्याद्घृतपूर्णकुंभम् ॥ २ ॥
भौमः-प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोरुणश्चापिगुडः सुवर्णम् ॥
आरक्तवस्त्रंकरवीर पुष्पंताम्रंच भौमायवदंतिदानम् ॥ ३ ॥
बुधः-वृषंचनीलंकलधौतकांस्यंमुद्गाज्यगारुत्मकसर्वपुष्पम् ॥
दासीच दंतोद्विरदस्य नूनंवदंतिदानंविधुनंदनाय ॥ ४ ॥
गुरुः-शर्कराचरजनीतुरंगमः पीतधान्यमपिपीतमंबरम् ॥
पुष्परागलवणेचकांचनंप्रीतयेसुरगुरोःप्रदीयताम्॥ ५ ॥
शुक्रः-चित्रांबरंशुभ्रतुरंगमश्चधेनुश्चवज्रंरजतंसुवर्णम् ॥
सतंदुलानुत्तमगन्धयुक्तान्वदन्तिदानंभृगुनन्दनाय ॥ ६ ॥
शनिः-माषाश्चतैलंविमलेंद्रनीलं तिलाःकुलित्थामहिषीचलोहम् ॥
कृष्णाचधेनुः प्रवदंतिनूनंदुष्टायदानंरविनंदनाय ॥ ॥ ७ ॥
राहुः-गोमेदरत्नंचतुरंगमश्च सुनीलचैलामलकंबलंच ॥
तिलाश्चतैलंखलुलोहमिश्रंस्वर्भानवेदानमिदंवदंति ॥ ८ ॥
केतुः-वैडूर्यरत्नंसतिलंचतैलंसुकंबलश्चापिमदोमृगस्य ॥
शस्त्रंचकेतोः परितोषहेतोश्छागस्यदानंकथितंमुनींद्रैः ॥९॥

ग्रहोंके जपकी संख्या.

रवेः सप्तसहस्राणिचंद्रस्यैकादशैवतु ॥
भौमेदशसहस्राणिबुधेचाष्टसहस्रकम् ॥ १ ॥
एकोनविंशतिर्जीवेशुक्रएकादशैवतु ॥
त्रयोविंशतिमंदेचराहावष्टादशैवतु ॥
केतोः सप्तसहस्राणिजपसंख्याः प्रकीर्तिताः ॥ २ ॥

टी०—इसका अर्थ चक्रमें स्पष्ट है सो जनना.

ग्रहोंके दान दान और जपका कोष्टक.

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु.
	माणि.	वंशपा.	प्रवाल	नीलवस्त्र	शर्करा	चित्रव.	उडद.	गोमेद	वैडूर्य
	गेहूं	चावल	गेहु	सुवर्ण	हलदी	श्वेताश्व	तैल	घोडा	रत्न
	सवत्सगौ	कपू.	मसूर	कांस्य	घोडा	गौ	नीलम	नालव.	तिल.
	ताम्रव.	मौक्ति	ताम्रवृ.	मूग.	पीतध.	वस्त्रान.	तिल	कंबल	तैल.
दान	गुड	श्वेतवृ	गुड.	घी.	पीतव	रौप्य.	कुलत्थ	तिल	कंबल.
	सुवर्ण	जन	सुवर्ण	गजदंत.म.	पाप.	सुवर्ण	भैंस	तैल	कस्तूरी
	ताम्र	श्वेतवृ	ताम्रव.	सर्वपु.	लवण	चांवल	लोह	लोह	शस्त्र..
	रक्तचंदन	रूपो.	कपुष्प	दासी	सुवर्ण	चंदन	का.गौ.	क.प	घोडा.
	र.मल	घृतकुं.	ताम्र	हाथीद	०	०	०	०	०
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

ग्रहपीडानिवारणार्थ उपाय.

देवब्राह्मणवंदनाद्गुरुवचःसंपादनात्प्रत्यहं
साधूनामभिभाषणाच्छ्रुतिरवाच्छ्रेयःकथाकर्णनात् ॥
होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनोभावाज्जपाद्दानतो
नोकुर्वतिकदाचिदेवपुरुषस्यैवंग्रहाःपीडनम् ॥ १ ॥

टी०–गुरु, देवता. ब्राह्मण, इनको नमस्कार करनेसे, और गुरुके, साधुके मुखसे उत्तम कथा श्रवण करनेसे, होम, यज्ञ करनेसे, और शुद्धमनसे, जप, दान करनेसे, मनुष्यको ग्रह पीडा नहीं करते हैं. और उत्तम फल देते हैं.

जातकर्म.

जाते पुत्रे पिता कुर्यान्नांदीश्राद्धं विधानतः ॥
जातकर्म ततःकुर्यादन्यैरालंभनात्पुरा ॥ १ ॥

टी०–पुत्रजन्म होतेही तत्काल नांदीश्राद्ध करना. बालकको दूसरेका स्पर्श होनेके पहिले विधिपूर्वक संस्कार करना

नामकर्म.

पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतुमृगभे ज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरादित्यारव्येषुचनामकर्मशुभदंयोगेप्रशस्तेतिथौ ॥ आन्हिद्वादशकेतथान्यदिवसेशस्ते तथैकादशेगोसिंहालिघटेषुद्यर्कबुधयोर्जीवेशशांकेपिच ॥ १ ॥

टी०–पुष्य, हस्त, चित्रा; स्वाती, अनुराधा, मृगशीर्ष, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, पुनर्वसु, ये नक्षत्र और जन्मसे १२ वा या ११ वा ये दिन उक्तहै. अन्य मतमें १६, २०, २२, १०० ये दिन और वृषभ, सिंह. कुंभ, वृश्चिक, ये लग्न शुभ जानना. और रवि, बुध, गुरु, चंद्र, ये वार, शुभ, रिक्ता तिथि आदि दुष्ट योग यह वर्जितकर शुभयोग देखकर बालकका नाम रखना.

अवकहडाचक्र.

चूचेचोलाश्विनीप्रोक्तालीलुलेलोभरण्यथ ॥ आईउएकृत्तिकास्याद्रोवावीवूतुरोहिणी ॥१॥ वेवोकाकीमृगशिरःकुघङच्छतथार्द्रका ॥ केकोहाहीपुनर्वसुहुहेहोडातुपुष्यभम् ॥ २ ॥ डीडूडेडो तथाश्लेषामामीमूमेमघास्मृता ॥ मोटाटीटूपूर्वफल्गुटेटोपाप्युत्तरा तथा ॥३ ॥ पूषणाठाहस्ततारापेपोरारीतुचित्रका ॥ रूरेरोता स्मृतास्वातीतीतूतेतोविशाखिका ॥ ४ ॥ नानीनूनेनुराधर्क्षंज्येष्ठनोयायियूस्मृता ॥ येयोभाभीमूलतारापूर्वाषाढाबुधाफढा ॥ ॥ ५ ॥ भेभोजाज्युत्तराषाढाजूजेजोखाभिजिद्भवेत् ॥ खीखूखेखो श्रवणंगागीगूगेधनिष्ठिका ॥ ६ ॥ गोसासीसूशतभिषक्सेसो दादीतुपूर्वभाक् ॥ दूझञथोत्तराभद्रादेदोचाचीतुरेवती ॥ ७ ॥

टी०–इसका अर्थ चक्रमें स्पष्ट है सो जानना.

चू चे चो ला अश्विनी	ली लु ले लो भरणी	आ ई उ ए कृत्तिका	वा वा वी वू रोहिणी
वे वो का की मृग	कू घ ङ छ आर्द्रा	के को हा ही पुनर्वसु	हू हे हो डा पुष्य
डा डू डे डो आश्लेषा	मा मी मू मे मघा	मो टा टी टू पूर्वा	टे टो पा पी उत्तरा
पू ष णा ठा हस्त	पे पो रा री चित्रा	रु रे रो ता स्वाती	ती तु ते तो विशाखा
ना नी नू ने अनुराधा	नो या यी यु ज्येष्ठा	ये यो भा भी मूल	भू धा फ ढा पूर्वाषाढा
भे भो जा जी उत्तराषाढ	जू जे जो खा अभिजित्	खी खू खे खो श्रवण	गा गी गू गे धनिष्ठा
गो सा सी सु शततारका	से सो दा दी पूर्वाभाद्रपदा	दू झ ञ थ उत्तराभाद्रपदा	दे दो चा ची रेवती

मंचकारोहण.

शशितुरगधनिष्ठारेवतीपुष्यचित्रा शतभिषगनुराधात्र्युत्तरास्वातिहस्ताः॥ बुधगुरुभृगुवारे सौम्यलग्नेऽर्भकस्य निगदितमिहपूर्वे मंचकारोहणंतु ॥ १ ॥

टी०—मृग, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, पुष्य, चित्रा, शततारका, अनुराधा उत्तरात्रय, स्वाती, हस्त, इन नक्षत्रपर और बुध, गुरु, शुक्र, ये वार, तूल, कुंभ, वृश्चिक, ये लग्नपर बालकको पूर्वकीतरफ मस्तक करके प्रथम मंचक पर आरोहण करवाना श्रेष्ठ है.

पलनामें सुलानेका मुहूर्त.

आंदोलशयनं पुंसो द्वादशे दिवसे शुभम् ॥
त्रयोदशे तु कन्याया न नक्षत्रविचारणा ॥ १ ॥

टीका—जन्महुये दिनसे पुत्रको बारवा दिन. और कन्याको तेरवा दिन पल-

नेमें डालनेको (पालकारोहणकों,) अच्छा है. नक्षत्रविचार करनेकी अपेक्षा नहीं.

बृहस्पतिमतसे दुग्धपान करनेका मुहूर्त.

एकत्रिंशद्दिने चैव पयः शंखेन पाययेत् ॥
अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु ॥ १ ॥

टी०—जन्मदिनसे ३१ वे दिन अथवा जो नक्षत्र लग्न आदि अन्नप्राशनमें कहेहैं उन नक्षत्रादिमें शंखमें दूध डालकर बालकको पिलाना.

तांबूल भक्षण.

सार्धमासद्वयेदद्यात्तांबूलंप्रथमंशिशोः ॥ कर्पूरादिकसंमिश्रंविलासायहितायच ॥ १ ॥ मूलेचचित्रकरतिष्यहरिद्रमेषुपौष्णेतथास्मृगशिरेदितिवासवेषु ॥ अर्केंदुजीवभृगुबोधनवासरेषु तांबूल भक्षणविधिर्मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ २ ॥

टी०—जन्मदिनसे ढाई महिने पीछे कर्पूरादिपदार्थमिश्रित करकेबालकको त्रयोदशगुण तांबूल देना. ये विलासकारक और हितकर्ता होताहै, (उसका दिन.) मूल, हस्त, चित्रा, पुष्य, श्रवण, ज्येष्ठा, रेवती, मृग पुनर्वसु, धनिष्ठा, रवि, सोम, गुरु, शुक्र, बुध, इनमेसे कोईभी दिन देख बालकको तांबूल खिलाना.

सूर्यावलोकन.

हस्तः पुष्यपुनर्वसू हरियुगं मैत्रत्रयंरोहिणी रेवत्युत्तरफाल्गुनीमृगयुताषाढोत्तरास्वातिभे ॥ मासौतुर्यतृतीयकौशनिकुजौत्यक्त्वा चरिक्तातिथिसिंहादित्रयकुंभराशिसहितंनिष्कासनंशस्यते ॥ १ ॥

टी०—हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, रोहिणी, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, मृग, उत्तराषाढा, स्वाती, ये नक्षत्र, चौथा, तीसरा महिना, और शनि, भौम, रिक्तातिथि वर्ज्य कर सिंह, कन्या, तूल, कुंभ, ये लग्न, इतना योग देखकर बालकको प्रथम सूर्यदर्शन कराना शुभदायक है.

कर्णवेध.

रोहिण्युत्तरमूलमैत्रमृगभे।विष्णुत्रयेऽर्कत्रयेरेवत्यांचपुनर्वसुद्वयभगे

कर्णस्यवेधः शुभः ।। मीनेस्त्रीधनमन्मथेषुवघटेवृषेत्रयुग्मेतिथौसौ-
म्येचेंदुगुरौरवौचशयनंत्यक्त्वाचविष्णोर्बुधैः ॥ १ ॥

टी०—रोहिणी, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, मृग, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, हस्त, चित्रा, स्वाति, रेवती, पुनर्वसु पुष्य, ये नक्षत्र और मीन, कन्या, धन, मिथुन, कुंभ, ये लग्न, युग्मवर्ष, शुभतिथि उक्त और उद्गमनमें बुध, गुरु, सोम, रवि, ये वार इत्यादि योग देखकर बालकका कान विंधना. परंतु विष्णुशयन वर्जितकरना.

भूम्युपवेशन.

पंचमेचतथामासिभूमौतमुपवेशयेत् ।। तत्रसर्वेग्रहाः शस्ताभौमो-
ऽप्यत्रविशिष्यते ॥ १ ॥ उत्तरात्रितयंसौम्यंपुष्यर्क्षंशुक्रदैवतम् ॥
प्राजापत्यंचहस्तश्चशस्तमाश्विनमित्रभम् ॥ २ ॥

टी०—पांचवे महिनेमें बालकको भूमीपर बैठाना. इसमें सब वार शुभ हैं. परंतु विशेषकरिके मंगलवारका दिन लेना. और तीनों उत्तरा, मृग, पुष्य, ज्येष्ठा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, अनुराधा ये नक्षत्र बालकको भूमिपर बैठानेको उक्त हैं.

अन्नप्राशनमुहूर्त.

पूर्वार्द्राभरणीभुजंगवरुणंत्यक्त्वाकुजार्कीतथा नंदांपर्वचसप्तमी-
मपितथारिक्तामपिद्वादशीम् ।। षष्ठमास्यथवान्नभक्षणविधिंस्त्री-
णामयुक्पंचमेगोकन्याझषमन्मथेबुधबलेपक्षेचयोगेशुभे ॥ १ ॥

टी०—तीनों पूर्वा, आर्द्रा, भरणी, आश्लेषा, शततारका, भौम, शनि ये अशुभवार, नंदा, पर्वणी, रिक्ता, सप्तमी, द्वादशी, ये वर्ज्यकर छठे या आठवे महिनेमें पुत्रको और पांचवें मास अथवा विषममासमें कन्याको वृषभ, मिथुन, कन्या, ये लग्न और ग्रहबल देख शुभयोगमें अन्नप्राशन कराना.

कटिसूत्रबंधन.

अब्देनसौरेणशिशुंसमातेबालंतुसंस्नाप्यचजन्मधिष्ण्ये ॥
कृतायुषंवृद्धिकरंचकर्मतंधारयेच्छांतिसुवर्णसूत्रम् ॥ १ ॥

टीका–बालकको संक्रांतिमानसे एकवर्षमें उत्तम स्नान करावना और आयुष्यकी वृद्धि होय ऐसे शांतिकर्म करके जन्मनक्षत्रमें सुवर्णयुक्त कटिसूत्र कमरमें बांधना उत्तम है.

चूडाकर्म.

रेवत्याद्यकरत्रयादितिमृगज्येष्ठासु विष्णुत्रये पुष्येचोत्तरगौगुरुकवींदुज्ञेषुपक्षेसिते ॥ गोस्त्रीमन्मथचापकुंभमकरंहित्वाचरिक्तातिथिंषष्ठींपर्वतथाष्टमीमपिसिनीवालींचचूडाशुभा ॥ १ ॥ जन्मतस्तुतृतीयेब्देश्रेष्ठामिच्छंतिपंडिताः ॥ पंचमेसप्तमेवापिजन्मतोमध्यमंभवेत् ॥ २ ॥

टीका–रेवती, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु, मृग, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, पुष्य, और उत्तरायण, गुरु, शुक्र, सोम, बुध ये वार, शुक्ल पक्ष, वृष, कन्या, मिथुन, धन, कुंभ, मकर, ये लग्न वर्ज्यकरके शेष शुभ. रिक्ता अमावास्या, षष्ठी, अष्टमी, विगैरे दुष्ट तिथि छोडकर जन्म हुए दिनसे तीसरे वर्षमें चूडाकर्म श्रेष्ठ, पांचवां या सातवां वर्ष मध्यम ऐसा पंडितोंका कहना है.

विद्यारंभको मुहूर्त.

सौम्यायनेशुभेमासेस्वाध्यायदिवसेशुभे ॥ स्वस्थेजीवेबुधेशुक्रे लग्नेखेटबलान्विते ॥ १ ॥ रेवतीद्वितये पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः॥ आर्द्राख्येश्रवणेहस्तेस्वातौचित्राभिधेतथा ॥ २ ॥ हेरम्बविष्णुवाग्देवीस्तथाम्यर्च्येष्टदेवताः ॥पंचमाब्देनरः कुर्याद्विद्यारंभंसदाबुधः ॥ ३ ॥

टीका–उत्तरायण, शुभमास, स्वाध्यायदिन, बुध, गुरु शुक्र, ये वारोंमें ग्रहोंके बलवान् शुभलग्नमें, रेवती, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, आर्द्रा, श्रवण, हस्त, स्वाती, चित्रा, इन नक्षत्रों पांचमे वर्षमें श्रीगणेशजी, सरस्वती तथा अपनी इष्टदेवताकी पूजा करके बालकको विद्याका आरंभ करना शुभहै.

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विमृगभेहस्तत्रयेरेवतीज्येष्ठापुष्यभगेषुचोत्तरगतेभानौचपक्षेसिते ॥ गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरेशुक्रेऽर्कजीवेतिथौ पंचम्यांदशमीत्रयेव्रतमहश्चैवंद्विजन्मद्वये ॥ १ ॥

टी०-पूर्वाषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, अश्विनी, मृग, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरायण, शुक्लपक्ष, वृषभ, मीन, कन्या, धन, सिंह ये लग्न और शुक्र, रवि, गुरु ये वार और पंचमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी ये तिथि उत्तम जानना.

मासादिमुहूर्त.

विप्रंवसंतेक्षितिपंनिदाघेवैश्यंधनांतेव्रतिनंविदध्यात् ॥ माघादिशुक्रांतिकपंचमासाः साधारणा वा सकला द्विजानाम् ॥ १ ॥

टी०-विप्रको वसंत, क्षत्रियको ग्रीष्म, वैश्योंको शिशिर ऐसे वर्णानुसार व्रतबंधमें ऋतु लेना. और माघादि ज्येष्ठपर्यंत पांच मास साधारण द्विजोंको उक्त हैं.

वर्षसंख्या.

गर्भाष्टमेष्टमेवाऽब्दे पंचमे सप्तमेपि वा ॥
द्विजत्वं प्राप्नुयाद्विप्रो वर्षे त्वेकादशेनृपः ॥ १ ॥

टी०-गर्भसे आठवे या जन्मसे आठवे वर्षमें मुख्य, अथवा ५।७ ये वर्ष ब्राम्हणोंको, ग्यारहवां वर्ष क्षत्रियोंको, द्विजत्व प्राप्त होनेको उक्त जानना.

गुरुबल.

वर्णाधिपे बलोपेते उपनीतक्रियाहिता ॥
सर्वेषां च गुरौ सूर्ये चंद्रे च बलशालिनी ॥ १ ॥

टी०-वर्णाधिपतिके अनुसार बल देखना और सबको गुरु, सूर्य, चंद्र, इनका बल लेना.

गलग्रहतिथि.

त्रयोदश्यादिचत्वारिसप्तम्यादितिथित्रयम् ॥
चतुर्थ्येकाकिनीप्रोक्ताअष्टावेतेगलग्रहा ॥ १ ॥

टी०–त्रयोदश्यादि प्रतिपदांत चार तिथि, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, चतुर्थी ये आठ तिथि गलग्रहको वर्जित करना.

शूद्रादिकोंके संस्कारका मुहूर्त.

मूलार्द्राश्रवणद्विदैववसुभेपुष्येतथाचाश्विभे रेवत्यांमृगरोहिणीदितिकरेमैत्रेतथावारुणे ॥ चित्रास्वातिमथोत्तराभृगुयुतभौमेतथाचाद्रजे शूद्राणांतुबुधैः शुभंहिकथितंसंस्कारकर्मोत्तमम् ॥ १ ॥

टी०–मूल, आर्द्रा, श्रवण, विशाखा, धनिष्ठा, पुष्य, अश्विनी, रेवती, मृग, रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, अनुराधा, चित्रा, स्वाती, शततारका, उत्तरात्रय और शुक्र, सोम, बुध ये वार इत्यादि शूद्रादि संकर अंत्यजजातीको प्रशस्त जानना.

दैवज्ञपूजन.

दैवज्ञं पूजयेदादौ फलतांबूलपूर्वकम् ॥
निवेदयेत्सुमनसा स्वकन्योद्वाहनादिकम् ॥ १ ॥

टी०–पहले, ज्योतिषीको यथाशक्ति फल तांबूलपूर्वक पूजा करना. फिर पिताने कन्याके विवाहका शुभाशुभ प्रश्न करना.

विवाहप्रकरणम्.

गुरुशुक्रकेबाल्यवार्धक्यकाप्रमाण.

प्रागुद्गतः शिशुरहस्त्रितयंसितः स्यात् पश्चाद्दशाहमिहपंचदिनानिवृद्धः ॥ प्राक्पक्षमेवगदितोत्रवसिष्ठमुख्यैर्जीवस्तुपक्षमपिवृद्धशिशुर्विवर्ज्यः ॥ १ ॥

टी०–पूर्वमें शुक्रका उदय होताहै. तब तीन दिन शिशुत्वका और अस्त होताहै तब १५ दिन वृद्धावस्थाका वर्जित करना. और पश्चिममें उदय होवे तब ५ दिन शिशुत्वका और १० दिन वृद्धत्वका छोडना गुरुके अस्त उदयमें पंद्रह २ दिन वर्ज करना.

अस्तोदयका लक्षण

यमशरभुजवासरवर्जिणोदिशिद्धि सप्तसितास्तमनंतथा ॥ ग-

गनबाणयमैर्दिशिपश्चिमे नवदिनास्तमनंतुभृगोर्बुधैः ॥ १ ॥

टी०—२५२ वे दिन पूर्वमें अस्त होताहै उसका उदय ७२ वे दिन पश्चिममें होताहै २५० वे दिन पश्चिममें अस्त होताहै. उसका उदय नवमें दिन पूर्वमें होताहै ऐसा पंडितोंनें कहाहै.

अस्तमें वर्ज्यकर्म.

वापीकूपतडागयज्ञगमनंक्षौरंप्रतिष्ठाव्रतंविद्यामंदिरकर्णवेधनमहादानंगुरोःसेवनम् ॥ तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनंमंत्रोपदेशःशुभो दूरेणैववजिजीविषुःपरिहरेदस्तेगुरोर्वैभृगोः ॥ ३ ॥

टी०—बावडी, कूवा, तलाव, यज्ञ, और गमन, करना, चूडाकर्म, देवप्रतिष्ठा, व्रत, विद्यारंभ नूतनगृहप्रवेश. कर्णवेध. महादान. गुरुसेवा. तीर्थका स्नान. विवाह, काम्यहवन, मंत्रदीक्षा, जिनको जीनेकी इच्छा होय उन्होंने गुरु शुक्रके अस्तमें येकाम वर्जित करना.

विवाहमें वर्जित.

नाषाढप्रभृतिचतुष्टये विवाहोनोपौषेनचमधुसंज्ञकेविधेयः ॥ नैवास्तंगतवतिभार्गवेचजीवेवृध्दत्वेनखलुतयोर्नबालभावे ॥ १ ॥ गीर्वाणमंत्रिणिमृगेंद्रमधिष्ठिते न मासेधिके त्रिदिनसंस्पृशिनावमेच ॥ २ ॥

टी०—आषाढसे चार मास. पौष, चैत्र गुरु शुक्रका अस्त और बाल्यवार्ध्य तथा सिंहस्थ, अधिक, क्षयमास ये विवाहमें त्यागना.

मूलादिजन्मनक्षत्रके दोष.

मूलजा च हंति व्यालजा कुलटांगना ॥
विशाखजा देवरघ्नी ज्येष्ठजा ज्येष्ठनाशका ॥ १ ॥

टी०—मूलनक्षत्रमें जन्मीहुई कन्या उसके गुण निकृष्ट, आश्लेषाकी जारिणी विशाखाकी देवरको मृत्युकारक, ज्येष्ठाकी ज्येष्ठबंधुका नाशकरनेवाली जानना.

जन्मनक्षत्रादिवर्ज्य.

जन्मर्क्षेजन्मादिवसेजन्ममासेशुभंत्यजेत् ॥ ज्येष्ठेमास्याद्यगर्भस्यशुभ्रवस्त्रंस्त्रियायथा ॥१॥ अज्येष्ठाकन्यकायत्रज्येष्ठपुत्रोवरोयदि ॥ व्यत्ययोवातयोस्तत्रज्येष्ठोमासः शुभप्रदः ॥ २ ॥

टी०—जन्मनक्षत्र, दिन, जन्मामस प्रथमपुत्रको यह वार्जित करना. जैसा स्त्रियोने श्वेतवस्त्र धारण नहीं करना तैसेही कनिष्ठ कन्या और ज्येष्ठपुत्र होय तो अथवा ज्येष्ठकन्या और कनिष्ठपुत्र होय तो ज्येष्ठमासमें बिवाह शुभ जानना.

वर्षोंका प्रमाण.

जन्मतो गर्भाधानाद्वा पंचमाब्दात्परं शुभम् ॥
कुमारीवरणं दानं मेखलाबंधनं तथा ॥ १ ॥

टी०—जन्म भये दिनसे वा गर्भधाणसे पांचवे वर्षमें कन्या विवाहके योग्य होती है. और पुत्र व्रतबंधके योग्य जानना.

अन्यमत

षडब्दमध्ये नोद्वाह्या कन्या वर्षद्वयं ततः ॥
सोमो भुंक्ते ततस्तद्वद्गंधर्वश्च तथानलः ॥१॥

टी०—६ वर्षके मध्यमें कन्याका विवाह नहीं करना. कारण जन्मसे २ वर्षतक चंद्रमा, पश्चात् २ वर्ष गंधर्व, फिर २ वर्ष अग्नि भोग करतेहैं. पश्चाज्छुभ हैं.

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा तु रोहिणी ॥
दशवर्षा भवेत्कन्या द्वादशे वृषली मता ॥ १ ॥

टी०—जब लडकी ८ वर्षकी होय तो गौरी है ९ वर्षकी रोहिणीनाम है, दश वर्षकी कन्या और बारावर्षकी होजावे तब शूद्रीनाम है.

गुरुबलऔरचंद्रबल.

स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठं पुरुषाणां रवेर्बलं ॥
द्वयोश्चंद्रबलं श्रेष्ठमिति गर्गेण भाषितम् ॥ १ ॥

टी०—स्त्रियोंको गुरुबल श्रेष्ठ, पुरुषको रविबल श्रेष्ठहै और दोनोंको चंद्र बल श्रेष्ठ जानना.

गुरुबल देखना.

नष्टात्मजाधनवती विधवाकुशीलापुत्रान्विताहतधवासुभगाविपुत्रा ॥ स्वामिप्रियाविगतपुत्रधवाधनाढ्यावंध्याभवेत्सुरगुरौक्रमशोभिजन्म ॥ १ ॥

टी०—कन्याको जन्मस्थ गुरु होय और विवाह करै तो उसकी संतति जीवती नहीं. द्वितीयगुरुमें धनवान् तृतीय विधवा, चतुर्थ जारिणी, पंचम पुत्रान्विता, छठे पति मरे, सप्तम सौभाग्यवती, अष्टमे पुत्रघ्नी, नवम पतिव्रता, दशम संताति बचेगी नहीं और विधवा होगी. एकादश धनाढ्य, द्वादश वंध्या, ऐसे अनुक्रमसे गुरुबलका फल जानना.

गुरु अनुकूल करनेकी रीति.

जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदो गुरुः ॥
विवाहे च चतुर्थाष्टद्वाशस्थो मृतिप्रदः ॥ १ ॥

टी०—जन्मस्थ, तृतीय, षष्ठ, दशमस्थानका गुरु नेष्ट है. परन्तु पूजा करनेसें शुभप्रद होताहै. चतुर्थ, अष्टम, द्वादश ये गुरु मृत्युदायक हैं. वास्ते विवाहमें वर्जित करना.

गुरुदोषका अपवाद.

झषचापकुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः ॥
अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयादिषु ॥ १ ॥

टी०—गोचरमें अशुभ (३।६। १०।४।८।१२) ऐसाभी गुरु मीन, धन और कर्कराशिका होय तौ विवाह, व्रतबंध इत्यादि शुभकार्योंमें अतिशुभ हैं.

अथ मंगलविचार.

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ॥
पत्नी हंति स्वभर्तारं भर्ता भार्यां विनाशयेत् ॥ १ ॥

टी०—स्त्री, पुरुषके जन्म कुंडलीमें मंगल देखना तिसका प्रकार १।४।७।८।१२ इतने स्थानमें मगल पडा होवे तो मंगली कहावते हैं. दोनोंके होवे तो शुभ, एकके अशुभ है.

घटित देखनेका क्रम.

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिर्ग्रहगणस्तथा ॥
भकूटं नाडिमैत्री च इत्येता चाष्टमैत्रिका ॥ १ ॥

टी०—वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह, गण, भकूट, नाडि; इनकी मैत्री क्रमसें देखना.

अथवर्णादि.

वर्णः--मीनालिकर्कटाविप्रा नृपाः सिंहाजधन्विनः ॥ कन्या-
नक्रवृषावैश्याःशूद्रायुग्मतुलाघटाः ॥ १ ॥ वश्यम्—द्वंद्वचाप-
घटकन्यकातुलामानवाअजवृषौचतुष्पदाः ॥ कर्कमीनमक-
राजलोद्भवाकेसरीवनचरोलिकटिकः ॥ २ ॥ ताराबलम्—क-
न्यर्क्षाद्वरभंयावतकन्याभंवरभादीप ॥गणयेन्नवभिः शेषेत्रिष्व-
द्रिभमसत्स्मृतम् ॥ ३ ॥ योनिः--अश्वोगजच्छागसर्पौसर्पश्वा-
नविडालकाः ॥ मेषोबिडालकश्चैवमूषकोमूषकश्चगौः ॥ ४ ॥ म-
हिषीश्चततोव्याघ्रोमहिषीव्याघ्रकःक्रमात् ॥ मृगोमृगस्तथा
श्वाचकपिर्नकुलएवच ॥ ५ ॥ नकुलोवानरःसिंहोश्वःसिंहोगौः
करीतथा ॥ अधोरेणक्रमेणेवअश्विन्यादिभयोनयः ॥ ६ ॥ वैर-
योनिः--गोव्याघ्रंगजसिंहमश्वमहिषं श्वैणंचवभ्रूरगंवैरंवानर-
मेषयोश्चसुमहत्तद्वद्बिडालेंदुरम् ॥ लोकानांव्यवहारतो-
न्यदपितज्ज्ञात्वाप्रयत्नादिदं दंपत्योर्नृपभृत्ययोरपिसदाव-
र्ज्यंशुभस्यार्थिभिः ॥ ७ ॥ ग्रहमैत्री--मेषवृश्चिकयोर्भौ-
मःशुक्रोवृषतुलाधिपः ॥ कन्यामिथुनयोःसोम्योगुरुस्तुधनमी-
नयोः ॥ ८ ॥ शनिर्नक्रस्यकुंभस्यकर्कस्यैवतुचंद्रमाः ॥ सिंहस्या-
धिपतिःसूर्यो कथितोगणकैः क्रमात् ॥ ९ ॥ गणः--अनुराधा
मृगोश्विस्तुश्रवणोदितिपुष्यकः ॥ स्वातीहस्तोरेवतीचनवदेवग-
णाः स्मृताः ॥ १० ॥ पूर्वात्रयंरोहिणीचउत्तरात्रयमेवच ॥ आ-
र्द्रातुभरणीचैवनवैतेमानुषागणाः ॥ ११ ॥ आश्लेषाशतभिष्मू-
लविशाखाकृत्तिकातथा ॥ चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचनवैतेराक्षसाग-

णाः ॥ १२ ॥ अंत्यनाडी–कृतिकारोहिणीस्वातीमघाश्लेषा चरेवती ॥ श्रवणश्चोत्तराषाढाविशाखात्वेकनाडिका ॥ १३ ॥ मध्यनाडी-पूर्वाफल्गुनिकाचित्रा धनिष्ठा भरणीमृगाः ॥ पूर्वाषाढानुराधाचपुष्योहिर्बु ध्न्यमेवच ॥१४॥ आद्यनाडी–पूर्वाभाद्रपदामूलज्येष्ठाहस्तः पुनर्वसुः॥ अश्विन्यार्द्राशतभिषाचोत्तरात्वेकनाडिका ॥ १५ ॥

राशिः

अश्विनीभरणीकृत्तिकापादंमेषः ॥ कृतिकात्रयोरोहिणीमृगशिरार्धंवृषभः ॥१॥ मृगशिरार्धमार्द्रापुनर्वसुत्रयोमिथुनः ॥पुनर्वसोः पादः पुष्यआश्लेषांतः कर्काटकः ॥ २ ॥ मघापूर्वाउत्तरापादः सिंहः ॥ उत्तरात्रयोहस्तचित्रार्धंकन्या ॥ ३ ॥चित्रार्धंस्वातीविशाखात्रयस्तूला॥विशाखापादोनुराधा ज्येष्ठांतंवृश्चिकः ॥४ ॥मूलपूर्वाषाढाउत्तराषाढापादोधनुः ॥ उत्तराषाढात्रयः श्रवणधनिष्ठार्धंमकरः ॥५॥ धनिष्ठार्द्धंशततार कापूर्वाभाद्रपदात्रयः कुंभः ॥ पूर्वाभाद्रपदापादं उत्तराभाद्रपदारेवत्यंतं मीनः ॥ ६ ॥

टी०–सवादो नक्षत्र एकराशि भोगताहै ऐसे क्रम जानना.

टी०–वधूके नक्षत्रसें वरका नक्षत्रतक गिनना और नवसें भागना; शेष३ या५ ७ये अशुभहैं. ऐसेहि वरके नक्षत्रसें वधूके नक्षत्रतक गिनकर पहलेकेऐसा जानना

भकूट–नवपंचक

मीनालिभ्यां युते कीटे कुंभे मिथुनसंयुते ॥
मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवपंचके ॥ १ ॥

टी०–मीनसे नवमी, वृश्चिकरास आती है और वृश्चिकसें मीन पांचमी आती है.

घटितमान राश्यनुसार.

राशि		वश्य	स्वामी
मेष	क्षत्रिय	चतुष्प	भौम
वृषभ	वैश्य	चतुष्प	शुक्र
मिथुन	शूद्र	मानव	बुध
कर्क	विप्र	जल.	चन्द्र
सिंह	क्षत्रिय	वनचर	रवि
कन्या	वैश्य	मानव	बुध
तुला	शूद्र	मानव	शुक्र
वृश्चि.	विप्र	कीटक	भौम
धन	क्षत्रिय	मानव	गुरु
मकर	वैश्य	जल०	शनि
कुंभ	——		शनि
मीन	विप्र	जल०	गुरु

घटितमान नक्षत्रानुसार.

नक्षत्र	योनि	वैरयो,	गण	नाडी
अश्विनी	अश्व	भैंसा	देव	आद्य
भरणी	गज	सिंह	मनुष्य	मध्य
कृत्तिका	मींढा	वानर	राक्षस	अंत्य
रोहिणी	सर्प	नेउला	मनुष्य	अंत्य
मृग	सर्प	नेउला	देव	मध्य
आर्द्रा	श्वान	मृग	मनुष्य	आद्य
पुनर्वसु	मार्जार	चूहा	देव	आद्य
पुष्य	मींढा	वानर	देव	मध्य
आश्ले.	मार्जार	चूहा	राक्षस	अंत्य
मघा	चूहा	बिल्ली	राक्षस	अंत्य
पूर्वा	चूहा	बिल्ली	मनुष्य	मध्य
उत्तरा	गाय	व्याघ्र	मनुष्य	आद्य
हस्त	भैंस	अश्व	देव	आद्य
चित्रा	व्याघ्र	गाय	राक्षस	मध्य
स्वाती	भैंसा	अश्व	देव	अंत्य
विशा.	व्याघ्र	गाय	राक्षस	अंत्य
अनुरा.	हरिण	श्वान	देव	मध्य
ज्येष्ठा	मृग	श्वान	राक्षस	आद्य
मूळ	श्वान	मृग	राक्षस	आद्य
पूर्वाषा.	वानर	मींढा	मनुष्य	मध्य
उत्तरा.	नेउला	सर्प	मनुष्य	अंत्य
अभिजी	नेउला	सर्प	मनुष्य	अंत्य
श्रवण	कपि	मींढा	देव	अंत्य
धनिष्ठा	सिंह	गज	राक्षस	मध्य
शतता.	अश्व	भैंस	राक्षस	आद्य
पूर्वाभा.	सिंह	गज	मनुष्य	आद्य
उत्तरा.	गाय	व्याघ्र	मनुष्य	मध्य
रेवती	हाथी	सिंह	देव	अंत्य

कर्क मीनसें नवपंचक, वृश्चिकसे पंचनव और कुंभ मिथुन, मकर, कन्या, ये दोदो राशि नवपंचककी वर्जित करना.

मृत्यु षडाष्टक.

मेषकन्यकयोरेवतुलामीनकयोस्तथा ॥
युग्माल्योस्तुबुधैर्ज्ञेयोमृत्युर्वै नक्रसिंहयोः ॥
कुंभकर्कटयोश्चैव वृषकोदंडयोस्तथा ॥ १ ॥

टी०–मेष और कन्या इनका परस्पर अंतर छ और आठका है. इसी क्रमसें तूल मीन, मिथुन वृश्चिक, मकर सिंह, कुंभ कर्क, धन वृष, ये दोदो राशीको मृत्युषडाष्टक कहते हैं. सो वर्ज्ज करना.

प्रीतिषडाष्टक.

सिंहो मीनयुतश्चैव तुला वृषयुतस्तथा ॥
धनुः कर्कयुतं चैव कुंभकन्यकयोस्तथा ॥
नक्रस्य मिथुने प्रीतिरजाल्योः प्रीतिरुत्तमा ॥ १ ॥

टी०–सिंह मीन, तूल वृषभ, कुंभ कन्या, मकर मिथुन, मेष वृश्चिक, धन कर्क ये दोदोराशिका प्रीतिषडाष्टक जानना. ये शुभ है.

द्विर्द्वादशक.

मेषझषौ वृषमिथुनौ कर्कहरी तूलकन्यके राशी ॥
अलिधनुषी मकरकुंभावेतौ द्विर्द्वादशे राशी ॥ १ ॥

टी०–मेष मीन, वृष मिथुन, कर्क सिंह, तूल कन्या, वृश्चिक धन, मकर कुंभ, ये दोदो राशिमें द्विर्द्वादशक आताहै सो वर्ज्ज करना.

चतुर्थं दशमं तृतीयं एकादशं उभयंसम द्रष्टव्यम् ॥
चतुर्थे दशमश्चैव तृतीयैकादशः स्मृतः ॥
उभयोः सप्तमं साम्यमेकर्क्षं शुभमुच्यते ॥ १ ॥

टी०–वधूवरका परस्परमें राशिका चतुर्थदशम या तृतीयएकादश आवे तो शुभ, और उभयसप्तम सम. और एकनक्षत्र होय तो शुभ समझना.

वश्यावश्ययोजना.

सिंहं विना नृणा सर्वे वश्या भक्ष्याश्च तोयजाः ॥

सिंहस्य वश्या त्यक्त्वालिं सर्वेण व्यावहारिकः ॥ १ ॥

टी०—सिंह छोडकर मनुष्योंको सब चतुष्पाद वश्य जानना. और जलोद्भव भक्ष्य जानना. सिंहको वृश्चिक शिवाय सब वश्य जानना. शेषराशि भक्ष्याभक्ष्य वरजकर परस्पर योजना करना.

ग्रहोंका शत्रुत्व समत्व मित्रत्व.

शत्रू मंद सितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवे
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः ॥
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञारिः सितार्की समौ
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥ १ ॥
सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्यो परे त्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी ॥
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समौ सुरगुरुः सौरेश्च त्वन्येरयो
ये प्रोक्ताः सुहृदास्त्रिकोणभवनात्तेऽमी मयाकीर्तिताः ॥ २ ॥

मैत्रीचक्र.

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु	शनि शुक्र	०	बुध	चंद्र	बुध शुक्र	रवि चंद्र	रवि चंद्र मंगल
सम	बुध	मंगल, गुरु शुक्र, शनि	शुक्र, शनि	मंगल, गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु
मित्र	चंद्र गुरु मंगल	रवि, बुध	रवि चंद्र गुरु	रवि, शुक्र	रवि चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र

गुणका मेलन मार्तंडमतऊपरसें.

वर्णका गुण १

दोनोंका एक वर्ण या वरका उच्च वर्ण हो तो गुण १ अन्यथा०

वश्यकोगुण २

वैरभक्ष्येगुणाभावोद्वयोःसाम्येगुणद्वयम्॥ वश्यवैरे गुणश्चैको वश्यभक्ष्ये गुणार्धकम् ॥ १ ॥

टीका—शत्रभक्ष्यगुण० एक जातीके गुण २ वश्यवैर गुण १ वश्यभक्ष्यगुण ॥

वर्णगुणचक्र.

वरके गुण.

वधूकेगुण.		ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
	ब्रा.	१	०	०	०
	क्ष.	१	१	०	०
	वै.	१	१	१	०
	शू.	१	१	१	१

वश्यगुणचक्र.

	चतु.	मान	ज. च.	व. च.	कीट
चतु.	२	॥	१	०	२
मान	॥	२	०	०	०
ज, च,	१	०	२	२	२
व. च.	०	०	२	२	०
कीठ	१	०	१	०	२

तारागुण. ३

एकतो लभ्यते तारा शुभा चैवाशुभान्यतः ॥
तदासार्द्धोगुणश्चैकतारा शुद्धौ मिथस्त्रयः ॥
उभयोर्नशुभातारातदाशून्यंसमादिशेत् ॥ १ ॥

टी०—तारा एककी शुभ और एककी अशुभ आवे तो गुण १॥ दोनोंकी एकतारा या शुभ तारा आवे तो गुण ३, दोनोंकी अशुभ ताराआ वे तो गुण० जानना.

तारागुणचक्र.

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	२	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३		३	१॥	२	३
९	३	३	१॥	३	१	३	१॥	२	३

योनिके गुण ४.

महावैरे च वैरे च स्वस्वभावे यथाक्रमम् ॥

मैत्रे चैवातिमैत्रे च खेंदुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥ १ ॥

टी०—महावैरका गुण० उभयशत्रुत्वका गुण १ स्वभावके गुण २ उभय मित्रत्वके गुण ३ अति मित्रत्वके गुण ४ एकजाति गुण ४ अन्य व्यवहारवत्.

योनिगुणचक्र.

नाम	अ	ग.	मेँ.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गो.	म.	व्या	ह.	वा.	न.	सिं.
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेंढा	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
बिल्ली	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
चूहा	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
भैंस	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	२	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नेउळा	२	३	३	०	१	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	१	१	३	२	२	२	२	४

ग्रहोंके गुण ५

दोनोंका स्वामी एक अथवा उभयमैत्रीके गुण ५ सममित्रत्व गुण ४ समगुण ३ शत्रुमित्रत्व गुण १ समश त्वगुण ॥ इस प्रकारसें जानना.

गणके गुण.६

दोनोंका गण १ उसके गुण ६ वर देवगणी और वधू मनुष्यगणकी होय तो गुण६ वर मनुष्यगण और वधू देवगणकी होय तो गुण ५ वर राक्षसगणी और वधू देवगणी उसका गुण १ अन्यथा० जानना.

ग्रहमैत्रीगुणचक्र.

वरके गुण.

वधूके गुण.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
रवि	५	५	५	४	५	०	०
चंद्र	५	५	४	१	४	-॥-	॥
भौ.	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥-	५	॥-	५	४
गुरु	५	४	५	-॥-	५	॥	३
शुक्र	०	-॥-	३	५	॥-	५	५
श.	०	॥-	॥-	४	३	५	५

गणगुणचक्र.

वरके गुण.

वधूके गुण.	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	
मनुष्य	६	६	९
राक्षस	१	०	६

नाडीगुणचक्र.

भिन्ननाडीके गुण८एकनाडीके गुण.

वरके गुण.

वधूके गुण.	आद्य	मध्य	अन्त्य
आद्य	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

सत्कूटके गुण, और असत्कूटके गुण.

एकाराशि भिन्नचरण और भिन्ननक्षत्र इनके गुण ७, समसप्तक गुण ७, तृतीय एकादश इनके गुण ७, चतुर्थ दशम इनके गुण ७, भिन्नराशि एकनक्षत्र इनके गुण ५, प्रीतिषडाष्टक, द्विर्द्वादशक, नवपंचक इनमें वरदूरता, योनिशत्रुत्व होय तो भकूटके गुण ६ होते हैं.

असत्कूटका लक्षण--जो योनिमैत्र, स्त्रीदूरत्व होय तो षडाष्टक द्विर्दादशक और नवपंचकादि दुष्टकूटके गुण ४ जानना.

योनिमैत्र और स्त्रीदूरत्व इनमेंसे एक होय तो दुष्टकूटका एक गुण जानना. और एक नक्षत्र और एक चरण दोनोंका होय तो उसका गुण शून्य जानना.

राशिकूटगुणचक्र.

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृषभ	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

एवं गुणमेलनं अष्टादशगुणोत्तरं शुभं न्यूनंतु अशुभम् ॥

टी०--ऐसे १८ से ऊपर गुण मिलें तौ शुभ अन्यथा अशुभ जानना.

वर्णादिकोंके फल.

या स्याद्वर्णाधिका कन्या भर्ता तस्या न जीवति ॥
यदि जीवति भर्ता तु ज्येष्ठपुत्रो विनश्यति ॥१॥

टी०--यदि कन्याका वर्ण श्रेष्ठ होय तो उसका पति जीवे नहीं. जो पति जीवे तो ज्येष्ठपुत्रका नाश होवे.

वैरयोनिका फल.

घोडा और भैंस ऐसे वैरसें वधु और वरके तैसेही राजा और सेवकके शुभ इच्छकोंने वर्जित करना.

गणोंका फल.

स्वगणे चोत्तमा प्रीतिर्मध्यमा नरदेवयोः ॥
कलहो देवदैत्यानां मृत्युर्मानवरक्षसाम् ॥ १ ॥

टी०--दोनोंका एक गण होवे तो उत्तम प्रीति, मनुष्य देव मध्यम, देव दैत्य कलह, मनुष्य राक्षस मृत्युप्रद, ऐसा जानना.

कूटफल.

षष्ठाष्टकेऽपमृत्युः पंचमनवमेऽनपत्यता ज्ञेया ॥
द्विर्द्वादशे निर्धनता ज्ञेया शेषेषु मध्यता चैवम् ॥ १ ॥

टी०--दोनोंका षडाष्टक मृत्युकारक. नवपंचक अनपत्यकारक, द्विर्द्वादशक, निर्धनताकारक; शेष मध्यम जानना.

नाडीफल.

अग्रनाडीव्यधे भर्ता मध्यनाडीव्यधे द्वयम् ॥
पृष्ठनाडीव्यधे कन्या म्रियते नात्र संशयः ॥ १ ॥

टी०--दोनोंकी अग्रनाडी होय तो पतिको मृत्यु करे. मध्यनाडी दोनोंको कनिष्ट, अंत्यनाडी कन्यको मृत्युप्रद जाननी.

मध्यनाडीफल.

जठरे निर्धनत्वं च गर्भे मरणमेव च ॥
पृष्ठे दौर्भाग्यमाप्नोति तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ १ ॥

टी०--दोनोंकी मध्यनाडी निर्धन, गर्भ होय तो मृत्यु. अंत्य नाडी दौर्भाग्य कारक, ऐसे ये वर्जना.

ज्योतिःप्रकाशे पार्श्वनाडीफल.

निधनं मध्यनाड्यां तु दंपत्योर्नैव पार्श्वयोः ॥
करग्रहे पृष्ठनाड्यौ न निंद्ये इति तद्वचः ॥ १ ॥

टी०--दोनोंकी मध्यनाडी निधनकारिणी, तैसेही पार्श्वनाडी नहीं इसलिये विवाहमें पार्श्वनाडी निंदित नहीं. अन्यमतसें क्षत्रियादिकोंको उक्त है.

असत्कूटका फल.

स्त्रीनक्षत्रसें वरनक्षत्र नगीच होय तौ अशुभ. और वरनक्षत्रसें स्त्रीनक्षत्र दूर होय तो शुभ--जो नक्षत्र एक और स्वामी एक होय तो अथवा परस्परकी मित्रता होय तो शुभ जानना.

नक्षत्र मेलन.

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामभं नामधिष्ण्यतः ॥
व्यत्यायाद्योजितं चेत्स्याद्दंपत्योर्निधनं ध्रुवम् ॥ १ ॥

टी०–पुरुषका जन्मनक्षत्र होय तो स्त्रीकेभी जन्मनक्षत्रसे मेलन करना और पुरुषका नामनक्षत्र होय तो स्त्रीकेभी नाम नक्षत्रसे मेलन करना शुभ होताहै. अन्यथा मृत्युकारक है.

वर्णपरत्वे मेलन.

ग्रहमैत्रं ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां गणस्तथा ॥
वैश्यानां राशिकूटं हि शूद्राणां योनिरुत्तमाः ॥ १ ॥

टी०–ब्राह्मणको ग्रहमैत्री और क्षत्रियोंको गणका विचार, वैश्योंको राशिकूट, शूद्रोंको योनिविचार करना शुभ है.

वर्गज्ञान.

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनां ॥
सर्पाखुमृगावीनांनिजपंचमवैरिणामष्टौ ॥ १ ॥

टी०–इसका अर्थ स्पष्ट चक्रमें देखना और स्ववर्गसे पंचम वर्ग इनके महावैर है; जैसे गरुडसे पंचम सर्प ऐसे सबही समझना.

वर्गवैरचक्र

अ	क	च	ट	त	प	य	श	वर्गाक्षर
१६	५	५	५	[illegible]	५	४	४	अक्षर
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेष	वर्ग
सर्प	मूषक	हरिण	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	महावैर

राजमार्तंडमते दुष्टकूटके दान.

षडष्टके गोमिथुनं प्रदद्यात्कांस्यंसरूप्यंन अपंचमेच ॥
नाड्यां सुधेन्वन्न सुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशेब्राह्मणतर्पणंच ॥१॥

टी०-षडाष्टक होय तो दो गौका दान, नवपंचक होय तो कास्यपात्रका दान और रूपा. एक नाडीको गौ, अन्न, सुवर्ण, वस्त्र. द्विर्द्वादशकको विप्रसंतर्पण, ऐसा करनेसे दुष्टकूटके दोष जाते हैं. जिस वर्णको योनि देखना उक्त नहीं वहां जातक देखना सो प्रकार वास्तुप्रकरणमें कहा है.

विवाहको उक्त नक्षत्र.

मूलमैत्रकरस्वातीमघापौष्णध्रुवेंदवैः ॥
एतैर्निर्दोषभैः स्त्रीणां विवाहः शुभदः स्मृतः ॥ १ ॥

टी०-मूल, अनुराधा, हस्त, स्वाती, मघा, रेवती, रोहिणी, तीनों उत्तरा, मृग ये नक्षत्र निर्दोष होय तो स्त्रीविवाहमें शुभ हैं.

एकविंशतिमहादोष.

पचांगशुद्धिरहितोदोषस्त्वाद्यः प्रकीर्तितः ॥ उदयास्तशुद्धिरहितोद्वितीयः सूर्यसंक्रमः ॥ १ ॥ तृतीयः पापषड्वर्गो भृगुः षष्ठः कुजोऽष्टमः ॥ गडातं कर्तरीरिः फषडष्टेंदुश्च सग्रहः ॥२॥ दंपत्योरष्टमं लग्नं राश्योर्विषघटी तथा ॥ दुर्मुहूर्तो वारदोषः खार्जुरीकसमांघ्रिभम् ॥ ३ ॥ ग्रहणोत्पातभं क्रूरविद्धर्क्षं क्रूरसंयुतम् ॥ कुनवांशो महापातो वैधृतिश्चैकविंशतिः ॥ ४ ॥

टी०-प्रथम पचांगशुद्धि रहित १ दोष, उदयास्तशुद्धिरहित २, संक्रांति दिवस ३, पापग्रहोंका वर्ग ४ लग्नमें शुक्र छठा होवै ५, मंगल लग्नमें आठवा होवै ६, चद्र ६।१२।८ या और लग्नमें न होवै ७ गडांत त्रिविध न होवै ८ कर्तरी ९ लग्नमें चंद्र या पापग्रह न होवै १० वधूवरके राशिसें अष्टम लग्न ११ विषघटी १२ दुष्टमुहूर्त्त १३ यामार्धादिक १४ लत्ता १५ ग्रहण १६ उत्पात नक्षत्र १७ पापग्रहवेधित नक्षत्र १८ पापग्रहयुक्त नक्षत्र १९ पापांश २० और साम्यक्रांति दोष २१ ये विवाहमें २१ महादोष जानना.

कर्तरीदोषलक्षण.

लग्नाच्चंद्राद्व्ययद्विस्थौ पापखेटौयदातदा ॥ कर्तरीवर्जनीयासा विवाहोपनयादिषु ॥ १ ॥ नहिकर्तरिजोदोषः सौम्ययोर्यदिजायते ॥ शुभग्रहयुतंलग्नंक्रूरयोर्नास्तिकर्तरी ॥ १ ॥

टी०-लग्न अथवा चंद्रसें १२ वे और दूसरे स्थानमें पापग्रह होय तो कर्तरी दोष होताहै. सो विवाहमें, उपनयन आदि शुभकार्यमें वर्जना. कर्तरीदोषभंग लक्षण—ऊपर कहे हुए स्थानमें सौम्य ग्रह हो या शुभग्रहयुक्त लग्न होय तो शुभ और क्रूर ग्रह छते कर्तरी दोष नहीं.

होलाष्टक.

विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्याश्च त्रिपुष्करे ॥
विवाहादिशुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ॥ १ ॥

टी०—बिपाशा, इरावती, शुतुद्री, त्रिपुष्कर, इतनी नदीकी भूमिमें विवाहादिक शुभकृत्यमें होलिकाके पहिले ८ दिन वर्ज्ज है अन्यत्र शुभ हैं.

वधूवरोंके राशिसें अष्टमलग्नत्याज्य.

वरवध्वोर्बटोश्चापिजन्मराशेश्चलग्नतः ॥
त्याज्यमष्टमलग्नंस्याद्विवाहव्रतबंधयोः ॥ १ ॥

टी०-वर वधू और बटु इनकी जन्मराशि और लग्न इनसें अष्टमलग्न विवाहमें और उपनयनमें वर्ज करना.

दुष्टमुहूर्तकथन.

तिथ्यंशो दिनमानस्य रात्रिमानस्य चैवहि ॥
मुहूर्तः कथितस्तेषु दुर्मुहूर्तं शुभे त्यजेत् ॥ १ ॥

टी०—दिनमान और रात्रिमान इनका १५ वा अंश दुर्मुहूर्त होताहै. सो शुभ कार्यमें वर्जना.

वधूवरके गुण एकत्र देखनेका कोष्टक.

		रा	मे	मे	मे	वृ	वृ	वृ	मि	मि	मि	क	क	क	सिं	सिं	सिं	क	क
		भा	अ	१	।	।।।	१	॥	॥	१	।।।	।	१	१	१	१	॥	।।।	१
रा.	मा.	नक्ष	अ	भ	कृ	कृ	रो	मृ	मृ	आ	पुन	पु	पुष्य	आ	म	पू	उ	उ	ह
मे.	१	अ	३६	३३	३२	२८	२१	३२	२७	२८	१९	२३॥	३१॥	२८	२०॥	२१॥	३२	११	१२
मे.	१	भ	३४	३६	३४	३१	२२॥	१४॥	१९	१६	२७	३१॥	३३॥	२५॥	३२॥	२४॥	३२॥	२१॥	२०
मे.	।	कृ	३२॥	३२	३६	३३	१०	१६॥	२०	२२	२१	२५	२२॥	२३॥	२३	२६॥	२६॥	१५॥	१५॥
वृ.	।।।	कृ	१८॥	१८॥	३६	३६	३४	३२॥	२५॥	२५॥	२५॥	२३	२४	२०	१८	२१॥	३१॥	२८	२८
वृ.	१	रो	२३॥	२४॥	१३	१४	३६	३४॥	३५॥	३२	२९	२५॥	२८	१२	१०	२४	२७॥	३४	३४
वृ.	॥	मृ	२४	११	११॥	३२॥	३६	३६	३५	३३	२९	२६	२०	२२	१८	२५	२५	३१	३४
मि.	॥	मृ	२८	२९	२३॥	२७॥	३५	३६	३५	३४	३१	१०॥	१३॥	१४॥	२२॥	१८	२९॥	३१॥	३२॥
मि.	१	आ	२०	१८	२३	३३॥	३२॥	३४	३३	३४	३४	२३	२३॥	१५॥	२३॥	१९	२१	२४	२४
मि.	।।।	पु	३०	२७	२३	२७॥	३०॥	३१॥	३०॥	३४	३४	३४	२३	१६॥	२१॥	१५॥	२०॥	२३	२४॥
क.	।	पुन	२३॥	२९॥	२५॥	२२	२५	२६	३०॥	१६	३३	३४	३४	३२॥	२२	२६	२२	१८॥	१८॥
क.	१	आ	३०॥	२४	२७	२४	२०	१९	१३॥	२४	२३	३४	३६	३४	२५	३१	२०	१६॥	२६॥
क.	१	पु	२६	२६	२२॥	१३	१२	२०	३४॥	१५॥	१५॥	३२	३४	३४	२०॥	२१	१४	२१॥	२०॥
सिं.	१	म	२२	२८॥	३१	१७	१०	१८	२७॥	२२॥	२०॥	३२	३५	२२॥	३६	३६	३२	२८॥	१५॥
सिं.	१	पू	२६	२४॥	२२॥	२०	२४	१६	१९॥	२८	२६॥	२१	३३	१९	३६	३६	३४	३०	२१॥
सिं.	।	उ	१७	३२	३२	२०	२६	२५	२८	२०॥	२०॥	२३॥	३१	३१	३२	३४	३६	३३	१५
क.	।।।	उ	१३	२२	१६	३४	३४	३२॥	३१॥	२३॥	२३॥	२०	२८	२२॥	२३	३१	३४	३५	३५
क.	१	ह	१३	२०	२८॥	२८	३३	३४	३१	२२॥	२३॥	२०॥	२८॥	२३॥	२४॥	२८॥	२०	३५	३६
क	॥	चि	१४	७	२०	३१	२८	२०	१९	२६	१४॥	२१॥	१३॥	२७॥	२९॥	२५॥	१४॥	३०॥	३३
तु.	॥	चि	२३॥	१६	१९॥	२४॥	२१	१३	२०	२०	३५॥	२२	१३	३१	२५	११॥	१७॥	१०॥	३४
तु.	१	स्वा	३०॥	१९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२७	३४	३३	३४॥	२२॥	२८	१५	१२॥	२४॥	२५॥	२६॥	३४
तु.	।।।	वि	२२॥	२४॥	२१॥	१६॥	११॥	९॥	३५॥	३०॥	२१	२३॥	२२॥	२९॥	१७॥	१९॥	१७॥	१८॥	२५॥
वृ.	।	वि	१७॥	२५॥	१५॥	२०	१५	२२	१३	१३॥	१३॥	२०	२०	११॥	११॥	२३	११॥	१८॥	१९
वृ.	१	अ	२४॥	१९॥	११॥	२४॥	२८॥	२१॥	१८	१६	२०॥	१७	११	२१	२४	२०	२८	२५	२०
वृ.	१	ज्ये	१२	१९॥	२४॥	२१॥	२३॥	१३॥	१३	३	५	११॥	२१	२६	२३	२०॥	१५॥	१२	१२
ध.	१	मू	२८	२८	३३	२०	१४	१४	२१	१३	१३	१०॥	१९॥	२६॥	३२॥	२६॥	१७	१६॥	१३
ध.	१	पू	३४	२६	३४॥	१५	२०	१२	१९	२७	२७	२४॥	१६॥	२८॥	३२॥	३४॥	३२	३२॥	२०
ध.	।	उ	३२	३३	३४	१६	११॥	१८	२४	२७	२७	२४॥	२४॥	२४॥	१०॥	२३	३२॥	१२	१८
म.	।।।	उ	२८	२८॥	१५॥	२६	१३	२९॥	२१॥	१३॥	२३॥	२८	२८	१४	१६	२०	२०	२७	२७
म.	१	श्र	२८	२७	२५	२१	२१	३४	२५	२२॥	२३॥	२८	२८	१५	१३	१८	१९॥	२६	२७
म.	॥	घ	२१	१२	२६	३१	२८	२०	११	१८	१६॥	२०	१२	२६	२६	१५	१२	१०॥	२०
कुं.	॥	ध	३१	१२	२६	३१।	२८	२०	१२	१९॥	१३॥	१४	१६	२०	२५	११॥	१८॥	१४॥	२९
कुं.	१	श	१६	२२	२८	२२॥	२६॥	२८	२०	१२	१२	८॥	१५	२१	२५॥	१९॥	२२॥	७॥	२०॥
कुं.	।।।	पू	१९	२६	२०	३४	३२॥	३२॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२१॥	१४	१९॥	२१॥	२६॥	१२॥	१५
मी.	।	पू	२१॥	२९॥	२३॥	२३॥	२७	२७	२७	२७	१८	१७	२६	७॥	३०	३३	१४	१८॥	१८
मी.	१	उ	३१॥	२३॥	३१॥	३१॥	२७	११	११	२७	२८	२६	११	२०	२-	२५॥	२५॥	१९	२८
मी.	१	रे	३२	३०	१८॥	१८॥	१८	२७	२७	२६	२६॥	१४॥	१३	१३	१०	२२	२२	२६	०

क	तु	तु	तु	वृ	वृ	वृ	ध	ध	ध	म	म	म	कुं	कु	कुं	मीं	मी	मी
॥	॥	१	॥।		१	१	१	१	॥	।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१
चि	चि	स्वा	वि	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	उ	श्र	ध	ध	श	पू	पू	उ	रे
२४	२२॥	२२	२३॥	१९॥	२४	१५	२१	३२	३१	३६	२७	२१	२१	१६	१०	२२	३१	३४
५	१३॥	१९॥	२२॥	१८॥	३५॥	१९॥	३४	२६	३४	२८॥	२७॥	११	११	२७॥	२५	३०॥	२४	३२
१९॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	१८	२५॥	३३	३८॥	२०	१४॥	२४	२५	२६	२७	२०	२५॥	२६॥	१०॥
२८	२०	७॥	१२॥	२०॥	१६॥	३०॥	२२॥	२३॥	११॥	१४	२०॥	३१॥	३०॥	३१॥	२४॥	२१॥	२१॥	१४
३४	१७	१३॥	६॥	१४	२९॥	२४॥	१५	३१	१२॥	१८	२६	३४॥	२३	३१॥	३१	२८	२८	३०
२७	१०	३०	१५॥	२३॥	२१॥	२५॥	१६	१२	१८	२३॥	३४	२१	२०	२८	२०॥	२७	२१	२८
२१	२१	३४	३४॥	२४	११	१५॥	२३	११	१८	२१॥	२६	१३	१४	२९	२४॥	२७	२९	२८
३४	३४	३४	३४	२१॥	१७	४	१४	२८	२८	२४॥	२९	१९	२०	१३	८	२०॥	२८	२८
२७॥	२७॥	३४	२१	१६॥	२१॥	७	१५	२७	२७	२३॥	२४॥	१८	११॥	१४	१०	१९	२८	२८
२२॥	२२	२८	२३	२१	१६	११॥	१०॥	२३॥	२६	२६	२७	२२	१४	८॥	११॥	२०	२६	२५
१२॥	१२	२७	२२॥	२१	१८	११	१९॥	१७॥	२२॥	२६	२७	२३	६	१५	१०॥	८	२८	२७
२७॥	२७	६	१०	१६॥	२०	२६	२५	१७॥	९॥	२३॥	२३	२६	९	२०	१३	२४	३१	१३
२८॥	२४॥	१०	१९	३२॥	२४॥	३२	३२॥	१६॥	१७	४	४	१९	२४॥	४॥	१८	१८	१८	११॥
१४	१६॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	३३॥	३२॥	३४॥	३२॥	१९	१८	५	९	११॥	२४॥	२४॥	१६	२४
१९॥	१५॥	२५॥	१५	२२॥	३०॥	२२॥	२३	३२॥	३२॥	१९॥	१९	१२	१६॥	१०॥	१०॥	१५	२६	२४
३०	२०॥	३०॥	२२॥	१८	१७	१३	२४	११॥	१९॥	२६	२६	१८	१६	१९॥	११	१८	३०	२८
३३	२६	२२॥	२४॥	२०	२७	१४	१५	२७	२६॥	२५	२६	२१	१७	२०॥	१३	१८	३०	१८
३४	३३	२६	३०॥	२७	११	१५	२६	१२	२२	१८॥	१९	१८	१९	२२॥	१७	२८	१२	१३
३४	३४	३२॥	३२॥	२२॥	७॥	११॥	२१	१२	१२	२६॥	२६	२४	२४	२८॥	२४	२४	५	५
१८	३६	३३	३३	२२	२०॥	२७॥	२२	२७	१८	२३॥	२४	२७	२७	१८	३४	२०	२१	१३
३२॥	३२॥	३३	३४	२६	१७॥	२९॥	२६	२०	१४	१८॥	१६	३०	३०	३१	२०	१५॥	१४॥	७
२६	१९॥	२६॥	२६	३२	३३	३५॥	२०॥	२३	१७॥	१३	१५॥	२४॥	२४॥	२५॥	११॥	२५	१५	१९॥
१९	८	३२	१८	३३	३४	३४	२४	३२॥	३०॥	२६	३१	२६	११	२१	२४॥	३१	२५	२४
३५	२१॥	१६॥	२१॥	२१॥	३६	३६	२१	२५	२५	२१॥	२५॥	१३॥	२४॥	२६	१०॥	१६॥	२८	२८
२७	२७	२६	२७	३१॥	१६॥	२४	३४	३५	३२॥	२२॥	२२॥	३०॥	२७	२०॥	१३॥	१६	२६	२८
१२	१८	१९	२६	३१॥	१४॥	३२॥	३४	२६	३४	२४	३८	१६॥	१३	२३॥	२७	३०	१७	३२॥
२१	१७	१९	१९	२३॥	३२	३२॥	३२॥	२४	३६	३५	२६	३२	३३	२२॥	२९॥	३२॥	३२॥	२४
१७	३१॥	३१॥	२३॥	१९॥	२७	२२	२८	२५	३३	२६	३४	३२	२१	१८॥	३१॥	३०	३०	२२
२०	२७	२२॥	१७॥	१४	२७	२३	१९॥	२८	२७	३४	३६	३४	३६	१९॥	२१॥	२७	२९॥	२२॥
१७	२४	२९	३०॥	२७	१३	२७	२४॥	९॥	१८	३२	२७	३४	३२	२५	२५	३४	१४	२२॥
१७	२५	२७	११॥	२६	१२	२६	२२॥	१५॥	२४॥	२६॥	१९	३१	३४	३३	३२॥	१७॥	८	१५॥
२५	३३	२८	२३	२७	३१	१९	३२॥	२४	२४	२६	१०	१५	३३॥	२६	३१	१८	१०॥	२०॥
१७॥	३१	३३	३३	२७॥	१७॥	३४	१६॥	१९॥	३०॥	३२॥	२१॥	१८॥	३२	३३	३४	३४	३४	२१॥
२०	१३	२०॥	१८॥	२७	२६	२३	२३॥	३०॥	३१	२९॥	३०॥	३१॥	१३॥	१०	१७॥	३४	३३	३०॥
११	५	२१	१३॥	१६	१९	३४	३१॥	२३॥	३१॥	२१॥	२१॥	२२	८॥	१७	२०	३३	३६	३५
१२	१८	१२	८	१८॥	२७	२९	२८	२०	३२॥	२०॥	२३	२९॥	१५॥	१७॥	२०॥	३०॥	३४	३६

६।८।१२ चंद्र ७ त्रिविध गंडांत समय ८ कर्तरी ९ लग्नमें चंद्र और पाप
१० वधू वरकी राशिसे अष्टम लग्न वर्जनीय ११ विषघटिका १२ दुष्ट मु

यामार्धादिकथन.

सूर्याद्यामदलेंदिवैवनिगमाद्व्यश्वीषुनागात्रिषट्संख्याकंकुलिकं दिवेंद्ररविदिङ्नागर्तुवेदद्धिकम् ॥ व्येकंतन्निशिषोडशांशमपरे तिथ्यंशमुज्झंति तैः कालंकंटकमैनिघंटममरेज्यज्ञास्फुजिद्भ्यः क्रमात् ॥ १ ॥

टी०—दिनमें रविवारसें अर्ध यामार्धकोष्टकमें अंक हैं और प्रवृत्ति निवृत्तिके अंक हैं, सो यथानुक्रमसें जानना, सो शुभकर्ममें वर्जित करना. दिनमें दिनमानका सोळहवां भाग रविवारसे कुलिककोष्टकमें अंक हैं सो कुलिकसंज्ञक जानना. ये शुभकार्यमें वर्जना. रात्रौ एकेक न्यून करना. सो दिनमानका पंचदशांश त्यागना यह केचित् मत है. बुधवारसें कालदोष. गुरुवारसें कंटक, और शुक्रवारसें यमघंट ये सब यथाक्रमसें कुलिकवत् वर्ज करना.

यामार्द्धचक्र.

यामार्धघटिका ४

वार	संख्या	प्रवृत्ति	निवृत्ति	कुलिक घ. २	कालघटी १	कंटकघटा २	यमघंटघटी २.
रवि	४	१२	१६	१४	८	६	१०
चंद्र	७	२४	२८	१२	६	४	८
मंगळ	२	४	८	१०	४	२	६
बुध	५	१६	२०	८	२	१४	४
गुरु	८	२८	३२	६	१४	१२	२
शुक्र	३	८	१२	४	१२	१०	१४
शनि	६	२०	२४	२	१०	८	१२

अथाभिजिद्ग्राह्याग्राह्य.

एकार्गलेचवेधेचसाभिजिद्गणयेद्बुधः ॥
लत्तोपग्रहपातेषुयामित्रेतुनतद्भवेत् ॥ १

टी०–दश दोषोंमेंसें एकार्गल और वेध इनमें अभिजित् नक्षत्रकी गणना करनी शेषदोषोंमें अभिजित् नहीं गिनना.

लत्तादोषसारणी.

विवाहन.	रो.	मृ.	म.	उफा	ह	स्वा	अनु	मू	उषा	उभा	रे
सू. १२	पूषा	उषा	उभा	अ	ह	रो	आ	पुष्य	म	स्वा	वि
चं. ७	पूभा	उभा	रो	आ	पु	ऽश्ले	पूफा	ह	स्वा	पूषा	उषा
मं. ३	भ	कृ	पुष्य	म	पूफा	ह	स्वा	ऽनु	मू	श	पुभा
बु. २२	म	पू फा	वि.	ज्ये	मू	उषा	घ	पूभा	रे	मृ	ऽर्द्रा
गु. ६	उभा	रे	मृ	पुन	पुष्य	म	उभा	चि	वि	उषा	श्र.
शु. ४२	पुष्य	ऽश्ले	चि	वि	ऽनु	मू	उषा	ध	पूभा	कृ	रो
श. ८	श	पूभा	कृ	मृ	ऽऽर्द्रा	पुष्य	म	उफा	चि	मृ	पूषा
रा. २०	उफा	ह	ज्ये	पूषा	उषा	ध	पूभा	रे	भर	पुन	पुष्य

२ पात, ४ वेध, ५ यामित्र दोषसारिणी.

वि. न	रो	म	म	उफा	ह	स्वा	ऽनु	मू	उषा	उभा	रे
सू	ऽऽर्द्रा	मृग	ऽश्वि	कृ	भ	कृ	ऽश्वि	रो	भ	भ	ऽश्वि
सू	पु	ऽऽर्द्रा	मृ	ऽऽर्द्रा	मृ	पुष्य	ऽऽर्द्रा	उभा	पन	श	ध
सू	श	ध	पुष्य	उभा	पू	रे	पूभा	ध	श	मू	ज्ये
सू	मृ	ज्ये	रे	पूभा	श	ध	उषा	मू	उषा	वि	स्वा
सू	चि	ह	ज्ये	वि	स्वा	श्र	पूषा	ज्ये	अनु	उफा	पूफा
सू	पूफा	म	ह	पूफा	म	ह	पुफा	ऽश्ले	चि	पूफा	म
वेधर्क्षे	ऽभि	उषा	श्र	रे	उभा	श	भ	पुन	मू	ह	उफा
या-	ऽनु	ज्ये	ध	पूभा	उभा	ऽश्वि	कृ	मृ	पुन	उफा	ह

३ विवाहके नक्षत्रपर कोई ग्रह होवे तो युतिदोष जानना.

७ एकार्गलसारिणीयम्.

विवाह.	रो	मृ	म	उफा	ह	स्वा	ऽनु	मू	उषा	उभा	रे	०
विष्कं.	उभा	श	पूषा	ज्ये	ऽनु	स्वा	ह	पूफा	ऽश्ले	कृ	भ	प्रीति
आयु	रे	उभा	ऽभि	पूषा	मू	ऽनु	स्वा	ह	पूफा	म	रो	सौ.
शोभ	भ	ऽश्वि	ध	ऽभि	उषा	मू	कृ	स्वा	ह	पुन	ऽऽर्द्रा	अति
सुक	ज्ये	कृ	पूभा	ध	श्र	उषा	मू	ऽनु	स्वा	ऽश्ले	पुष्प	धृति
शुल	ऽऽर्द्रा	मू	रे	पूभा	श	श्र	उषा	मृ	ऽनु	पूफा	म	गंड
वृद्धि	पुष्य	पुन	भ	रे	उभा	श	श्र	उषा	मू	ह	उफा	ध्रुव
व्याघा	म	ऽश्ले	रो	भ	ऽश्वि	उभा	श	श्र	पुन	स्वा	चि	हर्षण
वज्र	उफा	पूफा	ऽऽर्द्रा	रो	कृ	ऽश्वि	उभा	श	श्र	ऽनु	वि	सिद्धि
व्यती	चि	ह	पु	ऽऽर्द्रा	मृ	कृ	ऽश्वि	उभा	श	मू	ज्ये	वरिय
परिघ	वि	स्वा	ध	पुष्य	पुन	मृ	कृ	ऽश्वि	उभा	उषा	पूषा	शिव
सिद्धि	ज्ये	ऽनु	उफा	म	ऽश्ले	पुन	मृ	कृ	ऽश्वि	श्र	ऽभि	सा.
शुभ	पूषा	मू	चि	पूभा	पूफा	ऽश्ले	पुन	मृ	कृ	श	ध	शुक्ल
ब्रह्मा	ऽभि	उषा	वि	चि	उभा	पूफा	ऽश्ले	पुन	मृ	ह	पूभा	ऐंद्र
वैधृ	ध	श्र	ज्ये	वि	स्वा	ह	पूफा	ऽश्ले	पुन	ऽश्वि	चि	वैधृ
विषम	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सू	सम

६ पंचकसारिणी.

रो.	ऽग्नि.	नृ.	चौ.	मृ.	पंचक
८ १७ २६	२ म. ११ २० म. २९	४ १३ २२	६ १५ २४	१ १० १९ २८	रविअंश

८ उपग्रहसारिणीयम् ।

चि. न.	रो.	मृ	म	उफा	ह	स्वा	अनु	मू	उषा	उभा	रे	०
र १	पुष्य	ऽश्ले	चि	वि	ऽनु	मू	उषा	ध	पूभा	कृ	रो	२४
र ४	ऽश्ले	म	स्वा	अ	ज्ये	पूषा	श्र	श	उभा	रो	मृ	२२
र ५	म	पूफा	वि	ज्ये	मूळ	उषा	ध	पूभा	रे	मृ	ऽऽर्द्रा	२१
र ८	ह	चि	मू	उषा	श्र	श	उभा	ऽश्वि	कृ	पुष्य	ऽश्ले	१९
र ९	चि	स्वा	पूषा	श्र	ध	पूभा	रे	भ	रो	ऽश्ले	म	१८
र १५	ज्ये	मू	श	उभा	रे	भ	रो	ऽऽर्द्रा	प.	ह	चि	१४
र १९	श	पूभा	कृ	मृ	ऽऽर्द्रा	पुष्य	म		चि	मू	पूषा	८
र २२	रे	ऽश्वि	ऽऽर्द्रा	पुष्य	ऽश्ले	पूफा	ह	स्वा	ऽनु	श्र	ध	५

९ क्रांन्तिसारिणीयम् चंद्ररविवशात् ।

मी.	मे.	वृ.	क.	तु.	ध.	रविवाचंद्र.
क.	सिं.	म.	वृ.	कुं	मि.	रविवाचंद्र

१० दग्धादोषसारिणीयम् ।

सं.	मे	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
ति	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

लत्तादोष.

भौमात्र्याकृतिषड्जिनाष्टनखभंहंत्यग्रतोलत्तया ॥
खेटोर्कोऽर्कमितंशशीमुनिमितंपूर्णोनसन्मालवे ॥ १ ॥

टी०—भौम जिस नक्षत्रपर होवे उस नक्षत्रसे तृतीयनक्षत्रमें लत्तादोष. बुध जिस नक्षत्रपर होवे उस नक्षत्रसे २२ वां नक्षत्रपर लत्ता. गुरु जिस नक्षत्रपर हो उससे ६ नक्षत्र, शुक्र जिस नक्षत्रपर. हो उससे २४ नक्षत्रपर शनि जिस नक्षत्रपर हो उससे ८ नक्षत्रपर. राहु जिस नक्षत्रपर होवे उस नक्षत्रसें २० वां नक्षत्रपर. रवि जिस नक्षत्रपर हो उससें १२ नक्षत्रपर. चंद्र पूर्ण रहते

७ वां नक्षत्रमें लत्तादोष रहताहै. ये दोष मालवादेशमें अशुभ अन्यत्र शुभ जानना.

ग्रहण उत्पात नक्षत्रदोष.

यस्मिन् धिष्ण्ये महोत्पातो ग्रहणं वा भवेद्यदि ॥
तस्मिन् धिष्ण्ये शुभं कर्म षण्मासं वर्जयेद्बुधः ॥ १ ॥

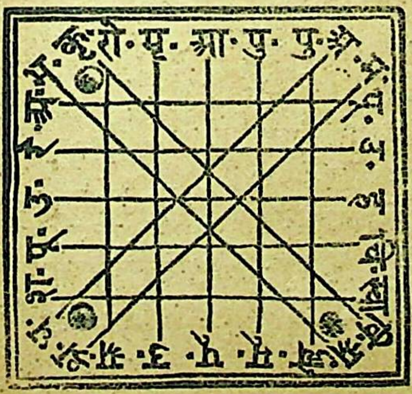
टी०—जिस नक्षत्रमें उत्पात अथवा ग्रहण होताहै सो नक्षत्र ६ महिना शुभकर्ममें वर्जना.

पापग्रहयुक्त और वेधनक्षत्र.

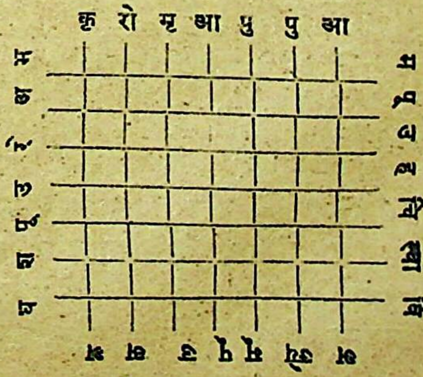
श्रुत्यग्निभेऽभिजिद्ब्राह्मेवैश्वेन्द्वर्क्षेषुरुद्रभे ॥ मूलादित्येचपुष्येंद्रे मैत्राश्लेषामघान्तके ॥१॥ दास्रभाग्यार्यमांतेचहस्ताहिर्बुध्न्यभे तथा ॥ चित्राजचरणेस्वातीवारुणेचपरस्परम् ॥ वासवेन्द्राग्निभेतद्वद्वेधः सप्तशलाकज्यः ॥ त्यायजः पापोद्भवो यत्नद्व्रातबंधादिकर्मसु ॥ २ ॥

टी०—पंच तथा सप्तशलाकामें जिस रेखापर जो नक्षत्र हो उस नक्षत्रपर पापग्रह होय तो उसके सामनेके रेखाऊपरका नक्षत्र विद्ध जानना. वेधितनक्षत्र विवाहव्रतबंधादिकर्ममें त्याज्य है.

पंचशलाकाचक्र.



सप्तशलाकाचक्र.



नक्षत्रचरणवेध.

सप्तपंचशलाकाभ्यांविद्धमेकार्गलेनयत् ॥ लत्तोपग्रहगंधिष्ण्यं पादमात्रंशुभेत्यजेत् ॥ १ ॥ वेधमाद्यन्तयोरंघ्योरन्येद्वितृतीययोः ॥ क्रूरैरपित्यजेत्पादंकेचिदूचुर्महर्षयः ॥ २ ॥

टी०–विद्ध नक्षत्र, एकार्गलकों और लत्ता, उत्पातनक्षत्र इनके चरणमें शुभग्रह होय तो वह चरण शुभकार्यमें वर्जना. प्रथम, चतुर्थ द्वितीय, तृतीय नक्षत्र चरण परस्परोंकरके विद्ध होते हैं यह केनि मत करके पापग्रहविद्ध नक्षत्रोंका चरण वर्जना.

एकार्गल दोष मार्तण्डमते.

दुर्योगे दिनभाच्च साभिजिदयुग्मेऽर्कस्तदैकार्गलः ॥

टी०–विष्कंभादि दुष्टयोगरहित दिननक्षत्रसें अभिजित्‌सह गिनके विषमनक्षत्रपर सूर्य छते एकार्गल दोष होताहै.

चण्डायुध.

शूलगंडांत्यपापानां साध्यहर्षणयोस्तथा ॥
अंत्यं यच्चंद्रभं तस्मिन्नेतच्चंडायुधं न सत् ॥ १ ॥

टी०–शूल, गंड, व्यतीपात, साध्य, वैधृति हर्षण इनयोगके अंतमें जो नक्षत्र होय उससें चंडायुध दोष होय.

क्रांतिसाम्य.

ऊर्ध्वरेखात्रयं चैव तिर्यग्रेखात्रयं तथा ॥ क्रांतिसाम्यं बुधैर्ज्ञेयं मध्ये मीनं तु योजयेत् ॥ १ ॥ मेषसिंहौ तुलाकुंभौ गोनक्रौ कर्कवृश्चिकौ ॥ कन्यामीनौ धनुर्युग्मे तत्रान्योन्यं स्थितावुभौ ॥ रविचन्द्रौ तदा ज्ञेयः क्रान्तिसाम्यस्य संभवः ॥ २ ॥



टी०–तीन खडी रेखा और तीन आडी रेखा देकर मध्यरेखापर मीन लग्नसें क्रम मांडकर द्वादशलग्नके युग्ममें चंद्र और सूर्य सामने आवे तो क्रांतिसाम्य होताहै. ये दोष शल्य देशमें वर्जितहै. जिस लग्नमें चन्द्र हो उसके सामनेके लग्नमें सूर्य होय ता अर्थात् मेषसिंह, तुला कुंभ, वृषभ मकर, कर्क

वृश्चिक, कन्या, मीन, धन और मिथुन इन छः युग्मोंमें परस्पर सामने चंद्र सूर्य होय तौ क्रांतिसाम्यदोष होताहै वह शुभकार्यमें वर्ज्यहै.

जामित्रदोष.

लग्नेंद्वोश्चास्तगः पापस्तत्तुल्यांशेयदिस्थितः ॥ तदाजामित्रदोषः स्यान्नहिन्यूनाधिकांशके ॥ १ ॥ क्रूरोवायदिवासौम्योलग्ना- च्चन्द्राच्चखेचरः ॥ एकोपियदिजामित्रे समांशेचतदाभवेत् ॥२॥ जामित्रं नप्रशंसंतिगर्गकश्यपदेवलाः ॥ आयषष्ठतृतीयेषु धनधान्यप्रदोरविः ॥ ३ ॥

टी०—लग्न और चंद्र इनसें सप्तमस्थानपर पापग्रह तुल्यांश आवे ता जामित्र दोष होवे. अधिकन्यून होय तो दोष नहीं. (दूसरे पक्षसें.) लग्न और चंद्रसें सप्तमस्थानमें शुभग्रह या पापग्रह समांश होवे तो जामित्रदोष होवे सो गर्ग, कश्यप देवलऋषिके मतसें जामित्रदोष विवाहमें वर्जना. यदि लग्नसें एकादश, षष्ठ और तृतीय ये स्थानपर सूर्य होवे तो जामित्रदोष शुभ- प्रद जानना.

चरत्रयदोष.

कर्कलग्नेथवा मेषे घटांशो यदि दीयते ॥
तुलायां मकरे चंद्रे वैधव्यं जायते ध्रुवम् ॥ १ ॥

टी०—कर्क और मेष लग्नमें तुलाका अंश और मकर अथवा तुलाका चंद्र ये वैधव्यकारक योगके दोष वर्ज्य करना.

तिथ्यनुसार लग्नवर्ज्य.

पक्षादितस्त्वोजतिथौ घटेणौ मृगेन्द्रनक्रो मिथुनांगनेच ॥ चा- पेन्दुभे कर्कहरी हयान्त्यौ गोन्त्यौ च नेष्टे तिथिशून्यलग्ने ॥ १॥

टी०—पक्षकी आदि (परवा) से लेकर उन २ तिथियोंमें घट (तुला) एण (मकर) आदि लग्नोंको तिथिशून्य लग्न कहते हैं. जैसे प्रतिपदाकों तुला और मकर, तृतीयाकों सिंह और मकर, पंचमीकों कन्या मिथुन, सप्तमीकों धन कर्क नवमीकों कर्क सिंह, ग्यारसकों धन मीन, १३ को मीन वृषभ, ये लग्न इन तिथियोंमें शून्य जानना. वे शुभकार्यमें त्याज्य है.

दोषनिवारण.

द्यूनंविनाकेंद्रगतोमरेज्यास्त्रिकोणगोवापिहिलक्षमेकम् ॥
निहन्तिदोषांस्त्रिशतंभृगुश्चशतंबुधोवापिहिहस्यमूर्तिः ॥ १ ॥

टी०–गुरु, शुक्र, अथवा बुध, ये १ । ४ । १० । ९ । ये स्थानमें होय तो लक्ष, तीसनौं, सौं, ऐसे तीनु क्रमसें दोषका नाश करते है.

लग्नमुहूर्त राश्युदय.

गजाग्निदस्रागिरिषट्कदस्राव्योमेन्दुरामारसरामरामाः॥ कुराम रामागजचंद्ररामानागेन्दुलोकाःकुगुणानलाश्च॥ १ ॥ षड्रामरामाः खशशांकरामाः सप्तांगपक्षाश्चगजाग्निदस्राः ॥

टी०–राश्युदय याने मेषादि द्वादशराशिका लग्न जिस राशिको सूर्य आवे सोई लग्न उदयकालमें प्रथम जानना, उसके पलोंके संख्याका क्रम–

लग्न	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तूळ	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
पल	२३८	२६७	३१०	३३६	३३१	३१८	३१८	३३१	३३६	३१०	२६७	२३८

लग्नघटी ल्यानेका क्रम.

मीनेमेषेत्र्यष्टपंचक्रमान्नाड्यः पलानिच ॥ वृषेकुंभेब्धिसप्तद्वीपंच दिङ्मिथुनेमृगे ॥१॥ धनुः कर्केशरेषट्त्रिसिंहाल्योः शरभूत्रयम्॥ बाणाष्टदशतूलांगेलग्नेनाड्यः पलानिच ॥ २ ॥

लग्न	मेष	वृष	मि	कर्क	सिं.	क.	तूल	वृ	धन	म.	कुं	मी.
घ.	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	५८	२७	१०	३६	३१	१८	१८	३१	३६	१०	२७	५८

भुक्तपलदेखनेकाक्रम.

मीनाजेसप्तषट्पंचपलानिविपलानितु ॥ गोकुंभेष्टौयुगशरादिग्विंशतिनृयुङ्मृगे ॥१॥ कर्कचापेभवाः सूर्याः सिंहाल्योरुद्रदृङ्मिताः ॥ तूलांगेदिक्चषट्त्रीणिलग्नेष्वेकांशसम्मितिः ॥ २ ॥

टी०–जो लग्न उदयकालमें होवे सो प्रतिदिन कितना भोगता है उसकी संख्या

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कर्क	सिं.	क	तूल	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
पल	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
विप	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्तलग्नकथन.

यस्मिन् राशौ यदा सूर्यस्तल्लग्नमुदये भवेत् ॥
तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नं तदुच्यते ॥ १ ॥

टी०–जिस राशिमें सूर्यका उदय होता है सोही लग्न प्रथम. उससे सातवें लग्नमें सूर्यास्त होता है. सोही अस्तलग्न जानना.

लग्नको उत्कांश देनेका क्रम.

वृषश्च मिथुनं कन्या तूला धन्वी झषस्तथा ॥
एते शुभा नवांशास्तु ततोन्ये कुनवांशकाः ॥ १ ॥

टी०–वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धन, मीन, ये अंश द्वादशलग्नके शुभ हैं. १२ लग्न और ७ अंश कोष्टकमें हैं उसमें जो अंशको वर्गशुद्धि आवे उस अंशके नीचेके कोष्टकमेंसे लग्न लेना. और अंशघटीको अयनांश देकर भुक्तकाल ल्यावना

लग्न	वृ.	मि.	क.	कं.	तु.	ध.	मी.
मे.	० ३ २०	० ६ ४०	१० ० ०	० १६ ४०	० २० ०	० २६ ४०	० ० ०
वृ.	१ १३ २०	१ १६ ४०	१ २० ०	१ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मि.	२ २३ २०	२ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	२ ० ०	२ ६ ४०	२ १६ ४०
क.	० ० ०	० ० ०	३ ० ०	३ ६ ४०	३ १० ०	३ १६ ४०	३ २६ ४०

सिं.	४ ३ २०	४ ६ ४०	४ १० ०	४ १६ ४०	४ २० ०	४ २६ ४०	० ० ०
क.	५ १३ २०	५ १६ ४०	५ २० ०	५ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
तु.	६ २३ २०	६ २६ ४०	६ ० ०	६ ० ०	६ ० ०	६ ६ ४०	६ १६ ४०
वृ.	० ० ०	० ० ०	७ ० ०	७ ६ ४०	७ १० ०	७ १६ ४०	७ २६ ४०
ध.	८ ३ २०	८ ६ ४०	८ १० ०	८ १६ ४०	८ २० ०	८ २६ ४०	० ० ०
म.	९ १३ २०	९ १६ ४०	९ २० ०	९ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
कुं.	१० २३ २०	१० २६ ४०	० ० ०	० ० ०	१० ० ०	१० ६ ४०	१० १६ ४०
मी.	० ० ०	० ० ०	११ ० ०	११ ६ ४०	११ १० ०	११ १६ ४०	११ २६ ४०

कोष्टकमें ४ अंक हैं उनके नाम–राशि, अंश, कला, विकला जानना. राशिकीसंज्ञा० शून्यका नाम मेष वृषभका नाम १ ऐसेही बारहों राशि जानना.

तात्कालिकस्पष्टसूर्यल्यानेका साधन.

गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः खरसाप्तांशवियुग्युतोग्रहः स्यात् ॥१॥

टी०–पंचांगमें ग्रहके कोष्टकमें पौर्णिमाका तैसाही अमावास्याका अवशिष्ट स्पष्ट सूर्य है परंतु पौर्णिमाका सूर्य जिस दिनमें लेजानेका सो दिन गिन उसदिनसें सूर्यकी गति कोष्टकमेंकी गुण६०सें भाग दे जो अंक आवे सो अंश, घटी

पल जानना.परंतु पौर्णिमाका सूर्य पीछा लावनेका होवे तो पंचांगमें सूर्यका अंश घटी, पल कोष्टकमें है वो जो अंक आये होंगे उनमें कम करना. और आगे लेजाना होय तो उनमें मिलानेसे तात्कालिक सूर्य होताहै.

भुक्तदिनका उदाहरण.

शाके १७६७ कार्तिक शुद्ध ९ भौमवारकों स्पष्ट सूर्य कितना है सो कहो.

सूर्यकी गति.

पल	विपल	
६०	४७	गति.

६ दिन ९ सें १५ मेंके अन्तरसे गुणना.

३६०	२८२	गुणाकार.

भाग ६०)२८२(४ अंश

३६०	४२	२४०
४ मिलाना		४२ वा
३६४ ४२		६०)३६४(६
३६४ ४२ भागाकार.		३६०
		४

स्पष्टरविका उत्तर.

	रा.	अं.	क.	विकला.
पंचांगस्थसू.	७	७	२१	५७
रविवजागति	०	६	४	४२
शेषसंख्या	७	१	१७	१५

यह स्पष्ट सूर्य जानना.

अं.	क.	वि.
६	४	४२

अभुक्तदिनका उदाहरण.

शके १७६९ कार्तिक कृष्ण६का स्पष्ट सूर्य ल्यानेका क्रम१५माका स्पष्ट सूर्य राशि ७ अंश ७ कला २१ विकला ५७ अभुक्त दिन ६सूर्यकी गति ६०क.४७ वि. ये अंक ६ सें गुणना. वो गुणाकार ३६४।४२ इनकों ६०सें भागगा. शेष बचे सो अंश ६ कला४ विकला४२ये अंक ऊपरके सूर्यके अंश,कला विकलामें मिलाना तो ७ राशि १३ अंश २६ कला ३९ विकला ऐसा होता है.

अयनांशलानेका प्रकार.

शाको वेदाब्धिवेदोनःषष्टिभक्तोयनांशकाः ॥
देयास्ते तु रवौ स्पष्टे चरलग्नादिसिद्धये ॥ १ ॥

टीका—चलतेहुए शकमें ४४४ कम करना. शेषरहे उसकों६०से भागना, चर

तथा लग्नादि सिद्धिके कारण होते हैं वो अयनांश स्पष्टसूर्यके अंश घटिका कला विकलाओंमें मिलाना. ये सायन सूर्य होताहै.

उदाहरण.

	भा. ६०)१३२५(२२ अंश		७ ११७१५ स्पष्टरवि
शके १७६९	१२०		२२ ५ अयनांश
घटाया ४४४	१२५	भा. ६०)३०० (५ कला	७२३ २२१५ मिलाना
शेष १३२५	१२०	३००	सायन सूर्य जानना.
	५	०००	
	६० गुणक		

लग्नऊपरसेंइष्टकालदेखनेका क्रम.

स्फुटसायनभागार्कभोग्यांशफलसंमितिः॥ सायनांशतनोश्चापिभुक्तांशफलसंयुता ॥ मध्यलग्नोदयैर्युक्ताषष्ट्याप्तानाडिकास्तनोः ॥ १ ॥

टी०—सायनसूर्यसें भोग्य और सायनलग्नसें भुक्त ल्यावनेका क्रम—दोनों को एकत्र कर सूर्यलग्नके बीचमेंका उदय लेकर युक्त करना. उसे ६० सें भागना. तो लग्न ऊपरसें सूर्यका भोग्यकाल स्पष्ट होताहै. उदाहरण—शके १७६९ कार्तिक शुद्ध ९ भौमवारकों स्पष्ट सूर्य राश्यादि ७।१।१७।१५ अयनांश २२।५ ये सूर्यके अंश कलामें मिलाना.वो सायन सूर्य राश्यादि ७।२३।४२।१५ ये वृश्चिकराशिका सूर्य २३ अंश ४२ कला १५ विकला ये ३०में कम करनेसें भोग्यांश ६ ७।४५ सूर्य वृश्चिककाहै. वास्ते वृश्चिकराशिका उदय३२१सें भोग्यांश गुणना. सो अंक २१९४ उनको ३० सें भागना. ७३।८ ये सूर्यका भोग्यकाल जानना.

लग्नपरसें भुक्त ल्यावनेका क्रम.

मकर लग्न वृषभसें सो कोष्टकमें देख वो स्पष्टलग्न लिखा सो राश्यादि ९। १३।२० याने मकरराशिका लग्न १३ अंश २० कला लग्नके अंश कलामें अयनांश २२।५ मिलाना सो सायन लग्न १०।५।२५ कुंभराशिका लग्न ५ अंश २५ कला सायनलग्न. लग्नके भुक्तांश ५।२५ कुंभराशिका उदय २६७ से गुणना वो अंक १४४६ ये ३० सें भागना. सो अंक ४८।६ ये अंक लग्नका भुक्तकाल है.

भोग्यभुक्त परसे इष्टल्यावनेका क्रम.

भोग्यभुक्तयोग १२१। १४ सूर्य और लग्न या राशिके बीचमेका उदय २ धन ३३६ मकर ३१० इनका योग ६४६ भोग्यभुक्तयोग १२१ इनको मिलाना सो अंक ७६७ इनको ६० सें भागना. सो इष्टकाल घडी १२ पल४७ येपलोंमें मन्वृत्तिका ५ पला मिला देना सो स्पष्टइष्टकाल १२। ५२ का है.

उदाहरण.

सायनसूर्यसें भोग्य ल्यानेकाक्रम.

अंश	कला	विकला.	
३०	०	०	इनमें सायनरविके अंशोंको न्यून करना.
२३	२२	१५	यह सूर्य वृश्चिकका है.
६	३७	४५	
		३३१	गुणक

१९८६	२३१७ २०८	९९३ २१९४	१२२४७ २४८ भाग ६०) १२४९५(अंश २०८ १२० ४९५ ४८० १५ शेषकला. | ४५ ३३१ गुणक. १६५५ १३२४ भाग ६०) १४८९५ (कला. २४८ १२० २८९ २४० ४९५ ४८० १५ शेषपलानि.

अंश कला रविका भोग्यकाल ल्यानेका प्रकार.

भाग ३०)२१९४ १५ (७३।८
२१० यह सूर्यभोग्यकाल जानना.
९४
९०
४
६० गुणक.
२४०
१५ शेष कला.
भाग ३०) २५५ यो. (८ कला
२४०
१५ शेष.

रा. अं. क.
९ १३ २० मकरलग्न.
२२ ५ ये अयनांश मिलाना.
१० ५ २५ सायनलग्नभुक्त.
२६७ लग्नके उदयसे गुणना.
१३३५ १७५
१११ १५०
१४४६ ५० अंश.
६०) ६६७५ (१११
६०
६७
६०
७५
६०
० १६

लग्नऊपरसे भुक्तकाल ल्यानेका प्रकार.

भाग अंश भुक्तांश
३०) १४४६ (४८ । १२
१२० लग्नकाभुक्तांश
२४६ होताहै.
२४०
६
६० गुणक
भाग ३०) ३६० (१२
३०
६०
६०
०

इष्टकाल.	भुक्तभोग्ययोग.
धन ३३६	४८ १२ भुक्त
मकर ३१० मिलाना,	७३ ८ भोग्य इनका योग.
६४६ ये भुक्तभोग्य मिलाना.	१२१ २०
१२१	सूर्य लग्न और
भा.६०)७६७(१२ घटी.	राशिनके मध्यके उदय. २
६०	घ. प. उत्तर इष्टघटिका
१६७	१२ ४७ मद्दत्तीके पल ५ लाना
१२०	
४७	
६० गुणक.	१२ ५२ उत्तर इष्टघटिका.
भा. ६०) २८२० (४७ पलें.	
२४०	
४२०	
४२०	
००	

इष्टकालसमयकों तत्कालसूर्यसाधन.

टी०–इष्टघटीको सूर्य ल्यानेका उसकी इष्टघडी पीछे आईहै उससे सूर्यकी घडीको गुणकर ६० सें भागना जो भाग आवेगा सो सूर्य गत कियाहो तो कम करना. और गम्य किया हो तो मिलाना तो तत्काल सूर्य होताहै.

उदाहरण.

प्रश्न–शके १७६९ कार्तिक शुद्ध ९ भौमवारकों प्रातः कालका सूर्य ७।१ १७।१५ है सो सायन सूर्य कितना होताहै सो कहो ?

इष्टघटीकोगतीका गुणाकार.	घटीका पलोंका भागाकार.
ग. ६० १२ ५२ इष्टघटी.	७२० ३६८४ ६०)२४४४(४०
४७ ७२० ३१२०	६२ ४० ४४०
५६४ २४४४	७८२ ३७२४ ४४
७२० ३६८४ २४४४	

इस्से भाग ६०) ७८२ (१३ । २	६०) ३७२४ (६२
६०	३६०
१८२	१२४
१८०	१२०
२	४
६० गुणक	७ १ १७ १५ प्रातःकालका रवि.
भाग ६०) १२० (२	१३ २ गम्यघटी.
१२०	७ १ ३० १७ योग.
००	२२ ५ अयनांश
	७ २३ ३५ १७ तत्काल सायनसूर्य

इष्टघटीऊपरसें लग्न ल्यानेकाप्रकार.

तत्कलार्कः सायनःस्वोदयघ्ना भोग्यांशाः खत्र्युधृताभोग्यकालः । एवंयातांशैर्भवेद्यातकालोभोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥१॥ तदनुजहीहिग्रहोदयांश्चशेषंगणनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम्॥सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवतिविलग्नमदोयनांशहीनम्॥२

टी०–पीछे सायन सूर्य जिस राशिका होवे उसका उदय लेना और सायन सूर्यके अंशादिक ३० अंशमें कम करना सो भोग्यांश जानने. और उदयसें भोग्यांश गुणना. और ३० सें भागना. तो सूर्यका भोग्यकाल होताहै.

सूर्यका गतकालल्यानेका क्रम.

सायनसूर्यके उदयसे उसीके अंशादिक गुणके ३० सें भागना तो सूर्यका भुक्तकाल आताहै. इष्टघडीको पल करके उनमें भोग्यकाल कम करना. शेष रहे उसमें सूर्योदय जिसराशिको होवे सो राशि छोडकर आगे जितने राशिके उदय कम होवें सो करना. जो उदय कम न होवे सो अशुद्ध जानना और शेष अंकको ३० सें गुणना और अशुद्ध उदयसें भागना. तब जो अंशादिक आवें उनको मेषराशिसें अशुद्धराशिको पूर्वराशितक युक्त करना. उसमें अयनांश कम करना तो स्पष्टलग्न होताहै.

उदाहरण–पीछे सायनसूर्य आयाहै सो७।२३।३५।१७उसका उदय ३२१सूर्यके अंश २३। ३५।१७ ये ३० अंशोंमें कम करना. शेष रहे सो भोग्यां श६।२४।४३

ये उदयसें गुणना. सो अंक २१२२ ये ३० सें भागना तो भोग्यकाल होताहै उसका लिखनेका क्रम---

इनमें ३०

२३ ३५ १७ सायनसूर्यके अंश बाद करना शेष भोग्यांश

६ २४ ४३ उदयसें गुणना.

अंश	क.	वि.
१९८६	१३२४	
१३६	६६२	४३
३०) २१२२ (७०	७९४४	१२९
२१०	२३७	१२९
२२	भाग ६०) ८१८१ (१३६	भाग ६०) १४२३३ (२३७ कला.
६० गुणक.	६०	१२०
३०) १३२० (४४	२१८	२२३
१२०	१८०	१८०
१२०	३८१	४३३
१२०	३६०	४२०
०	२१	१३

उत्तर—७० पल ४४ विपल एतदनुसार भोग्यकाल जानना.

इष्टघटी १२।५२ इनकी पल ७७२ ये अंकमें भोग्यकाल कम करना. वो शेष अंक ७०१।१६ धनराशिका उदय ३३६ और मकरराशिका उदय ३१० ये दोनोंका योग ६४६ शेष अंकमें कम करना. वो अंक ५५।१६ ये अंकमें कुंभराशिका उदय २६७ कम होता नहीं वास्ते अशुद्ध उदय जानना.

इष्टघटी १२ ५२
गुणक ६०
७२०
५२
पल ७७२
भोग्यकाल. ७० ४४

३३६ धनराशिका उदय.	७०१ १६	
३१० मकरराशिका उदय.	६४६	ये अंकमें कुंभका उदय
६४६	५५ १६	जातानहीं वास्ते अशुद्ध.

शेषांक—५५।१६ बचे ये अंकको ३० सें गुणना. सो अंक १६५८ अशुद्ध उदयमें भागना. जो भाग आवे वो अंक शेषांक ५६ ते ६० सें गुणना तो अंक ३३६० पुनः उसी उदयसें भागना, सो वे घटी १२ शेष १५६ ते ६० सें गुणना सो अंक ९३६० पुनः उदयसें भागना. सो पल ३५ मेषराशिसे अशुद्धके पूर्वराशितक १० राशि पूर्वके अंशादिक ६।१२।३५ उनके १० राशि अंशके ऊपर मांडना. सो स्पष्ट सायन लग्न १०।६।१२।३५ अयनांश २२।५ सायनलग्नके अंश कलामें कम करना. सो स्पष्ट लग्न ९।१४।७।३५ मकर लग्न १४ अंश ७ कला ३५ विकला जानना.

५५	१६	५६	१५६
१६५०	३०	६० गुणक.	६० गुणक.
८			
२६७)१३५८(६ अंश	६०)४८०(८	२६७)३६६०(१२ कला	९३५० विकला
१६०२	४८०	२६७	२६७)८०१(३५
५६	००	६९०	१३५०
		५३४	१३३५
		१५६	१५

राशि	अंश	कला	विकला
१०	६	१२	३५
	२२	५	अयनांश कम करना.
९	१४	७	३५

इस प्रकारसे मकर लग्न १४ अंश, ७ कला और ३५ विकला जानना.

सूर्य और लग्न राशिको होतो इष्टघटी ल्यावनेका क्रम ।

यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशांतरहतउदयः स्यात् खामिहृत्विष्टकालः ॥ १ ॥

टी०—सूर्य और लग्न एकराशिको रहते दोनोंके अंशका अंतर काढना और उसी राशिके उदयसे गुणकर ३० सें भागना. जो भाग आवे सो इष्टकाल जानना. और रात्रिका लग्न अथवा इष्टकाल ल्यानेका होय तो सूर्यकी ६ राशि उसमें मिलाना.

लग्नको शुभाशुभ ग्रह देखना.

लग्ने चंद्रखलारिपौ शशिसितौ सर्वे द्युने खे बुधो

ज्योत्येगुः सुखगोष्टमाः कुजशुभाः शुक्रस्तृतीयः शुचे ॥ लाभे सर्वखगाःशुभा अखिलगारूयष्टारिगाःस्युः खलाश्चंद्ररुयंबुधने श्रियेंशभट्टकेट् स्यान्मृत्यवेष्टारिगः ॥ १ ॥

टी०–लग्नमें चंद्र और पापग्रह और लग्नमें छठेस्थानमें शुक्र, चंद्र और सप्तम स्थानमें कोईभी ग्रह और दशमस्थानमें बुध और द्वादशस्थानमें चंद्र, चतुर्थमें राहू अष्टममें मंगल और शुभग्रह और तृतीयमें शुक्र ऐसे लग्नको ग्रह आवे तो अनिष्ट-शोककारक, अशुभस्थान हैं. लग्नसें एकादशस्थानमें संपूर्ण ग्रह और निंद्यस्थान वर्जित कर अन्यस्थानमें शुभग्रह हों, तृतीय, अष्टमस्थान, षष्ठ इनमें सूर्य और २।३।४ ये स्थानमें चंद्र हो तो लक्ष्मी, शुभकारक जानना. लग्नका स्वामी अथवा अंशका स्वामी या द्रेष्काणका स्वामी ये षष्ठ अथवा अष्टमस्थानमें रहे तो मृत्यु-दायक हैं ऐसा जानना.

पंचभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैररिष्टमादेश्यम् ॥
स्थानादिफलसमृद्धिश्चतुर्भिरपि कथ्यते यवनैः ॥ १ ॥

टी०–विवाहलग्नसें पांचग्रह शुभस्थानमें रहते पुष्टिकारक, कम होतो अरिष्ट कारक यवनादिमतसें चारग्रह इष्टकारक जानना.

षड्वर्गशुद्धि देखनेका क्रम.

गृहं होरा च द्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशकः ॥
त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः ॥ १ ॥

टी०–पहिले ग्रह देखना. २ होरा. ३ द्रेष्काण. ४ नवांश. ५ द्वादशांश. ६ त्रिंशांश. ये षड्वर्ग इनमें शुभग्रहका वर्ग शुभ है.

त्रिंशांशादिक कथन.

त्रिंशद्भागात्मकं लग्नं होरा तस्यार्द्धमुच्यते ॥
लग्नात्रिभागो द्रेष्काणो नवांशो नवमांशकः ॥
द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ॥ १ ॥

टी०–लग्नके अंश ३० ये गृह हैं. उनका अर्ध १५ ये होरा है. तीसका तिसरा भाग १० ऐसे तीन द्रेष्काण हैं. तीसके ९ भाग याने नवमांश, और तीसके

१२ भाग याने द्वादशांश है. तीसका एक भाग सो त्रिंशांश होवे. इसीरीतिसे षड्वर्गभाग कथन करना.

आदौगृहदेखने.

यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते ॥

टी०–जिस ग्रहकी जो राशि वोही उसका गृह होताहै

ग्रह	मंगल	शुक्र	बुध	चंद्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तूल	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन

होराकथन.

सूर्येन्द्वोर्विषमे लग्ने होराचंद्रार्कयोः समे ॥

टी०–विषमलग्नमें १५ अंशके भीतर सूर्यका होरा, बाद चंद्रका होरा जानना. समलग्नमें १५ अंशके भीतर चंद्रका बाद सूर्यका होरा जानना. सो चंद्रका होरा शुभ. सूर्यका अशुभ.

लग्न	चरण	मे.	वृ.१	मि,२	क. ३	सिं.४	कं.५	तू.६	वृ.७	ध.८	म.९	कुं.१०	मी.११
अंश	१५	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.
अंश	३०	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं	सू.	चं.	सू.

द्रेष्काणकथन.

द्रेष्काण आद्यो लग्नस्य द्वितीयः पंचमस्य च ॥
द्रेष्काणश्च तृतीयस्तु लग्नान्नवमराशिपः ॥ १ ॥

टी०–प्रथम द्रेष्काण याने लग्नके अंश ३० उनमें १० अंशका एक २ द्रेष्काण ऐसे तीन द्रेष्काण होते हैं. प्रथम द्रेष्काणका लग्नस्वामी, द्वितीयद्रेष्काणका पंचमस्थानका स्वामी है. तृतीयद्रेष्काणका नवमस्थानका स्वामी होवे, शनि, मंगल, सूर्य इनका द्रेष्काण अशुभ जानना.

द्रेष्काणकोष्टक.

लग्न.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
१ अंश १०	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
२ अंश १०	सू.	बु.	शु.	म.	गु.	श.	श.	गु.	म.	शु	बु.	चं.
३ अंश १०	गु	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	म.

सप्तांशकोष्टक.

लग्नें	मे.	वृ.१	मि.२	क.३	सिं.४	कं.५	तु.६	वृ.७	ध.८	म.९	कुं.१०	मी.११
४ १७–८	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
८ ३४–१७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
१२ ५१–२५	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
१७ ८–३४	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
२ २५–४२	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
२५ ४२–५१	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
३० ०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

लग्नके नवमांश.

मेषसिंहधनुर्लग्नेनवांशामेषतः स्मृताः ॥ वृषकन्यामृगेलग्नेमकरान्नवमांशकाः ॥ १ ॥ कर्कालिमीनलग्नेषुनवांशाः कर्कितः स्मृताः ॥ नृयुग्मतौलिकुंभेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः ॥ २ ॥

टी०—मेष, सिंह, धन ये लग्नको मेषसे नवमांशका क्रम, वृषभ, कन्या, मकर ये लग्नको मकरसे क्रम, मिथुन, तुला, कुंभ ये लग्नको तुलासे क्रम, वृश्चिक, कर्क मीन, ये लग्नको कर्कराशिसे क्रम इस क्रमसें नवमांशका लग्नक्रम देखना. सूर्य मंगळ. शनि, इनका नवमांश अशुभ जानना. (चक्र १५० पृष्ठमें)

द्वादशांशकथन.

लग्नस्य द्वादशांशास्तु स्वराशेरेव कीर्तिताः ॥

टी०—लग्नके अंश ३०उसके भाग १२याने द्वादशांश उसका क्रम चलते हुए

लग्नसे जहांतक लग्नके अंश होवें उसके भीतरके स्थानका स्वामी सो द्वादशांश-पति जानना. उसमें मंगल, शनि, रवि इनका अंश अशुभ होता है.

नवमांशकोष्टक.

अंश	कला	मे.	वृ.	मि.	कर्क	सिं.	कं.	तूळ	वृ.	धन	म.	कुंभ	मीन
३	२०	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.
६	४०	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	म.	र.
१०	०	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.
१३	२०	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.	चं.	मं.	श.	शु.
१६	४०	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.
२०	०	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.
२३	२०	शु.	चं.	मं	श.	शु.	चं.	मं.	[illegible]	शु.	चं.	मं.	श.
२६	४०	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.	मं.	र.	शु.	श.
३०	०	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.	गु.	बु.	बु.	गु.

द्वादशांशकोष्टक.

अंश.	मे.	वृ.	मि.	क	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
२ ३०	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
५ ०	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.
७ ३०	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.
१० ०	चं.	र.	बु.	श.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.
१२ ३०	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.
१५ ०	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.
१७ ३०	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.

२० ०	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.
२२ ३०	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.
२५ ०	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.
२७ ३०	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.
३० ०	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.

विषम त्रिंशांश.

कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात् ॥
पंचपंचाष्टशैलेषुभागानांविषमे गृहे ॥ १ ॥

त्रिंशांशकोष्टक.

टी०–विषमलग्नमें पंचमांशतक लग्न होतो भौमके, आगे पांच अंश शनि, उसके आगे ८ अंश गुरु, उसके आगे सात अंश बुध, उसके आगे पांच अंश शुक्र. इस क्रमसे विषम लग्नमें त्रिंशांशपति जानना. इनमें मंगळ और शनि ये दो अशुभ जानना.

अं.	मे.	मि.	सिं.	तु.	ध.	कुं.
५ ०	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.
१० ०	श.	श.	श.	श.	श.	श.
१८ ०	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.
२५ ०	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.	बु.
३० ०	शु	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.

समत्रिंशांश.

शुक्रज्ञेज्यार्किभूपुत्रास्त्रिंशांशपतयः समे ॥
पंचांगाष्टेषुपंचानां भागानां कथिता बुधैः ॥१॥

टी०—समलग्नमें प्रथम पांच अंश तक लग्न रहते शुक्र, उसके आगे ७ अंशबुध, उससे ८ अंश गुरु, उससे पांच अंश शनि, उससे पांच अंश-तक मंगळ, ये समलग्नमें त्रिंशांशपति जानना, इसमें मंगल और शनि अशुभ जानना.

	वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.
५ ०	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.
१४ ०	बु.	बु.	बु	बु.	बु.	बु.
२० ०	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.	गु.
२५ ०	श.	श.	श.	श.	श.	श.
३० ०	मं.	मं.	मं.	मं.	मं.	मं

षड्वर्ग देखनेका क्रम.

कार्तिक शुद्ध ९ मंगल और पहिले कियाहुवा लग्न मकर अंश १४ कला ११ विकला ५१ स्वामी शनि सो

गृहेश	होरा	द्रेष्का	नवमां	द्वाद.	त्रिंशां	०
श.	चं	शु.	शु.	बु.	गु.	०

गृहेश ऐसे ये षड्वर्ग, इसमें शनि अशुभ शेष रहे पांच वर्ग शुभ जानना. इसरीतिसे विषमत्रिंशांश, समत्रिंशांश. सर्व षड्वर्ग देखनेका क्रम जानना.

उच्चांश.

मेषे षष्ठघटौ वृषे त्रिद्दगिना द्वंद्वेद्रिगोर्कांमयः कीटेऽध्यंगनवाद्रयो-र्कभवनेंगाश्वाः स्त्रियांच्यर्कषट् ॥ जूकेर्कोद्रिखगा अलौगवगषट् चापे त्रिषट्गोऽद्रयो नक्रेशास्त्र्यरुणा घटे झषवृषौ मीनेऽद्रिगोषट्शुभाः ॥ १ ॥

रा. उ.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तू.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंश	६	२	७	४	६	३	१२	९	३	३	१२	७
० ० ०	७	३	९	६	७	१२	७	७	६	१२	२	९
० ० ०	०	१२	१२	९	०	६	९	६	९	०	०	६
० ० ०	०	०	३	७	०	०	०	०	७	०	०	०

षड्वर्गं पंचवर्गं वा चतुर्वर्गमथापि वा ॥
कैश्चित्त्रिवर्गं सत्प्रोक्तं द्व्येकवर्गां तनुं त्यजेत् ॥ १ ॥

टी०—छे अथवा पांच या चार वर्ग लग्नको आए तो लग्न बलिष्ठ होवे. केचित् मतसें तीनवर्गभी शुभहै, और दो अथवा एक वर्ग आवे तो वो लग्न वर्जना, कारण वो निर्बल है

लग्नांशफल

लग्ने चतुर्दशे भागे वृषस्य मकरस्यच ॥
कन्याकर्कटमीनानामष्टमे द्वादशेऽलिनः ॥ १ ॥

टी० वृषभ, मकर इनके अंश १४ कन्या, कर्क, मीन, इनके अंश ८ और वृश्चिकके अंश १२ ये शुभफल देते हैं.

एकविंशतिमे भागे मेषस्याष्टादशे हरेः
संपूर्णफलदं चादौ मध्ये मध्यफलप्रदम् ॥ १ ॥

टी० मेषके अंश २१ सिंहके १८ ऐसे लग्नके अंश रहते संपूर्ण फल देतेहैं. मध्यमें मध्यमफल देतेहैं.

कुंभस्यांशे च षड्विंशे चतुर्विंशे च तौलिनः ॥
नृयुक्कार्मुकयोर्लग्नं शुभं सप्तदशांशके ॥ १ ॥

टी०—कुंभके अंश २६ तुलाके अंश २४ मिथुन और धन इनके अंश १७ ये शुभ हैं.

लग्नवर्गोत्तमलक्षण.

अन्ते तुच्छफलं लग्नं यदि वर्गोत्तमो न चेत् ॥
लग्नस्य च नवांशो यः स वर्गोत्तम उच्यते ॥ १ ॥

टी०—लग्नके अंतभागमें वर्गोत्तम न हो तो वो लग्न अनिष्टफल देताहै. और लग्न अपने स्वनवांशमें होवे तो उसको वर्गोत्तम कहना.

गोधूलिलग्नकथन.

गोधूलं पदजादिके शुभकरं पंचांगशुद्धौ रवेः
अर्धास्तात्परपूर्वतोर्धघटिकं तंत्रेन्दुमष्टारिगम् ॥
सोग्रांगं कुजमष्टमं गुरुयमाहः पातमर्कक्रमं
जह्याद्विप्रमुखेतिसंकटइदं सद्यौवनाद्ये क्वचित् ॥ १ ॥

टी०—शूद्रादिकोंको पंचांगशुद्धि देखकर सूर्यके अर्धास्तसमयके पाहिले १५ पल बाद १५ पल गोधूलिकाल शुभ. और गोधूलिलग्नमें अष्ट और षष्ठ स्थानमें चंद्र और पापग्रह भौम अष्टमस्थानमें और गुरु शनि ये वार, व्यति-

साम्य, संक्रांतिदिन इत्यादि दुष्टयोग वर्जित करके शुभ. केचित् मतसें विप्रादिकोंको अत्यंत संकट हो कन्या उपवर होतो गोरजलग्न शुभ है.

वधूप्रवेशः

विवाहमारभ्य वधूप्रवेशो युग्मेऽथवा षोडशवासरांतात् ॥
तदूर्ध्वमब्दे युजि पंचमांतादतः परस्तान्नियमो न चाऽस्ति ॥१॥

टी०–विवाहसें सम १६ दिनतक वधूप्रवेश उक्त, आगे पांचवर्षतक विषम वर्षमासादिक उक्त हैं. आगे इच्छानुसार.

उक्तमासादि.

माघफाल्गुनवैशाखे शुक्लपक्षे शुभे दिने ॥
गुर्वादित्यविशुद्धौ स्यान्नित्यं पत्निद्विरागमः ॥ १ ॥

टी०–माघ, फाल्गुन, वैशाख मास, शुक्लपक्ष, शुभदिन गुरु सूर्यका अस्त वार्जितकर द्विरागमन दूसरीवेरका वधूप्रवेश उक्त है.

नीहारांशुयुगुत्तरादितिगुरुब्रह्मानुराधाश्विनी
शाक्रे भास्करवायुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रे प्रशस्ते तिथौ ॥
कुंभाजालिगते रवौ शुभकरे प्राप्तोदये भार्गवे
जीवज्ञास्फुजितां दिने नववधूवेश्मप्रवेशः शुभः ॥ १ ॥

टी०–मृग, तीनों उत्तरा पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, अनुराधा, अश्विनी, ज्येष्ठा, हस्त, स्वाती, श्रवण, शततारका, चित्रा, ये नक्षत्र, शुभतिथिमें और कुंभ, मेष, वृश्चिक, ये राशिका सूर्य, शुक्रादिकोंका उदय और गुरु, बुध, शुक्र, ये वार ऐसे शुभदिनको नववधूनें गृहप्रवेश करना.

प्रकरण दूसरा.

नूतनपल्लवधारणमुहूर्त.

हस्तादिपंचमृगभूषणदस्रभेषु विष्णुद्वये बुधदिने गुरुशुक्रवारे ॥
स्त्रीणां शुभं प्रथमपल्लवधारणं स्यात्पाणिग्रहोक्तसमये सलुपीतवस्त्रैः

टीका–हस्तसें पांच और मृग, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा ये नक्षत्र और बुध, गुरु, शुक्र ये वार और विवाहयोग्य ग्रह देखकर ऐसे दिन नवीन वस्त्र पीलाकरके स्त्रियोंको प्रथम पल्लव ओढाना.

गांधर्वविवाहको मुहूर्त.

शूद्रांत्येषु पुनर्भवापरिणयः प्रोक्तो विवाहोक्तभैः ॥
नालोक्यं तिथिमासवेधभृगुजेज्यास्तादितत्रार्कभात् ॥
त्रित्र्यक्षेंषुमृतिर्धनं मृतिमृतीपुत्राप्तिर्दुर्भगं ॥
श्रीरौन्नत्यमथोधृतीशक्रुततत्वर्क्षेत्ययः साभिजित् ॥ १ ॥

टी०—शूद्रादि, रजकादि, अंत्यजादि इनके स्त्रियोंको पुनर्विवाह (सगाई) इसको मुहूर्त और विवाहयोग्य नक्षत्र अवश्य लेना. मास, तिथि, वार, गुरु, शुक्र, इनके अस्तोदयका दोष नहीं. सूर्यनक्षत्रसें दिननक्षत्र गिननेका क्रम. प्रथम ३ मरण, द्वितीय ३ धन, तृतीय ३ मरण, चतुर्थ ३ मरण, पंचम ३ पुत्रलाभ, छठे ३ मरण, सप्तम ३ दुर्भग, अष्टम ३ लक्ष्मी, नवम ३ उन्नति. सूर्यनक्षत्रसें चौथे, ग्यारवें, अठारवें, पचीसवें, ये चारस्थानके नक्षत्रपर शुभ चक्र उतरे तथापि वर्जित करना. अन्य शुभ.

अन्यमत.

इन्द्रादितिशिवाश्लेषा आग्नेयं वारुणं तथा ॥
अश्विनीवसुदैवत्यं पट्टकाले शुभं स्मृतम् ॥ १ ॥

टी०—ज्येष्ठा, पुनर्वसु, आर्द्रा, आश्लेषा, कृत्तिका, शततारका, अश्विनी, धनिष्ठा, ये नक्षत्र पुनर्विवाह करनेमें शुभ हैं.

पुत्र गोदलेनका मुहूर्त.

हस्तादिपंचकभिषक्त्रसुपुष्यभेषु सूर्यक्ष्माजगुरुभार्गववासरेषु रिक्ताविवर्जिततिथिष्वलिकुंभलग्ने सिंहे वृषे भवति दत्तपरिग्रहोऽयम् ॥ १ ॥

टी०—हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, ८ष्य और रविवार, मंगल, गुरु शुक्र, ये वार. सिंह, वृषभ, ये लग्न लेना. चौथ, नवमी, चतुर्दशी, वृश्चिक, कुंभ, ये लग्न वर्ज्य करना.

वास्तुप्रकरण.

ग्रामादिअनुकूल.

ग्रामादेरनुकूलत्वम् दिशो भूतग्रहस्य च ॥

मासधिष्ण्यादिशुद्धिं च वीक्ष्यायव्ययभांशकान् ॥ १ ॥

टी०–ग्राम, दिशा, भूतग्रह, मास, नक्षत्र इत्यादिकी शुद्धि, आय, व्यय, लग्न, अंश शुद्धि, ये शुद्ध देखना तब घर बनावना शुभ.

ग्रहबल.

गुरुशुक्रार्कचन्द्रेषु स्वोच्चादिबलशालिषु ॥
गुर्वर्केन्दुबलं लब्ध्वा गृहारंभः प्रशस्यते ॥ २ ॥

टी०–गुरु, शुक्र, चंद्र, सूर्य ये स्वस्थानमें बलाढ्य देख सूर्य, चंद्र, गुरु, इनका बल लेकर मकान बांधनेको आरंभ करना प्रशस्त है.

वर्ज्य.

विवाहोक्तान्महादोषानृते जामित्रशुद्धितः ॥
रिक्ताः कुजार्कवारौ च चरलग्नं चरांशकम् ॥ ३ ॥

टी०–जामित्रशुद्धि विना विवाहको जो महादोष कहेहैं सो यहां वर्जना. और रिक्तातिथि, भौमवार, रवि और चरलग्न और उनके अंश वर्जना.

त्यक्त्वा कुजार्कयोश्चांशं पृष्ठे चाग्रे स्थितं विधुम् ॥
बुधेज्यराशिगं चार्कं कुर्याद्गेहं शुभाप्तये ॥ ४ ॥

टी०–रवि, भौम, इनका अंश, पृष्ठभागस्थित और अग्रभागस्थित चंद्र वर्जना. शुभकी इच्छावालेनें मिथुन, कन्या, धन, मीन, ये राशिका सूर्य लेके गृहारंभ करना.

द्वारशुद्धि.

द्वारशुद्धिं निरीक्ष्यादौ भशुद्धिं वृषचक्रतः ॥
निष्पंचके स्थिरे लग्ने द्व्यंगे चालयमारभेत् ॥ ५ ॥

टी०–प्रथम द्वारशुद्धि और वृषचक्रसें नक्षत्रशुद्धि अवलोकन करके निष्पंचक, स्थिर, द्विस्वभाव, लग्न देख प्रारंभ करना.

ग्राम अनुकूल.

स्वनामराशेर्यो राशिर्द्विशरांकेशदिङ्मितः ॥
स ग्रामः शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततोन्यथा ॥ ६ ॥

टी०—अपने राशिसें २।५।९।११।१० ऐसी जो ग्रामकी राशि आवे तो शुभ जानना. अन्यथा अशुभ समझना.

एकभे सप्तमे व्योम गृहहानिस्त्रिषष्ठगे ॥
तुर्याष्टद्वादशे रोगाः शेषस्थाने भवेत्सुखम् ॥ ७ ॥

टी०--एकराशि अथवा सप्तम आई तो शून्य. तीसरी अथवा ७ वी आई तो गृहकी हानि. चौथी, आठमी, बारवी मालिककी और ग्रामकी होवे तो रोगकारक जानना.

जातक देखना.

अकचटतपयशवर्गारष्टौते क्रमतः स्मृताः ॥
एकोनखेषु वर्णानां स्वरशास्त्रविशारदैः ॥ ८ ॥
अवर्गे षोडश ज्ञेयाः स्वराः कादिषु पंचसु ॥
पंचपंचैव वर्णाः स्युर्यशौतुचतुरक्षरौ ॥ ९ ॥

टी०--अवर्गादिशवर्गतक अक्षर ४९ उनमें अवर्गके स्वर १६ और कवर्गसें पवर्गतक पांच वर्ग उनके अक्षर २५ और य, श, ये दोवर्गके अक्षर ४ हैं, ये स्वरशास्त्र जाननेवालोंने कहाहै.

वर्गके स्वामी.

तार्क्ष्यमार्जारसिंहाश्च सर्पाखुगजसूकराः ॥
वर्गेशाः क्रमतो ज्ञेयाः स्ववर्गात्पंचमो रिपुः ॥ १० ॥

टी०--अवर्गका गरुड, कवर्गका मार्जार, चवर्गका सिंह, टवर्गका श्वान, तवर्गका सर्प, पवर्गका चूहा, यवर्गका गज, शवर्गका सूकर, ये क्रमसें वर्गके स्वामी जानना. और जिस वर्गमेंका अपने नामका अक्षर आवेगा उससे पांचवे वर्गका स्वामी वो उसका रिपु जानना.

काकिणी.

स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् ॥
अष्टभिश्च हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥ ११ ॥

टी०-- स्वनामका वर्ग द्विगुणित करना. उसमें ग्रामादिकका वर्ग मिलाना, और ८ से भागना. पुनः ग्रामादिकोंका वर्ग दूना करना. स्वनामका वर्ग उसमें

मिलाय पूर्ववत् भागना. शेष जिसका अधिक बचे वोही उसका ऋणी जानना

चन्द्रका मुख देखनेका क्रम.

वान्हान्मैत्राद्मगर्क्षस्थे चन्द्रे याम्योत्तराननम् ॥
पित्र्याद्वासवतस्तद्वत् प्रागपरास्यं गृहं शुभम् ॥ १२ ॥

टी०--कृत्तिकासे सातनक्षत्रतक चंद्र रहते गृहका मुख दक्षिणको शुभ जानना. अनुराधासें ७ नक्षत्रमें चंद्र रहते गृहका मुख उत्तरमें. और माघसें ७ नक्षत्रपर चंद्र रहते गृहका मुख पूर्वको शुभ जानना. धनिष्ठासे ७ नक्षत्रका चंद्र रहते गृहका मुख पश्चिममें शुभ जानना.

आयादिसाधन.

गृहेशकरमानेन गृहस्यायादि साधयेत् ॥
करैश्चेन्नेष्टमायादि साध्यमंगुलितस्तथा ॥ १३ ॥

टी०--गृहस्वामीके हस्तमानसे इष्ट आयादि साधना. कदाचित् हातसे नष्ट आवे तो अंगुलीसे साधन करना.

क्षेत्रफल.

विस्तारगुणितं दैर्घ्यं गृहक्षेत्रफलं भवेत् ॥
तत्पृथग्वसुभिर्भक्तं शेषमायो ध्वजादिकः ॥ १४ ॥

टीका--ध्वजा आयादि साधनेका प्रकार--चोडाईसे लंबाई या लंबाईसे चोडाई गुणना वो क्षेत्रफळ जानना. और उसको ८ सें भागना शेष बचे सो ध्वजादिक आय.

आयादिकोंके नाम.

ध्वजो धूमोऽथ सिंहश्च सौरभेयः खरो गजः ॥
ध्वांक्षश्चैव क्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ॥ १५ ॥

टीका--ध्वजाय, धूमाय, सिंहाय, श्वानाय, वृषाय, गर्दभाय, गजाय, ध्वांक्षाय, ये आयाष्टक क्रमसे जानना.

वर्णानुसार उक्त आय.

ब्राह्मणस्य ध्वजो ज्ञेयो सिंहो वै क्षत्रियस्यच ॥

वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां तु गजः स्मृतः ॥ १६ ॥

टी०–ब्राह्मणोंको ध्वजाय, क्षत्रियोंको सिंहाय, वैश्योंको वृषभाय, और सब वर्णोंको गजाय ये शुभ जानना.

आयादिफल.

कीर्तिः शोको जयो वैरं धनं निर्धनता सुखम् ॥
रोगश्चेति गृहारंभे ध्वजादीनां फलं क्रमात् ॥ १७ ॥

टी०–ध्वजआय होय तो कीर्ति, धूम होय तो शोक, सिंह होय तो जय, कुक्कर होय तो वैर, बैल होय तो धन, गर्दभ होय तो निर्धन, गज होय तो सुख, ध्वांक्ष होय तो रोग. इसप्रकार ८ आयोंका फल जानना.

मतांतरसे आयादिकोंके फल.

ध्वजे कृतार्थो मरणं च धूमे सिंहे जयश्चाथ शुनि प्रकोपः ॥ वृषे च राज्यं च खरे च दुःखं ध्वांक्षं मृतिश्चैव गजे सुखं स्यात् ॥ १८ ॥

टी०–ध्वजायको कृतार्थ होवे धूमायको मरणप्राप्ति. सिंहायको जय, श्वानायको कोप, वृषायको राज्य, खरायको दुःख, ध्वांक्षायको मृति, और गजायको सुखप्राप्ति होतीहै.

नक्षत्रानुसार व्ययसाधन.

पूर्वे द्वारे वृषः श्रेयान् गजःप्राग्यमदिङ्मुखः ॥ क्षेत्रमष्टाहतं धिष्ण्यं विभक्तं स्याद्गृहस्य भम् ॥ १९ ॥ भेष्टभक्ते व्ययः शेषमायादल्पो व्ययः शुभः ॥

टी०–पूर्वाभिमुख गृहको वृषाय और गजाय श्रेयस्कर और दक्षिणाभिमुख गृहको गजाय उक्त जानना. पहिलेके क्षेत्रफलको ८ से गुणना और गुणांक आवे सो २७ से भागना. शेष बचे उसको गृहका नक्षत्र जानना सो नक्षत्र ८ से भागना. शेष रहे सो उस गृहका व्यय सो आयांकसे अल्प आवे तो शुभ जानना.

गृहकी राशि.

अश्विन्यादित्रये मेषो मघादित्रितये हरिः ॥
मूलादित्रितये धन्वी द्वयं द्वयं शेषराशिषु ॥ २० ॥

टी०—गृहोंके नक्षत्र अश्विनी, भरणी कृत्तिका इनकी राशि मेष, रोहिणी, मृग, इनकी वृषभ, आर्द्रा, पुनर्वसु इनकी मिथुन, पुष्य, आश्लेषा इनकी कर्क, मघा, पूर्वा, उत्तरा, इनकी सिंह, हस्त, चित्रा इनकी कन्या, स्वाती विशाखा इनकी तुला, अनुराधा, ज्येष्ठा इनकी वृश्चिक, मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा इनकी धन, श्रवण, धनिष्ठा, इनकी मकर, शततारका, पूर्वाभाद्रपदा, इनकी कुंभ, उत्तरा भाद्रपदा, रेवती इनकी मीन, इसप्रकार अनुक्रमसें गृहोंकी राशि जानना.

गृहकानाम ल्यावनेका क्रम

गृहस्य पूर्वतो दिक्षु क्रमात्कक्ष्यब्धिदंतिनः ॥
संस्थाप्यालिंदजानंकांस्तन्मित्याषोडशगृहाः ॥ २१ ॥

टी०—गृहके पूर्व दिशाके, क्रमसे अंक माडना सो ऐसे मांडना पूर्वमें १ दक्षिणमें २ पश्चिममें ४ उत्तरमें ८ ऐसे चारोंदिशामें स्थापना और उस गृहका मुख जिस दिशामें होवे उस दिशांकमें शालाकी संख्या होवे उसपर एक अधिक रकर उससे मिलाना जो अंक आवे सो उस गृहका नाम जानना.

गृहका नाम.

ध्रुवं धान्यं जयं नन्दं खरं कान्तं मनोरमम् ॥
सुमुखं दुर्मुखं क्रूरं रिपुदं धनदं क्षयम् ॥ २२ ॥
आक्रंदं विपुलं ज्ञेयं विजयं चेति षोडश ॥
गृहं ध्रुवादिकं ज्ञेयं नामतुल्यफलप्रदम् ॥ २३ ॥

टी०—ध्रुव, धान्य, जय, नंद, खर, कांत, मनोरम, सुमुख, दुर्मुख, क्रूर, रिपुद धनद, क्षय, आक्रंद, विपुल और विजय, ये ध्रुवादिक गृहके १६ नाम हैं फल इनका नामानुसार शुभाशुभ जानना.

अंशका प्रकार.

व्ययेन संयुते क्षेत्रे गृहनमाक्षरान्विते ॥
त्रिभिर्भक्तांशकास्तेषां द्वितीयोंशो न शोभनः ॥ २४ ॥

टी०—पिछला व्यय अंक आया होवे सो क्षेत्रफलमें मिलाना. और उसमें गृहके नामाक्षर मिलाय उसको ३ से भागना, शेष दो बचे तो अनिष्ट, अन्य शुभ

गृहोंका भाग.

नवभागं गृहं कुर्यात्तंत्रभागं तु दक्षिणे ॥

त्रिभागं वामतः कुर्याच्छेषं द्वारं प्रकल्पयेत् ॥ २५ ॥

टीका०–गृहक्षेत्रके नव भाग कर तिनसे पांच भाग दक्षिणको ३ भाग उत्तरको और १ भाग मध्यमें तिसमें द्वारकी कल्पना करे.

गृहोंके द्वार.

द्वारस्योपरि यद्द्वारं द्वारस्यान्यच्च सम्मुखम् ॥
व्ययदं तु यदा तच्च न कर्तव्यं शुभेप्सुभिः ॥ २६ ॥

टीका–द्वारके ऊपर द्वार और सामने सामनेके द्वार व्ययदाक होताहै, तो शुभेच्छुओंने ऐसा वर्जना.

गृहोंके स्थानोंकी योजनाका प्रकार.

स्नानागारं दिशि प्राच्यामाग्नेय्यां पचनालयम् ॥
याम्याय शयनागारं नैर्ऋत्यां शस्त्रमंदिरम् ॥२७॥
प्रतीच्यां भोजनागारं वायव्यां पशुमंदिरम् ॥
भांडकोशं चोत्तरस्यां इशान्या देवमंदिरम्॥२८॥

टीका–पूर्वमें स्नानगृह १, आग्नेय कोणमें पाकमंदिर २, दक्षिणमें शयन मंदिर ३, नैर्ऋत्यमें शस्त्रमंदिर ४, पश्चिममें भोजनस्थान ५, वायव्यकोणमें पशुमंदिर ६ उत्तरमें भंडारकोश ७ ईशान्यमें देवमंदिर ८ इस प्रकारसे स्थानोंकी योजना करावे ॥

अल्पदोष.

अल्पदोषं गुणश्रेष्ठं दोषाय न भवेद्गृहम् ॥
आयव्ययौ प्रयत्नेन विरुद्धं भं च वर्जयेत् ॥ २९ ॥

टीका–जिस गृहमें दोष तो अल्प होय परंतु वह बहुत गुणोंकरके श्रेष्ठ होय तौ दोष नहीं होता और आय व्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध होय तौ यत्न करिके वर्जित करे ॥

गृहारंभचक्र.

आरंभे वृषभं चक्रं स्तंभे ज्ञेयं तु कूर्मकम् ॥
प्रवेशे कलशं चक्रं वास्तुचक्रं बुधैः शुभम् ॥३०॥

टीका–गृहारंभमें वृषभचक्र और स्तंभस्थापनमें कूर्मचक्र गृहप्रवेशमें कलशचक्र यह वास्तुचक्रमें देख लीजिये ॥

गृहारंभके मास.

सौम्यफाल्गुनवैशाखभाद्रश्रावणकार्तिकाः ॥
मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥ २१ ॥

टीका—पौष १ फाल्गुन २ वैशाख ३ भाद्रपद ४ श्रावण ५ कार्तिक ६ इन महीनोंमें गृहारंभ और शिलान्यास और स्तंभप्रतिष्ठा शुभ जानिये पुत्रलाभ आरोग्यता आयुकी वृद्धि और धनकी प्राप्ति होय ॥

गृहारंभके मासोंकाफल.

शोको धान्यं पंचता निःपशुत्वं स्वाप्तिर्नैःस्व्यं संगरं भृत्यनाशम् ।
सच्छ्रीप्राप्तिं वन्हिभीतिं च लक्ष्मीं कुर्युश्चैत्राद्यागृहारंभकाले२२

टीका—चैत्रमासमें शोकप्राप्ति १ और वैशाखमें धान्यप्राप्ति २ ज्येष्ठमें मृत्यु ३ आषाढमें पशुहीनता ४ श्रावणमें द्रव्यप्राप्ति ५ भाद्रपदमें दरिद्र ६ और आश्विनमें कलह ७ और कार्तिकमें भृत्योंका नाश ८ मार्गशीर्षमें धनप्राप्ति ९ पौषमें लक्ष्मी १० माघमें अग्निभय ११ फाल्गुनमें लक्ष्मी १२ इस शुभाशुभ फल जानिये ॥

दिशानुसारगृहोंका मुख करना.

कर्कनक्रहरिकुंभगतेऽर्के पूर्वपश्चिममुखानि गृहाणि ॥
तौलिमेषवृषवृश्चिकयाते दक्षिणोत्तरमुखानि वदंति ॥२३॥

टीका—कर्क मकर सिंह कुंभ इन राशियोंका सूर्य होय तौ घरका द्वार पूर्व अथवा पश्चिमको करे तुला मेष वृश्चिक इन राशियोंका सूर्य होय तौ गृहोंका मुख दक्षिण अथवा उत्तरको करे इस प्रकार रत्नमालाग्रन्थमें कहा है ॥

गृहारंभके नक्षत्र.

त्र्युत्तरामृगरोहिण्यां पुष्यमैत्रकरत्रये ॥
धनिष्ठाद्वितयेपौष्णेगृहारंभःप्रशस्यते ॥ २४ ॥
आदित्यभौमवर्ज्यं तु सर्वे वाराः शुभावहाः ॥
चंद्रादित्यबलं लब्ध्वा लग्ने शुभनिरीक्षिते॥२५॥
स्तंभोच्छ्रायस्तु कर्तव्यो ह्यन्यत्तुपरिवर्जयेत् ॥
प्रासादेष्वेवमेवःस्यात्कूपवापीषु चैवहि ॥ २६ ॥

टीका०—तीनों उत्तरा, मृग, रोहिणी. पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, स्वाती धनिष्ठा, शततारका, रेवती, ये नक्षत्र गृहारंभको उक्त जानना. रवि, भौम, ये वार वर्जितकर चंद्र, सूर्य बलवान् देख स्थिरलग्नमें शुभग्रहकी दृष्टि होवे वो लेना और स्तंभारोपण करना. अन्यकर्मको उक्त नहीं. मंदिर, कूंवा तलाव बावडी इसकामोमेंभी ये मुहूर्त लेना.

वृषचक्र.

त्रिवेदाब्धि त्रिवेदाब्धि द्वित्रिभेष्वर्कतःशशी ॥
कुर्याल्लक्ष्मीं समुद्वासं स्थैर्यं लक्ष्मीं दरिद्रताम् ॥३६॥
धनहानिं क्रमान्मृत्युमारंभे वृषचक्रकम् ॥

टीका०—सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिननेका क्रम ऐसाहै. पहिले तीन नक्षत्र लक्ष्मीदायक दुसरे ४ नक्षत्र उद्वास तीसरे चार नक्षत्र स्थिरता चौथाभाग तीन नक्षत्र लक्ष्मी पांचवाभाग ४ नक्षत्र दरिद्रता छठाभाग ४ नक्षत्र धन सप्तम भाग दोन नक्षत्र हानी अष्टमभाग तीन नक्षत्र उसका फल मृत्यु. ऐसे देखनेका क्रम है. इनमेंसे शुभफल जिस दिवसनक्षत्रपर आवे उसदिन आरंभ करना उचित है.

शिलान्यास.

दक्षिणपूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत्प्रथमाम् ॥
शेषाःप्रदक्षिणेन स्तंभाश्चैवं प्रतिष्ठाप्याः ॥ ३७ ॥

टी०—आग्नेयकोणमें प्रथम शिलान्यास याने प्रथम (खोदना पायाका पत्थर धरना) यथोक्त पूजा करके करना शेष शिला प्रदक्षिणक्रमसे गाडना. स्तंभभी शिलान्यासके ऐसा स्थापना.

शिलान्यास करनेका नक्षत्र.

शिलान्यासः प्रकर्तव्यो गृहाणां श्रवणे मृगे ॥
पौष्णे हस्ते च रोहिण्यां पुष्याश्विन्युत्तरात्रये ॥

टी०—श्रवण मृग रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी और तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शिलान्यास करनेमें उक्त जानना.

शेषका मुख.

कन्यासिंहेतुलायां भुजगपतिमुखं शंभुकोणेऽग्निखातं वायव्ये स्याच्चदास्यंत्वलिधनमकरेईशखातंवदंति ॥ कुंभेमीनेचमेषेनिर्ऋतिदिशिमुखं खातवायव्यकोणे चान्ये कोणे मुखं वै वृषमिथुनगते कर्कटे रक्षखातम् ॥ ३८ ॥

टी०—कन्या सिंह तुला ये लग्नमें शेषका मुख ईशान्यकोणमें होवेतो आग्नेयकोणमें खात करना. वृश्चिक धन मकर ये लग्नमें शेषका मुख वायव्य कोणमें हो तो ईशान्यकोणमें खात करना. कुंभ मीन मेष ये लग्नमें शेषका मुख नैर्ऋत्यकोणमें हो तो वायव्यकोणमें खात करना. वृषभ मिथुन कर्क ये लग्नमें शेषका मुख आग्नेयमें है वास्ते नैर्ऋत्यमें खात करना.

दुष्टयोग.

वज्रव्याघातशूलाश्च व्यतीपातश्च गंडकः ॥
विष्कंभपरिघौ वर्ज्यौ वारौ मंगलभास्करौ ॥ ३९ ॥

टी०—वज्र व्याघात शूल व्यतीपात, गंड विष्कंभ परिघ ये योग और भौम, रवि ये वार वर्जना.

कूर्मचक्र.

तिथिस्तु पंचगुणिता कृत्तिकाद्यृक्षसंयुता ॥
तथा द्वादशमिश्रा च नवभागेन भागिता ॥ ४० ॥

फल.

जले वेदा मुनिश्चंद्रस्थले पंचद्वयंवसु ॥ त्रिषट्कनव चाकाशे त्रिविधं कूर्मलक्षणम् ४१ जले लाभस्तथा प्रोक्तः स्थले हानिस्तथैव च ॥ आकाशे मरणं प्रोक्तमिदं कूर्मस्य चक्रकम् ॥४२

टी०—गृहके आरंभकी तिथि पांचसे गुणना और कृत्तिकासे दिवसनक्षत्र जितने आवें सो उसमें मिलाना. और बारा अंक उसमें मिलाना. और सबको नवसे भागना शेष ४ ७ या १ बचे तो कूर्म जलस्थानमें जानना इसका

फल लाभ ५ २ वा ८ शेष रहे तो कूर्म स्थलके विषे जानना. उसका फल हानि ३ ६ ९ शेष बचे तो कूर्म आकाशमें है उसका फल मरण. ऐसा त्रिविध कूर्म फल जानना.

स्तंभचक्र.

सूर्याधिष्ठितभद्वयं प्रथमतो मध्ये तथा विंशति-॥
स्तंभाग्रे रससंख्यया मुनिवरैरुक्तो मुहूर्तः शुभः ॥४३॥

फल.

स्तंभाग्रे मरणं भवेद्गृहपतेर्मूले धनार्थक्षयो
मध्ये चैव तु सर्वसौख्यमतुलं प्राप्नोति कर्ता सदा ४४

टी०-सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक लेनेका क्रम-उनमें प्रथम २ नक्षत्र स्तंभ मूल उसका फल श्रीलक्ष्मी कीर्ति इनकी हानि द्वितीय २० नक्षत्र मध्यमें उनका फल अतुल सुख. तृतीय ६ नक्षत्र स्तंभाग्र फल मरण वास्ते जिस विभागका शुभ फल उसीमें स्तंभारोपण करना.

जोता चढानेका मुहूर्त.

मूलेभोभेत्रिऋक्षंगृहपतिमरणपंचगर्भेसुखंस्यान्मध्येदेयाष्टऋक्षंधनसुतसुखदंपुच्छदेशेष्टहानिः ॥४५॥ पश्चाद्देयंत्रिऋक्षंगृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदंस्यात्सूर्यर्क्षाच्चंद्रऋक्षंप्रतिदिनगणयेन्मोभचक्रं विलोक्य ॥ ४६ ॥

टी०-जोता चढाना सो मोभचक्र देखकर चढाना. उनका क्रम ऐसा है सूर्य नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनना उसमें पहिले ३ नक्षत्र मूलभाग उसकाफल स्वामिनाश दूसरे पांच ५ नक्षत्र गर्भभाग उसका फल सुखप्राप्ति. तीसरे ८ नक्षत्र मध्यभाग उसका फल धन पुत्र और सुखलाभ. चौथे ८ नक्षत्र पुच्छभाग उसका फल इष्टहानि. पांचवे ३ नक्षत्र अग्रभाग उसका फल सुख भाग्य और पुत्र ऐसे फल हैं. इसलिये इसक्रमसे शुभफल देनेवाले नक्षत्र जिसदिन मिले उसी दिन जोता चढाना.

द्वारचक्र.

अर्काच्चत्वारिऋक्षाणिह्यूर्ध्वेचैवप्रदापयेत् ॥द्वौद्वौकोणेषुदद्याद्दे-

शाखायांचचतुश्चतुः ॥४७॥ अधश्चत्वारिदेयानिमध्येत्रीणिप्रदापयेत् ॥ ऊर्ध्वेतुलभतेराज्यमुद्वासंकोणकेषुच ॥ ४८ ॥ शाखायांलभतेलक्ष्मींमध्येराज्यप्रदंतथा ॥ अधस्तान्मरणंप्रोक्तंद्वारचक्रंप्रकीर्तितम् ॥ ४९ ॥

टी०-सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र गिननेका क्रम. उसमें प्रथम ४ नक्षत्र ऊर्ध्व उसका फल राज्यप्राप्ति, द्वारकोण ४ उसके हरएक कोणमें दो दो नक्षत्र उसका फल उद्वास, दो बाजू और हरएक बाजूको नक्षत्र ४ फल लक्ष्मी, देहलीके नक्षत्र ४ फल राज्य, बीचमें नक्षत्र ३ फल मरण.

शांतिकोअग्निचक्र.

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेभ्रे भुवि वन्हिवासः ॥
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ५०

टी०-जिस तिथिको शांति करना तो उस तिथिमें १ मिलाना और उसमें जो वार होवे सो अंक मिलाना, उसको चारसे भागना. शेष बचे उनके फल, तीन या शून्य आवे तो अग्नि मृत्युलोकमें है, उसका फल सौख्यप्राप्ति, ये शांतिको उक्तहै. शेष १ बचे तो अग्नि स्वर्गलोकमें है, उसका फल प्राणनाश. २ बचे तो अग्नि भूतलमें है उसका फल अर्थनाश ये दो अंककी फलश्रुति शांतिको उक्त नहीं.

ग्रहोंके मुखमें आहुतीपात देखना.

तरणिविभ्दृगुभास्करिचंद्रमाकुजसुरेज्यविधुंतुदकेतवः ॥
रविभतोदिनभं गणयेत्क्रमात्प्रतिखगं त्रितयं त्रितयं न्यसेत् ५१

टी०-सूर्य नक्षत्र दिननक्षत्रउक्त क्रमसे गिनना, उसका फल. पहले तीन नक्षत्रमें सूर्य सो अशुभ. द्वितीयभागके तीन नक्षत्र बुध सो शुभ, तृतीयभागके ३ नक्षत्र शुक्र शुभफल. चतुर्थभागके ३ नक्षत्र शनि अशुभ फल. पांचवेभागके तीन नक्षत्र चंद्रके फल शुभ. छठे भागके तीन नक्षत्र मंगल फल अशुभ, ७ वे भागके तीन नक्षत्र गुरुके फल शुभ, ८ वे भागके ३ नक्षत्र राहु फल अशुभ. नवमभागके तीन नक्षत्र केतुके अशुभ फल जानना.

गृहप्रवेशकाक्रम.

अथप्रवेशोनवमंदिरस्ययात्रानिवृत्तावथभूपतीनाम् ॥ सौम्यायने पूर्वदिनेविधेयंवास्त्वर्चनंभूतबलिश्चसम्यक् ॥ ५२ ॥

टी०—नवीनगृह (मकान) में प्रवेश करना, यात्रासे घरको आना तथा राजदर्शनको जाना, इनकामोंके पूर्वदिन वास्तुपूजन कर भूतबली देना. ये कृत्यमें उदगयन प्रशस्त जानना.

चित्रानुराधामृगपौष्णपुष्यस्वाती श्रविष्ठा श्रवणश्च मूलं ॥ वारेष्वसूर्यक्षितिजेष्वरिक्तातिथौ प्रशस्तो भवनप्रवेशः ॥ ५३ ॥

टी०—चित्रा, अनुराधा, मृग, रेवती, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा, श्रवण, मूल, ये नक्षत्र उक्त और रवि, भौम, रिक्तातिथि, ये वर्जितकर गृहप्रवेश करना.

कलशचक्र.

प्रवेशे कलशेर्कक्षात्पंचनागाष्टषट् क्रमात् ॥
अशुभं च शुभं ज्ञेयमशुभं च शुभं तथा ॥ ५४ ॥

टी०—सूर्यनक्षत्रसे उक्तक्रमसे दिननक्षत्र गिनना. उसमें प्रथमके ५ नक्षत्र अशुभ, और ८ नक्षत्र शुभ, आगे ८ नक्षत्र अशुभ, ६ नक्षत्र शुभ, ऐसे कलशचक्र होताहै.

वामार्कलक्षण.

रंध्रात्पुत्राद्धनादायात्पंचस्वर्केस्थिते क्रमात् ॥
पूर्वाशादिमुखं गेहं विशेद्वामो भवेदतः ॥ ५५ ॥

टी०—घरमें प्रवेश करनेके समय सूर्य वाम होनाचाहिये. वो देखनेका क्रम. प्रवेशलग्नमें अष्टमस्थानसें पांचस्थानमें सूर्य और घरकामुख दक्षिणमें होवे उसको पंचमस्थानसें पांचस्थानमें सूर्य, घरका मुख पश्चिममें हो तो २ रे स्थानसें पांचस्थानतक सूर्य और गृहका मुख उत्तरमें हो तो ११ वें स्थानसे पांच स्थानतक सूर्य आवे तो वामार्क होताहै ये प्रवेश करनेमें उक्त जानना.

लग्नमेंकेशुभाशुभ ग्रहदेखना.

त्रिकोणकेंद्रगैः शुभैस्त्रिषष्ठलाभसंस्थितैः ॥

असद्ग्रहैः स्थिरोदये गृहं विशेद्बले विधौ ॥ ५६ ॥

टी०–गृहप्रवेशको त्रिकोण केंद्र स्थानमें शुभग्रह होवें और तीसरे छठे और लाभस्थानमें पापग्रह आवें तो शुभ जानना.

गृहारंभकी लग्नशुद्धि.

त्रिषडायगतैः पापैरष्टांत्येतरगैः शुभैः ॥
चंद्रे लग्नारिरंध्रांत्यवर्जिते स्याच्छुभं गृहम् ॥ ५७ ॥

टी०–३।६।११ स्थानमें पापग्रह शुभ, और ८।१२ स्थानसे अन्यस्थानमें शुभग्रह हो तो शुभ जानना. परंतु चंद्र लग्नमें, छठे, आठवे, बारवे स्थानमें न होना चाहिये.

आयुष्यप्रमाण.

लग्ने जीवः सुखे शुक्रो बुधः कर्मण्यरौ रविः ॥ ५८ ॥
रविजः सहजे नूनं शतायुः स्यात्तदा गृहम् ॥ ५९ ॥

टी०–लग्नमें बृहस्पति, सुहृत्स्थानमें शुक्र, १० बुध, ६ रवि ३ शनि ऐसे शुभलग्नमें गृहका आरंभ किया तौ १०० वर्षका आयुष्य जानना.

आयुष्यप्रमाण.

भृगुर्लग्ने बुधो व्योम्नि लाभेऽर्कः केंद्रगो गुरुः ॥
यस्यारंभे च तस्यायुर्वत्सराणां शतद्वयम् ॥ ६० ॥

टी०–लग्नमें शुक्र, बुध दशमस्थानमें, एकादशस्थानमें रवि, केंद्रस्थानमें गुरु ऐसे गृहके आरंभमें ग्रह होवें तो आयुष्य २०० वर्षका जानना.

गृहायुष्य.

जीवो बुधो भृगुर्व्योम्नि लाभगौ भानुभूमिजौ ॥
प्रारंभे यस्य तस्यायुः समाशीति सहश्रिया ॥ ६१ ॥

टी०–बृहस्पति, बुध, शुक्र, १० स्थानमें, और रवि, भौम ग्यारवे, गृहारंभे हो तो घरका आयुष्य ८० वर्ष लक्ष्मीसहित रहेगा.

स्वोच्चवर्तिनि भृगौ विलग्नगे देवमंत्रिणि रसातलेथवा ॥ स्वोच्चगे रविसुतेथवायगे स्यात्स्थितिश्च सुचिरं सह श्रिया ॥ ६२ ॥

टी०—शुक्र उच्चका लग्नमें, बृहस्पति ४, शनि ११ वे स्थानमें, अथवा स्वोच्च राशिका हो ऐसे ग्रहके लग्नऊपर मकान बांधनेको आरंभ किया तो चिरकालतक लक्ष्मीयुक्त रहता है.

स्वर्क्षगे हिमगौ लाभे सुरेज्ये केंद्रसंस्थिते ॥
धनधान्यसुतारोग्ययुक्तं धाम चिरं भवेत् ॥६३॥

टीका—स्वर्कका चंद्र एकादशस्थानमें, और गुरु केंद्रस्थानमें ऐसा योग लग्नमें रहे तो वो मकान धन धान्य, सुत, आरोग्य इनसे युक्त रहता है.

अन्यमतसे पृथ्वी शोधनेका क्रम.

कुंडार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे प्रष्टुर्मुखाद्यः प्रथम स्फुटीभवेत् ॥ वर्गादिवर्णः किल तद्दिशि स्मृतः शल्यं मुनींद्रैर्हपयस्तु मध्यतः ॥ ६४ ॥ स्मृत्वेष्टदेवता प्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम् ॥ गृहीत्वा तु ततः शल्याशल्यं सम्यग्विचार्यते ॥ ६५ ॥

टीका—कुंडकेवास्ते या नवीन मकान बांधनेको भूमिशोधनका प्रकार—पृच्छकने इष्टदेवका स्मरण करके प्रश्न पूछना, उसके मुखमेंसे जिस वर्गमेंका अक्षर आवे उसका उत्तर अ, क, च ट त प य श इन आठ वर्गोंमेंसे जिस किसी वर्गके अक्षरका उच्चारण किया होय उसप्रमाणसे क्रमकरके पूर्वादि अष्टदिशाओंमें शल्य है ऐसा जानना. और मध्यमें ह प य ये प्रश्नके आदि अक्षर आवें तो मध्यभागमें शल्य है ऐसा जानना, उसका प्रकार नीचे लिखाहै तदनुसार फलश्रुति उसजगहको देखना.

प्रश्नाक्षरफल.

पूर्व ॥ पूर्वस्यांयदि अः प्राच्यांनरशल्यंतदा भवेत् ॥ सार्द्धहस्तप्रमाणेनतच्चमानुष्यमृत्युकृत् ॥ ६६ ॥ आग्नेय । आग्नेय्यांदिशि कः प्रश्नेखरशल्यंकरद्वये॥राजदंडोभवेत्तत्र भयंनैवनिवर्तते ॥६७॥ दक्षिण ॥ याम्यायांदिशि चः प्रश्नेतदास्यात्कटिसंस्थितम् ॥ नरशल्यगृहंतस्य मरणे चिररोगतः ॥ ६८ ॥ नैर्ऋत्य ॥ नैर्ऋत्यांयदि टः पश्ने सार्द्धहस्तादधःस्थले॥शुनोस्थिजायतेत-

त्रबालानांजायतेमृतिः ॥ ६९ ॥ पाश्चिम ॥ तः प्रश्नेपाश्चिमायांतु शिशोः शल्यं प्रजायते ॥सार्द्धहस्ते गृहस्वामीनातिष्ठतिसदागृ- हे ॥७०॥ वायव्य ॥ वायव्यांदिशिपः प्रश्नेतुषांगाराश्चतुष्करे ॥ कुर्वंतिमित्रनाशंचदुःखप्रदर्शनंसदा ॥७१॥ उत्तर ॥ उदीच्यां दिशि यः प्रश्ने विप्रशल्यकरादधः ॥ तच्छीघ्रानिर्धनत्वा यकुबेरसदृशस्यहि ॥ ७२ ॥ ईशान्य ॥ ईशान्यांयदिशःप्रश्ने गोशल्यंसार्द्धहस्ततः ॥ तद्गोधनस्यनाशाय जायते गृहमेधिनः ॥ ७३ मध्य ॥ हपयामध्यकोष्ठेच वक्षोमात्र भवेदधः ॥ नृक- पालमथो भस्मलोहतत्कुलनाशकृत् ॥ ७४ ॥

टी०—पृच्छकके मुखमेंसे आदि अक्षर अवर्गका हो तो पूर्वमेंके कोष्टकमें डेढ हाथ गहिर खोदेतो नरकी हड्डी मिलेगी. वो न निकाली जावे तो मृत्युकारक होती है. १ कवर्गका अक्षर आवे तो आग्नेय कोणमें २ हाथके नीचे गधेकी हड्डी मिलेगी वो न निकाली जाय तो राजदंडसे भयनिवृत्ति कभी नहीं होगी. २च वर्गका अक्षर आवेतो दक्षिणमें कंबरभरके नीचे मनुष्यकी अस्थि मिलेगी वो न निकाली जाय तो चिरकालतक मरणतुल्य रोगी रहेगा. ३ टवर्गका अक्षर आवेतो डेढहाथके नीचे कुत्तेकी हड्डी मिलेगी. वो निकाली न जाय तो संपत्ति बचेगी नहीं. ४ तवर्गका अक्षर आवे तो पश्चिममें बालककी अस्थि मिलेगी, वो न निकाली जाय तो घरमें वस्ति न होगी, ५ पवर्ग आवे तो वायव्यकोणमें ४ हाथ नीचे तुष कोइला मिलेगा वो न निकाले तो मित्रनाश होगा, दुःख प्राप्त होगा. ६ यवर्ग होतो उत्तरकोणमें एक हाथ नीचे ब्र ाणकी अस्थि मिलेगी वो निकाली न जाय तो कुबेरसदृश धनवान् हो थापि दरिद्री होजाय. ७ शवर्ग होतो ईशान्यकोणमें डेढहाथ नीचे गौकी हड्डी मिलेगी. वो न निकाली जाय तो गोधनका नाश होवेगा. ८ ह प य, ये होवेतो मध्यभागमें छातीभरके नीचे नरक- पाल, भस्म, लोह, मिलेगा वो न निकलजाय तो कुलका नाश होवेगा, ९ ऐसे जिस वर्गका नाम आवे उस दिशामें देखना और वर्गका आदि अक्षर पृच्छकके मुखमेंसे उपरजनाये हुए १ वर्णके बाहरके दूसरे कोईभी वर्ण आए तो फल कुछ नहीं लेना अर्थात् वर्ज्य करना.

यात्राप्रकरण.

शुक्र सन्मुख.

एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे ॥
विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ १ ॥

टी०—गांवके गांवमें अथवा शहरके शहरमें, दुर्भिक्षकालमें, राजाकी तरफसे पकडनेको आवें उसको, विवाहसमयमें और यात्रामें तीर्थमें संमुख शुक्र होवे तो दोष नहीं.

पौष्णादावभिपादांतं यावत्तिष्ठति चंद्रमाः ॥
तावच्छुक्रो भवेदंधः संमुखं गमनं शुभम् ॥ २ ॥

टी०—रेवती अश्विनी भरणी और कृत्तिकानक्षत्रके प्रथमचरणपर चंद्र रहते शुक्र अंध रहताहै वो संमुख किया तोभी गमनकरनेको दोष नहीं.

शुभाशुभफल.

दक्षिणे दुःखदः शुक्रः संमुखो हंति मंगलम् ॥
वामे पृष्ठे शुभं नित्यं राधयेदस्तगः शुभः ॥ ३ ॥

टीका—बाहरजातेसमय शुक्र दक्षिणमें दुःखदायक, संमुख कार्यहानि बाएंतरफ या पृष्ठभागमें लेकर गमन करना शुभ होगा. शुक्रका पूर्वमें अस्त होवे तो पश्चिममें शुभ है, पश्चिममें अस्त होतो पूर्वमें शुभ जानना.

घातचंद्र.

प्रयाणकाले युद्धे च कृषौ वाणिज्यसंग्रहे ॥
वादे चैव गृहारंभे वर्जयेद्घातचंद्रमाः ॥ ४ ॥

टी०-यात्राको या युद्धको जाते, खेती करनेको, वैपारको, धान्यसंग्रहकर्ते, वादकर्ते मनका बांधते, घातचंद्र वर्जना.

अन्यच्च.

विवाहे सर्व मांगल्ये चौलादौ व्रतबंधने ॥
घातचंद्रो नैव चिंत्य इति पाराशरोऽब्रवीत् ॥ १ ॥

टी०-विवाहमें, समस्त मंगलीककार्यमें चौलादिक संस्कारोंमें, व्रतबंधनादिमें, इतनी जगह घातचंद्र मने नहीं है. ऐसा पाराशर ऋषिने कहाहै.

घातप्रकरण.

घाततिथिर्घातवारो घातनक्षत्रमेव च ॥
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम् ॥ ५ ॥

टी०-गमनसमयमें घाततिथि घातवार, घातनक्षत्र, वर्जना. अन्यकर्ममें शुभ.

मेषे रविर्मघा प्रोक्ता षष्ठी प्रथमचंद्रमाः ॥ वृषभे पंचमो हस्तश्चतुर्थी शनिरेव च ॥ ६ ॥ मिथुने नवमः स्वाती ह्यष्टमी चंद्रवासरः॥ कर्के द्विरनुराधा च बुधः षष्ठी प्रकीर्तिता ॥ ७ ॥ सिंहे षष्ठश्चंद्रमाश्च दशमी शनिमूलके ॥ कन्यायां दशमश्चंद्रः श्रवणः शनिरष्टमी ॥८॥ तूलेगुरुर्द्वादशीस्याच्छतंतृतीयचंद्रमाः॥ वृश्चिकेरेवतीसप्तदशमी भार्गवस्तथा ॥९॥धने चतुर्थोभरणीद्वितीयाभार्गवस्तथा ॥नक्रेष्टमोरोहिणीचद्वादशीभौमवासरः॥१०॥ कुंभएकादशश्चार्द्राचतुर्थीगुरुवासरः ॥मीनेचद्वादशः सार्पंद्वितीया भार्गवस्तथा ॥ ११ ॥

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तूळ	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
चंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनु.	मूळ	श्रव	शतता	रेवती	भर.	रोहि	आर्द्रा	आश्ले
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

ऐसें मेषादि द्वादशराश्यनुसार घातचतुष्टय छोडके प्रयाण करना

राश्यनुसार कालचंद्र.

मेषे वेदा वृषेष्टौ च मिथुने च तृतीयकः ॥ दश कर्के रविः सिंहं कन्यायां नवमस्तथा ॥ १२ ॥ षट्तुलेवृश्चिकेखेंदुर्धनेरुद्राः प्रकीर्तिताः॥१३॥मकरे ऋषयः प्रोक्ताः कुंभे बाणा उदाहृताः॥ ॥ मीने त्वंघ्रिः कालचंद्राः शौनको मुनिरब्रवीत् ॥ १४ ॥

टी०-मेषराशिको ४ चंद्र, वृषभराशिको ८ चंद्र, मिथुनको ३ चंद्र, कर्कको १० चंद्र सिंहको १२, कन्याको ९, तुलाको ६, वृश्चिकको १० धनको ११

मकरको ७ कुंभको ५ मीनको ४ चंद्र, ऐसे राश्यनुसार कालचंद्र शौनकमतसे हैं सो सर्वकार्यमें वर्जना.

तिथिके अनुसार लग्न वर्जना.

नंदायामलिहर्योस्तु तुलामकरयोस्तथा ॥ भद्रायां मीनधनुषोः कालस्तिष्ठति सर्वदा ॥ १५ ॥ जयायां स्त्रीमिथुनयो रिक्तायां मेषकर्कयोः ॥ पूर्णायांकुंभवृषयोर्मनुष्यमरणं ध्रुवम् ॥१६॥

टीका—नंदातिथिको वृश्चिक, सिंह, तुल मकर भद्रातिथिको मीन धन जयातिथिको कन्या मिथुन रिक्ताको मेष कर्क पूर्णाको कुंभ वृषभ ये तिथियोंको ये लग्न वर्ज करना. उहां काल खडा रहताहै.

प्रयाणमें उक्तनक्षत्र.

हस्तेंदुमैत्रश्रवणाश्विनितिष्यपौष्णश्रविष्ठाश्वपुनर्वसुश्च ॥ प्रोक्तानि धिष्ण्यानि नव प्रयाणे त्यक्त्वा त्रिपंचादिमसप्तताराः ॥ १७ ॥

टीका—हस्त मृगशीर्ष अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु ये नक्षत्र गमनमें उक्त हैं परंतु ३ ५ ७ ये तारा गमनमें त्यागना.

मध्यमनक्षत्र.

उत्तरा रोहिणी चित्रा मूलमार्द्रा तथैवच ॥
जलोत्तरा भाद्रविश्वे प्रयाणे मध्यमाः स्मृताः ॥ १८ ॥

टी०—रोहिणी, उत्तरा, मूल, चित्रा, आर्द्रा, पूर्वाषाढा, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराषाढा ये नक्षत्र प्रस्थानमें मध्यम जानना.

वर्ज्यनक्षत्र.

पूर्वात्रयं मघा ज्येष्ठाभरणीजन्मकृत्तिका॥सार्पस्वातीविशाखाच गमने परिवर्जयेत् ॥ १९ ॥ एकविंशतयोऽग्नेस्तु भरण्याःसप्त नाडिकाः ॥ एकादशमघायाश्चत्रिपूर्वाणांच षोडश ॥ २० ॥ विशाखासार्पचित्राणां रौद्रस्वात्योश्चतुर्दश ॥ आद्यास्तुघटिका स्त्याज्याः शेषांशे गमनं शुभम् ॥ २१ ॥

टी०—तीनों पूर्वा, मघा ज्येष्ठा, भरणी, जन्मनक्षत्र, कृत्तिका, आश्लेषा, स्वाती, विशाखा, ये नक्षत्र प्रयाणमें त्यागना. परंतु संकटसमयमें तीनों पूर्वाकी १६

घडी, मघाकी ११ घडी, ज्येष्ठा संपूर्ण भरणीकी ७ घडी, कृत्तिकाकी २१ घडी जन्मनक्षत्र संपूर्ण, आश्लेषा, विशाखा, चित्रा, स्वाती, आर्द्रा, इन नक्षत्रकी आदिकी १४ घडी त्यागके प्रयाण करना.

प्रयाणको शुभाशुभवार.

अर्केक्लेशमनर्थकंचगमने सोमेचबंधुप्रियेचांगारंऽनलतस्कर-
ज्वरभयंप्राप्नोतिचार्थंबुधे॥ क्षेमारोग्यसुखंकरोतिचगुरौलाभश्च
शुक्रे शुभोमंदेबंधनहानिरोगमरणान्युक्तानिर्गगादिभिः २२

टी०—रविवारको गमन करनेसे मार्गमें क्लेश और अनर्थ प्राप्त होताहै. सोमवारको बंधु और प्रियदर्शन, मंगलको अग्नि, चोर, ज्वरभय, बुधको द्रव्य लक्ष्मी प्राप्ति गुरुवारको क्षेम, आरोग्य सुखप्राप्ति, शुक्रवारको लाभ, शुभफलकी प्राप्ति शनिवारको बंधन" हानि" रोग मरण प्राप्त होताहै.

होराकथन और शकुन.

वारात्षष्ठस्यषष्ठस्यहोरा सार्द्धद्विनाडिका ॥ अर्कशुक्रौ
बुधश्चंद्रोमंदो जीवधरासुतौ १ गुरुर्विवाहे गमनेचशुक्रो सौम्ये
बुधःसर्वकार्येषुचंद्रः॥कौजेयुद्धराजसेवारवौचचंद्रेवित्तंचेतिहो-
राक्रमाद्वै ॥ २ ॥ यस्यग्रहस्यवारेपिकर्मकिंचित्प्रकीर्तितम् ॥
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वकर्माविधीयते ॥ ३ ॥

टी०—जो वार होवे उसीवारका प्रथम २॥ घडी होरा, दूसरा उसवारसे छठे वारका, ऐसे दिनके बाराहोरा जानना. २॥ रविवारका राजसेवाको उक्त द्वितीय २॥ शुक्रका गमनको, तृतीय २॥ बुधकाज्ञानप्राप्तिको चतुर्थ २॥ चंद्रका सर्वकार्यमें प्रशस्त, पांचवा २॥ शनिका द्रव्यसंग्रहको, छठा २॥ गुरुका विवाहको सातवा २॥ मंगलका युद्धमें जानेको उक्त है, और जो ग्रहका जो वार उनके कृत्य पहिले कथन किये हैं सो उसके वारके होरामें करना.

सूर्यका होरा.

सूर्यस्यहोरे रजकी सुवस्त्रं कुमारिका विप्रचतुष्टयंच ॥
काकत्रयंद्वौनकुलौतथैव चाषस्तथैकोवृषभस्तुगौश्च ॥४॥

टी०—रविके होरामें गमन करनेसे जो २ शकुन होंगे सो कहतेहैं. धोबिन

सुवस्त्र, कुमारी, चारब्राह्मण, तीनकौवा, दो नेउले, दो चाष, एकबैल, एकगाय इनमेसे कुछतोभी शकुन मिलेंगे.

चंद्रका होरा.

चंद्रस्यहोरे द्विजयुग्मकाकाभेरीमृदंगोनकुलः खरोष्ट्रौ ॥ हयश्च गोमेषशुनस्तथैवपुष्पाणिनारीद्वयमेवमार्गे ॥ ५ ॥

टी०-चंद्रके होरापर गमन किया तो दोब्राह्मण, काक, नगारे, मृदंग, नेउला गधा, ऊंट, घोडा, गाय, मेंढा, कुत्ता, फूल, और दो स्त्रियां इनमेंसे कुछभी सामने आवेगा.

मंगलका होरा.

मार्जारयुद्धं कलहः कुटुंबे रजस्वलास्त्री भवनस्यदाहः ॥ नपुंसकश्वत्रितयंद्विजश्चनग्नोविमुक्तो धरणी सुतस्य ॥ ६ ॥

टी०-मंगलका होरामें जानेसे मार्जारका युद्ध, स्त्रीपुरुषका कलह, रजस्वला स्त्री, जलताहुआ मकान, नपुंसक, तीन कुत्ता, नग्नब्राह्मण, इनमेंसे कोईभी सामने मिलेगा.

बुधका होरा.

बुधस्यहोरेशकुनश्चसर्वः स्त्रीपुत्रयुक्ताकलशस्तुपूर्णः ॥ सुचातकश्चाषगजौ कुमारः पुष्पाणि नारी खलु दर्पणश्च ॥ ७ ॥

टीका-बुधके होरामें सर्व शकुन पुत्रयुक्त स्त्री कलश पानीसें भरा हुआ चातकपक्षी चाषपक्षी गज बालक फूल आइना स्त्री ये पदार्थ सामने आवेंगे.

गुरुका होरा.

गुरोर्द्विजातिर्गणिकाचधेनुः स्त्रीबालयुक्ता सजलोघटस्तु ॥ ऊर्णाचकाकोनकुलोबकश्च हंसस्यराजाबहवस्तुवैश्याः ॥ ८ ॥

टीका०-गुरुके होरामें ब्राह्मणः कसबिनः गाय बालकसहितस्त्री भराहुआ कलश. नेउला अथवा हंसका राजा दुसाला बहुत बनिये इनमेंसे कोइभी सामने मिलेंगे.

शुक्रका होरा.

शुक्रस्यहोरेगणिकाद्विजेंद्रःकाकत्रिकंचाथनपुंसकोवा ॥
मद्यं हिमांसंगणकश्चधेनुर्धान्यंचशूद्रत्रितयं च वैश्यः ॥ ९ ॥

टी०–शुक्रके होरापर प्रयाण करे तो ब्राह्मण, वेश्या, ३काक, नपुंसक, मद्य, मांस ज्योतिषि, गौ धान्य, ३ शूद्र इनमेंसे कुछ सामने आवेगा.

शनिका होरा.

पतंगसूनोर्यवनश्चनग्नोरजस्वलास्त्री मृतकंतथैव ॥
पिशाचगृध्रौ विधवाचवन्हिर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचंडः ॥ १० ॥

टी०–शनिके होरापर नग्न, यवन, रजस्वला, प्रेत, पिशाच, गिद्धड, विधवा, अग्नि नपुंसक, जवान, मजबूद ऐसे पुरुष इनमेंसे कुछभी सामने आवेगा.

प्रश्नउत्तम नभयातो.

मनुका वाक्य--गमनं प्रतिराजस्तु सन्मुखादर्शनेन च ॥
प्रशस्तांश्चैव संभाषेत्सर्वानेतांश्च कीर्तयेत् ॥ ११ ॥

टी०–मनुका वाक्य, गमनकालमें पूर्वकहे हुए शकुन, या उत्तम भाषण इनका श्रवण या दर्शन हुवा तो मनमें स्मरण करके प्रयाण करना.

वारानुसार वस्त्रधारण.

रवौ नीलं बुधे पीतं कृष्णवर्णं शनैश्चरे ॥
श्वेतं गुरौ भृगौ भौमे रक्तं सोमे तु चित्रकम् ॥ १ ॥

टी०-रविवारको नीलवस्त्र, बुधको पीला, शनिको काला, गुरु शुक्रवारको सफेत मंगलवारको लाल, सोमवारको चित्रविचित्र, वस्त्र धारण कर गमन करना.

नक्षत्रतिथिवारानुसार दिक्शूल.

पूर्वदिशा.

मूल श्रवणशाक्रेषु प्रतिपन्नवमीषु च ॥
शनौ सोमे बुधे चैव पूर्वस्यां गमनं त्यजेत् ॥ १२ ॥

टी०-मूल, श्रवण, ज्येष्ठा, ये नक्षत्र, प्रतिपदा, नवमी, शनिवार, सोमवार, बुधवार, ये वार, नक्षत्र, तिथि इनमें पूर्वको गमन करना नहीं.

दक्षिणदिक्शूल.

पूर्वाभाद्रपदाश्विन्यौ पंचमी च त्रयोदशी ॥
गुरुर्धनिष्ठार्द्रा चैव याम्ये सप्त विवर्जयेत् ॥ १४ ॥

टी०-पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, पंचमी, त्रयोदशी, गुरुवार, धनिष्ठा, आर्द्रा, ये सात दक्षिणदिशाके गमनमें वर्ज करना.

पश्चिमदिक्शूल.

रोहिण्यां च तथा पुष्ये षष्ठी चैव चतुर्दशी ॥
भौमार्कगुरुवारेषु न गच्छेत् पश्चिमा दिशम् ॥१५॥

टी०-रोहिणी, पुष्य, छठ, चौदस, मंगळवार, गुरुवार, रविवार, ये पश्चिममें गमन करते वर्जना.

उत्तरदिक्शूल.

करे चोत्तरफाल्गुन्यां द्वितीया दशमी तथा ॥
बुधे रवौ भौमवारे न गच्छेदुत्तरां दिशम् ॥ १६ ॥

टी०-हस्त, उत्तराफाल्गुनी, द्वितीया, दशमी, बुध, रवि, भौम, ये उत्तर गमनमें वर्जना.

विदिक्शूल.

ईशान्यां ज्ञ शनौ शूल आग्नेय्यां गुरुसोमयोः ॥
वायव्यां भूमिपुत्रे तु नैर्ऋत्यां शुक्रसूर्ययोः ॥ १७ ॥

टी०-वारानुसार विदिशामें शूल रहताहै. उसवारमें वो दिशागमनमें वर्जित करना. बुध और शनिवारको ईशान्यमें गमन नहीं करना. गुरु सोमवारको आग्नेय दिशाको, मंगलवारको वायव्यदिशाको, शुक्र, रविवारको नैर्ऋत्यमें गमनवर्जना.

शूलदोषनिवारणार्थ भक्ष्यपदार्थ.

सूर्यवारेघृतंपीत्वागच्छेत्सोमेपयस्तथा ॥ गुडमंगारवारे तु बुधवारे तिलानपि ॥ १८ ॥ गुरुवारे दधि ज्ञेयं शुक्रवारेयवानपि ॥

माषान्भुक्त्वाशनेर्वारे शूलदोषोपशान्तये ॥ १९ ॥

टी०—रविवारको घृत, सोमवारको दूध, मंगलके दिन गुड, बुधको तिल, गुरुवारको दहिं, शुक्रवारको जव, शनिवारको उडद, इन ७ वारोंमें ये पदार्थ भक्षण कर गमन करना.

कुंभ और मीनके चंद्रऊपर वर्ज्यकर्म.

शय्यावितानप्रेताग्निक्रियाकाष्ठतृणार्जनम् ॥
याम्यादिग्गमनं कुर्यान्न चंद्रे कुंभमीनगे ॥२०॥

टी०—पलंग बिनवाना, प्रेताग्निकर्म क्रिया, तृणकाष्ठसंग्रह, दक्षिणदिशामें गमन ये सब काम कुंभ और मीनराशिका चंद्र छते वर्जना.

संमुखचंद्र.

करणभगणदोषं वारसंक्रांतिदोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्॥कुजशनिरविदोषंराहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चंद्रमा संमुखस्थः ॥ २१ ॥

टी०—करण, नक्षत्र, वार, संक्रांति, कुलिक, कुतिथि, यामार्ध, मंगल, शनि, रवि, राहुकेतु ये दोष संमुख चंद्र छते दूर होतेहैं.

दिशानुसार संमुखचंद्र.

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ॥ कुंभे तुलायां मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम्॥२२॥

फलकथन.

संमुखे द्रव्यलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः ॥
पृष्ठतः प्राणनाशाय वामे चंद्रे धनक्षयः ॥ २३ ॥

टी०—मेष, सिंह, धन ये राशिका चंद्र पूर्वमें, वृष, कन्या मकर ये राशिका चंद्र दक्षिणमें, तूल, कुंभ, मिथुनका चंद्र पश्चिममें,कर्क,वृश्चिक,मीनका चंद्र उत्तरमें संमुख रहताहै. (फल) संमुख चंद्र लेके गमन करना. अर्थलाभ होगा. दहिने तरफ चंद्रको लिया तो धन संपदाकी प्राप्ति, पृष्ठभागमें चंद्र हो तो प्राणनाश, वामभागमें लेके गमन करे तो धनक्षय होताहै ऐसे जानना.

कालसमयदेखनेका प्रकार.

पूर्वाण्हे चोत्तरां गच्छेत्प्राच्यां मध्यान्हके तथा ॥
दक्षिणे ह्यपराण्हे तु पश्चिमे ह्यर्धरात्रके ॥ २४ ॥

टी०-दिनके प्रथम प्रहरमें उत्तरमें मध्यान्हमें पूर्वमें तृतीय प्रहरमें दक्षिणमें आधी रातको पश्चिममें गमन करना सिद्धिदायक होवेगा.

दिशानुसार योगिनी.

प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीयादशचोत्तरे॥तृतीयैकादशीवन्हौ चतुर्द्वादशिनैर्ऋते ॥२५॥ पंचत्रयोदशीयाम्येषष्ठीभूतंचपश्चिमे ॥ सप्तमी पूर्णवायव्येअमावास्याष्टमीशिवे ॥२६॥ फलं ॥ पृष्ठेत्रशुभदाप्रोक्ता वामेचैवविशेषतः॥योगिनींसाभवेन्नित्यंप्रयाणेशुभदा नृणाम्॥२७

टी०-प्रतिपदा, नवमी ये तिथिको योगिनी पूर्वमें, द्वितीया, दशमीको उत्तरमें, तृतीया एकादशीको आग्नेयमें, चतुर्थी द्वादशीको नैर्ऋत्यमें, पंचमी त्रयोदशीको दक्षिणमें, षष्ठी चतुर्दशी पश्चिममें, सप्तमी, पूर्णिमा, वायव्यमें, अष्टमी, अमावास्या ईशान्यमें ऐसे योगिनी जानना. (इसका फल) योगिनी पृष्ठभागमें अथवा वामभागमें होके नित्य गमन करना शुभ होगा.

वारानुसार कालपाश.

उत्तरस्या सूर्यवारेवायौचन्द्रादिने भवेत् ॥ भौमवारे प्रतीच्यांतुनैर्ऋत्याबुधवासरे ॥ यमाशायागुरोर्वारेवन्हेर्दिशिभृगोर्दिने ॥
दिशिप्राच्यांशनेर्वारे कालः प्रोक्तो मनीषिभिः ॥ २८ ॥ २९ ॥

टी०—रविवारको काल उत्तरमें रहताहै सोमवारको वायव्यमें, मंगलवारको पश्चिममें, बुधवारको नैर्ऋत्यमें, गुरुको दक्षिणमें, शुक्रको आग्नेयमें, शनिवारको पूर्वमें ऐसे काल, दिशा और वारानुसार रहताहै. ऐसा विद्वानोंने कहाहै. ये कालराहुके समान वर्ज करना.

कालराहु.

रविदिनगुरुपूर्वेसोमशुक्रेचयाम्ये वरुणदिशितभौमेचोत्तरेसौरिसौ-

म्ये ॥ अभिमुखउतदक्षेकालराहुर्दिशायां हरतिसकलकार्यंवामपृष्ठेर्थसिद्धिः ॥ ३० ॥

टी०-रवि और गुरुवारको कालराहु पूर्वमें रहताहै. सोम और शुक्रवारको दक्षिणमें, भौमवारको पश्चिममें, शनि और बुधवारमें उत्तरको कालराहु रहताहै. वह सम्मुख अथवा दक्षिण हो तो गमन करनेसें कार्यकी हानि करताहै और वाम अथवा पृष्ठभागमें होतो गमन करनेसे कार्यसिद्धि करताहै.

क्षुधितराहु.

शक्रवायुयमेशांबुवन्हिग्लौरक्षसांदिशि ॥ यामार्द्धेक्षुधितोराहुर्भ्रमत्येवंक्रमात्सदा ॥ ३१ ॥ नतिथिर्नचनक्षत्रंनयोगो नचचंद्रमा ॥ सिद्ध्यंतिसर्वकार्याणियत्रायांदक्षिणेरवौ ॥ ३२ ॥

टी० पहिले यामार्धमें क्षुधित राहु पूर्वमें रहताहै. द्वितीयमें वायव्यको, तृतीयमें दक्षिणको, चतुर्थमें ईशान्यको, पंचममें पश्चिमको, छठे आग्नेयमें, सप्तममें उत्तरको अष्टमयामार्धमें नैर्ऋत्यको, एसे आठों दिशा भ्रमण करताहै, परंतु दक्षिणभागमें रवि लेके गमन कियाजाय तो तिथिनक्षत्रादि दोष जातेहैं.

काल कहांहै सो देखनेका प्रकार.

कालः पलोघातकलोहपातदावानलाः खड्गकचोलकांतिकाः ॥ नखाश्चतुर्विंशतिषट्तथादिक्रुद्राधृतिर्वेदगुणाः क्रमेण ॥ ३३ ॥ तिथ्यायुतंचैवसुभाजित च शेषंचकालंमुनयोवदंति ॥ फलं ॥ कालंचपृष्ठेपलंसंमुखे च घातं च लोहंवडवां च पृष्ठे ॥ खड्गं समीपेकवचंचवामेकांतिश्चयोज्या दिशिदक्षिणस्याम् ॥ ३४ ॥

टी०-कालोंके नाम. १ काल. २ पल. ३ घातक. ४ लोहपात. ५ दावानल. ६ खड्ग. ७ कवच ८ कांति. ऐसे आठ नांव, इनके नीचे अंक लिखहैं. सो जिस तिथीको गमन करना हो वो तिथि एकेक अंकमें मिलाना और आठसे भागना. जो अंक शेष बचे उस दिशामें वो काल है. ऐसे क्रमसे पूर्वादि अष्ट दिशाका देखना. पृष्ठभागमें काल शुभ, संमुख पल शुभ, पृष्ठभागमें पात, वडवानल, लोहपात, ये तीनों शुभ, और दक्षिणभागमें कांति शुभ, वाम-

भागमें कवच शुभ, और दक्षिणभागमें कांति शुभ, ऐसे दिशापरत्वें शुभ लेकर उस दिशाको युद्धको अथवा यात्रादिकार्यको गमन करना, कार्य सिद्धि होगी.

पंथाराहुचक्र.

स्युर्धर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थेयाम्याजांघ्रींद्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथोभानिकामे ॥ वन्ह्याद्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षेथरोहिण्यर्यम्णाब्जेंदुविश्वांतिमभदिनकरर्क्षाणिपंथादिराहौ ॥ ३४ ॥

धर्म.	अश्वि.	पुष्य.	आश्ले.	विशा.	अनुरा.	धनि.	शतता.
अर्थ.	भरणी.	पुनर्व.	मघा.	स्वाती.	ज्येष्ठा.	श्रवण.	पूर्वाभा.
काम.	कृत्ति.	आर्द्रा.	पूर्वा	चित्रा.	मूळ.	अभि.	उ. भा.
मोक्ष.	रोहि.	मृग.	उत्ताष.	हस्त.	पूर्वाषा.	उत्तरा.	रेवती.

टी०-नक्षत्र २८ इनके भाग ४ उनके नाम प्रथमभाग, धर्ममार्गके नक्षत्र ७, द्वितीय अर्थमार्गके नक्षत्र ७; तृतीय काममार्गके नक्षत्र ७, चतुर्थ मोक्षमार्गके नक्षत्र ७, ऐसे चारों मार्गके नक्षत्रपर सूर्य छते चंद्र चारों मार्गके नक्षत्रपर फिरेगा उसके फल कहतेहैं.

धर्ममार्गके फल.

धर्ममार्गगते सूर्ये ह्यर्थांशे चंद्रमा यदि
तदा शत्रुभयं तस्य ज्ञेयं तु विबुधैः शुभम् ॥ १ ॥

टीका-धर्ममार्गके नक्षत्रका सूर्य हो और अर्थमार्गके नक्षत्रपर चंद्र आयाहो और गमन करे तो मार्गमें शत्रुभय होगा. फल अशुभ जानना.

धर्ममार्गगते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थिते ॥
संहारश्च भवेत्तत्र भंगो हानिः प्रजायते ॥ २ ॥

टी०-धर्ममार्गमें सूर्य और चंद्र ऐसे योगपर गमन किया तो संहार, भंग, हानि, ये फल प्राप्त होंगे.

धर्ममार्गगते सूर्ये कामांशे चंद्रमा यदि ॥
विग्रहे दारुणं चैव चौराकुलसमुद्भवम् ॥ ३ ॥

टी०–धर्ममार्गमें सूर्य और काममार्गमें चंद्र, ये योगका फल बहुतोंसे वैर होगा, और चोरका भय प्राप्त होगा.

धर्ममार्गगते सूर्ये चंद्रे मोक्षगते यदि ॥
गृहलाभो भवेत्तस्य विज्ञेयो नात्र संशयः ॥ ४ ॥

टी०–धर्ममार्गमें सूर्य और मोक्षमार्गमें चंद्र ऐसे योगका फल गृहलाभ होगा मार्गमें सुख होगा.

अर्थमार्गके फल.

अर्थमार्गगते सूर्ये चंद्रे धर्मस्थिते यदि ॥
गजलाभो भवेत्तस्य तत्र श्री सर्वतोमुखी ॥ १ ॥

टी०–अर्थमार्गमें सूर्य और मोक्षमार्गमें चंद्र ऐसे योगका फल. गजलाभ, लक्ष्मीप्राप्ति सर्वदा सुख होगा.

अर्थमार्गगते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थिते ॥
प्रथमं जायते कार्यं तत्र भंगो भविष्यति ॥ २ ॥

टी०–अर्थमार्गमें सूर्य और चंद्र आयाहो ऐसे योगका फल प्रथम कार्यसिद्धि होगी परंतु बाद भंग होगा.

अर्थमार्गगते सूर्ये चंद्रे कामांशसंस्थिते ॥
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य जानीयान्नात्र संशयः ॥ ३ ॥

टी० अर्थमार्गमें सूर्य, काममार्गमें चंद्र आया तो सर्वकार्यमें सिद्धिप्राप्ति होगी.

अर्थमार्गगते सूर्ये चंद्रे मोक्षस्थिते यदि ॥
भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तः सुखी भवेत् ॥ ४ ॥

टी०–अर्थमार्गमें सूर्य और मोक्षमार्गमें चंद्र इसका फल भूमिलाभ, हर्ष, मार्गमें सुखप्राप्ति होगी.

काममार्गका फल.

काममार्गगते सूर्ये चंद्रे धर्मे च संस्थिते ॥
गजाश्वाश्चापि लभ्यंते राजसन्मानसंभवात् ॥१॥

टी०—काममार्गमें सूर्य, धर्ममार्गमें चंद्र आवे तो लाभ और राजसभामें सन्मान हो.

काममार्गगते सूर्ये चंद्रे चैवार्थसंस्थिते ॥
सकलं जायते तस्य विघ्नभंगं विनिर्दिशेत् ॥ २ ॥

टी०—काममार्गमें सूर्य, और अर्थमार्गमें चंद्र आवे तो विघ्नोंका नाश होगा और सकल कार्य होगा.

काममार्गगते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थिते ॥
विग्रहं दारुणं चैवं कार्यनाशं विनिर्दिशेत ॥ ३ ॥

टी०—काममार्गमें सूर्य और अर्थमार्गमें चंद्र आवे तो वैर होगा. कार्य नाश होगा.

काममार्गगते सूर्ये चंद्रे मोक्षेगतेपि वा ॥
राज्ञो लाभो भवेत्तस्य स्वर्णलाभं विनिर्दिशेत् ॥ ४ ॥

टी०—काममार्गमें सूर्य और मोक्षमार्गमें चंद्र आवे तो राजासे सुवर्णलाभ होगा.

मोक्षमार्गका फल.

मोक्षमार्गगते सूर्ये चंद्रे धर्मस्थिते यदि ॥
हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं प्रसिद्ध्यति ॥ १ ॥

टी०—मोक्षमार्गमें सूर्य और धर्ममार्गमें चंद्र आवे तो हेमलाभ तथा सर्व कार्य-सिद्धि होगी.

मोक्षमार्गगते सूर्ये ह्यर्थांशे चंद्रमा यदि ॥
विफलं तस्य कार्यं च चोरराजरिपोर्भयम् ॥ २ ॥

टी०—मोक्षमार्गमें सूर्य और अर्थमार्गमें चंद्र हो तो राजा, चोर, शत्रु इनसे भय होगा और कार्यनाश होगा.

मोक्षमार्गगते सूर्ये चंद्रे कामस्थिते यदि ॥
सर्वसिद्धिमवाप्नोति कार्ये च जयमेव च ॥ ३ ॥

टी०—मोक्षमार्गमें सूर्य और काममार्गमें चंद्र आवे तो सर्वकार्यमें सिद्धि और जयप्राप्ति जानना.

मोक्षमार्गगते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थिते ॥
विग्रहं दारुणं चैव विघ्नस्तस्य भविष्यति ॥ ४ ॥

टी०—मोक्षमार्गमें सूर्य और चंद्रमा आवे तो बडा विग्रह और विघ्न होताहै ऐसा जानना.

पंथाराहुपर कर्तव्यकर्म.

यात्रायुद्धविवाहेषु प्रवेशे नगरादिषु ॥
व्यापारेषु च सर्वेषु पंथाराहुः प्रशस्यते ॥ १ ॥

टी०—यात्राको, युद्धको, विवाहको, नगरमें प्रवेशको सर्वव्यापारमें पंथाराहु प्रशस्त होताहै.

गोरक्षमते तिथिचक्र.

पौषेपक्षत्यादिकाद्वादशैवंतिथ्योमाघादौद्वितीयादिकास्ताः ॥ कामास्तिस्रःस्युस्तृतीयादिवच्च यानेप्राच्यादौफलंतत्रवक्ष्ये ॥१॥ फलं ॥ सौख्यंक्लेशोभीतिरर्थागमश्चशून्यंनैःस्व्यंनिःस्वतामिश्रताच ॥ द्रव्यक्लेशौदुःखमिष्टाप्तिरर्थोलाभःसौख्यंमंगलंवित्तलाभः ॥ २ ॥ लाभोद्रव्याप्तिर्धनंसौख्यमुक्तंभीतिर्लाभोमृत्युरर्थागमश्च ॥ लाभःकष्टंद्रव्यलाभौसुखंचकष्टंसौख्यंक्लेशलाभौसुखंच ॥ ३ ॥ सौख्यंलाभः कार्यसिद्धिश्चकष्टंक्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थोधनंच॥ मृत्युर्लाभोद्रव्यलाभश्चशून्यंशून्यंसौख्यंमृत्युरत्यन्तकष्टम्

टी०—इसका अर्थ नीचे चक्रमें स्पष्ट समझना.

तिथिचक्र

पौ	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	पूर्व	दक्षि.	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौ.	क्लेश	भीति	ध.ला
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दरिद्र	दरिद्र	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द. क्ले	दुःख	इष्टा.	धन
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौ.	मंगल	धन
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	द्रव्य	धन	सौ.
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भीति	लाभ	मृत्यु	धन
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्रव्य	सुख.
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौ.	क्लेश	सुख.
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौ.	लाभ	कार्य	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कष्ट	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्रव्य	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौ.	मृत्यु	अत्य

गर्गादिकोंका मुहूर्त.

उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः ॥
अंगिरा मनउत्साहो विप्रवाक्यं जनार्दनः ॥ १ ॥

टी०—पिछली पांच घडी रात्री शेष रहते उषःकाल होताहै, सो गर्गमुनिके मतसे शुभ. बृहस्पतिके मतसे उत्तम शकुन शुभ, अंगिराऋषिके मतसे मनका उत्साह शुभ. जनार्दनके मतसे विप्रवाक्य शुभ ऐसे जानना.

शुभाशुभ वाहनफल.

आत्मनो जन्मनक्षत्राद्दिननक्षत्रमेव च ॥ एकीकृत्वा हरेद्भागं नंदशेषे च वाहनम् ॥ १ ॥ रासभोश्वो गजो मेषो जंबुको सिंहसंज्ञकः ॥ काकश्चैव मयूरश्च हंस इत्येव वाहनम् ॥ २॥ फलम् ॥ रासभे ह्यर्थलाभश्च धनलाभश्च वाजिनि ॥ लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्येचमेषेचमरणंध्रुवम् ॥ ३ ॥ जंबुके स्वल्प-लाभश्च सर्वसिद्धिश्च सिंहके ॥ काके च निष्फलं कार्यं मयूरे

च सुखावहम् ॥ ४ ॥ हंसे तु सर्वसिद्धिः स्याद्वाहनानां फलं स्मृतम् ॥

टीका—अपने जन्मनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनकर एकत्र करना, और नवसे भागना. शेष १ बचे तो वाहन गर्दभ जानना, उसका फल अर्थनाश. २ बचे तो वाहन घोडा, उसका फल धनलाभ. ३ शेष रहे तो वाहन हाथी जानना, उसका फल लक्ष्मीप्राप्ति. ४ बचे तो वाहन मेंढा उसका फल मरण. ५ शेष रहे तो सियार, फल स्वल्प लाभ. ६ अवशिष्ट रहे तो सिंह, कार्य सिद्धि. ७ शेष रहेतो काक, निष्फल. ८ शेष बचें तो मयूरा सुखप्राप्ति. ९ शेष रहे तो हंस, सर्व सिद्धि, ये क्रमसे वाहन और उनके फल जानना.

त्र्यंकमुहूर्त.

तिथयः पक्षगुणिता सप्तभिश्चैव भाजिताः ॥
वाराः स्युर्वन्हिगुणिता वसुभिश्चैव भाजिताः ॥ १ ॥
चतुर्गुण्यानि भान्यंग भाजितानि यथाक्रमम् ॥

टी०—जिस तिथिको गमन करना होय सो तिथि १५ से गुण ७ से भागना, और जो वार होवो वह तिगुना करना और आठसे भागना. जो नक्षत्र हो सो चौगुना कर सातसे भागना. शेषांक तीन आवे तो शुभ, तीनोंके शून्य आवें तो त्र्यंक नहीं ऐसे जानना.

फलश्रुति.

पीडा स्यात्प्रथमे शून्ये मध्यशून्ये महद्भयम् ॥
अंत्यशून्ये तु मरणं त्र्यंके च विजयी भवेत् ॥ २ ॥

टी०—प्रथम तिथिको भागको शून्य आया तो पीडा. द्वितीय वारके भागको शून्य आवे तो महाभय, तृतीयनक्षत्रके भागको शून्य आवे तो मरण और तीनोंके ठिकाणे अंक आवें तौ त्र्यंक, बिजय प्राप्त होगा.

भ्रमणाडळ मुहूर्त.

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रं सप्तभिर्भागमाहरेत् ॥
त्रिषट्कं भ्रमणं चैव त्रिसप्तमहदाडळम् ॥ १ ॥
प्रथमं पंचचत्वारि आडळो नास्ति निश्चितम् ॥

आडळे ताडनं प्रोक्तं भ्रमणे कार्यनाशनम् ॥ २ ॥

टी०—सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गणना और सातसे भागना. शेष ३ या ७ बचे तो उसदिन भ्रमण है. फल कार्यनाश, २ अथवा ७ बचे तो आडल है, फल गमनमें वर्जना. ताडन करनेमें उक्त, १।५ अथवा ४ बचे तो आडल नहीं, गमन करनेको उक्त जानना.

हैवर मुहूर्त.

सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रं पक्षादि तिथिवारयुक् ॥
नवभिस्तु हरेद्भागं सप्तशेषं तु हैवरम् ॥ १ ॥

टी०— सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनना. उसमें पक्ष तिथि, वार, मिलाय ९ से भागना. शेष ७ बचे तो हैवर मुहूर्त है, गमन करनेमें शुभ.

घवाडमुहूर्त.

सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रं त्रिगुणं तिथिमिश्रितम् ॥
नवभिस्तु हरेद्भागं त्रिशेषे स्यात् घवाडकम ॥ १ ॥

टी०—सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनकर तिगुनाकर चलती तिथि उसेमें मिलाय नवसे भागना, शेष तीन बचें तो घवाड मुहूर्त जानना.

वारानुसार स्वरशकुन.

गुरौ शनौ रवौ भौमे शुभो वै दक्षिणस्वरः ॥ अन्यवारेषु वामस्तु स्वरश्चैव शुभः स्मृतः ॥ १ ॥ निर्गमे वामतः श्रेष्ठः प्रवेशे दक्षिणः शुभः ॥ यः स्वरः सच नासाग्रे योगिनां मतमीदृशम् ॥ २ ॥

टी०—गुरु, शनि, रवि, मंगल, ये चारवारको दहिना सुर चलते प्रवेश करना श्रेष्ठ है; और चंद्र, बुध, शुक्र ये तीन वारको बांया सुर चलते निर्गमन श्रेष्ठ है ऐसा योगियोंका मत है.

वारानुसार छायाशकुन.

अष्टौ पादा बुधे स्युर्नव धरणिसुते सप्त जीवे पदानि
ज्ञेयश्चैकादशोर्के शनिशशिभृगुषु प्रोक्तमर्थे चतुष्कम् ॥
तस्मिन् काले मुहूर्ते सकलगुणयुते कार्यसिद्धिः
शुभोक्ता नास्मिन्पञ्चांगशुद्धिर्न खलु शशिबलं भाषितं
गर्गमुख्यैः ॥ १ ॥

टी०—आपनी पडछांही आठ कदम आवे तो बुधवारको गमन करना. ९ कदम आवे तो मंगलवारको गमन करना. ७ कदम आवे तो गुरुवारको, ११ कदम आवे तो रवि, शनि, सोम, शुक्र ये चारवारको गमन करना. सर्व कार्य सिद्धिके अर्थ सकलगुणयुक्त यह मुहूर्त है.

काकशब्दशकुन.

काकस्य वचनंस्मृत्वापादच्छायां तु कारयेत्॥१॥त्रयोदशयुतां कृत्वा षड्भिर्वै भागमाहरेत् ॥ १ ॥ लाभः खेदस्तथासौख्यं भोजनं च धनागमः॥ अशुभं चक्रमेणैव गर्गस्य वचनं तथा

टी०—कौवेका शब्द सुनकर अपनी पडछांही पैरसे गिनना, उसमें १३ मिलाना, ६ से भागना, शेष रहे उसका फल, १ रहे तो लाभ, २ रहे तो खेद, ३ रहे तो सौख्य, ४ रहे तो भोजनप्राप्ति, ५ रहे तो धनलाभ, शून्य रहे तो अशुभ ऐसे गर्गाचार्यका मत है.

पिंगलशब्दशकुन.

उल्हासः किल्बिले चैव चिल्बिल्यां भोजनं तथा॥ बंधनं खिटिखिट्टि स्यात्कुर्कुरशब्दैर्महद्भयम् ॥ १ ॥

टीका--किलबिल शब्द हुवा तो उल्हास, चिल्बिलशब्द हुवा तो भोजनप्राप्ति. खिटखिटशब्द हुवा तो बंधन कुर्कुरशब्द हुवा तो महाभय ऐसे जानना.

शिंकाशब्दशकुन.

बुधैश्छिक्कारवं श्रुत्वा पादच्छायांच कारयेत् ॥ त्रयोदशयुतां कृत्वा चाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ १॥ लाभः सिद्धिर्हानिशोकौ भयं श्रीर्दुःखनिष्फले ॥ क्रमेणैव फलं ज्ञेयं गर्गेण च यथोदितम् २

टी०—पंडितोंने छींकका शब्द सुनकर अपनी छाया पांवसे गिनना, उसमें १३ मिलाना, आठसे भागना. शेष रहे उसका फल—१ रहे तो लाभ, २ रहे तो सिद्धि, ३ रहे तो हानि, ४ रहे तो शोक, ५ रहे तो भय, ६ रहे तो लक्ष्मीप्राप्ति, ७ रहे तो दुःख, ८ रहे तो निर्फल, ऐसा गर्गमुनि कहते हैं.

शिंकाशकुन २ रा.

शिंकाप्रश्नं प्रवक्ष्यामि पूर्वस्यामशुभं फलम् ॥
आग्नेय्यां शोकदुःखं स्यादरिष्टं दक्षिणे तथा ॥

नैर्ऋत्यां च शुभं प्रोक्तं पश्चिमे मिष्टभक्षणम् ॥
वायव्यां धनलाभस्तु उत्तरे कलहस्तथा ॥ २ ॥
ईशान्यां च शुभं ज्ञेयमात्मछिंकामहद्भयम् ॥
ऊर्ध्वं चैव शुभं ज्ञेयं मध्ये चैव महद्भयम् ॥ ३ ॥
आसने शयने चैव दाने चैव तु भोजने ॥
वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिकाश्च शुभावहाः ॥ ४ ॥

टी०–दिशानुसार छींकके फल–पूर्वकी छींक अशुभ, आग्नेयकी शोक दुःखकारक, दक्षिणकी अरिष्टकारिणी, नैर्ऋत्यकी शुभ, पश्चिमकी मिष्टान्नभक्षण देनेवाली, वायव्यकी धनदायक, उत्तरकी कलहकारिणी, ईशान्यकी शुभ, अपने छींकका महद्भय, ऊर्ध्व आई तो शुभ, मध्यमें आई तो महाभय; आसनपर, शयन स्थानमें, दान देते, भोजन करते, वामभागमें, पृष्ठभागमें, ये ६ स्थानमें शुभ जानना.

पल्लीशब्दशकुन.

वित्तं ब्रह्मणि कार्यसिद्धिमतुलां शक्रे हुताशे भयं
याम्ये मित्रवधः क्षयश्च निर्ऋतौ लाभः समुद्रालये ॥
वायव्यां वरमिष्टमन्नमशनं सौम्येऽर्थलाभस्तथा
ईशान्यां गृहगोधिकार्थमतुलं सर्वत्रभूमौ भयम् ॥ १ ॥

टी०–पल्ली (छिपकिली) शब्दका दिशानुसार फल कहतेहैं. ऊर्ध्वदिशामें धनप्राप्ति, पूर्वमें कार्यसिद्धि, आग्नेयमें भय, दक्षिणमें मित्रवध, नैर्ऋत्यमें क्षय, पश्चिममें लाभ, वायव्यमें मिष्टान्नभोजन, उत्तरमें लाभ, ईशान्यमें कार्यसिद्धि, भूमीऊपर शब्द हुवा तो भय ऐसे जानना.

पल्लीपतन तथा सरठारोहणका फल.

राज्यं तु शिरसि ज्ञेयं ललाटे बंधुदर्शनम् ॥
भ्रूमध्ये राजसन्मानमुत्तरोष्ठे धनक्षयम् ॥ १ ॥
अधरोष्ठे धनैश्वर्यं नासांते व्याधिपीडनम् ॥
आयुष्यं दाक्षिणे कर्णे बहुलाभस्तु वामके ॥ २ ॥
अक्ष्णोस्तु बंधनं ज्ञेयं भुजे भूपतितुल्यता ॥
राजक्षोभं तथा वामे कंठे शत्रुविनाशनम् ॥ ३ ॥
स्तनद्वये च दुर्भाग्यमुदरे मंडनं शुभम् ॥

प्रज्ञानाशः पृष्ठदेशे जानुजंघे शुभावहम् ॥ ४ ॥
करद्वये वस्त्रलाभः स्कंधयोर्विजयी भवेत् ॥
नाभौ बहुधनं प्रोक्तमूर्वोश्चैव हयादिकम् ॥ ५ ॥
दक्षिणे मणिबंधेच मनस्तापं धनक्षयम् ॥
मणिबंधे तथा वामे कीर्तिवृद्धिधनक्षयम् ॥ ६ ॥
नखेषु धान्यलाभश्च वक्रे मिष्टान्नभोजनम् ॥
गुल्फयोर्बंधनं ज्ञेयं केशाते मरणं ध्रुवम् ॥ ७ ॥
अध्वानं दक्षिणे पादे वामे बंधुधनक्षयम् ॥
स्त्रीनाशः स्यात्पादमध्ये पादांते मरणं भवेत् ॥ ८ ॥
पल्ल्याः प्रपतने ज्ञेयं सरठस्याधिरोहणे ॥
यात्रोद्युक्तमनुष्यस्य स्याच्छुभाशुभसूचकम् ॥ ९ ॥
तिलमाषादिदानं च स्नात्वा देयं द्विजन्मने ॥
पिनाकिनं नमस्कृत्य जपेन्मत्रं षडक्षरम् ॥ १० ॥
शतं सहस्रमथवा सर्वदोषनिबर्हणम् ॥
शिवालये प्रदद्याद्वै दीपं दोषोपशांतये ॥ ११ ॥

टी०—गमन करनेको तयार हुवा मनुष्य उसके शरीरपर पल्ली पडे या सरठ आरोहण करे तो शुभाशुभसूचक स्थानानुसार फल कहतेहैं—

शरीरके स्थानानुसार शुभाशुभ फल.

१ शीर्ष.	राजप्रा.	११ वामबाहु.	राज्य.	२१ जांघपर.	घोडा.
२ कपाल.	बंधुदर्श.	१२ कण्ठपर.	शत्रुना.	२२ दहिनेमणि.	धनक्ष.
३ भौंह.	राजस.	१३ स्तनोंपर	दुर्भाग्य.	२३ बांईमणि.	कीर्ति.
४ ऊपरकाहोंठ.	धनक्ष.	१४ उदरपर.	शुभमंड.	२४ नखपर.	मिष्टान्न.
५ नीचेका हों.	धनैश्व.	१५ पृष्ठपर.	बुद्धिना.	२५ मुखपर.	धान्य.
६ नासिका.	व्याधीप्र	१६ घुटनेपर.	शुभ.	२६ गुल्फपर.	बंधन.
७ दहिनाकान.	आयु.	१७ पेडुरीपर.	शुभ.	२७ केशपर.	मरण.
८ बांयाकान.	बहुतला.	१८ दोनोंहाथ.	वस्त्रला.	२८ दक्षिणपा.	मार्ग.
९ नेत्रऊपर.	बंधन.	१९ कंधेपर.	विजय.	२९ वामपाद.	बंधुना.
१० बाहूपर.	राजा.	२० नाभीपर.	बहुधन.	३० मध्यपाद.	स्त्रीना.

पल्ली शरीरपर पडे या सरठ चढे तो सचैल स्नान करना, और तील उडदी ये दान देना; महादेवको नमस्कार करना. शिवमंत्रका ११ वेर जप करना. शिवालयमें दीप लगानेसे दोष जाताहै.

अंगस्फुरण.

मनुरुवाच ॥ ब्रूहि मे त्वं निमित्तानि ह्यशुभानि शुभानिच ॥ सर्वधर्मभृतां श्रेष्ठ त्वं हि सर्वं विबुध्यसे ॥ १ ॥ अंगानां स्पंदनं चैव शुभाशुभविचेष्टितम् ॥ तन्मे विस्तरतो ब्रूहि येन स्यात्तद्विधं भुवि ॥ २ ॥

टी०—मनु मत्स्यको प्रश्न करताहै—हे धर्म जाननेवालोंमें श्रेष्ठ, शुभाशुभनिमित्तसूचक अंगस्फुरण कौनसे हैं सो आप विस्तारसे कहो कि जिसका वैसा अनुभव लोकोंमें मिले; क्योंकि आप सर्वज्ञ हो, तब मत्स्य कहते हैं—

मत्स्य उवाच ॥ अंगस्य दक्षिणे भागे प्रशस्तं स्फुरणं भवेत् ॥ अप्रशस्तं तथा वामे पृष्ठस्य हृदयस्य च ॥ ३ ॥ पृथ्वीलाभो भवेन्मूर्ध्नि ललाटे रविनंदन ॥ स्थानं विवृद्धिमायाति भ्रूनसोः प्रियसंगमः ॥ ४ ॥ भृत्यलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगुपांते धनागमः ॥ उत्कंठोपगमो मध्ये दृष्टं राजन्विचक्षणैः ॥५॥ दृग्बंधने संगरे च जयंशीघ्रमवाप्नुयात् ॥ योषिल्लाभोपांगदेशे श्रवणांते प्रियश्रुतिः ॥ ६ ॥ नासिकायां प्रीतिसौख्यं प्रियाप्तिरधरोष्ठयोः ॥ कंठे तु भोगलाभः स्याद्भोगवृद्धिरथांसयोः ॥७॥ सुहृत्स्नेहश्च बाहुभ्यां हस्ते चैव धनागमः ॥ पृष्ठे पराजयो वक्षःस्थले चापजयो भवेत् ॥ ॥८॥ कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाः प्रजननं भगे ॥ स्थानभ्रंशो नाभिदेशे आंत्रे चैवं धनागमः ॥ ९ ॥ जानुसंधौ परैः संधिर्बलवद्भिर्भवेन्नृप ॥ एकदेशे भवेत्स्वामी जंघाभ्यां रविनंदन ॥ १० ॥ उत्तमस्थानमाप्नोति पद्भ्यां प्रस्फुरणे नृप ॥ अलाभं चाध्वगमनं भवेत्पादतले नृप ॥ ११ ॥

टी०— अंगस्फुरण दक्षिणभागमें शुभ, पृष्ठभाग, हृदय, इनमें अशुभ जानना

मत्स्य कहताहै–हे सूर्यपुत्र ! अंगस्फुरण दक्षिणभागमें शुभ, वामभागमें अशुभ, वैसाही पृष्ठभाग और हृदयप्रदेशमें अशुभ जानना. इसरीतिसे मस्तकादि स्थानोंके फल नीचे चक्रमें लिखेमुजब जानना.

अंगस्फुरणके स्थानपरत्वे शुभाशुभफल.

स्थान.	फल.	स्थान.	फल.	स्थान.	फल.
१ मस्तक.	पृथ्वीलाभ.	१० नाभि.	प्री. सौ. ला.	१९ लिंग.	स्त्रीप्राप्ति.
२ ललाट.	स्थानवृद्धि.	११ अधरो.	प्रियवस्तुला.	२० नाभी.	स्थानभ्रंश.
३ भ्रूमध्य	प्रियदर्शन.	१२ कंठ.	ऐश्वर्यप्राप्ति.	२१ आंतरडा	धनप्राप्ति.
४ नेत्रसमीप	सेवकलाभ.	१३ कंधा.	भोगवृद्धि.	२२ घुटनेसं-	बलवान्. श-
५ पलक.	धनप्राप्ति.	१४ दोनोंभु.	मित्रसमाग.	धि उपसंधि	त्रुसे सलाह.
६ कंठमध्य.	राज्यप्राप्ति.	१५ दो. हाथ	धनप्राप्ति.	२३ पेंडुरी.	एकदे. स्वा.
७ दृग्बंध.	यु.ग.ज.ला.	१६ पृष्ठ.	पराजय.	२४ पांव.	उ. स्था. मा.
८ नेत्रप्रांत.	स्त्रीलाभ.	१७ वक्षस्थ.	अपजय.	२५ पादतल.	गमन.
९ कर्ण.	प्रियभा. श्र.	१८ कूंख.	प्रीति.		

स्त्रियोंका अंगस्फुरण.

लांछनं पीढकं चैवज्ञेयं स्फुरणवत्तथा॥ विपर्ययेण विहितः सर्वस्त्रीणां विपर्ययः ॥१॥ दक्षिणेपि प्रशस्तेंग प्रशस्तं स्याद्विशेषतः ॥

टी०–दोनों भौंहके बीचमें गोंदना गोंदतेहैं वो स्थान, तैसेही ऊपर कहेहुए स्फुरणस्थान सब विपरीत लेना, स्त्रियोंको उनके वामांग शुभ होतेहैं.

अंगस्फुरणोद्भूतं रिष्टं सकलं विनाशयति सद्यः ॥
द्विजसंतर्पणमथवा काचंनदानं द्विजाय भूमिपते ॥ १ ॥

टी०–हे राजा अनिष्टफलका निवारण करनेकेवास्ते ब्राह्मणसंतर्पण और सुवर्णदान इत्यादि करना तो स्फुरणदोष परिहार होताहै.

नेत्रस्फुरण

नेत्रस्योर्ध्वं हरतिसकलं मानसं दुःखजालं नेत्रोपांते दिशति चधनं नासिकांते च मृत्युः॥ नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत्संगरे भंगहेतुर्वामंचैतत्फलमविफलं दक्षिणे वैपरीत्यम् ॥ १ ॥ स्त्रीणां विपर्ययः ।

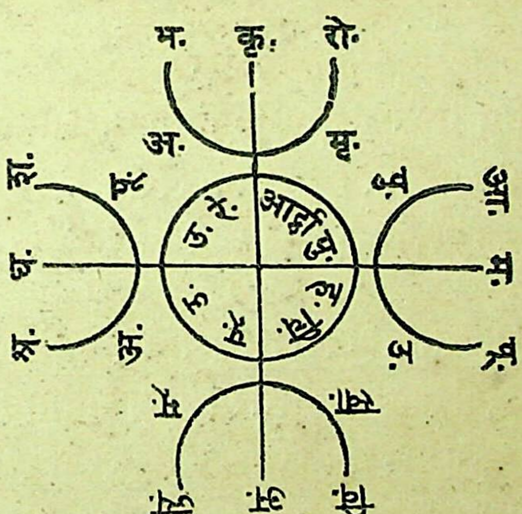
टीका०–नेत्रके ऊर्ध्वप्रांतके स्थान स्फुरणको प्राप्त होते हैं, उनके फल कहतेहैं. नेत्रके ऊपरकी बरौनी फुरे तो मनका दुःख जाय, धनप्राप्ति होगी. नासिकाके

पासकी फडके तो मृत्यु, अधरप्रांत फरके तो युद्धमें अपजय ये सब फल वामनेत्रके लेना. दक्षिण नहीं. स्त्रियोंका दक्षिणनेत्रके लेना, वाम विफल.

त्रिशूलयंत्र.

रोगे कुजर्क्षतश्चान्द्रं गमनेऽग्न्यर्क्षतस्तथा ॥
अन्यस्मिंस्तु शुभे कार्ये सूर्यर्क्षाद्गणयेद्बुधः ॥ १ ॥
युद्धे तु चन्द्रनक्षत्राद्रविभं गणयेत्तथा ॥
त्रिशूलयंत्रतो ज्ञेयं फलमेतच्छुभाशुभम् ॥ २ ॥

टी०—रोगीके प्रश्नको त्रिशूल मध्याग्रमें मंगल जिस नक्षत्रपर होवे सो देना, और चंद्र जिस स्थानमें यंत्रमें आवेगा वो फल लेना. ऐसे आगेका क्रम जानना. युद्धमें जाना होय तो दिननक्षत्रसे सूर्य नक्षत्रतक, और गमन करना होतो कृत्तिकासे दिननक्षत्रतक, और अन्यकार्यको सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक, ऐसा क्रम जानना.



त्रिशूलाग्रे भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिरष्टकम् ॥
लाभं क्षेमं जयारोग्यमन्तर्गर्भेषु संमतम् ॥ १ ॥

टी०--त्रिशूलके अग्रभागमें दिननक्षत्र आवे तो मृत्यु, बाहरके अष्टकमें आवेतो मध्यम, मध्याष्टकमें आवेतो लाभ, क्षेम, जय और आरोग्य ये सर्व संमत जानना.

गमनलग्न.

चरलग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः ॥

लग्ने स्थिरे न गंतव्यं यात्रायां क्षेममीप्सुभिः ॥ १ ॥

टी०–कल्याणकी इच्छा करनेवालोंने चरलग्नमें तथा द्विस्वभाव लग्नमें गमन करना, स्थिरलग्नमें गमन करना नहीं. चरलग्न (मेष, कर्क, तूल, मकर) द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धन, मीन,) इनसे अवशिष्ट हैं सो स्थिर जानना.

दूसरा प्रकार.

लग्ने कार्मुकमेषतौलिनि गते कार्ये विलंबो नृणां पंचत्वं मकरे तथैव च घटे तद्वत्फलं वृश्चिके ॥ सिंहे कर्कटके वृषे परिगतः सर्वार्थसिद्धिं लभेत्कन्यामीनगतस्तथैव मिथुने सौख्यं शुभान्नं वसु ॥ १ ॥

टी०–धन, मेष, तुल, ये तीन लग्नपर गमन कियाजाय तो कार्य विलंबसे होगा. मकर, कुंभ, वृश्चिक ये लग्न मृत्युकारक हैं. सिंह, कर्क, वृषभ ये लग्न कार्य करनेवाले हैं. कन्या, मीन, मिथुन ये लग्न सौख्यकारक, शुभ और अन्न धन देनेवाले हैं.

द्वादशस्थानानुसार गमनलग्नमें ग्रहबल देखना.

प्रथमस्थानं ॥ जन्मस्थं चाष्टमं त्याज्यं लग्ने द्वादशमेव च ॥ ग्रहाणां च बलं वीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयं नृपः ॥ १ ॥

टी०–राजाने लग्नमें, अष्टमस्थानमें और द्वादशस्थानमें पापग्रह वर्जित कर ग्रहबल देख दिग्विजयको गमन करना. तो विजय व कार्य सिद्ध होगा.

स्थाने यदा स्युर्गुरुसौम्यशुक्राः सिद्ध्यंति कार्याणि च पंचमेऽह्नि ॥ राज्यास्पदं वा सुखदेशलाभं मासस्य मध्ये गृहभावयुक्ते ॥ १ ॥

टी०–लग्नमें गुरु अथवा बुध, शुक्र, होवे तो, पांच दिनमें या १ मासमें राज्यपद, सुख अथवा देशकी प्राप्ति जानना.

द्वितीयस्थानके फल.

जीवो बुधो वा भृगुनंदनो वा स्थाने द्वितीये गमनस्य काले ॥ सुवस्त्रलाभं चतुरंगलाभं मासस्य मध्ये च चतुर्दशेन्हि ॥ १ ॥

टी०–द्वितीयस्थानमें गुरु, बुध अथवा शुक्र हों तो वस्त्र और घोडा १ महिनेमें या १४ दिनमें प्राप्त होगा.

क्रूरा धनस्था रविराहुभौमाः सौरिश्च केतुस्त्रिभिरेव मासैः ॥
वित्तस्य नाशं च ददाति मृत्युं सत्यं हि वाक्यं मुनयो वदंति ॥४॥

टी०—द्वितीयस्थानमें रवि, राहु, मंगल, शनि, या केतु इनमेंसे कोईभी क्रूरग्रह होवे तो ३ मासमें मृत्युकारक, वित्तनाशक होगा. यह मुनियोंका सत्यवाक्य है.

तृतीयस्थानका फल.

स्थाने तृतीये गुरुभार्गवौ च सोमस्य सूनुश्च निशापतिश्च ॥
करोति कार्यं सुफलं च सर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण ॥ ५ ॥

टी०—तृतीयस्थानमें गुरु,शुक्र, अथवा चंद्र, बुध हो तो दो पक्षमें वा तीन दिनमें कार्य सफल होगा.

चतुर्थस्थानका फल.

क्रूराश्चतुर्थे गमने यदा तु न स्युश्च शेषाः शुभदा हि कार्ये ॥
तत्रापि दैवेन भवेच्च सिद्धिर्मासत्रयेणापि दशाहमध्ये ॥ ६ ॥

टी०—क्रूर ग्रह जो ऊपर कहे उनमेंसे कोईभी एक ग्रह चतुर्थस्थानमें वर्ज कर शेष रहे जो शुभग्रह सो सब शुभ. परंतु दैवयोगसे तीनमास वा दशदिनमें कार्यसिद्धि होगी.

पंचमस्थानके फल.

गुरुर्भृगुश्चंद्रबुधो यदा स्याच्छुभे च लग्ने च सुते च युक्ताः ॥
कुर्वंति कार्यस्य च सिद्धिमिष्टां मासद्वयेनापि वदंति सत्यम् ॥७॥

टी०—गुरु, शुक्र, चंद्र अथवा बुध इन चारोंमेंसे एक ग्रह लग्नमें और पंचमस्थानमें हो तो शुभ, दो महिनेसे इष्टकार्यकी सिद्धि होगी.

षष्ठस्थानके फल.

जीवश्च शुक्रश्च बुधश्च षष्ठे करोति यात्रा सुफला विलग्नात् ॥
पक्षद्वयेनापि वदंति सत्यं सौम्यर्क्षसंस्थः सबलश्च चंद्रः ॥ ८ ॥

टी०—गुरु, शुक्र अथवा बुध इनमेंसे कोई एक ग्रह छठे स्थानमें रहे तो यात्रा सफल होगी, और मृगनक्षत्रका चंद्र उस स्थानमें हो तो १ मासमें सब कार्यसिद्धि होगी.

सप्तमस्थानके फल.

चेत्सप्तमस्था गुरुसोमसौम्याः कुर्वंति यात्रां विजयं नृपाणाम् ॥
सर्वे नृपास्तस्य भवंति वश्या मासद्वयेनापि च पंचभिर्दिनैः॥९॥

टी०—सप्तमस्थानमें गुरु, चंद्र, वा बुध हो तो यात्रामें विजय होगा, सब राजा दोमासमें या पांचदिनमें वश होंगे.

अष्टमस्थानके फल.

क्रूरश्च सर्वे यदि लग्नकाले मृत्युस्थिता मृत्युकरा भवंति ॥
सौम्यो गुरुर्वा भृगुनंदनश्च दीर्घायुषं मृत्युकरश्च चंद्रः ॥१०॥

टी०—शनि, राहु, रवि, मंगल, केतु इन क्रूरग्रहोंमेंसे आठवेंस्थानमें कोई होतो मृत्युकारक, और ये न हों और सौम्यग्रह हो तो आयुष्यकी वृद्धि होगी; परंतु चंद्र न होवे वो मृत्युकारक है.

नवमस्थानके फल.

धर्मस्थिताः स्युर्यदि पापखेटाः प्रयाणकाले च तथैव चंद्रमाः ॥
तदा जयं वै सबले च चंद्रे मासत्रयेणापि दिनैश्चतुर्भिः ॥ ११ ॥

टी०—नवमस्थानमें पापग्रह और चंद्र हो, परंतु चंद्र बलवान् होवे तो तीन मासमें अथवा चार दिनमें कार्यसिद्धि होगी.

धर्मस्थितौ वा यदि जीवशुक्रौ सोमस्य सूनुर्यदि लग्नकाले ॥
लग्ने चरे वा यदि वा स्थिरे वा कार्यस्य सिद्धिश्च भवेच्च लाभः ॥१२॥

टी०—नवमस्थानमें गुरु, शुक्र अथवा बुध ये चरलग्नस्थित रहते या स्थिरलग्नमें रहें तो कार्यसिद्धि होगी.

कर्मस्थान फल.

कर्मस्थिताः पापखगास्तु सौम्याः कुर्वंति कार्यं शनिवर्जिताश्च ॥
लग्ने चरे वा यदि वा स्थिरे वा मासत्रयेणापि च चैकमासतः ॥१३॥

टी०—दशमस्थानमें रवि आदि पापग्रह वर्जित कर सौम्यग्रह स्थिरलग्नमें वा चरलग्नमें उक्त हैं. तीनमासमें वा १ मासमें कार्यसिद्धि होगी.

लाभस्थान फल.

लाभस्थितौ गुरुबुधौ भृगुनंदनो वा क्रूराश्च सर्वे शशिनैव युक्ताः ॥
सद्यः फलाप्तिश्च भवेद्धि यात्रा पक्षैकमध्ये दिवसत्रयाच्च ॥ १४ ॥

टी०—एकादशस्थानमें रवि आदि पापग्रह चंद्रसहित, वा गुरु आदि सौम्य ग्रह हों तो एकपक्षमें अथवा तीनदिनमें कार्यसिद्धि होगी.

सर्वे शुभा द्वादशसंस्थिताश्च यात्रा भवेत्तत्र विचित्रलाभः ॥
पापाश्च सर्वे व्ययदा भवंति यात्राफलं गर्गमुनिप्रणीतम् ॥१५॥

टी०—द्वादशस्थानमें सर्व शुभग्रह हों तब यात्रा करनेपर विचित्रवस्तुका लाभ होगा. और पापग्रह व्ययस्थानमें हों तो सब नाश होता है, ऐसा जानना. यह गर्गका मत है.

प्रस्थान रखनेका प्रकार.

सुमुहूर्ते स्वस्थगमनासंभवे प्रस्थानं कार्यम्.

यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलम् ॥
विप्रादिक्रमतः सर्वं स्वर्णधान्याम्बरादिकम् ॥ १६ ॥

टी०-सुमुहूर्तपर गमन करनेका अभाव होतो प्रस्थानमें वस्तु रखनेको स्वस्ववर्णानुसार कहतेहैं. ब्राह्मणको यज्ञोपवीत, क्षत्रियको शस्त्र, वैश्यको सहत और शूद्रको फल ये क्रमसे जानना. और सबको सोना, वस्त्र, धान्य ये उक्त हैं.

प्रस्थानकी दिनसंख्या.

राजा दशाहं पंचाहमन्यो हि प्रस्थितो वसेत् ॥
अंगप्रस्थानके पूर्णं वस्तुप्रस्थानकेऽर्धकम् ॥ २ ॥

टी०-राजाओंने प्रस्थान रखेहुये दिनसे दशदिन, और सबोंको पांच दिनको वो मुहूर्त उपयोगमें आताहै. वस्तुप्रस्थानमें अर्धफल और अंगप्रस्थानमें संपूर्ण फल जानना.

प्रस्थान कितने दूर रखना.

गेहाद्गेहांतरं गर्गः सीम्नः सीमांतरं भृगुः ॥
बाणक्षेपं भरद्वाजो वसिष्ठो नगराद्बहिः ॥ ३ ॥
प्रस्थानेपि कृते नायान्महादोषान्विते दिने ॥

टी०-गर्गके मतसे दूसरेके घरमें, भृगुके मतसे सीमाके भीतर, भरद्वाजके मतसे तीर छोडकर जितनी दूर पडे उतनी दूरपर, वसिष्ठके मतसे नगरके बाहेर प्रस्थान रखनेपर महान् दोषयुक्त जो दिवस हो गमन करना नहीं.

प्रस्थानके दिन वर्ज्यपदार्थ.

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडद्यूताश्रुदुग्धासव-
क्षाराभ्यंगभयासिताम्बरवमिस्तैलं कटूज्झेद्गमे ॥

क्षीरक्षौररतीः क्रमात्रिशरसप्ताहंपरंतद्दिनं ॥
रोगं स्त्र्यार्तवकं सितान्यतिलकं प्रस्थानकेऽपीति च ॥४॥

टी०--कोप, क्षौर, स्त्रीसंग, आयास, मांस, गुड, द्यूत, रोदन, दूध, मद्य, क्षार, अभ्यंग, अन्यविषयक भीति, सुफेद सिवाय अन्यरंगका वस्त्र, वमन, तैल, तीखा इतने पदार्थ प्रस्थान रखनेपर वर्जना. उनमेंसे दूध, क्षौर, स्त्रीसंग ये क्रमसे ३।५। ७ दिनतक प्रस्थान रखनेबाद वर्जना. बाकीके सब प्रस्थानके दिन वर्जना, और शुभातिरिक्त तिलक, रोग विषय, चिंता, ये उसदिन वर्जना.

मात्स्योक्त दुष्टशकुन.

औषध्या च नियुक्तो हि धान्यं कृष्णं तु यद्भवेत् ॥
कार्पासश्च तृणं शुष्कं शुष्कं गोमयमेव च ॥ १ ॥
इंधनं च तथाङ्गारो गुडः सर्पिस्तथा शुभम् ॥
अभ्यक्तो मलिनो मंदस्तथा नग्नश्च मानवः ॥ २ ॥
मुक्तकेशो रुजार्तश्च काषायांबरधारकः ॥
उन्मत्तः कथितो सत्वो दीनो वाऽथ नपुंसकः ॥ ३ ॥
अथःपंकस्तथा चर्मकेशबंधनमेव च ॥
तथैवोद्धृतसाराणि पिण्याकादि तथैव च ॥ ४ ॥
चाण्डालस्य शवं चैव राजबंधनपालकाः ॥
बंधकाः पापकर्माणो गर्भिणी स्त्री तथैव च ॥ ५ ॥
तुषं भस्मकपालास्थिभिन्नभांडानि यानि च ॥
रक्तानि चैव भाण्डानि मृतसारंग एव च ॥ ६ ॥
एवमादीनि चान्यानि ह्यप्रशस्तानि दर्शने ॥
क्व यासि तिष्ठ आगच्छ किं ते तत्र गतस्य तु ॥
अन्यशब्दाश्च येऽनिष्टास्ते विपत्तिकरा अपि ॥ ७ ॥
ध्वजादौ वायसास्थानं क्रव्यादानं विगर्हितम् ॥
स्खलनं वाहनानां च वस्त्रसंगस्तथैव च ॥ ८ ॥

टी०—औषधीयुक्त मनुष्य, काकाधान्य, कपास, सूखीघास, सूखा गोवर, लकडी, भस्म, गुड, घी, दुष्टपदार्थ, अभ्यंग कियाहुवा, मलिन, नग्नमनुष्य, खुले हुए केशका (आदमी), रोगी गेरूका वस्त्र धारण करनेवाला, उन्मत्त, कंथा-युक्त पुरुष, पापी, दीन, नपुंसक, लोह, कीचड, चर्म, केश बंधे हुए हैं जिसके ऐसा पुरुष वा स्त्री, छाछ, तिलकी, खल्ली, चांडालका मुर्दा, कैदा, वधकर्ता, पापपुरुष, गर्भिणी स्त्री, तुष, भस्म, खोपडी, जुदे २ पात्र, तांबेके पात्र, मरा-हुआ सारंगपक्षी, इत्यादि गमनकालमें दुष्टशकुन होवें तो गमन वर्जना. कहांसे आये और कहां जावोगे, खडे रहो, ऐसे दूसरेके शब्द विपत्तिकारक होतेहैं. ध्वजपताका ऊपर कौवा बैठा हुआ, अग्निदान, वाहनका गिरपडना, कपडा पहिरताहुआ पुरुष अशुभ हैं.

दुष्टशकुनदोषनिवारण.

दुष्टे निमित्तेप्रथमे त्वमंगलयविनाशनम्॥केशवं पूजयेद्विद्वान्स्तवेन मधुसूदनम् ॥९॥ द्वितीये च ततो दृष्टे प्रतीपे प्रविशेद्गृहम् ॥

टी०—ऊपर कहेहुए दुष्टशकुन उनमेंसे प्रथम अमंगलपदार्थ देखनेमें आवे तो नाशकारक होताहै. इसके निवारणार्थ विष्णुकी पूजा और मधुसूदनका स्तवन करना, दूसरीवेर शकुन नजर आवे तो घरमें आना.

गमनकालमें उत्तमशकुन.

अथेष्टानि प्रवक्ष्यामि मंगलानि तथाऽनघ ॥
प्रशस्तो वाद्यशब्दश्च भिन्नभेरीरवस्तथा ॥ १ ॥
पुरतः शब्द एहीति शस्यते नतु पृष्ठतः ॥
गच्छेति चैव पश्चाद्यः पुरस्ताद्भुवि गर्हितः ॥ २ ॥
श्रेष्ठानि श्वेतपुष्पाणि पूर्णकुंभस्तथैव च ॥
जलजाःपक्षिणश्चैवमांसंमत्स्यस्यपार्थिव ॥ ३ ॥
गावस्तुरंगमोनागोवृद्धएकःपशुस्त्वजा ॥
त्रिदशाः सुहृदोविप्राज्वलितश्चहुताशनः ॥ ४ ॥
गणिकाचमहाभागदूर्वाश्चार्द्राश्च गोमयम् ॥
रुक्मंरूप्यंचताम्रंचसर्वरत्नानि चाप्यथ ॥ ५ ॥
औषधानिचसर्वज्ञोयवाः सर्वार्थकास्तथा ॥

खड्गपात्रंपताकाञ्चमृत्तिकायुधपीठकम् ॥ ६ ॥
राजलिंगानिसर्वाणिशवंरुदितवर्जितम् ॥
घृतंदधिपयश्चैवफलानिविविधानिच ॥ ७ ॥
स्वस्तिवृद्धिनिनादश्चनंद्यावर्तः सकौस्तुभः ॥
वादित्राणांशुभः शब्दोगंभीरः सुमनोहरः ॥ ८ ॥
गांधारषड्जऋषभायेगीताः सुस्वराः स्वराः ॥
वायुः सशर्करोत्युष्णः सर्वविघ्नविनाशकृत् ॥ ९ ॥
प्रतिलोमस्तथानीचोविज्ञेयोभयकृद्द्विजः ॥
अनुकूलोमृदुः स्निग्धोसुखस्पर्शः सुखावहः ॥ १० ॥
शस्तान्येतानिधर्मज्ञयत्रस्यान्मनसः प्रियम् ॥
मनसस्तुष्टिरेवात्रपरमंजयलक्षणम् ॥ ११ ॥
मनोत्सुकत्वंमनसः प्रहर्षः शुभस्यलाभो विजयप्रवादः ॥
मांगल्यलब्धिः श्रवणंचराज्ञोज्ञयानिनित्यंविजयावहानि॥१२॥
क्षेमंकरानीलकंठश्चोलूकखरजंबुकाः ॥ प्रस्थाने वामतः
श्रेष्ठाः प्रवेशेदक्षिणाः शुभाः ॥ १३ ॥

टी०—अब इष्ट और मंगलकारक शकुन कहते हैं. गमनकालमें प्रशस्त शकुन. बाजाके शब्द, जुदे २ नगाराके शब्द, आओशब्द अग्रभागमें शुभ और पृष्ठभागमें नेष्ट, जावो यह शब्द पीठ पीछे अच्छा, आगे नेष्ट. सफेद फल, पूर्णकुंभ, जीती मछली, पक्षी, मत्स्यका मांस ये शुभ जानना. गाय, घोडा, हाथी, वृद्धएक पशु, बकरी, देवता, सगे ब्राह्मण, जलतीहुई अग्नि, वेश्या,लीलीदूब,गोवर,सोना तांबा और सर्वरत्न, औषधी, सर्वज्ञ पुरुष, जव, सुफेत सरसो, खड्गपात्र पताका मृत्तिका, आयुध, आसन, राजाके सवचिन्ह, जिसके साथ कोई रोता नहीं ऐसा प्रेत, घी, दही, दूध, अनेकजातके फल, आशीर्वादशब्द, शंख, कौस्तुभमणि, बाजे, मनको आनंद देनेवाले शब्द ये विघ्ननाशक होतेहैं. गांधार, षड्ज, ऋषभ ये राग सुस्वर गाते, वायु रेतसहित अथवा उष्ण सर्वविघ्नोंका नाशकारक होताहै. संकरजातीका पुरुष, तैसेही नीचब्राह्मण, महान् भयानक, अपनेको अनुकूल पदार्थ, अच्छे और सुखस्पर्शित मनुष्यादि ये सब सुखप्रद होतेहैं. हे धर्मज्ञ ये शकुन कहे सो प्रशस्त हैं. इनमेंसे जो अपने मनको प्रिय हो उसका दर्शन बहुत

उत्तम और मनका संतोष येही जय देनेवाला होताहै. मनका हर्ष जानेके समय अंतःकरण शुभलाभ विजयवाद और मांगल्यकी प्राप्ति और श्रवण, आनंदयुक्त ये सब गमनकालमें विजय देनेवाले हैं. मयूर, अश्व, उलूकपक्षी, गवा, सियार ये प्रस्थानके समय वामभागको लेकर गमन करना, और प्रवेशमें दक्षिणभागमें लेना शुभ होगा.

आनंदादिशुभाशुभयोग.

सूर्येऽश्विभातुहिनरोचिषि चंद्रधिष्ण्यात्सार्पाच्चभूमितनयेचबुधेऽथ हस्तात् ॥ मैत्राद्गुरौभृगुसुतेखलुवैश्वदेवाच्छायासुतेवरुणभात्क्रमशः स्युरेवम् ॥ १ ॥ आनंदः कालदंडश्चधूम्राख्योथप्रजापतिः ॥ सौम्योध्वांक्षोध्वजोनामाश्रीवत्सोवज्रमुद्गरौ ॥ २ ॥ छत्रंमैत्रंमानसश्चपद्माख्योलुंबकस्तथा ॥ उत्पातोमृत्युकाणाख्यौ सिद्धिश्चैवशुभोऽमृतः ॥ ३ ॥ मुसलोथगदाख्यश्चमातंगोराक्षसश्चरः ॥ स्थिरः प्रवर्धमानश्चयोगाऽष्टाविंशतिः क्रमात् ॥ ४ ॥ फलं—आनंदेलभतेसिद्धिं कालदंडेमृतिंतथा ॥ धूम्राख्येनसुखंप्रोक्तंसौभाग्यंच प्रजापतौ ॥ ५ ॥ सौम्येचैवमहत्सौख्यंध्वांक्षेचैवधनक्षयम् ॥ ध्वजनाम्निचसौभाग्यंश्रीवत्सेसौख्यसंपदः ॥ ६ ॥ वज्रेक्षयोमुद्गरेचश्रीनाशस्तुतथैवच।छत्रेचराजसन्मानोमैत्रेपुष्टिर्नसंशयः ॥ ७ ॥ मानसेचैवसौभाग्यंपद्माख्येचधनागमः ॥ लुंबकेधनहानिश्चउत्पातेप्राणनाशनम् ॥ ८ ॥ मृत्युयोगेभवेन्मृत्युः कोणेचक्लेशमादिशेत् ॥ सिद्धियोगेभवेत्सिद्धिःशुभेकल्याणमेवच ॥ ९ ॥ अमृतेराजसन्मानोमुसलेचधनक्षयः ॥ गदाख्येचाक्षयाविद्यामातंगेकुलवर्धनम् ॥ १० ॥ राक्षसेतुमहत्कष्टंचरेकार्यंचसिद्धयति ॥ स्थिरयोगेगृहारंभोप्रवृद्धेपाणिपीडनम् ॥ ११ ॥

टी—आनंदादि योग २८ उनमें एक २ योगको सातवार, सात नक्षत्र उनका क्रम रविवारको अश्विनी, सोमवारको मृग, मंगलको आश्लेषा, बुधको हस्त, गुरुवारको अनुराधा, शुक्रवारको उत्तराषाढा, शनिवारको शततारका ऐसे नक्षत्र आये तो आनंदादि योग होते हैं. ये २८ योगोंका क्रम कोष्ठकमें लिखाहै.

योगोंके नाम.		रवि.	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फळ
१	आनंद	अश्वि.	मृग.	आश्ले,	हस्त	अनुरा	उ.षा	शत.	सिद्धि.
२	काळदं.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा.	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्ति.	पुनर्व.	पूर्वा	स्वाती	मूळ	श्रव	उ.भा.	असुख
४	प्रजाप.	रोहिणी	पुष्य.	उत्तरा	विशा.	पू.षा.	धनि	रेवती	सौभा.
५	सौम्य	मृग	आश्ले.	हस्त	अनुरा.	उ.षा.	शत	अश्वि.	म.सौ.
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा.	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू भा	भर.	धनक्षय
७	ध्वज	पुनर्वसु	पूर्वा	स्वाती	मूळ	श्रवण	उ भा	कृत्ति	सौभा
८	श्रीव.	पुष्य	उत्तरा	विशा.	पू. षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि	सौ सं
९	वज्र	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ. षा.	शतता	अ	मृग	क्षय
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा.	भर	आर्द्रा	ल ना
११	छत्र	पूर्वा	स्वाती	मूळ	श्रवण	उ. भा.	कृत्ति	पुनर्व	राजस
१२	मैत्र	उत्तरा	विशा.	पू. षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहि	पुष्य	पुष्टि
१३	मानस	हस्त	अनु.	उ.षा.	शतता	अश्वि	मृग	आ.	सौभा.
१४	पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	धनप्रा
१५	लुंबक	स्वाती	मूळ	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्व	पूर्वा	धन हा
१६	उत्पा.	विशा.	पू. षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्त	प्राणना
१७	मृत्यु	अनुरा.	उ. षा.	शतता	अश्वि.	मृग	आ	हस्त	मृत्यु
१८	काण	ज्येष्ठा	अभि.	पू. भा.	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूळ	श्रवण	उ. भा.	कृत्ति	पुनर्वसु	पूर्वा	स्वा	का सि
२०	शुभ	पू. षा.	धनि.	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्त	विशा	कल्या
२१	अमृत	उ. षा.	शतता.	अश्वि.	मृग	आश्ले	हस्त	अनु	राजस
२२	मुसळ	अभि.	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धनक्षय
२३	गद	श्रवण	उ. भा.	कृत्ति	पुनर्व.	पूर्वा	स्वा	मूळ	भक्ष वि
२४	मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहि	पुष्य	उत्तरा	विशा	पू. षा.	कुलवृ
२५	राक्षस	शततार.	अश्वि.	मृग	आश्ले	हस्त	अनु	उ षा	महाक
२६	चर	पू. भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	कार्य
२७	स्थिर	उ. भा.	कृत्ति.	पुनर्वसु	पूर्वा	स्वाती	मूळ	श्रव	गृहारं
२८	प्रवर्ध	रेवती	रोहि.	पुष्य	उत्तरा	विशा.	पू षा	धनि	लग्न

चरादित्रयोदशयोग.

चरयोग ॥ रवौपूषागुरौपुष्यःशनौमूलं भृगौमघा॥सौम्येब्राह्मंविशाभौमेचंद्रेर्द्राचरयोगकः ॥ १ ॥ ककचयोग ॥ रवौतुद्वादशी प्रोक्ता भौमेचदशमीतथा ॥ चंद्रेचैकादशीप्रोक्तानवमीबुधवासरे ॥ २ ॥ शुक्रेचसप्तमीज्ञेयाशनौचैवापिषष्ठिका ॥ गुरौचाष्टमिकाज्ञेयोयोगस्तुक्रकचोबुधैः ॥३॥ दग्धयोगः॥ बुधवारेतृतीया स्यात्पंचमी भौमवासरे ॥ षष्ठीगुरावष्टमीचभृगुवारे तथाभवेत् ॥ ४ ॥ एकादशीसोमवारेनवम्यांमंदवासरः ॥ द्वादश्यामर्कवारश्चदग्धयोगाअमीस्मृताः ॥ ५ ॥ मृत्युदा ॥ रवौभौमेभवेन्नंदा भद्राजीवशशांकयोः ॥ जयाशुक्रेबुधेरिक्ताशनौपूर्णाचमृत्युदा ॥ ६ ॥ सिद्धियोगः ॥ शुक्रेनंदाबुधेभद्राजयाभौमेप्रकीर्तिता॥ शनौरिक्तागुरौपूर्णासिद्धियोगाउदाहृताः ॥ ७ ॥ उत्पातादियोग ॥ विशाखादिचतुष्कंतुभास्करादिक्रमेणवै ॥ उत्पतमृत्युकालाख्यसिद्धियोगाःप्रकीर्तिताः ॥ ८ ॥ यमदंष्ट्रयोग—मघा धनिष्ठासूर्येतुचंद्रेमूलविशाखके ॥ कृत्तिकाभरणीभौमेसौम्येपूषा पुनर्वसुः ॥९ ॥ गुरावुषाऽश्विनीशुक्रेरोहिणीचानुराधिका ॥ शनौविष्णुः शतभिषक्‍यमदंष्ट्रः प्रकीर्तितः ॥ १० ॥ यमघंटयोग रवौमघाबुधेमूलंगुरौचैवतुकृत्तिका ॥ भौमेचार्द्राशनौहस्तः शुक्रे चैवतुरोहिणी ॥ ११ ॥ चंद्रेविशाखायोगोयंयमघंटःप्रकीर्तितः ॥ १२ ॥ मुसलवज्रयोग ॥ चंद्रेचित्राभृगौज्येष्ठाशनौचैवतुरेवती ॥ चांद्रजेतुधनिष्ठोक्तारवौतुभरणीतथा ॥ १३ ॥ उषाश्चैवतु भौमेचगुरौचैवोत्तरातथा ॥ अयंमुसलवज्राख्ययोगोवर्ज्यः शुभेबुधैः ॥ १४ ॥ अमृतसिद्धियोग ॥ आदित्यहस्तेगुरुपुष्ययोगेबुधानुराधाशनिरोहिणीच ॥ सोमेचविष्णुर्भृगुरेवतीच भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोगाः ॥ १५ ॥

चरादित्रयोदशयोगकोष्टक.

	योगोंके नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१	चरयोग	पूर्वाषा	आर्द्रा	विशा	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूळ
२	ककयो	१२ ति	११ ति	१० ति	९ ति	८ ति	७ ति	६ ति
३	दग्धयोग	१२ ति	११ ति	५ ति	३ ति	६ ति	८ ति	९ ति
४	मृत्युदा	१, ६, ११ ति	३, ७, १ ति	१, ६, १ ति	४, ९, १४ ति	३, ७, १२ ति	३, ८, १३ ति	५, १०, १५ ति
५	सिद्धियो	० ति	० ति	३, ८, १३ ति	२, ७, १२ ति	५, १०, १५ ति	१, ६, ११ ति	४, ९, १४ ति
६	उत्पातो	विशा	पूर्वाषा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा
७	मृत्युयो	अनुरा	उत्त. षा	शता	आश्वि	मृग.	आश्ले	हस्त
८	काल	ज्येष्ठा	अभि	पूर्वाभा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
९	सिद्धि	मूळ	श्रवण	उत्त भा	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वा	स्वाती
१०	यमदंष्ट्र	म.धनि	मूळ वि	कृ. म.	पू षा पु	उ षा अ	रा अ	श्र शत
११	यमघंट	मघा	विशा	आर्द्रा	मूळ	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
१२	मुसलवज्र	भरणी	चित्रा	उ.षा	धनिष्ठा	उत्तरा	ज्येष्ठा	रेवती
१३	अमृ सि	हस्त	श्रवण	आश्वि	अनुरा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

टी०—चरयोगादित्रयोदश योग और उपरके कोष्टकमें लिखेहुवे सातवार उनमेंसे जिस वारमें नक्षत्र अथवा तिथी आवे सो योग उसदिन जानना.

अमावास्यायोग.

अमायांहिभवेद्वारोयदाभूमिसुतस्यवै ॥जान्हवीस्नानमात्रेणगोसहस्रफलंलभेत् ॥ १ ॥ अमावासोमवारेणरविवारेणसप्तमी ॥ चतुर्थीभौमवारेणविषुवत्सदृशंफलम् ॥ २ ॥ सिनीवालीकुहूर्वापियदिसोमदिनेभवेत् ॥ गोसहस्रफलंदद्यात्स्नानंचेन्मौनिनाकृतम् ॥ ३ ॥ दृष्टचंद्रासिनीवालीनष्टचंद्राकुहूः स्मृता ॥ ४ ॥

टी०—अमावास्याको मंगलवार होय तब उसदिन गंगास्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होताहै. अमावास्या सोमवारको, सप्तमी रविवारको और चतुर्थी मंगलवारको होय तो विषुवत् संक्रांतिका फल होताहै. अमावास्याको चंद्रमा दिखे तो सिनीवाली और नहीं दिखे तो कुहूसंज्ञा, उसदिन सोमवार होय तो उस दिन मौन होयके स्नान करे तो सहस्रगोदानका फल प्राप्त होता है.

अमावास्यामें व्यतिपातयोग.

श्रवणाश्विधनिष्ठार्द्रानागदैवतमस्तकैः ॥
यद्यमारविवारेणव्यतीपातः सउच्यते ॥ १ ॥

टीका-श्रवण, अश्विनी, धनिष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, मृग इन नक्षत्रोंमें अमावास्या रविवारयुक्त होय तो व्यतिपातयोग होताहै.

अर्द्धोदययोग.

माघमासि रवौदर्शेव्यतीपातेश्रवान्विते ॥ अर्द्धोदयाभिधोयोगः सूर्यपर्वशताधिकः ॥ १ ॥ अयमुक्तोदिवायोगः किंचिन्न्यूनं महोदयः ॥ २ ॥

टी०-माघमासमें रविवारको अमावास्या व्यतीपात श्रवणनक्षत्रयुक्त होय तो अर्द्धोदय योग होताहै. वह १०० सूर्यपर्वसे अधिक जानना. यह दिनमें योग कहा, इसमें किंचित् न्यून होय तो महोदय योग जानना.

कपिलाषष्ठी.

आश्विनेकृष्णपक्षेचषष्ठ्यांभौमोथरोहिणी ॥
व्यतीपातस्तदाषष्ठीकपिलानंतपुण्यदा ॥ १ ॥

टी०-अश्विनकृष्णपक्षमें षष्ठी, मंगलवार, रोहिणीनक्षत्र, व्यतिपातयोग होय तो कपिलाषष्ठीयोग अनंतपुण्यदायक होताहै.

वारुणीयोग.

वारुणेनसमायुक्तामधोः कृष्णात्रयोदशी॥गंगायांयदिलभ्येतसूर्यग्रहशतैःसमा ॥१॥ शनिवारसमायुक्तासामहावारुणीस्मृता॥ शुभयोगसमायुक्ताशनौशतभिषायदि ॥ २ ॥ महामहेतिविख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत ॥ ३ ॥

टी०-शततारकायुक्त चैत्रकृष्णत्रयोदशी होय उसदिन गंगाजीका स्नान होय या प्राप्त होय तो १०० सूर्यग्रहणके फल समान होताहै, शनिवारयुक्त होय तो महावारुणी जानना. शुभयोगयुक्त शनिवार शततारका होय तो महामहावारुणी जानना, सो तीनकोटीकुलका उद्धार करतीहै.

दासदासी रखनेका मुहूर्त.

दासचक्र ॥ नराकारंलिखेच्चक्रंसर्वार्थंभृत्यसंग्रहे ॥ शीर्षेत्रीण्यर्थलाभःस्यान्मुखेत्रीणिविनाशनम् ॥१॥ हृदिपंचधनंधान्यंपादषट्कंदरिद्रता ॥ पृष्ठेद्वेप्राणसंदेहोनाभौवेदाःशुभावहम् ॥ २ ॥ गुदेद्वेभयपीडाचदक्षहस्तैकमर्थकम् ॥ एकंवामेनाशकरंभृत्यभात्स्वामिभांतकम् ॥ ३ ॥

टी०–नराकार चक्र काढके उसके मस्तकसे अवयवस्थानमें देनेके नक्षत्र उनका क्रम. दासके जन्मनक्षत्रसे स्वामीके जन्मनक्षत्रतक गिनकर पहिले तीननक्षत्र मस्तकपर अर्थलाभ, मुखपर ३ नाश, हृदयपर ५ धनधान्यसमृद्धि, पांवपर ६ दरिद्र, पीठपर २ मृत्यु, नाभिपर ४ शुभ, गुदापर २ भय और पीडा, दहिने हाथ पर १ अर्थ और नवीनस्थानकी प्राप्ती और बांए हाथपर एक नाश.

दासीचक्र॥दासीचक्रंप्रवक्ष्यामिदासीभात्स्वामिभांतकम् ॥ शीर्षेत्रीणिमुखेत्रीणिस्कंधयोश्चद्वयंस्मृतम् ॥ १ ॥ हृदयेपंचऋक्षाणिनाभौपंचैकभंभगे ॥ जानुद्वयेद्वयंज्ञेयंपादयोश्चत्रयंफलम् ॥२॥ शिरःस्थानेभवेल्लाभोमुखहानिःप्रजायते ॥ स्कंधेचस्वामिनोमृत्युहृदयेपुष्टिवर्धनम् ॥ ३ ॥ नाभौहानिप्रदंप्रोक्तंभगेचैवपलायनम्॥ जानौसेवाभवेन्नित्यंपादयोस्तुधनक्षयः ॥ ४ ॥

टी०–दासीके जन्मनक्षत्रसे स्वामीके जन्मनक्षत्रतक देनेके स्थान. प्रथम मस्तकपर ३ लाभ, मुखपर ३ हानि, कंधेपर २ स्वामिका मृत्यु, हृदयपर ५ पुष्टिकारक, नाभिपर ५ हानि, योनिपर १ भागेगी, घुटनेपर २ सेवा करेगी, पांवपर६ शुभफलकारक, इनमेंसे शुभफल आवे तो वह दासी रखना.

गौआदि पशु लेनेका मुहूर्त.

गोवृषमहिषीचक्रं ॥ शीर्षेत्रयंमुखेद्वेचपादेष्वष्टौविनिर्दिशेत् ॥ हृदयेपंचऋक्षाणिस्तनेषष्ठैकभंभगे ॥ १ ॥ फल–शिरस्थानेभवेल्लाभोमुखेहानिःप्रजायते ॥ पादयोरर्थलाभःस्याध्दृदयेसौख्यवर्धनम्॥ २॥ स्तनयोस्तुमहालाभोगुह्यंस्थानेमहद्भयम् ॥ अर्यमादिगवांज्ञेयंमाहिष्यां सूर्यभान्यसेत् ॥ ३ ॥ इदमेववृषेज्ञेयंविशेषः पत्सुषोडश ॥ ४ ॥

टी०–गाय अथवा बैल लेनेको उत्तराफाल्गुनीसे दिननक्षत्रतक देनेके स्थान. प्रथम मस्तकपर ३ लाभदायक, मुखपर २ हानिप्रद, पांवपर ६ अर्थलाभ, हृदयपर ५ सौख्य, स्तनपर ६ महालाभ, भगपर १ मद्वृद्धि, गुंह्यपर ४ भयकारक, ऐसे जानना. भैंस लेनेमें येही स्थान और येही फल, परंतु सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्र तकका क्रम जानना. और बैल लेनेमें स्थान और नक्षत्र गौके लेना परंतु पैरपर १६ नक्षत्र देना, शेष दोदोकी योजना करना.

घोडा लेनेका मुहूर्त.

अश्वेतुसूर्यभाच्चैवसाभिजिद्धानिविन्यसेत् ॥ पंचस्कंधेजन्मभांतं पृष्ठेतुदशकंन्यसेत् ॥ १ ॥ पुच्छेज्ञेयंद्वयंप्राज्ञैः चतुष्पादेचतुष्टयम् ॥ उदरेपंचधिष्ण्यानिमुखेद्वेचप्रकीर्तिते ॥ २ ॥ फल ॥ सौभाग्यमर्थलाभश्चस्त्रीनाशोरणभंगता ॥ नाशश्चाप्यर्थलाभश्चफलंप्रोक्तं मनीषिभिः ॥ ३ ॥

टी०–सूर्यनक्षत्रसे अपने जन्मनक्षत्रतक देनेका क्रम–स्थान और फल. प्रथम स्कंधपर ५ सौभाग्य, पीठपर १० अर्थलाभ, पुच्छपर २ स्त्रीनाश, पाँवपर ४ रणमें भंग, उदरपर ५ नाश, मुखपर २ अर्थलाभ, इनमें शुभफल आवे सो लेना.

हाथी लेनेका मुहूर्त.

गजाकारंलिखेच्चक्रंजन्मभांतंचसूर्यभात् ॥ कर्णेशीर्षेद्विजेपुच्छे द्वयंसर्वत्रयोजयेत् ॥१॥ शुंडायांतुद्वयंयोज्यंवेदाःपृष्ठोदरेमुखे ॥ षड्वैचतुर्षुपादेषुसाभिजिद्विन्यसेत्क्रमात् ॥२॥ कर्णेचैवमहाँल्लाभोमस्तकेलाभएवच ॥ दंतेचैवभवेल्लाभोपुच्छेहानिःप्रजायते ॥ ॥ ३ ॥ शुंडायांतुशुभंज्ञेयंपृष्ठेतुसुखसंपदः ॥ उदरेरोगसंभूतिर्मुखे तुमध्यमंस्मृतम् ॥ ४ ॥ पादयोश्चभवेल्लाभोगजेचैवंविनिर्दिशेत् ॥ ५ ॥

टी०–पहिले सूर्यनक्षत्रसे देनेका क्रम कहाहै. परंतु इहां स्थानसंख्या जूदी है सो ऐसी प्रथम कानपर २ नक्षत्रलाभ, मस्तकपर २ लाभ, दांतपर दोन २ लाभ पुच्छपर दो हानि, शुंडापर २ लाभ, पीठपर ४ सुखसंपदा, पेटपर ४ रोग, मुखपर ४ मध्यम, पैरोंपर ६ लाभ ऐसे फल जानना.

शिविकादिरोहण चक्र.

सूर्यभाद्दिनभं यावत्पंचपंचचतुर्दिशि ॥ मध्येतुसप्तदेयानिचक्रंज्ञेयं सुखावहम् ॥ १ ॥ फल ॥ पूर्वभागेतुचारोग्यंदक्षिणेकष्टकारकम् ॥ पश्चिमेकृशताचैवउत्तरेव्याधिसंक्षयः ॥ २ ॥ मध्यमस्थंशुभंप्रोक्तमायुर्वृद्धिकरंपरम् ॥ पालकारोहणंचैतद्बालकस्यबुधैर्हितम् ॥ ३ ॥

टी०—सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक पालखी पालना अथवा दूसरे वाहनपर बैठना हो उसके चारों दिशामें तथा मध्यभागमें नक्षत्र देनेका क्रम. पूर्वभागमें ५ नक्षत्र आरोग्य, दक्षिणमें ५ कष्टकारक, पश्चिममें ५ दुर्बलता, उत्तरमें ५ व्याधिनाश, बीचमें ७ नक्षत्र शुभकारक और आयुष्यकी वृद्धि. इनमेंसे शुभफल जिस दिन आवे सो लेना.

छत्रचक्र.

त्र्युत्तरारोहिणीरौद्रंपुष्यश्चशततारका ॥ धनिष्ठाश्रवणश्चैवशुभानिछत्रधारणे ॥ १ ॥ फल—मूलेत्रीणिसप्तदंडेकंठेचैवतुपंचकम् ॥ मध्येवसुप्रदातव्यं शिखरेवेदएवच ॥ २ ॥ मूलेचजायतेनाशोदंडहानिर्धनक्षयः ॥ कंठेचराजसन्मानोमध्येछत्रपतिर्भवेत् ॥ ३ ॥ शिखरेकीर्तिवृद्धिश्चजन्मभात्सूर्यभांतकम् ॥

टी०—तीनो उत्तरा, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, शतकारका, धनिष्ठा, श्रवण, ये नक्षत्र शुभ हैं; परंतु अपने जन्मनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक स्थापन करनेका क्रम. प्रथम छत्रके मूलपर ३ जीवनाश, फेर दंडपर ७ हानि और धनक्षय, कंठपर ५ राजसन्मान, बीचमें ८ छत्रपति, शिखरपर ४ कीर्तिवृद्धि होगी. इनमेंसे शुभफल आवे सो दिन कार्यको लेना.

मंचकचक्र.

सूर्यभाद्गणयेचांद्रंमंचमूलेचतुश्चतुः ॥ गात्रेषुत्वेकविंध्यासुमध्येसप्तविनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ फलम्—मूलेतुसुखसौभाग्यंगात्रेप्रोक्तंभयं महत् ॥ मध्येसत्पुत्रलाभायआयुर्वृद्धिकरंपरम् ॥ २ ॥

टी०—सूर्य नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक मंचकस्थानमें स्थापन करनेका क्रम. प्रथम खुरपर १६ सुखप्राप्ती, फेर पाटियाउपर ६ भयप्राप्ति, विंध्यपर १ भयप्राप्ति, बीचमें ७ पुत्रप्राप्ति, आयुष्यवृद्धि होगी.

शरधनुश्चक्र.

सूर्यभाज्जन्मभांतंचधनुष्येचप्रयोजयेत् ॥ चापाग्रेबाणसंख्याकंश राग्रेपंचयोजयेत् ॥ १ ॥ शरमूलेतथापंचपंचसंधौप्रकीर्तयेत् ॥ दंडेचैवतुदद्याद्धैधनुषश्चक्रमुत्तमम् ॥ २ ॥ फल ॥ अग्रेहानिः शरे लाभोशरमूलेजयस्तथा ॥ चापसंधौतुशौर्यस्याद्दंडेभंगः प्रजायते ॥ ३ ॥

टी०—सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक स्थापन करने और फल कहते हैं.प्रथम अग्रपर ५ हानि, फेर ५ शरके अग्रपर लाभ, शरमूलपर २ जय,संधिपर ५ शौर्य, छेवटमें दंडपर ५ राजभय. इनमेंसे जिस दिन शुभफल आवे सो दिन लेना.

रथचक्र.

रथाकारंलिखेच्चक्रंसूर्यभाज्जनिभंन्यसेत् ॥ रथाग्रेत्रीणिऋक्षाणि षट्चक्रेतुततोन्यसेत् ॥ १ ॥ ऋक्षत्रयंमध्यदंडेरथाग्रेभत्रयंतथा ॥ युगेचभत्रयंज्ञेयंषडक्षाण्यंतिमेध्वनि ॥ २ ॥ शेषमृक्षत्रयंयोज्यं चक्रज्ञैःसर्वतोरथे ॥ फल ॥ शृंगेमृत्युर्जयश्चक्रेसिद्धिर्ज्ञेयाचदंडके ॥३॥रथाग्रेदंडअध्वानंमध्येचैवसुखंशुभम् ॥ बुधैरेवंफलंज्ञेयंजन्म भांतंक्रमेणच ॥ गर्गेणोक्तानिचक्राणिविज्ञेयानिसदाबुधैः ॥ ४ ॥

टी०—रथाकार चक्र लिखकर उसके स्थानपर सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक स्थापन करनेका क्रम. प्रथम शृंगपर ३ मृत्यु, फेर चक्रपर ६ जय, आगे मध्यदंडपर ३ सिद्धि, अग्रपर ३ धनलाभ, धुरीपर ३ भंग, मार्गपर ६ शुभ, अंतमें ३ सर्वत्र सुख जानना.

तिलोंकी घानी चलानेका मूहूर्त.

घाणाचक्रंप्रवक्ष्यामिसूर्यभाच्चांद्रमेवच ॥ त्रीणित्रीणित्रयंत्रीणि त्रीणित्रीणित्रयंतथा ॥ १ ॥ त्रीणित्रीणितुभान्यत्रयोजयेद्घाणके शुभे ॥ फल ॥ हानिरैश्वर्यमारोग्यंविनाशोद्रव्यमेवच ॥ २ ॥ स्वामिघातोनिर्धनतामृत्युरेवसुखंक्रमात् ॥

ऊखका रस काढनेका मुहूर्त.

वेदद्विनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाःक्रमात् ॥ फल ॥ प्रथमेचलभेल्लक्ष्मीद्वितीयेहानिमेवच ॥ १ ॥ तृतीयेसर्वलाभंचचतुर्थेचक्षयंतथा पंचमेचभवेन्मृत्युःषष्ठस्थानेशुभंस्मृतम् ॥ २॥ सप्तमेचैवपीडास्यादष्टमेधनधान्यदम्॥सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रमिक्षुयंत्रेनियोजयेत् ॥ ३ ॥

टी०—सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक घानीचक्रके ९ भाग, और ऊखका रस काढनेके चक्रके ८ भाग उनके फल नीचे लिखते हैं.

घाणी			ऊखका रस.		
३	प्रथमभाग	हानि	४	प्रथमभाग	लक्ष्मी.
३	भाग २	ऐश्वर्य	२	भाग २	हानि
३	भाग ३	आरोग्य	२	भाग ३	सर्वलाभ
३	भाग ४	नाश	१	भाग ४	क्षय
३	भाग ५	द्रव्य	५	भाग ५	मृत्यु
३	भाग ६	स्वामिघात	५	भाग ६	शुभ
३	भाग ७	निर्धनत्व	२	भाग ७	पीडा
३	भाग ८	मृत्यु	६	भाग ८	धनधान्य
३	भाग ९	सुख		इनमेंसे शुभ दिन आवे सो दिन लेना	

कृषिकर्मको मुहूर्त.

स्वातीब्राम्ह्यमृगोत्तरादितियुगेराधाचतुष्कं मघारेवत्युत्तरविष्णुभंकृषिविधौ क्षेत्रादिवापेविधौ ॥ गोकन्याझषमन्मथाश्चशुभदावाराःकुजार्कीतराषष्ठीद्वादशिरिक्तपर्वसुतथा वर्ज्यंद्वितीयाद्वयम् ॥ १ ॥

टी०—स्वाती, रोहिणी, मृग, उत्तरा, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, मघा, रेवती उत्तराफाल्गुनी, श्रवण ये नक्षत्र और वृषभ, कन्या, मकर, मिथुन, ये लग्न शुभ हैं; मंगल, शनि, षष्ठी, द्वादशी और रिक्ता, दोनों पर्वणी ये वर्ज्य करके कृषि (खेती) कर्मको आरंभ और बीज वावनेको आरंभ कराना.

हलचक्र.

त्रिकंत्रिकंत्रिकंपंचत्रिकंपंचत्रिकंत्रिकम् ॥
सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रमशुभंचशुभंक्रमात ॥ १ ॥

टी०—पहिले हल जोतनेका मुहूर्त—सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनकर उसके आठ भाग करना, उनका क्रम, प्रथम ३ भाग अशुभ, द्वितीय ३ भाग शुभ, तृतीय ३ भाग अशुभ, चतुर्थ ५ भाग शुभ, छठे ५ भाग शुभ, सप्तम ३ भाग अशुभ, आठें दोय भाग शुभ, जिस नक्षत्रभागमें दिननक्षत्र शुभ आवे सो दिन लेना.

जहाजका मुहूर्त.

पौष्णादितिस्तुरगवारुणमित्रचित्रशीतोष्णरश्मिवसुजीवकभान्यमूनि ॥ वारौचजावभृगुनंदनकौप्रशस्तौनौकादिसंघटनवाहनमेषुकुर्यात् ॥ १ ॥

टी०—रेवती, पुनर्वसु, अश्विनी, अश्लेषा, शततारका, अनुराधा, चित्रा, मृग, हस्त, धनिष्ठा, पुष्य ये नक्षत्र और शुक्र गुरु ये वार उक्त हैं; इनपर जहाज बनवाना या पानीमें छोडना.

जहाजका चक्र.

रविभुक्तर्क्षमारभ्यकुर्यात्रीण्युदयेणषट् ॥ नाल्यांत्रीणिहृदित्रीणि पृष्ठभूःपार्श्वगंत्रयम् ॥ १ ॥ शुक्राणेत्रीणिषण्मध्येनौकाचक्रमसंस्थितिः ॥ उपरिस्थंचमध्यस्थंषट्श्रेष्ठंचपरंनसत् ॥ २ ॥

टी—०रविके भुक्तनक्षत्रसे तीन तीन नक्षत्र देनेका क्रम. प्रथम ऊपरके स्थानमें ६ देना, नावके नालपर ३, हृदयपर ३, पृष्ठपर १, दोनों बाजूमें ६, पतवारपर ३, मध्यभागमें ६ नक्षत्र देना, उनमें ऊपरके और मध्यस्थानके नक्षत्र शुभ; अन्य अशुभ जानना.

लग्नमें ग्रहबल देखनेका.

त्रिषडायगतःसूर्यश्चंद्रोद्वित्र्यायगःशुभः ॥ कुजार्कीत्रिषडायस्थौ त्रिषट्खेतरगोगुरुः ॥ १ ॥ द्विसुतास्ताष्टरिःफायरिपुसंस्थोबुधः स्मृतः ॥ सुखांत्यारिविनायत्रनौयानेशुभदःसितः ॥ २ ॥

टी०—जहाजमें बैठनेका या प्रथम चलानेका हो तो उस लग्नका ग्रहबल देखना तृतीय, षष्ठ, एकादश ये स्थानमें सूर्य, चंद्र, मंगळ वा शनि, ये होवें तो शुभ. और ३, ६, १० ये स्थान छोडकर गुरु अन्यस्थानका शुभ. २।५।७।८।१२।११।६ ये स्थानमें बुध हो तो शुभ और ४।२।६ ये स्थानको छोडकर अन्यस्थानका शुक्र शुभ होताहै.

नौकास्थानमें ग्रह.

नाल्यांशापखगाःसौम्याः शुक्राणेशुभकारकाः ॥ व्यक्तामृत्यु कराःक्रूराःपृष्ठकूर्पेनभीतिकृत् ॥ १ ॥ अंतेबाह्येस्थितास्तेत्र ह्यलाभायस्मृताबुधैः ॥ एवंविचार्यदैवज्ञोनौयानसमयंवदेत् ॥२॥

टी०–लग्नकुंडली लिखकर जिस २ स्थानमें जो २ ग्रह आवें उनके वैसे फल. पापग्रह नालीपर शुभ, सौम्यग्रह पतवारपर शुभ ये विपरीत आवे तो अशुभ. और क्रूरग्रह पीठपर अथवा बाजूपर आवें तो भय देनेवाला होताहै और येही ग्रह भीतर वा बाहर आवें तो लाभ नहीं; इसका विचार कर ज्योतिषियोंने कहना.

दीपिकाचक्र.

दीपिकायामुखेपंचराजसन्मानलाभदाः ॥ कंठेनवधनप्राप्तिर्मध्ये ष्टौस्वामिमृत्युदाः ॥ दंडेपंचभवेद्राज्यमभिऋक्षाच्चदीपिकाम् ॥ १ ॥

टी०–कृत्तिकानक्षत्रसे दिननक्षत्रतक स्थापन करनेके स्थान और उसका फल कहतेहैं; मुखपर ५ राजसन्मान कंठपर ९ धनप्राप्ति बीचमें ८ स्वामीका मृत्यु, दंडपर ५ जयप्राप्ति, ऐसे नक्षत्रक्रम जानना.

कूपचक्र.

कूपवाप्योस्तुचक्रंवैविज्ञेयंविबुधैःशुभम् ॥ रोहिणीगर्भमेतस्यत्रि- त्रिऋक्षाणिचंद्रभम् ॥ १ ॥ मध्येपूर्वेतथाग्नेयेयाम्येचैवतुनिर्ऋते ॥ पश्चिमेचैववायव्यांसौम्यंशूलिदिशिक्रमात् ॥२॥ फल ॥ शीघ्रज- लंनजलंमध्यमजलमजलंबहुजलंच ॥ अमृतजलंबहुक्षारंसजलंम- ध्यजलंक्रमाज्ज्ञेयम् ॥३॥ मत्स्येकुलीरेमकरेजलंबहुतथैवचार्द्धं- वृषकुंभयोश्च ॥ अलेचतौलेचजलाल्पतामताशेषाश्चसर्वेजलदाः प्रकीर्तिताः ॥ ४ ॥

टी०–कूवा, तालाव नवीन खोदनेका मुहूर्त–रोहिणीनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक स्थापनेका क्रम कहतेहैं. मीन, कर्क, मकर, ये तीन राशिको चंद्र रहते जल बहुत लगेगा; वृषभ, कुंभ ये राशिको चंद्र रहते अल्पजल लगेगा और मेषराशिको चंद्र हो तो जल लगेगा नहीं; यह सिद्ध है.

पूर्व
३ नक्षत्र द्वितीयस्थानमें जल नाहीं.

आग्नेय
३ नक्षत्र तृतीयस्थानमें मध्यम जल.

दक्षिण
३ नक्षत्र चतुर्थस्थानमें अजल

नैर्ऋत्य
३ नक्षत्र पंचमस्थानमें बहु जल.

पश्चिम
३ नक्षत्र षष्ठस्थानमें अमृतजल.

वायव्य
३ नक्षत्र सप्तमस्थानमें बहुक्षारजल.

उत्तर
३ नक्षत्र अष्टमस्थानमें सजल.

ईशान्य
३ नक्षत्र नवमस्थानमें मध्यम जल.

मध्य
रोहिणीसे ३ नक्षत्र प्रथमस्थानमें शीघ्र जल लगेगा.

बगीचा लगानेका मुहूर्त.

गोसिंहालिगतेषुचोत्तरगते भानौबुधादित्रयेचंद्रार्केचशुभाबुधे रभिहिताऽऽरामप्रतिष्ठाक्रिया ॥ आश्लेषाभरणीद्वयंशतभिष-क्त्र्यक्त्रवाविशाखांकुहूं रिक्तांपक्षतिमष्टमींपरिहरेत् षष्ठीमपि द्वादशीम् ॥ २ ॥

टी०–उत्तरायणमें वृषभ अथवा सिंह, वृश्चिकराशिका सूर्य और बुध, गुरु, शुक्र, रवि, चंद्र ये वार ऐसे शुभदिनमें. आश्लेषा, भरणी, कृत्तिका, शततारका, विशाखा और अमावास्या, रिक्तातिथि, द्वितीया, अष्टमी, छठ द्वादशी ये वर्ज्यकर अन्यदिनमें बाग लगाना.

मोहर छाप चालानेका मुहूर्त.

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुभेषुयोगेप्रशस्तेशनिचंद्रवर्ज्ये ॥

वारेतथापूर्णजलाव्हयेचमुद्राप्रशस्ताशुभदाहिराज्ञाम् ॥ १ ॥

टी०–मृदु, ध्रुव क्षिप्र ये नक्षत्र लेना और शनि चंद्र ये वार वर्ज्यकरके राजाओंने छाप चलाना शुभ है.

प्रश्नप्रकरणम्.

तिथ्यादिप्रयुक्त प्रश्न.

तिथिःप्रहरसंयुक्तातारकावारमिश्रिता ॥ अग्निभिस्तुहरेद्भागंशेषंसत्वंरजस्तमः ॥ १ ॥ फलम्–सिद्धिस्तात्कालिकीसत्वेरजसातुविलंबिता ॥ तमसानिष्फलंकार्यंज्ञातव्यंप्रश्नकोविदैः ॥ २ ॥

टी०–जिस तिथिको जिस वारको जिस नक्षत्रपर जिस प्रहरमें जो कोई प्रश्न करे उसका उत्तर नीचे लिखेहुए उदाहरणऊपरसे देना. उदारहण–तिथि ५ प्रहर २ नक्षत्र पुष्य तिसके ८ वारबुध तिसके ४ इन सबोंको जोडा तो १९ हुए. तीनका भाग दिया छतिया १८ उन्नीसमेंसे १८ गये बचा १ वह सतोगुण उसका फल तत्काल कार्यसिद्धि. और २ बचे तो विलंबसे कार्यसिद्धि और पूरा ३ भाग आवे तो निर्फल.

आत्मछाया प्रश्न.

आत्मछायात्रिगुणितात्रयोदशसमन्विता ॥ वसुभिश्चहरेद्भागंशेषंचैवशुभाशुभम् ॥ १ ॥ फलम् ॥ लाभश्चैकेत्रिकेसिद्धिर्वृद्धिःपंचमसप्तके ॥ द्वयोर्हानिश्चतुः शोकः षष्ठाष्टे मरणं ध्रुवम् ॥ २ ॥

टी०–अपनी पदछायाही गिनकर तिगुनी करना. उसमें १३ मिलाय आठसे भागना शेष बचे सो फल जानना.

शेष १	शेष २	शेष ३	शेष ४	शेष ५	शेष ६	शेष ७	शेष ८
लाभ.	हानि.	सिद्धि.	शोक.	वृद्धि.	मरण.	वृद्धि.	मरण.

पंथ प्रश्न

तिथिःप्रहरसंयुक्तातारकावारमिश्रिता ॥ सप्तभिस्तुहरेद्भागंशेषंतुफलमादिशेत् ॥ १ ॥ वर्तमानंचनक्षत्रंगणयेत्कृत्तिकादितः ॥

सप्तभिश्चहरेद्भागंशेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ २ ॥ प्रश्नाक्षरंरुद्रयुक्तं-सप्तभिर्भाजितंतथा ॥ फलमेवंक्रमाज्ज्ञेयंसर्वेषांहिशुभाशुभम्॥३॥

टी०–तिथि, प्रहर, वार, नक्षत्र, एकत्रकर, सातसे भागना. शेष बचे सो फल. दूसराप्रकार–कृत्तिकानक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनतीकर सातसे भागना. तीसराप्रकार–प्रश्नके अक्षर गिनकर उसमें ११ मिलाना, और सातसे भागना. शेष बचे तो सो फल. येप्रकार आगे कहते हैं.

एकशेषेतथास्थानेद्वितीयेपथिवर्तते ॥ तृतीयेप्यर्धमार्गेतुचतुर्थे ग्राममादिशेत् ॥१॥ पंचमेपुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधियुतंवदेत् ॥ शून्यं ज्ञेयंसप्तमेवैचेतत्प्रश्नस्यलक्षणम् ॥ २ ॥

टी०–१ शेष रहेतो स्थानमेंही है. २ बचे तो रस्ता चलता है. ३ बचे तो आधेरस्तेमें आयाहै. ४ बचे तो गांवके नजीक आयाहै ५ बचे तो पीछा चलागया. ६ बचे तो बीमार है. ७ बचे तो मरगया. ये तीन पंथाप्रश्नके फल क्रमसे जानना.

दूसरा प्रकार.

धनसहजगतौ सितामरेज्यौ कथयत आगमनंप्रवासिपुंसाम् ॥ तनुहिबुकगताविमौचतद्वत्झटितिनृणांकुरुतोगृहप्रवेशम् ॥ १ ॥

टी०–द्वितीयस्थानमें शुक्र, तृतीयस्थानमें गुरु अथवा पृच्छालग्नमें शुक्र, चतुर्थस्थानमें गुरु, ऐसा योग होतो प्रवासी जलदी घरको आवेगा.

कार्याकार्यप्रश्न.

आशाप्रहरसंयुक्तातारकावारमिश्रिता ॥ अष्टभिस्तुहरेद्भागंशे षंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ १ ॥ फलम् ॥ पंचैकेत्वरितासिद्धिः षट्तुर्येच दिनत्रयम् ॥ त्रिसप्तकेविलंबश्चद्वौचाष्टौनचसिद्धिदौ ॥ २ ॥

टी०–पृच्छकका मुख जिसदिशामें होवे सो दिशा, प्रहर, वार, नक्षत्रमें सब एकत्रकर आठसे भागना, शेष बचे उनका शुभाशुभ जानना. शेष १ अथवा ५ बचें तो अच्छी कार्यसिद्धि होगा. ६।४ बचें तो तीन दिनमें कार्यसिद्धि, ३।७बचे तो विलंबसे कार्य होगा, २।८ बचें तो कार्य नहीं होगा.

अंकप्रश्न.

अंकंद्विगुणितंकृत्वाफलनामाक्षरैर्युतम् ॥ त्रयोदशयुतंकृत्वानव

भिर्भागमाहरेत् ॥ १ ॥ फलम् ॥ एकेहिधनवृद्धिश्चद्वितीयेचधनक्षयः ॥ तृतीयेक्षेममारोग्यंचतुर्थेव्याधिरेवहि ॥२॥ स्त्रीलाभः पंचशेषेस्यात् षष्ठेबंधुविनाशनम् ॥ सप्तमेईप्सितासिद्धिरष्टमेमरणं ध्रुवम् ॥ शून्ये तु राज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्य वचनंतथा ॥ ३ ॥

टी०—नव अंकपैंसे कोईएक अंकका नाम लेनेको कहना. जो अंकका नाम आवे सो अंक द्विगुणित करना. फेर फलका नाम लेवाना. उसके अक्षर और उसमें १३ मिलाना और पहिले दूने कियेहुए अंक और ये अंक एकत्र करना और नवसे भागना शेष रहे सो शुभाशुभ फल जानना. १रहे तो धनलाभ. २ धनक्षय, ३ आरोग्यता, ४ व्याधि, ५ स्त्रीलाभ, ६ बंधुनाश, ७ कार्यसिद्धि, ८मरण, ०रा ज्यप्राप्ति ऐसा गर्गमुनि कहते हैं.

नवग्रहात्मकं यन्त्रं कृत्वा प्रश्नं निरीक्षयेत् ॥
फलं पूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यं प्रश्नकोविदैः ॥ १ ॥

टी०—नवग्रहात्मक यंत्र लिखके उसमेंके अंकका अवलोकन करके वा अंकऊपर हाथ रखके अथवा अंकका उच्चारण करायके जो अंक आवे उनके फल पहले कहे हैं; सो देखकर यथाक्रमसे कहना.

४	३	८
९	५	१
२	७	६

अन्यमत.

सप्तत्रयांकेकथयंतिवार्तांनवैकपंचत्वरितंवदंति ॥
अष्टौद्वितीयेनहिकार्यसिद्धिरसाश्ववेदाघटिकात्रयंच ॥ १ ॥

टी०—अन्यमतसे पहिले कहे अंक हैं वैसे परंतु फल जुदे हैं. शेष ७ अथवा ३ बचें तो वार्ता सुननमें आवेगी; ९।१।५रहें तो त्वरित कार्य होगा; ८।२बचें तो कार्य होगा नहीं, ४।६ बचे तो तीन घडीसे कार्य होगा ऐसे समझना.

वारनक्षत्रप्रयुक्त पंथाप्रश्न.

बुधेचंद्रेतथामार्गेसमीपेगुरुशुक्रयोः ॥ रवौभौमेतथादूरेशनौचपरिपीड्यते ॥ १ ॥ निर्जीवःसप्तऋक्षाणिसजीवोद्वादशेभवेत् ॥ व्याधितोनवऋक्षाणिसूर्यधिष्ण्यात्तुचांद्रभम् ॥ २ ॥

टी०—बुधवारको वा सोमवारको प्रश्न किया तो मार्ग चलताहै, गुरुवारको

शुक्रवारको समीप आता है, रविवारको भौमवारको दूरहै, शनिवारको अनिष्ट जानना. सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रतक देनेका क्रम. प्रथमके ७ नक्षत्रमें चंद्र आया तो निर्जीव. द्वितीय १२ नक्षत्रोंमें चंद्र आवे तो सजीव है. तीसरे ९ नक्षत्रोंमें चंद्र आवे तो बेमारी उत्पन्न भई है ऐसा पंथःप्रश्न जानना.

नष्टवस्तुप्रश्न.

तिथिवारंचनक्षत्रंलग्नंत्रन्हिविमिश्रितम् ॥ पंचभिस्तुहरेद्भागंशेषं तत्रविनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ फलम् ॥ पृथिव्यांतुस्थिरंज्ञेयमप्सुव्योम्निनलभ्यते ॥ तेजस्तुराजज्ञेयंवायौशोकंविनिर्दिशेत् ॥ २ ॥

टी०–प्रश्नतिथि, वार नक्षत्र लग्न तीनो एकत्र कर उनको पांचसे भागना शेष २ बचे तो पृथ्वीमें है. २ रहे तो जलमें है; मिलेगी नहीं. ३ बचे तो आकाशमें है, मिलेगी नहीं. ४ बचे तो राजा लेगया. ५ बचे तो वायुगत हुई. शोक जानना.

गर्भिणीप्रश्न.

तत्पृच्छलग्नेरविजीवभौमेतृतीयसप्तेनवपंचमेच ॥
गर्भःपुमान्वैऋषिभिःप्रणीतंत्वान्यग्रहेस्त्रीविबुधैःप्रणीतम् ॥ १ ॥

टी०–गर्भिणी जिस लग्नपर प्रश्न करे उस लग्नमें ग्रह देखना, लग्नके तृतीय, सप्तम, नवम पंचमस्थानमें रवि, भौम, गुरु रहें तो पुत्र होगा. और येही स्थानमें अन्यग्रह होवे तो कन्या होगी.

मुष्टिप्रश्न.

मेषेरक्तंवृषेपीतं मिथुनेनीलवर्णकम् ॥ कर्केचपांडुरंज्ञेयंसिंहेधूम्रं प्रकीर्तितम् ॥१॥ वृश्चिकेताम्रमिश्रंचचापेपीतंविनिश्चितम्॥ नक्रे कुंभेकृष्णवर्णंमीनेपीतंवदेत्सुधीः ॥ २ ॥

टी०–पूछनेवालेके मुट्ठीमें कौनसे वर्णकी वस्तु है सो कहनेका प्रमाण-मेषलग्न हो तो मुष्टिमें लाल वर्णकी वस्तु है वृषभ लग्न हो तो पीली, मिथुन लग्न हो तो नीलवर्णकी, कर्कमें सुफेत, सिंहमें धुंवाईन रंगकी, कन्यामें नीलमिश्रित, मकरमें काली, कुंभमें लोहकी, मीनलग्नमें पीले रंगकी वस्तु है.

लग्नानुसार मनश्चिंतितप्रश्न

मेषेचद्विपदांचिंतावृषेचिंताचतुष्पदः ॥ मिथुनेगर्भचिंताचव्यवसायस्यकर्कटे ॥ १ ॥ सिंहेचजीवचिंतास्यात्कन्यायांच स्त्रियस्तथा ॥ तुलेचधनचिंताचव्याधिचिंताचवृश्चिके ॥२॥चापेचधनचिंतास्यान्मकरेशत्रुचिंतनम् ॥ कुंभस्थानस्यचिंतास्यान्मीनचिंताचदैविकी ॥ ६ ॥

टी०—लग्नानुसार प्रश्नका उत्तर, मेषलग्नमें प्रश्न किया तो मनुष्यचिंता, वृषभ लग्नमें गाय भैंस इत्यादि चतुष्पदोंकी चिंता, मिथुनमें गर्भकी, कर्कमें व्यापारकी, सिंहमें जीवकी, कन्यामें स्त्रीकी, तूलमें धनकी, वृश्चिकमें रोगकी, धनमें धनकी, मकरमें शत्रुकी, कुंभमें स्थानकी, मीनमें भूतपिशाचादिक दैविक चिंता ऐसा लग्नानुसार पृच्छकको कहना.

संज्ञानुसार लग्नके नाम.

धातुर्मूलंजीवश्चरस्थिरद्विस्वभावाश्च ॥
मेषादयःक्रमेणज्ञातव्याःप्रश्नकोविदैः ॥ १ ॥

टी०—मेषादिलग्नोंको संज्ञाके २ दो नाम कहते हैं. धातु चर, ये मेषलग्नकी संज्ञा मूलस्थिर वृषभकी जीव द्विस्वभाव मिथुनकी धातु चर कर्ककी, मूल स्थिर सिंहकी जीव द्विस्वभाव कन्याकी, धातु चर तूलकी मूल स्थिर वृश्चिककी, जीवद्विस्वभाव धनकी, धातु चर मकरकी, मूल स्थिर कुंभकी जीव द्विस्वभाव मीनकी, ऐसी द्वादश लग्नोंकी संज्ञा जानना.

अंकप्रश्न.

अष्टोत्तरशतांकेषुप्राश्निकोन्यूनमाचरेत् ॥ शेषंद्वादशभिर्भक्तंशेषं चैवशुभाशुभम् ॥ १ ॥ फलम् ॥ एकेदुर्गंसप्तकेवैविलंबश्चांगेतुर्ये दिक्षुभूतेषुनाशः ॥ रुद्रेसिद्धिर्युग्मकेवृद्धिरुक्ताशीघ्रंकार्यंस्यात्त्रिषड्द्वादशेतु ॥ २ ॥

टी०—प्रश्न पूछेनवालेसे अष्टोत्तरशत १०८अंकमेंसे कोईभी अंकका नाम लेनेको कहना और उसको १२ से भागना. शेष रहें उनके फल १९।७ रहे तो विलंबसे कार्य होगा. ८।४।१०।५ रहें तो नाश, ११ सिद्धि २ वृद्धि,३।६।१२ रहें तो शीघ्र कार्य प्रश्न करनेवालेका होगा.

रोगीप्रश्न.

तिथिवारंचनक्षत्रंलग्नंप्रहरएवच ॥ अष्टभिस्तुहरेद्भागंशेषंतुफलमादिशेत् ॥ १ ॥ फलम् ॥ हयाग्नौदेवताबाधापैत्रीवैनेत्रदंतिषु॥ षट्चतुर्षुभूतबाधानबाधाएवपंचके ॥ २ ॥

टी०—तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, प्रहर ये प्रश्नके दिन एकत्र कर आठसे भागना शेष रहे उनके फल. ७।३ बचें तो देवताकी बाधा, २।८ पितरोंकी बाधा, ६।४ भूतबाधा, १।५ रहें तो बाधा होगी नहीं.

केवल लग्नानुसार.

मेषेचदेवीदोषःस्यात् वृषेदोषश्चपैतृकः ॥ मिथुनेशाकिनी दोषः कर्कटेभूतदोषकः ॥ १ ॥ सिंहेसहोदराणांवैकन्यायांकुलमातृजः॥ तूलेदोषश्चंडिकायानाडीदोषोहिवृश्चिके ॥ २ ॥ पापेत्रयक्षिणीपीडामकरेग्रामदैवतात् ॥ अपुत्रादृष्टिजःकुंभेमीने आकाशगामिनः ॥ ३ ॥

टी०—जिसलग्नमें रोगी प्रश्न करे उसका उत्तर, मेषलग्नमें देवीदोष, वृषभलग्नमें पितृदोष, मिथुनमें शाकिनीदोष, कर्कमें भूतदोष, सिंहमें भ्रातृदोष, कन्यामें कुलदेवतादोष, तुलामें चंडिकाका दोष, वृश्चिकमें नाडीदोष, धनमें यक्षिणीदोष, मकरमें ग्रामदेवतादोष, कुंभमें अपूत्रस्त्रीदर्शनीय दोष, मीनमें आकाशगामिनीय दोष, ऐसे पृच्छकको लग्नानुसार दोष कहना.

पर्जन्यका प्रश्न.

आषाढस्यासितेपक्षेदशम्यादिदिनत्रये ॥ रोहिणीकालमाख्यातिसमदुर्भिक्षलक्षणम्॥१॥रात्रावेवनिरभ्रंस्यात्प्रभातेमेघडंबरम्॥ मध्यान्हेजलबिंदुः स्यात्तदादुर्भिक्षकारणम् ॥ २ ॥

टी०—आषाढकृष्णपक्षकी दशमी, एकादशी, द्वादशी, ये तीन तिथियोंके रोहिणी दिननक्षत्र होतो सुभिक्ष होगा. मध्यम, दुर्भिक्ष ये अनुक्रमसे फल लेना. और रात्रीमें निरभ्र, प्रातःकालमें मेघगर्जना, मध्यान्हमें जलबिंदु पडते हैं, ऐसा लक्षण होताहै तिस संवत्सरमें दुर्भिक्ष होगा ऐसे जानना.

जललग्न.

कुंभः कर्कवृषौमीनमकरौवृश्चिकस्तुला ॥ जललग्नानिचोक्तानि लग्नेष्वेतेषुसूर्यभम् ॥ १ ॥ भवत्येवसदावृष्टिर्ज्ञातव्यागणकोत्तमैः ॥ २ ॥

टी०–कुंभ, कर्क, वृषभ, मीन, मकर, वृश्चिक, तुला ये सात जललग्न हैं, इनपर सूर्य महानक्षत्र निकलें तो पर्जन्य बहुत होगा.

पर्जन्यनक्षत्र.

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासुच ॥
स्वात्यांप्रविशतेभानुर्वर्षतेनात्रसंशयः ॥ १ ॥

टी०–अश्विनी, मृग, पुष्य, रेवती, श्रवण, मघा, स्वाती ये दिननक्षत्र हो उसदिन सूर्य महानक्षत्रमें प्रविष्ट होवे तो वर्षा बहुत होगी.

स्त्री नपुंसक पुरुषनक्षत्र.

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणांविशाखात्रिनपुंसकम् ॥ मूलाच्चतुर्दशंपुंसां नक्षत्राणिक्रमाद्बुधैः ॥ १ ॥ वायुर्नपुंसकंभंचस्त्रीणांमेचाभ्रदर्शनम् । स्त्रीणांपुरुषसंयोगेवृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ॥ २ ॥

टी०–आर्द्रासे स्वातीतक १० नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं. विशाखासे ज्येष्ठांत तीन नक्षत्र नपुंसक, मूलसे मृगांत १४ नक्षत्र पुरुष संज्ञक है, नपुंसक नक्षत्रमें स्त्रीमहानक्षत्र आवे तो पवन छूटेगा. दोनों स्त्रीनक्षत्र आवें तो बादल होगा. स्त्रीपुरुष ऐसा योग आवे तो पर्जन्यवृष्टि होगी.

सूर्यचंद्रनक्षत्रसंज्ञा.

अश्विन्यादित्रयंचैवआर्द्रादेः पंचकंतथा ॥ पूर्वाषाढादिचत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम् ॥ १ ॥ उक्तानिशशिभान्यत्रप्रोच्यतेसूर्य भान्यथ ॥ रोहिणीच मृगश्चैवपूर्वाफल्गुनिकातथा ॥ २ ॥ सूर्ये सूर्येभवेद्वायुश्चंद्रेचंद्रेनवर्षति ॥ चांद्रसूर्योद्भवेद्योगस्तदावर्षतिमेघ राट् ॥ ३ ॥

टी०–अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तरा, रेवती ये चंद्र नक्षत्र और

शेष रहे सो सूर्यनक्षत्र (फल) दिननक्षत्र और महानक्षत्र ये दोनों सूर्यके आए तो पवन छूटेगा, और दोनों चंद्र आए तो वर्षा नहीं होगी, जब चंद्र और सूर्य ऐसे आवेंगे तभी वृष्टि होगी ऐसे जानना.

धान्यप्रश्न.

कापायेजयशर्मलाभकुगिरौमित्राणिसर्वंशुभंगौरायेप्रियभुग्धना-
निलपरेलाभारिनाशादिकम् ॥ रय्यंगेकलहः श्रियश्चबलगेस्था-
नानिमित्रागमोरोरारांविपदःपरांगकलहःखालेयशोकावहः॥१॥

टी०–धान्यके सत्ताईस दाना लेकर एक पुंज करना. और उसमेंसे एक चुटकीभर उठायके जुदे रखना. ऐसी तीन राशि कर उनमेंसे तीन तीन दाने जुदे जुदे करताजावे. जो तीन राशियोंमेंसे एक२बचे तो जय और लाभ होगा, काकहिये १, पायानें १, ये कहिये १, ऐसी तीन राशीमेंसे एक एक बचे तो उसका फल जय और लाभ.

२ कु.	१ गी.	३ रौ.	२ मित्रादिसर्वशुभ.
३ गौ.	३ रा.	२ ये.	१ प्रियभोग और धनप्राप्ति.
४ ल.	३ प.	१ रे.	२ लाभ और अरिका नाश
५ र.	२ यं.	१ ग.	३ कलह होगा,
६ ब.	३ ल.	३ गे.	३ लक्ष्मी और मित्र अ. घर आवेगा
७ रो.	२ रा.	२ रां.	२ विपत्ती.
८ प.	१ रां.	२ ग.	३ कलह होगा.
९ खा.	२ ले.	३ य.	१ शोकप्राप्त. ऐसे त्रिवार करनेसे ये.

नौ फल आतेहैं. राशी गिनतेसमय तीन २ दाने गिनना.

पशुविषयकप्रश्न.

द्युमणिभान्नवभेषुवनेपशुंतदनुषट्सुचकर्णपथेस्थितम् ॥
अचलभेषुगनगृहमागतंद्वयगतंगतमेवमृतंत्रिषु ॥ १ ॥

टी०–सूर्य नक्षत्रसे दिन नक्षत्र नवम तक होय तो पशु वनमें है, आगेके ६ नक्षत्रमें होतो पशु मार्गमें है, आगे ७ नक्षत्रमें घरको जल्दी आवेगा, आगेके दो नक्षत्रमें मिलेगा नहीं. आगे ३ नक्षत्रमें मृत्युको प्राप्त भया ऐसा जानना.

राज्यभंगादिकयोग.

यदिभवतिकदात्रिचाश्विनीनष्टचंद्राशनिरविकुजवारेस्वातिरायु

ष्मयोगे॥गगनचरपशूनांजंगमस्थावराणांनृपतिजनविनाशोरा ज्यभंगस्तुचोक्तः ॥ १ ॥

टी०—कदाचित शनि, रवि, भौम, ये वारको अमावास्या, स्वाती नक्षत्र और आयुष्मान् योग आया तो पशु, पक्षी, स्थावर, जंगम, राजा, प्रजा इनका नाश और राज्यभंग होगा.

रविचंद्रको कुंडाळा होता है

उसका फळ.

रविशशिपरिवेषेपूर्वयामेचपीडारविशशिपरिवेषेमध्ययामेचवृष्टिः रविशशिपरिवेषेधान्यनाशस्तृतीये रविशशिपरिवेषेराज्यभंग-श्चतुर्थे ॥ १ ॥

टी०—रविको अथवा चंद्रको पहले पहरमें कुंडाळा होतो प्रजाको पीडा होगी. दूसरे पहरमें होवे तो वर्षा होगी. तीसरे प्रहरमें धान्यका नाश होगा. चौथे पहरमें होवे तो राज्यभंग होगा.

धनुष्यका फल.

रात्रौधनुर्दिनेउल्काताराचैवदिनेतथा ॥ रात्रौतुधूमकेतुश्चभूकंप-श्चतथैवहि ॥ १ ॥ एतानिदुष्टचिन्हानिदेशक्षयकराणिच ॥ २ ॥

टी०—रात्रीमें धनुष्य और दिनमें उल्कापात अथवा नक्षत्रपात. रात्रीमें धूमकेतु, भूमिकंप, ऐसे दुष्टचिन्ह भये तो देशको क्षयकारक है.

अथ ग्रहचक्रप्रकरणम्.

सूर्यः ॥ ऋक्षसंक्रमणंयंत्रंद्वेवक्त्रेविनियोजयेत् ॥ चत्वारिदक्षिणेबाहौत्रीणित्रीणिचपादयोः ॥ १ ॥ चत्वारिवामबाहौचहृदयेपंचनिर्दिशेत् ॥ अक्षणोर्द्वयंद्वयंयोज्यंमूर्ध्निचैकैककंगुदे ॥ २ ॥ फलम्॥ रोगोलाभस्तथाध्वाचबंधनंलाभएवच॥ ऐश्वर्यंराजपूजाचअपमृत्युरितिक्रमात् ॥ ३ ॥ चंद्रः ॥ चंद्रचक्रंप्रवक्ष्यामिनराकारसुशोभनम् ॥ शीर्षेषट्कंमुखेत्वेकंत्रीणिदक्षिणहस्तके ॥ १ ॥ हृदिषट्कंप्रदातव्यंवामहस्तेत्रयंतथा ॥ कुक्ष्योःषट्कंचदातव्यंपादैकैकंविनि

दिशेत् ॥ २ ॥ फलम् ॥ शीर्षेलाभकरंज्ञेयंमुखेतद्रव्यहारकम् ॥ हानिदंदक्षिणेहस्तेहृदयेचसुखावहम् ॥ ३ ॥ वामहस्तेतुरोगाश्च कुक्ष्योः शोकस्तथैवच ॥ पादयोर्हानिरोगौचजन्मधिष्ण्यादिचंद्रभम् ॥ ४ ॥ मंगलः-भौमचक्रंप्रवक्ष्यामिजन्मधिष्ण्यादिभौमभम् शीर्षेषट्कंमुखेत्रीणित्रीणिवेदक्षिणेकरे ॥ १ ॥ पादयोःषट्प्रदातव्यंवामहस्तेत्रयंतथा ॥ गुह्येचैकंनेत्रयोर्द्वेहृदयेत्रयमेवच ॥ २ ॥ फलम् ॥ विजयश्चैवरोगाश्चलक्ष्मीःपंथाभयंतथा ॥ मृत्युर्लाभः सुखंचापिफलंज्ञेयंविचक्षणैः ॥ ३ ॥

सूर्य	चंद्र	मंगल
सूर्यसंक्रांति जिस नक्षत्रपर होवे वहांसे जन्मनक्षत्रतक गिनकर जिस स्थानमें नक्षत्र पडे सो फल जानना.	जन्मनक्षत्रसे जिस नक्षत्र पर चंद्र होवे तहांतक गिनकर जहां नक्षत्र पडे सो फल जानना.	जन्मनक्षत्रसे मंगल जिस नक्षत्रपर होवे वहांतक गिनकर जहां नक्षत्र पडे सो फल जानना.

स्थान.	नक्षत्र.	फल.	स्थान.	नक्ष.	फल.	स्थान.	नक्ष.	फल.
मुखपर	२	रोगप्राप्ति	मस्तकप.	६	लाभ.	शिरपर	६	विजय
दहिनाहा	४	लाभ.	मुखपर.	१	द्रव्यहर.	मुखपर	३	रोगप्राप्ति
पांवपर	६	मार्ग.	दहिनाहा	३	हानिकर	दहिना.	३	लक्ष्मीप्रा
बांयाहा.	४	बंधन.	हृदयपर	६	सुखप्रा.	पांवपर.	६	मार्गचल
हृदयपर	५	लाभ.	बाँयाहा	३	रोगप्राप्ति	बाँयाहा.	३	भयः
नेत्रोंपर	४	लक्ष्मीप्रा	कुक्षी.	६	शोक	गुदापर	१	मृत्यु.
मस्तकप	१	राजस.	दहिनापाँ	१	हानि	नेत्रोंपर	२	लाभ
गुदापर	१	अपमृत्यु:	बाँयापाँ.	१	रोगप्राप्ति	हृदयपर	३	सुख

बुधः ॥ बुधचक्रंप्रवक्ष्यामिजन्मऋक्षादिसौम्यभम् ॥ शिरसित्रीणिराज्यंस्यात् वक्त्रैकंधनधान्यदम् ॥ १ ॥ नेत्रेद्वेप्रीतिलाभौच नाभौश्रीःपंचकंतथा ॥ पादयोः षट्प्रवासश्चवामेवेदाधनंतथा ॥ ॥ २ ॥ चत्वारिदक्षिणेहस्तेधनलाभस्तथैवच ॥ गुह्यस्थानेभद्वयं चबंधनंमरणंफलम् ॥ ३ ॥

गुरुः ॥ गुरुचक्रंप्रवक्ष्यामिगुरुभाज्जन्मऋक्षकम् ॥ दद्याच्छिरसि चत्वारिचत्वारिदाक्षिणेकरे ॥ १ ॥ एकंकंठेमुखेपंचपादयोःषट्ट प्रदापयेत् ॥ करेवामेचचत्वारित्रीणिदद्याच्चनेत्रयोः ॥२॥फलम् ॥ राज्यंलक्ष्मीर्धनप्राप्तिः पीडामृत्युस्तथैवच ॥ सुखनैवक्रमेणैवं फलंज्ञेयंविचक्षणैः ॥ ३ ॥ शुक्रः ॥ शुक्रचक्रंप्रवक्ष्यामिशुक्रधि-ष्ण्याच्चजन्मभं ॥ मुखेत्रीणिमहालाभःशीर्षेपंचशुभावहः ॥ १ ॥ त्रिकंतुदक्षिणेपादेक्लेशहानिकरंसदा ॥ तथैववामपादेचत्रीणि भानितु योजयेत ॥२॥ हृदयेद्वेधनंसौख्यं भाष्टकंहस्तयोर्द्वयोः॥ मित्रसौख्यंधनप्राप्तिर्गुह्येत्रीणितथैवच ॥ ३ ॥ स्त्रीलाभश्चफलंप्रो-क्तभृगुपुत्रस्यसूरिभिः ॥

बुध			गुरु			शुक्र		
जन्मनक्षत्रसे बुध जिस नक्षत्रपर हो तहांतक गिनकर जहां पडे उस स्थानका फल.			गुरु जिस नक्षत्रपर हो तहांसे जन्मनक्षत्रतक गिनकर जहां पडे उस स्थानका फल.			शुक्र जिस नक्षत्रपर हो तहांसे जन्मनक्षत्रतक गिनकर जहां पडे उस स्थानका फल जानना.		
स्थान.	नक्ष.	फल.	स्थान.	नक्ष.	फल	स्थान.	नक्षत्र	फल.
मस्तकप.	३	राज्यप्रा.	मस्तकप.	४	राज्यप्रा.	मुखपर	३	उत्तमला
मुखपर	१	धनप्रा.	दाहिना.	४	लक्ष्मीप्रा	मस्तकप.	५	शुभ
नेत्रोंपर	२	प्रीतिला.	कंठपर	१	धनलाभ	द.पाँवप	३	क्लेशहानि
नाभीपर	५	लक्ष्मी.	मुखपर	५	पीडा	बायेपाँव.	३	क्लेशहानि
पांओंपर	६	प्रवास	पाँवपर	६	मृत्यु	हृदयपर	२	धनसौ.
बायांहा.	४	धनलाभ	बांयाहा.	४	सुखप्रा.	हाथपर	८	मित्रसौ.
दाहिनाहा	४	धनलाभ	नेत्रोंपर	३	सुखप्रा.	गुह्यपर	३	स्त्रीलाभ
गुदापर	२	बंधनपर	....	....	....	....	....	....

शनिः ॥ सौरिचक्रंप्रवक्ष्यामिसौरिभाज्जन्मऋक्षकम् ॥ मूर्ध्न्येकंचत-थावक्रेकरेचत्वारिदक्षिणे ॥१॥ विन्यसेत्पादयुग्मेषट्वामबाहौच-

तुष्टयम् ॥हृदयेपंचऋक्षाणिक्रमाच्चत्वारिनेत्रयोः ॥२॥ शीर्षेद्वयंगु-
देचैकंमंदस्यपुरुषाकृतेः ॥ फलम् ॥ मूर्धवक्रस्थभेरोगोलाभोवैद-
क्षिणेकरे ॥३॥ स्यादध्वाचरणद्वंद्वेबंधोवामकरेनृणाम् ॥ हृदयेच
भवेल्लाभोनेत्रेप्रीतिरुदाहृता ॥४॥ पूजाशीर्षेपरान्यूनंगुदेमृत्युंवि-
निर्दिशेत् ॥ ५ ॥ राहुः ॥ राहुचक्रंप्रवक्ष्यामिजन्मभाद्राहुऋक्षक
म् ॥ मूर्ध्नित्रीणिचऋक्षाणिकरेचत्वारिदक्षिणे ॥ १ ॥ पादयोः
षट्चऋक्षाणिवामहस्तेचतुष्टयम् ॥हृदयेत्रीणिकंठेकंमुखेद्वौनेत्रयो
र्द्वयम् ॥ २ ॥ गुह्येद्वयंक्रमेणैवराहुचक्रेस्वभादतः ॥ फलम् ॥
राज्यंरिपुक्षयःपंथामृत्युर्लोभोथरोगकः ॥ ३ ॥ जयः सौख्यंत-
थाकष्टंक्रमाज्ज्ञेयंफलंबुधैः ॥४॥ केतुः ॥ केतुचक्रंप्रवक्ष्यामिजन्मभात्के
तुऋक्षकम् ॥ मूर्ध्निपंचजयश्चैवमुखेपंचमहद्भयम् ॥१॥ हस्तयोर्भा-
निचत्वारिविजयश्चजयस्तथा ॥ पादयोः षट्चसौख्यंस्यात्हृदि
द्वेशोककारके ॥२॥ कंठेचत्वारिचव्याधिर्गुह्येकंचमहद्भयम् ॥३॥

शनि.	राहु.	केतु.
शनि जिस नक्षत्रपर होवे उहांसे जन्म नक्षत्रतक गिनकर जहां नक्षत्र पडे सो फल जानना.	जन्म नक्षत्रसे राहुनक्षत्र-तक गिनकर जहां पडे वैसा फल जानना.	जन्म नक्षत्रसे केतुनक्षत्र तक गिनकर जहां पडे सो फल जानना.

स्थान.	नक्ष.	फल.	स्थान	नक्षत्र	फल.	स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तक.	१	रोग.	मस्तक	३	राज्यप्रा.	मस्तक	५	जय.
मुख.	१	रोग.	दहिनाहा	४	रिपुक्षय	मुखपर	५	महाभय
दहिनाहा	४	लाभ	पाँओंपर	६	मार्ग	हाथपर	४	विजय
पाँओंपर	६	मार्ग	बाँयाहा.	४	मृत्यु	पाँओंपर	६	सौख्य.
डावाहाथ	४	बंधन.	हृदयपर	३	बहुतला	हृदयपर	२	शोक.
हृदयपर.	५	लाभ.	कंठपर	१	रोग	कंठपर	४	व्याधि.
नेत्रोंपर.	४	प्रीति.	मुखपर	२	जय.	गुह्यपर	१	महाभय
मस्तकप.	१	पूजा.	नेत्रोंपर	२	सौख्य	....	....	....
गुदापर	१	मृत्यु.	गुह्यपर	२	कष्ट.	....	....	....

जन्मनक्षत्र कहां पडा है सो देखनेका क्रम.

शीर्षेत्रीणिमुखेत्रयंचरविभाद्देकैकभंस्कंधयोरेकैकंभुजयोस्तथाकरतलेधिष्ण्यानिपंचोदरे ॥ नाभौगुह्यतलेचजानुयुगुलेचैकैकमृक्षं क्षिपेज्जंतोःकेचिदितिब्रुवंतिगणकाःशेषाणिपाद्द्वये ॥ १ ॥ फलम्॥अल्पायुश्चरणस्थितेचगमनंदेशांतरेजानुभेगुह्येस्यात्परदारलंभनमहोनाभौचसौख्यप्रदम्॥ऐश्वर्यंहृदिचौर्यमस्य करयोर्बाह्वोर्बलंवैमुखेमिष्टान्नंचलभेच्चमानवगणोराज्यंस्थिरंमूर्द्धनि ॥२॥

टी०--सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक गिनके पहिले ३ नक्षत्र मस्तकपर रखना उसका फल राज्यप्राप्ति, मुखपर ४ मिष्टान्नभक्षण. दोनों कंधोंपर एक एक फल मजबुती, दोनों भुजाओंपर१।१ फल बलवान्, हथेलीपर१।१ चोर, हृदयपर ५ ऐश्वर्य, नाभीपर १ सौख्यप्राप्ति, गुह्यपर १ परस्त्रीलंपट, जानूपर १।१ देशांतरमें गमन करेगा. पाँओंपर ३।३ अल्पायुषी, ऐसे जहां जन्मनक्षत्र पडे वहांका फल लेना.

लग्नशुद्धिको पंचक देखना.

गततिथियुतलग्नंनंदहृच्छेषकंचवसुयमयुगषट्केक्षोणिसंख्याक्रमेण॥रुगनलनृपचौरं मृत्युदंपंचकंस्याद्व्रतगृहनृपमार्गोद्वाहकेवर्जनीयम् ॥ १ ॥

टी०--गततिथि गिनकर उसमें लग्न मिलाना, और उसको ९ से भागना. शेष रहे उनके फल.८ बचे तो रोगपंचक सो मौंजीबंधनको वर्ज्य करना. २ रहे सो अग्निपंचक सो गृहारंभमें वर्जना, ४ बचे तो राजपंचक और छ रहें तो चोरपंचक. ये दोनों पंचक गमनमें वर्जना. १ रहे तो मृत्युपंचक सो विवाहमें वर्जना. इनके शिवाय दूसरे अंक आवें तो वो निष्पंचक जानना सो सर्व कार्यमें उक्त जानना.

वारानुसार पंचक वर्ज्य.

रवौरोगंकुजेवन्हिः सोमेतुनृपपंचकम् ॥
बुधेचौरंशनौमृत्युः पंचकानितुवर्जयेत् ॥ १ ॥

टी०--रविवारको रोगपंचक, मंगळवारको अग्निपंचक, सोमवारको राजपंचक,

बुधवारको चोरपंचक, शनिवारको मृत्युपंचक ये इन वारोंमें वर्ज्य हैं ऐसे जानना

दिनमान तथा रात्रिमान.

अयनादिकवासररामहतागगनानलबाणशशांकयुताः ॥
परिभाजितशून्यरसैर्घटिकाः कर्कादिनिशामकरादिदिनम् ॥१॥

टी०—अयन माने कर्कसंक्रांतिसे मकरसंक्रांतितक ६ महिने तैसेहि मकरसंक्रांतिसे कर्क संक्रांतितक ६ महिने इनमेंसे जिसदिनका दिनमान निकालना होवे वहांतक दिन गिनकर, उनकोमें ३ गुणना जो अंक आवे उनमें १५३० मिलाना. और साठसे भागना. शेष रहे सो रात्रिमान और मकरसंतिसे गिना जाय तो दिनमान जानना.

दिन कितना चढा सो देखनेका क्रम.

पादप्रभाजगयुतारहिताचमेषात्षद्स्विन्दुनात्रयुगबाणशराब्धिरामैः ॥ स्याद्भाजकोदिनदलस्यनगाहतस्य पूर्वा गताः स्युरपरादिनशेषनाड्यः ॥ १ ॥

टी०—अपनी पडछाई पांवसे गिनकर जो संख्या आव उसमें ७ युक्त करे और मेष संक्रांतिसे कन्या संक्रांतिपर्यंत उसमें एक १ कम करना. उसके आगे तुला संक्रांतिसे मीन संक्रांतितक जो संक्रांति हो उस संक्रांतिका क्षेपक उसमें रहित करना. वोक्षेपण ऐसे तूळ ३, वृश्चिक ४, धन ५, मकर ५, कुंभ ४, मीन ३ इसप्रकार क्षेपकांक रहित करके अलग रखना. उसके पीछे दिनार्ध माने १५ इनको ७ से गुणाकर १०५ हुवा. इनको प्रथम अलग रखेहुवे अंकोंसे भागना. जो भाग ७ लब्ध हो वह घटिका जानना. परंतु पूर्वार्धमें दिन उतनी घटिकातक आया. और उत्तरार्धमें दिन उतनी घटिका शेष रहा ऐसा समझना.

रात्रिमान देखनेका क्रम.

सूर्यभान्मध्यनक्षत्रंसप्तसंख्याविशोधितम् ॥
विंशतिघ्नंनवहृतंगतारात्रिःस्फुटाभवेत् ॥ १ ॥

टी०—रात्रीके मध्यमें जो नक्षत्र आया हो उतने नक्षत्र सूर्यनक्षत्रसे गिनकर उसमें ७ कम करना, शेष रहे उनको २० से गुणाकर ९ से भागना. शेष रही जो संख्या उतनी रात्रि भुक्त हुई ऐसा समझना

अंतरंग बहिरंग नक्षत्र.

सूर्यभादुडुगणंपुनःपुनर्गण्यतामितिचतुष्टयंत्रयम् ॥
अंतरंगबाहिरंगसंज्ञकंतत्रकर्मविदधीतताद्दशम् ॥ १ ॥

टी०–सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रपर्यंत प्रथम ४ नक्षत्र अंतरंग और उसके बाद ३ नक्षत्र बाहिरंग ऐसे क्रमसे जानना. ऐसे दिननक्षत्र गिनना. ये गवादिपशु ल्यावनेको या पहुंचानेको उक्त हैं.

सूतिकास्नान.

करेंद्रभाग्यानिलवासवांत्यमैत्रैंदवाश्विध्रुवभेन्हिपुंसाम् ॥
तिथावरिक्तेशुभमामनंतिप्रसूतिकास्नानविधिंमुनींद्राः ॥ १ ॥

टी०–हस्त, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, धनिष्ठा, रेवती, अनुराधा, अश्विनी, मृग और ध्रुवनक्षत्र ये जिस दिन हो वो दिन सूतिकास्नानको उक्त परंतु रिक्ता तिथि वर्ज करना ऐसा मुनींद्र मानते है.

अथ वर्षेष्टसाधन.

गताब्दवृंदामुनिखाभ्रचंद्रैर्निघ्नानभव्योमगजैश्चभक्ताः ॥
त्रिधाफलंवारघटीपलानिस्वजन्मवारेष्टयुतानितानि ॥ १ ॥

टी०–जन्मसंवत्को वर्तमानसंवत्मेंसे घटावे शेष रहे सो गताब्द इनको १००७ से गुणाकरे तिसमें ८०० का भाग देकर वारादि तीन फल लब्धि ले जिसमें क्रमसे जन्मका वार इष्टघटि पलयुक्त करें. घटि पलमें ६० का भागदेवे वारमें ७ से भागकर शेषरखे वही वारमें आगत इष्टपर वर्षलगा समझे.

वर्षतिथिसाधन.

रुद्रघ्नेतसमाः खखाद्रिकुलवाढ्याजन्मतिथ्यन्वितास्तष्टाः
खाग्निभिरब्दवक्रजतिथिः स्याद्धूनयुक्तक्वचित् ॥

टी०–गताब्दोंको ११ से गुणाकरे दोजगह रक्खे, एक जगेह १७० का भाग देकर लब्धिको दूसरी जगह जोडे जिसमें जन्मकी तिथिभी जोडे तिससे ३० का भाग देवे शेष रहे सो वर्षप्रवेशकी तिथी, परंतु वारप्राधान्य है, वार नहीं मिले तो १ घटावे वा जोडे.

अथ वर्षप्रवेश सारणी.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	गता
१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	वार
१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	घटि
३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	पल
११	२२	३	१४	२५	६	१७	२६	१०	२१	२	१३	२४	५	१६	२७	८	१९	०	११	ति.
१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	९	१२	२१	४	१४	२४	७	१७	०	१०	नक्ष
१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	९	१२	२१	४	१४	२४	७	१७	०	१०	योग
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	लग्न
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	गता
५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	वार
२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	घटि
१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	पल
२२	३	१४	२६	७	१८	२९	१०	२१	२	१३	२४	५	१६	२७	८	१९	०	११	२३	ति०
२०	३	२३	२३	६	१६	२७	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१७	०	१०	२०	न०
२०	३	१३	२३	६	१६	२७	९	१९	२	१२	१२	५	१५	२५	८	१७	०	१०	२०	यो०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	लग्न
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	गता
२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	वार
३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	घटि
३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	पल
४	१५	१६	७	१८	२९	१०	२१	२	१३	२४	५	१६	२७	८	२०	१	१२	२३	४	ति.
३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११	२१	४	न०
३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११	२१	४	यो.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	लग्न
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	ग०
६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	वार
४७	२	४८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	घ०
१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	पल
१५	२६	७	१८	२९	१०	२१	२	१३	२४	५	१७	२८	९	२०	१	१२	२३	४	१५	ति.
१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११	२१	४	१४	न०
१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	२	२२	५	१५	२५	८	१८	१	११	२१	४	१४	यो०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	लग्न

गताब्दसंख्याके नीचे जो वार इष्ट है उनमें जन्मधार इष्ट जोडनेसे वर्षप्रवेश के वार इष्ट एवं तिथिनक्षत्र योग लग्नकी संख्यामें जन्मकी तिथि, नक्षत्र, योग लग्न जोडे तो क्रमसे वर्षप्रवेशकी तिथि नक्षत्र योग, लग्न, स्पष्ट, निकलेंगे.

अथावर्षेस्तात्कालिकग्रहसाधनम्.

अष्टवारादिकंशोध्यमग्रावधिदिनादितः ॥
इष्टवारादिकाच्छोध्यंहृष्टावधिदिनादिकम् ॥ १ ॥

टी०–पंचांगमें आगामी अवधिके दिनादिकमें इष्टवारादिकको घटावे तो ऋणचालक और पीछेके अवधिके दिनादिकको इष्टवारादिकमेंसे घटावे तो धनचालक होय.

गतिघ्नषाष्टिहृल्लब्ध्या खेटो हीनो युतः स्फुटः ॥
खखाभ्रगजवेदाश्च भोगनाडीहृतागतिः ॥ १ ॥

टी०–उस चालनांकको ग्रहकी गतिसे गुणाकरके उसमें ६० का भाग देकर लब्धिको अवधिस्थ ग्रहमेंसे हीन अथवा युक्त करे अर्थात् ऋणचालन होय तो घटावे और धन होय तो जोडे तब स्पष्टग्रह होवें, ग्रहकी भोगनाडीकासे ४८००० में भागदेवे लब्धि मिले सो गति समझे.

अथ चंद्रस्पष्टश्लोकः

अश्विन्यादिंदुभुक्तानिभानिषष्टिहतानिच ॥
स्वभुक्तनाडिसंयोज्यद्विघ्नंनवहृतंत्रिधा ॥ १ ॥

टी०–चंद्रमा जितने नक्षत्र भोग आया उसकी संख्याको ६० से गुणाकरे और वर्तमान नक्षत्रकी भुक्तघटी अर्थात् भयात युक्त करे फिर दूणाकरे तिसमें ९ का भाग दे तब लब्धि अंशादि चंद्र स्पष्ट होवे.

अथ मुंथास्पष्टश्लोक.

याताब्दैर्युतजन्मलग्नभमिनैस्तष्टंभवेदिन्थिहा ॥

टी०–गताब्दमें जन्मलग्न जोडे तिसमें १२ का भाग दे शेष रहे तिसराशिकी मुंथा समझे.

अथ लग्नपत्रात्सूक्ष्मलग्नसाधनं.

रवेराश्यंशजंकोष्टंलग्नपत्रस्यचेष्टयुक् ॥ तदल्पभांशंलग्नंस्यात्सूक्ष्मंचार्ककलान्वितम् ॥ १ ॥ अल्पेष्टविवरात्पार्श्वांतरभक्तलवादियुक् ॥ एवंकृतेकिमाधिक्यंग्रहलाघवजेतनौ ॥ २ ॥

टी०-लग्नपत्रमें सूर्यकी राशि अंशकेसम सूत्रके कोष्टकांकमें इष्ट जोडे उस अंकसे न्यून अंकका कोष्टक लग्नपत्रमें देखकर उसके राशिअंश लेकर उसके नीचे कलाविकलाकी जगह सूर्यकी कलाविकला धरे फिर अल्पकोष्टकं और इष्टकोष्टकके अंतरमें अल्पकोष्टकके आगामीकोष्टकके अंतरका भाग देकर अंशादिल ब्धिको प्रथमके लग्नमें युक्तकरे ऐसी क्रिया करनेपर ग्रहलाघवके लग्नके तुल्य सूक्ष्म लग्न स्पष्ट होताहै.यही क्रिया दशम स्पष्टकरनेकी है. दशमपत्रसे दशमभाव स्पष्टकरे परंतु प्रथम दशमभावका इष्ट करे, स्वेष्टमेंसे दिनार्द्धको हीन करनेसे दशम भावका इष्ट होताहै. तथा रात्र्यर्धे युक्त करनेसे चतुर्थ भावका इष्ट होताहै.

अथ लग्नपत्राद्दिनमानरात्रिमानसाधनं.

रवेराश्यंशजंकोष्टमधस्तत्ससमात्त्यजेत् ॥
दिनमानंभवेत्तत्तुषष्टिशुद्धं निशीथिनी ॥ १ ॥

टी०-जिसदिनका दिनमान देखना होवे उस दिनके प्रातःसूर्यके राशिअंशके तुल्य लग्नपत्रमें जो अंक होय उसको उसीके नीचेके सप्तमकोष्टकमेंसे घटावे; शेष रहे सो दिनमान. उसको ६० में घटावे शेष रहेसो रात्रिमान.

अथ ग्रहाणां दृष्टिः

स्नेहादृक् त्रिभवेंबुखेज्ञकटका कोणे सुखास्ताद्ययोर्वैरा ॥

टी०-ग्रह अपने निजस्थानसे ३।११ एकपाद स्नेहदृष्टिसे. और ४।१०द्विपाद ज्ञकटक दृष्टिसे और ९।५ त्रिपाद सुखदृष्टिसे १।७ सम्पूर्ण वैरदृष्टिसे देखताहै.

त्रिराशिपति.

रविःशुक्रःशनिःशुक्रो गुरुश्चंद्रोबुधः कुजः ॥ शनिर्भौमोगुरुश्चंद्रोमेषात्त्रैराशिपादिपा॥१॥ गुरुश्चंद्रोबुधोभौमोरविःशुक्रःशनिः

सितः ॥ शनिर्भौमोगुरुश्चन्द्रोमेषात्त्रैराशिपानिशि ॥ २ ॥

टी०–१ सूर्य, २ शुक्र, ३ शनि, ४ शुक्र, ५ गुरु, ६ चंद्र, ७ बुध, ८ मंगल, ९ शनि, १० मंगल, ११ गुरु, १२ चंद्र, यह मेषादि दिवा लग्नमें त्रिराशिपति और १ गुरु, २ चंद्र, ३ बुध, ४ मंगल, ५ रवि, ६ शुक्र, ७ शनि, ८ शुक्र, ९ शनि १० मंगल ११, गुरु, १२ चंद्र यह मेषादि रात्रि लग्नमें त्रिराशिपति हैं.

वर्षेशनिर्णय.

जन्मांगपोब्दांगपतिस्त्रिभेशो मुंथाधिपोर्कोदिवसेनिशींदुः ॥
अमीषुयोवीर्ययुतोब्दलग्नंपश्येद्ध्रुवंवर्षपतिः सचात्र ॥ ११ ॥

टी०–जन्मलग्नपति, वर्षलग्नपति, मुंथापति, उपरोक्त त्रिराशिपति, दिनमें सूर्यराशिपति, रात्रिमें चंद्रराशिपति यह पंचाधिकारी हैं. इनमें बल अधिक और लग्नपर दृष्टि होवे वह वर्षेश होताहै.

अस्तेनीचेबलैर्हीनेव्ययेषष्ठाष्टमेपिवा ॥
छिद्रेशोयदिलग्नेशोवर्षेशोनैवकारयेत् ॥ १ ॥

टी०–पंचाधिकारियोंमेंसे जो ग्रह अस्त, नीच हो बलहीन हो, ६।८।१२ बैठाहो अष्टमेश हो तो वर्षेश नहीं करना.

अथ त्रिपताकाज्ञानं.

नवभिर्हायनैश्चंद्रोराहुभौमोरसाब्दकैः ॥
शेषाग्रहाश्चतुर्भिश्चराहुकेतूचवक्रगौ ॥ १ ॥

टी०–गताब्दमें ९ का भागदे जन्मास्थित चंद्रराशिसे गिने मंगल और राहुको ६ वर्ष प्रतिराशि गिने शेष ग्रह चार वर्ष गिने परंतु राहुकेतुको उलटा गिने और त्रिपताका चक्रमें स्थापन करे.

अस्यफलं.

वेधस्यएकरेखायांराहुचंद्रौनरस्यच ॥ तदाकष्टंविजानीयात्तत्र वर्षेसुनिश्चितं ॥ १ ॥ राहोर्जीवस्यवेधेतुमृत्युरेवनसंशयः ॥ शुभवेधेभवेल्लाभोसौख्यंभवतिनिश्चितम् ॥ २ ॥

टी०—त्रिपताकाचक्रमें एक रेखापर राहुचंद्र होय तो उस वर्षमें कष्ट होवे. राहु और बृहस्पतिका वेध होवे तो मृत्यु होय, शुभग्रहके साथ वेध होवे तो लाभ होवे निश्चय सुख होवे.

अथ मुग्धादशा.

जन्मसंख्यायांगताब्दान्योजयेद्द्व्यूनानवोधृताशेषेसूर्येंद्वारराऽहिज्यमंदज्ञकेतुशुक्राणामेकादिक्रमतोदशाद्याः ॥ १ ॥ धृतिस्त्रिंशदेक विंशतिश्चतुःपंचाशदष्टचत्वारिंशत्र्यूनषष्ट्येकपंचाशदेकविंशतिषष्टिसंख्यातानिसूर्यादीनांमुग्धादशादिनानि ॥२॥

टी०—जन्मनक्षत्रकी संख्यामें गताब्द जोडे २ हीन करें ९ का भाग दे शेष १ रहै तो सूर्य, २ रहै तो चंद्र, ३ मंगल, ४ राहू, ५ गुरु, ६ शनि, ७ बुध, ८ केतु, ९ शुक्र. इस क्रमसे प्रथम दशा समझे. सूर्यकी १८ दिन, चंद्रके ३०, मंगलके २१, राहुके ५४, गुरुक ४८, शनिके ५७, बुधके ५१, केतु २१, शुक्रके ६० दिनोंकी दशा समझे.

अथ मासप्रवेशज्ञानम्.

मासार्कस्यतदासन्नपंक्त्यर्कणसहांतरं ॥ कलीकृत्वार्कगत्याप्तंदिनाद्येनयुतोनितं ॥१॥ तत्पंक्तिस्थवारपूर्वंमासार्केऽधिकहीनके ॥ तद्वाराद्येमासवेशोह्यवेशोप्येयमेवच ॥ २ ॥

टी०—वर्षके सूर्यमें एकराशि युक्त करे जिसके सदृश मासप्रवेश होता है, उस मासके सूर्यके नजीकको अवधिके सूर्यके अंतर करे तिस अंतरका कलापिंड करके उसमें सूर्यकी गतिका भाग देकर दिनादिलब्धिको युक्त तथा हीनकरे, अर्थात् पूर्वके वारकी अवधिमें युक्त आगामीमें हीनकरे, उसी वारमें आगत घटिपलोंपर मासप्रवेशसमझे, यही क्रिया [रीति] दिनप्रवेशकी है.

समाप्त.